श्रीमती भारतेश्वरी महारानी विक्टोरिया।

जन्म १८१९. मृत्यु १९०१.

भूमिका।

—⊃○○⊂—

श्रीमती महारानी भारतेश्वरी विक्टोरिया महोदया वास्तवमें महाशया थी। उनका प्रजापर पूर्ण प्रेमथा और प्रजा उन्हें अन्तःकरणसे चाहती थी। वह प्रजाके सुख दुःखको अपना सुख दुःख समझती थीं और समय २ पर अपने सद्गुणोंसे प्रजा के चित्त में सद्गुणों को स्थान देने का प्रयत्न किया करती थी। उनके ६३ वर्ष के शासन में ब्रिटिश जातिने धन, विद्या, बल और उद्योग में असाधारण उन्नति की थी और राज्य की वृद्धि होते २ उसे यह उपमा दीजाने लगी कि "महारानीके राज्य में कभी सूर्य का अस्त नहीं होता है"। वह दया की मूर्त्ति थीं और इसीसे भारतवासी उनका मातासे बढ़कर आदर करते थे। यूरोप, एमेरिका और एसिया खंड के राजा और प्रजा की उनपर पूर्ण पूज्यबुद्धि थी और जिन २ राज्यों की इंग्लैंडसे पीढियों से शत्रुता चली आती है वे भी महारानी की प्रशंसा करते थे। राज्यप्रबंध का उचित संशोधन, दया का संचार और प्रजापालन के सिवाय उनकी पतिभक्ति अप्रतिमथी और उनका सच्चरित्र भारत वर्ष की उन सती रमणियों के समान था जिनका नाम स्मरण करने से हमें विशेष आनन्द होताहै। वह ईसाई धर्मपर जैसे दृढ आस्था रखती थी उसी तरह भिन्न २ देश की जुदे २ धर्म मानने वाली प्रजा को अपने २ धर्म के अनुसार चलते हुए देखकर उन्हें अधिक हर्ष होता था। राज्य प्रबंध का अपने ऊपर भारी बोझा होनेपर भी वह अपने बालकों के आचरण सुधारने और उन्हें योग्य शिक्षा दिलाने में कभी त्रुटि नहीं करती थीं। और इन्हीं कारणों से भारतवासी उन्हें देवी की उपमा दिया करतेहैं। ऐसी दयामयी महारानी का विस्तृत चरित्र हिन्दी भाषा में अबतक कोई न था और इस कारण यह इस विषय की प्रथम पुस्तकहै। मुझे आशाहै कि, जो महाशय इसे ध्यानपूर्वक पढ़ैंगे उन्हें अपूर्व आनन्द होगा। सज्जनों के चरित्रों से जितनी शिक्षा मिलना संभवहै वह इस में विद्यमानहै। इसमें श्रीमतीके चरित्र के अतिरिक्त इनके शासनकाल में ब्रिटिश

राज्य और भारतवर्षमें जो २ विशेष घटनायें हुई उनका भी इसमें समावेश कियागया है । उनमें से कईएक घटनायें ऐसी हैं जो अभीतक पूर्ण रूपपर हिन्दी जानने वालोंके दृष्टिगोचर नहीं हुई थीं । भाषा इसकी जहांतक होसका सरल की गई है और मुझे आशा है कि इससे पाठकोंको उपन्यास और इतिहास पढ़ने का संयुक्त आनन्द होगा ॥

महारानी जैसी राजर्षि की उपमा पानेवाली महाशया का चरित्र और साही उनके शासनकी मुख्य २ घटनाओंका संग्रह कर उन्हें यथा स्थान रखनेमें मुझे कहांतक सफलता हुई है इसका उल्लेख करना मेरा काम नहीं है। प्रथम तो मैं हिन्दी का सुलेखक नहीं, दूसरे विलायत से हज़ारों कोस रहकर एक भारत वासी को ऐसा कार्य संपादन करने में बड़ी कठिनता पडसकतीहै, तीसरे यह कार्य अधिक काल में होनेका था किन्तु मुझे इसके लिये बहुत थोड़ा अवकाश मिलसकाथा । ऐसीदशामें जो कुछ मुझसे बनसका उसीपर संतोष कर आज यह पोथी हिन्दीरसिकों के समक्ष रखताहूं । इससे पहले जिन पुस्तकों की मैंने रचना की है उनका पाठकोंने आदर कियाहै इसीकारण इस वृहत्कार्य के करनेका मुझे साहस हुआहै ॥

मैंने इस पुस्तक को चार भागोंमें बांटा है । प्रथम में श्रीमतीका चरित्र, दूसरे मे श्रीमतीके शासन कालकी विशेष घटनायें, तीसरे में ब्रिटिश राज्य और भारत वर्षकी उनके समयमें जो कुछ उन्नति वा परिवर्तन हुआ उसका दिग्दर्शन और चौथेमें श्रीमान् सम्राट् सप्तम एडवर्ड का चरित्रहै । इनके अतिरिक्त इसमें महारानी का वंशवृक्ष और पुस्तक की शोभा बढानेके लिये २७ सुंदर दर्शनीय चित्रभी लगाये गये हैं ॥

उपन्यासों की रचना और अन्य भाषाकी पुस्तकों के अनुवाद की अपेक्षा इतिहास और चरित्र लिखने का काम कठिन होताहै । उपन्यास लिखनेमें रचयिता की लेखनी जितनी स्वतंत्र होतीहै उतनी इनमें नहीं होतीहै। इसकारण संभवहै कि बहुत ध्यानपूर्वक लिखने पर भी इसमें कोई त्रुटि रहगईहो । इसके सिवाय समयकी संकीर्णतासे जो त्रुटियां रहसकती हैं उनका संकेत मैं ऊपर करचुकाहूं इसीकारण इसमें कहीं२ अशुद्धियां रहगई हैं इसी लिये पुस्तक के अंतमें शुद्धिपत्र लगाया गयाहै ॥

इस पुस्तककी रचना करनेमें "गुजराती" के संपादक मिस्टर इच्छाराम सूर्यराम देसाई, मिसेज़ ओ. एफ़ वाल्टन, मिसेज़ पुतली बाई डी.एच.वडिया, मिस्टर एल वेलेंटाइन, मिस्टर जी वार्नेट स्मिथ, मिस पुतली बाई जहांगीर कावराजी रचित चरित्रों, 'इन मिमोरी आफ विक्टोरिया (अवर ग्रेश्यस कीन) आदि पुस्तकों और "टाइम्स ऑफ इंडिया, पायोनियर, एडवोकेट आफ इंडिया, अमृतबाजार पत्रिका, मुम्बईसमाचार, गुजराती, केसरी" आदि देशी और (जेंटलवोमेन) आदिविलायती समाचार पत्रों और भारतवर्षके इतिहासोंसे आश्रय लिया गयाहै और इस बात के लिये मै उन सबको धन्यवाद देताहूं । मेरा विशेष धन्यवाद श्रीवेंकटेश्वर समाचार और यन्त्रालय के स्वामी श्रीयुत सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी के लियेहै जिन्होंने मुझ जैसे अल्पज्ञ मनुष्यका आदरकर इसपुस्तकको बनवानेका काम सौंपा और इसे छापकर प्रकाशित किया । उन्हीका इस पुस्तकपर सब प्रकार का स्वत्व है । अंत में मैं अलीगढ़ निवासी पंडित गंगाशंकरजी पचौली (नागर) को भी धन्यवाद देताहूं जिन्हों ने श्रीमती महारानी विक्टोरियाकी सायन और निरयण जन्मकुण्डली लिखकर इसमें प्रकाशित करनेके लिये भेजी ॥

यदि इस पुस्तकका हिन्दी रसिकोंमें आदर होगा तो मैं अपनेको कृत कृत्य समझूंगा ॥

खेतवाड़ी—बंबई.
ता० २५ सितम्बर सन् १९०१ ई०
वामनद्वादशी सं० १९५८.

हिन्दीका लघुसेवक—
महता-लज्जारामशर्मा,
(बूंदीनिवासी.)

विक्टोरिया सप्तक।
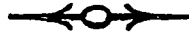
राजनके राजसों न सरे काज जान जग,
जगदंब भारतेश्वरी सो औतरी अहो।
मातसम पालन न पोषण करत पिता,
यों ही जान जगतकी जननी भई अहो॥
प्रत्यच्छ प्रमान कहा जाकी प्रजावृद्धि देख,
अरु भारी भोग पंख चौंके कौन ना अहो।
महारानी विकटोरियाके गुण भनौं किमि,
शेषसो प्रताप जो विधाता ना दियो अहो॥१॥
जादिन सिंहासनपै रूढ ह्वैकै आज्ञा कीनी,
वाही दिन जुगसो पलट्टि तेज छैगये।
रूमश्याम चीन अमरीका एशियाके नृप,
जूथनके जूथ ह्वैकै शीघ्र भेट दैगये॥
पुनि लोकपालनके मध्य खरभरो परचो,
भानु कीनी प्रतिज्ञा सो राज त्यागि ना गये।
धन्य महारानी तुव राज्यके प्रताप छाये,
ईति भीति दुःख नाशि जन सुखी ह्वैगये॥ २॥
महारानीराजत जो कौतुक भयो है भूमि,
सो तो नाहिं भयो अरु आगे नाहिं ह्वइगो।
नारीतनमध्य जेतो अपगुनगन कह्यो,
सो तो गुनगन ह्वैकै छनमाहिं छइगो॥
नारीतन नेक न निहारत जो ज्ञानीगन,
वोहू जाके दरशको तरसत रइगो।
नारीतननिंदाको जो वेद रु पुरानगन,
महारानीराजत सो गाढी नींद स्वइगो॥ ३॥

सास दान भेद दंड नीतिमैं निपुणनृप,
अरिदलदलबेको भये समरत्थ हैं ।
संधि अरु विग्रहके विग्रहसे रणराजैं,
जाँके बल देखि भाजैं वीर अतिरत्थ हैं ॥
ऐसे जो भये तो कहा प्रजापोष कीने बिन,
राजनकी राजनीति धूरमैं धसत्थहैं ।
धन्य महारानी विकटोरियाके गुणनमैं,
प्रजापोष गुण जिमि अंगनमैं मत्थ हैं ॥ ४ ॥
कवितासराहिबेको कविजनवृन्द भन्यो,
वनितासराहिबेको कामिमति मोटी है ।
शूरनसराहिबेको समर सयानैं भन्यो,
मित्रनसराहिबेको विपतिनकोटी है ॥
महारानी विकटोरियाको गुनगन भलो,
भन्यो तो प्रमान कहा मोरी बुद्धि छोटीहै ।
राजनकी राजनीति रीतिकेसराहिबेको,
रावरंकप्रजाबानी सुन्दर कसोटी है ॥ ५ ॥
मित्रनसराहे गुनगन ना सराहे जात,
शत्रुनसराहे तामैं भ्रमकी न ठौर है ।
निजप्रजाभेट पाये नृपकी अधिकता का,
परप्रजाभेट मिले जानो नृपमौर है ॥
निजप्रजारक्षक सो कौन ना नृपनमाहिं,
परप्रजारक्षक सो नाहिं ठौर ठौर है ।
एते गुन महारानी विकटोरियामें जाकी,
कोटिन निवाजिबेको लोचनकी कोरहै ॥ ६ ॥
ऐसी गुनगनखानी महारानी जगजानी,
सम्वत तिरेसठलौं प्रजापाल करकै ।
पुस्तनके वैरमेट पूज्य ह्वैकै लैलै भेट,

निजपरधरमको दृढ जग करकै ॥
सतिनकी मतिनको पतिनमें दृढकर,
भारतभवनन मैं भूरिभोग भरकै ।
दृगन चुराय हाय प्रजाको विहाय रानी,
देवलोकशोकहरिबेको गई फिरकै ॥ ७ ॥

पण्डित-नन्दलालजी शास्त्रिरचित.

श्रीः ।

श्रीमती महारानी विक्टोरिया चरित्रकी-

अनुक्रमणिका।

अध्याय. विषय. पृष्ठांक.

(प्रथम भाग)

(दूसरा भाग)

श्रीमतीके शासनकी मुख्य घटनायें.

अध्याय.	विषय.	पृष्ठांक.
१६	रूमकी रक्षामें तीन राज्योंका मेल	१९९
१७	अवधका खालसा	२००
१८	ईरान और चीनसे गवर्नमेंटके युद्ध	२०१
१९	भारतवर्ष का बलवा	२०२
२०	बलवेके विषयमें राज्ञीपतिकी सम्मति	२०६
२१	भारतके नवीन प्रवन्धके विषयमें श्रीमती के विचार	२०८
२२	श्रीमती का ढिंढोरा	२१२
२३	विलायत और भारतके बीचमें तार	२१६
२४	स्टार आफ इंडियाकी उपाधि और विश्वविद्यालय	२१७
२५	भारतका भयङ्कर अकाल	२१९
२६	भारतवर्षका नवीन प्रबन्ध	२२०
२७	एमेरिकामें युद्ध और सट्टेका व्यापार	२२१
२८	बंगालमें तूफान	२२२
२९	एबीसीनियाका युद्ध	२२३
३०	ओड़ीसेका अकाल और सुलतानका स्वागत	२२४
३१	युद्धके विषयमें सम्मति और स्वेजकी नहर	२२६
३२	काबुलके अमीरका अंबालेमें सत्कार	२२७
३३	भारतमें ड्यूक आफ एडिनबरा और नवीन संशोधन	२२८
३४	फ्रांस और जर्मनीका संग्राम	२३०
३५	लार्ड मेओका खून और मध्य एशियामें रूस	२३१
३६	बंगालका दुर्भिक्ष और लार्ड नार्थ ब्रूककी कीर्त्ति	२३३
३७	बड़ोदेके गायकवाड़का पदच्युत होना	२३४
३८	भारतवर्षकी मनुष्यगणनायें	२३५
३९	श्रीमान प्रिंस आफ्वेल्सका भारतवर्ष में स्वागत	२३७
४०	श्रीमतीको "महारानी" की पदवी	२३९
४१	दिल्लीका राजसी दर्बार	२४०
४२	भारतमें आँधी और दुर्भिक्ष	२४२
४३	रूस और रूमका अन्तिम संग्राम	२४४
४४	भारतके समाचार पत्रोंकी स्वतन्त्रता	२४७
४५	काबुलका अन्तिमयुद्ध और रूसीचाल	२४८
४६	अनेक नवीन आविष्कार	२५१
४७	पंजाबके गोवधपर बखेड़ा	२५२
४८	मिस्रमें अँगरेजी राज्य	२५३

(तीसरा भाग)

श्रीमतीके शासनमें ब्रिटिश साम्राज्यकी उन्नति ।

(चौथा भाग)

श्रीमान् सम्राट् सप्तम एडवर्डका चरित्र ।

इति ।

श्रीमती महारानी विक्टोरियाके चरित्रके चित्रोंकी-
अनुक्रमणिका ।

इति ।

॥ श्रीः ॥

अध्याय १.

इंग्लैंड और महारानीके माता पिता।

इंग्लैंडके इतिहासमें केवल दोही राज्य सर्वोत्तम मानेजाते हैं। इन दोनों राज्योंने साधारण स्थितिसे परिवर्तन कर इंग्लैंडको भूमण्डलका एक देदीप्यमान ग्रह बनाया है। रानी एलिजाबेथ और महारानी विक्टोरियाके शासनमें इस राज्यकी अप्रतिम उन्नति देखकर यह कहा जासकता है कि इस इंग्लैंडका प्रारब्ध स्त्री राज्यकर्त्रीके समयमें अधिक चमकता है रानी एलिजाबेथके शासनमें शेक्सपिअर स्पेन्सर बेकन और बटले जैसे नररत्नोंके उत्पन्न होनेसे इस राज्यकी कीर्त्तिका डंका यूरोपभरमें बाजना आरंभ हुआ था वही कीर्त्ति महारानी विक्टोरियाके शासनमें भूमण्डलमें उत्कृष्ट रूपकर व्याप्त हो रही है॥

हेस्टिंगूसके युद्धमें नार्मडीके ड्यूक विलियमके इंग्लैंडका जय किये बाद केवल छः राजाही महारानीके वयको पहुँचे थे। इंग्लैंडके इतिहासमें केवल दूसरा ज्यार्जही एक राजा हुआ था जिसका वय महारानीसे अधिक था। शेष श्रीमतीसे कम उमरमें मृत्युको प्राप्त हुए और उन्होंने श्रीमतीसे थोड़ेही वर्ष राज्य किया।

महारानीके पिता ड्यूक आफ् कैंट ।

महारानीके पितामह राजा तीसरे ज्यार्ज स्वभावमें बड़े कठोरथे। अपने पुत्रोंके साथ बहुत कड़ाईका बर्ताव करते थे । इनके तीन पुत्र थे । एक राजा चतुर्थ ज्यार्ज, दूसरे राजा चतुर्थ विलियम और तीसरे महारानीके पिता कैंटके ड्यूक एडवर्ड । पिताकी कठोरतासे ड्यूक आफ् कैंटको युवावस्थामें बड़ी तंगी भोगनी पड़ी थी । पिता तृतीय ज्यार्ज इनके पद और प्रतिष्ठाके योग्य इन्हें द्रव्य नहीं देते थे । इस कारण इन्हें ऋण लेना पड़ा था । महारानीके पिता प्रसिद्ध सैनिक थे । इंग्लैंडकी सेनामें इनकी बड़ी प्रतिष्ठा और दबदबा था । यह स्वभावके सादे और स्वच्छ थे और यद्यपि इनके पिता इनसे अप्रसन्न थे परंतु वहांकी प्रजाका उनपर बड़ा विश्वास था और इसीकारण सेनामें इनको बड़े २ पद दिये गये थे ॥

अनेक युद्धोंमें वीरता दिखाकर जब इनका वय बुढ़ापेके निकट पहुँचा तब इन्होंने विवाह करनेकी इच्छाकी । इनकी स्त्री कोई प्रसिद्ध सुंदरी न थी किन्तु जर्मनी

महारानीकी माता विक्टोरिया मेरी लुइज़ा ।

के एक छोटे गाँवकी रहनेवाली विधवा राजकुमारी विक्टोरिया मेरी लुईज़ा थी । इनका बालवयमें एक बूढे राजवंशी लिनिजनके राजपुत्र एमिलासे विवाह होगया था । प्रथम विवाहसे इनको दो संतति थीं । दोनों बालकोंकी शिक्षा दीक्षा पर इनका विशेष ध्यान देखकर राजकुमारीकी नम्रता, सहनशीलता, बुद्धि और सद्गुणोंपर ड्यूक आफ् कैंट मोहित होगये । परस्परके कोर्टशिपके अनंतर राजकुमारी इनसे प्रसन्न तो हुई परंतु रुपयेकी तंगीने इस भावी जोड़ेके संयोगमें बाधा डाली । प्रथम पतिने मरते समय जो अपनी विधवाके लिये पाँचहजार पौंडका वार्षिक नियत कर दिया था उसमें शर्त यह थी कि, यदि कुमारी दूसरा विवाह करले तो यह वार्षिक बन्द कर दिया जाय । इधर ड्यूक आफ् कैंटके पास पैसेकी संकीर्णता और उधर विवाह करलेनेसे, अपनी प्राणप्यारीका पांचहजार पौंडकी वार्षिक आय बंद होजाना । ये दोनोंही बातें इस प्रेमबद्ध जोड़ी की इच्छा पूर्ण न करनेका कारण हुई । विचारे दोनों अपना मन मारकर चुप होगये ॥

परंतु इंग्लैंडके राजा तृतीय ज्यार्जके बड़े पुत्र चतुर्थ ज्यार्जकी कन्या शार्लेट संतान बिना मरगई और इसकारण वहांकी प्रजाको गादीके वारिसके विषयमें चिन्ता होनेलगी । प्रजाके अनुरोधसे कठोर पिताने राजकुमार एडवर्डके विवाहके लिये छः हजार पौंडका वार्षिक वेतन नियत किया । इस कार्यसे इस भावी जोड़ीके मुरझाये हुए मन फिर लहलहाने लगे । सन् १८१८ के मई मासकी १९ वीं तारीखको सैक्सकोबर्गके राजा लियोपोल्ड की बहन राजकुमारी विक्टोरिया मेरी लुइज़ा अनेक मासकी उत्कंठा और वियोगके पश्चात् अपने प्रिय और इच्छित पति कैंटके ड्यूक एडवर्डकी सहधर्मिणी हुई । इनका विवाह जर्मनीमें हुआथा और विदेशमें विवाह होने और बाहरही संतान उत्पन्न होनेसे उस बालकका गादीपर स्वत्व नहीं रहता है । इस प्राचीन नियमके अनुसार ये वर वधू इंग्लैड बुलायेगये । वहां आनेपर इंग्लैंडकी राजरीतिके अनुसार इनका फिर विवाह हुआ । परंतु इंग्लैडमें रहकर अपने पद और प्रतिष्ठाके अनुसार खर्च करनेकी इनमें शक्ति नथी इसलिये लाचार होकर ड्यूकको अपनी प्रियपत्नी सहित फिर जर्मनीमें निवास करना पड़ा । यह स्थान ड्यूक आफ् कैंटकी नववधू डचेज् के पूर्वपतिका एम्बोर बेल नामक ग्राममें एक महल था यहीं डचेज् ने गर्भधारण किया । वरवधूका हर्ष गर्भके साथ ही बढ़ने लगा । इंग्लैंडकी प्रजाको अपने भविष्यत् के राजाके जन्मधारण करनेकी आशा हुई । गर्भप्राप्तिसे सातवें मासमें ड्यूक अपनी प्रियवधूको लेकर इंग्लैंड आये । इनको अपनी भावी संततिके लिये इतना प्रेम और उत्साह था कि, वह एम्बोर बेलके महलसे केंस्टिंगटन प्रासादतक अपनेही हाथसे गाड़ी हांकते हुए आये ॥

अध्याय २.

महारानीका जन्म ।

अप्रेल मासभर लंडनमें सुखपूर्वक निवास करनेके अनन्तर मईकी२४तारीखको सन्१८१९की वसंत ऋतुके शुभ मुहूर्तमें डचूक आफ् रॉसेक्स,डचूक आफ् वेलिंगटन, आर्चबिशप आफ् कैंटन बरी (इग्लैंडके प्रधानपादरी) लार्ड लैंसडाउन और ज्यार्ज केनिंग् के समक्ष दयामयी विक्टोरियाका जन्म हुआ ॥

इनका जन्म ४ बजकर१५मिनटपर हुआ था । उन दिनोंमें लंडनमें सूर्योदय ३ बजकर ६९ मिनटपर होताथा । लंडनके उत्तर अक्षांश ५१।३२ हैं ।

जन्मकालके सायन ग्रह और लग्न ।

र०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	के०	प्र०	लग्न	दशम.
२	२	०	१	१०	०	११	०	५	८	२	१०
२	३	१७	८	१६	२६	२८	१८	१८	२३	५	०
६	३९	३९	५६	५६	४५	४६	४०	४०	२०व	५८	२

इनमेंसे अयनांश २२ अथवा १८ घटाने से निरयण कुंडली बनजातीहै । निरयण पंचांगके अनुसार उस दिन ज्येष्ठ शुक्ल १ सोमवार संवत् १८७६ था ।

+ सायन जन्मलग्न ।
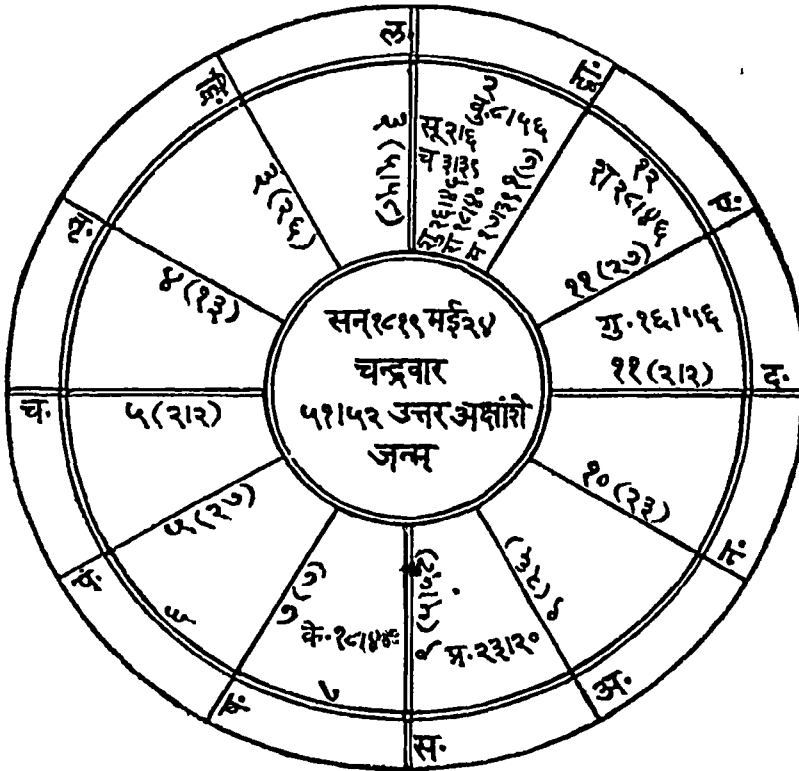
१ "केसरी" मराठी साप्ताहिक समाचार पत्र तारीख १९ जनवरी १९०१

+ पचौली गंगाशंकरजी लिखित ।

× निरयन जन्मलग्न.
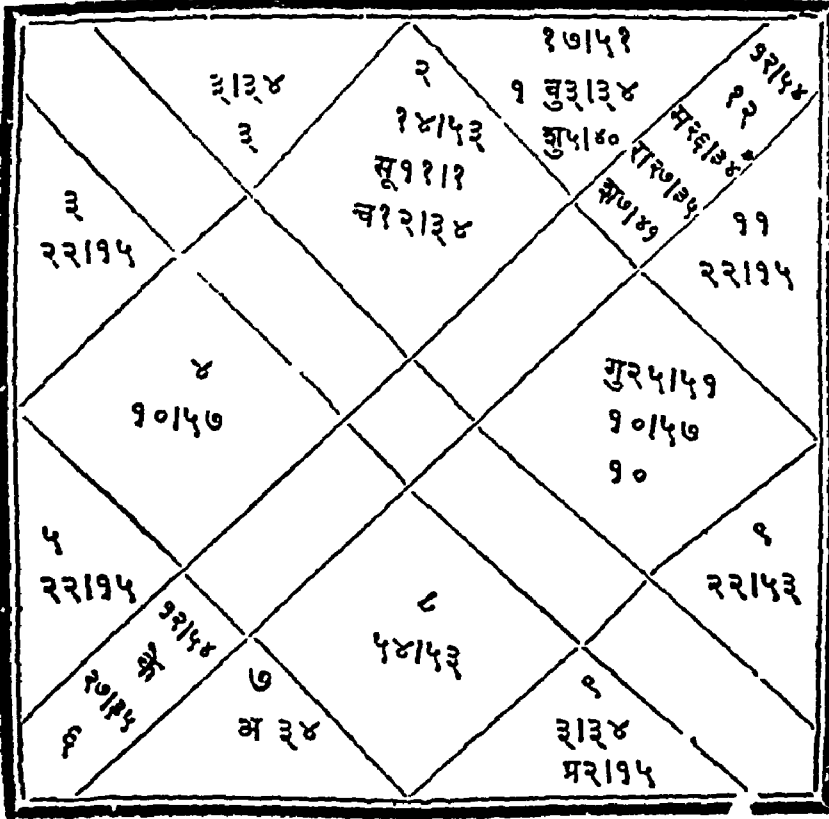
ठीक एक मास के अनंतर २४ जून को महारानी को बापतिस्मा दियागया। विक्टोरियाका जन्म मई मासमें हुआथा । इंग्लैंडमें यह मास बड़े आनन्द और स्वास्थ्यका समझा जाता है इसीलिये इनके माता पिताने इनका नाम "मे फ्लावर" अर्थात् मईका पुष्प रक्खा । सबही बालकों के वास्तविक नाम और और प्यार के और होते हैं । विक्टोरियाका "मे फ्लावर" नाम लाडका था किन्तु बापतिस्मा देते समय इनका नाम " एलेक्जेंड्रिना विक्टोरिया" रक्खा गया । इनके पिता-का विचार यह था कि, अपनी प्यारी पुत्रीका नाम एलिजाबेथ रक्खाजावे क्योंकि इंग्लैंड की प्रजा को यह नाम बहुत प्रिय है । बापतिस्मा देने वाले कैंटरबरीके प्रधान पादरीने इनका नाम "एलेक्जेंड्रिना" नियत किया । बालिकाके पिताके अधिक अनुरोधसे इस नामके साथ महारानीकी माताका नाम विक्टोरिया और जोड़ा गया। इस कारण श्रीमतीका पूरा नाम "एलेक्जेंड्रिना विक्टोरिया" हुआ ।

जिस समय श्रीमती तीन मासकी हुई उनके अगस्त महीनेमें डाक्टर जेनर-ने सीतलाका टीका लगाया । इंग्लैंडके राजघरानेमें टीका लगानेका यह प्रथम अवसर थी ।

× पचौली गंगाशंकरजी लिखित ।

अध्याय ३.

बालवय ।

जब श्रीमतीका वय छः मासका हुआ उनकी माता उन्हें लेकर डिवोन शाथर परगनेके सिड मौथ स्थानमें चलीगई । वहांपर एकदिन यह बालिका दाईकी गोदीमें खेलरहींथीं इतनेहीमें अकस्मात् कमरेकी एक खिड़कीका किवाँड़ तोड़कर सनसनाती हुई एक गोली इनके शिरपर पहुंची । श्रीमतीके शासनमें प्रजाका बहुत कुछ उपकार करना भगवान्को अभीष्ट था इसलिये ईश्वरने गोलीसे बालिका की रक्षाकी ॥

डचेज् आफ् केंटने अपनी प्यारी बेटीको अपने स्तन पिलाकर पालाथा । वह कभी इनकी रक्षाका भार नौकरोंपर नहीं छोड़तीथी । सदा अपनेही पास रखती और मिताहार, सत्यभाषण और नम्रता शिखानेपर बहुत ध्यान देती थी । वह जानतीथी कि, नौकरोंके भरोसे रहनेमें लड़की चिड़चिड़ी होजायगी इसलिये वह अपनी पुत्रीको खिलाने पहनानेका काम अपने हाथसे करती थी ॥

दोनों माता पिता विक्टोरिया पर अत्यंत प्रेम रखते थे । एक वार माताने अपने किसी मित्रको लिखाथा कि, मेरी पुत्री डेवनशायर की स्वच्छ पवन में गुलाब की तरह खिलरही है । वह दिन दिन दृढ और स्वस्थ होती जाती है । इसके चन्द्रकला के समान बढ़नेसे कितनेही लोगोंके हृदयमें कांटासा चुभता है । " ये कितनेही लोग" इस बालिकाके ताऊ ज्यार्ज थे । महारानीके पति एडवर्डने अपने सदाचार और सद्व्यवहारसे प्रजाके मन जीतलिये थे । राजकुमार एडवर्ड की प्रियपत्नी डचेजूका भी प्रजा बडा आदर करती थी । जिस समय वह प्यारी बालिका को लेकर बाहर निकलती थी प्रजा "हुर्रे" के पुकारसे अपना हर्ष प्रकट किया करती थी ॥

पिता ड्यूक आफ् केंट एकांत वास अधिक चाहता था । दुर्भाग्यने उसके सुखके दिनोंको शीघ्रही समाप्त करदिया । बालिका एक वर्षकी भी न होनेपाई थी इतनेहीमें अकस्मात् मेह बरसा । वृष्टि में महारानी के पिताके कपड़े भीगकर सराबोर होगये । मार्गमें उनको अपनी प्यारी पुत्री दिखाई दी । पुत्री वात्सल्यने पिताको अधीर करदिया । पिता पुत्रीके आमोद प्रमोद में भींगे कपड़े बदलना भूलगये । उस समयकी शर्दी ऐसी बैठी कि, थोड़ेही दिनमें ड्यूक आफ् केंट अपनी प्राणप्यारी और 'मईके पुष्पको ' छोडकर चल बसे । इंग्लैंडमें बड़ा शोक हुआ । ड्यूक आफ् केंट के सद्गुणोंपर लक्ष्य देकर प्रजाने उनको "प्रजाप्रिय ड्यूक" की उपाधि दी ॥

अब बालिका विक्टोरियाकी रक्षाका भार केवल मातापर पड़ा। पतिवियोग से परमदुःखित होकर डचेज् सिडमौथसे लंडनआई। उसीदिन (२९ जनवरी को) अपने पुत्रकी मृत्युके सातवें दिन इंग्लैंड का राजा तृतीय जार्ज अकस्मात् मृत्युवश हुआ। चौथा जार्ज राजा हुआ। राजसिंहासनपर विराजकर राजाने भ्रातृवधूका प्रबोध किया। डचेज्ने बालिका विक्टोरिया पितृव्य की गोदमें रख-कर आर्तनादके साथ आसूं भरी आँखोंसे कहा अब "इस लड़कीके पिता आपहैं"॥ माताने पतिमरण के पश्चात् घरसे बाहर निकलना बन्द करदिया। गवर्न-मेंटने भी डचेज्से ऐसाही करनेका अनुरोध किया॥

२१ जुलाई सन् १८२० को एक व्यक्ति महारानी की मातासे मिलने गया था। उससे डचेज्ने कहा कि "इस बालिका के जन्मसे थोड़ेही मासके अनन्तर इस अज्ञान देशमें मैं पतिविहीन और यह पिता विना होगई। यहां कोई हमारा मित्र भी न रहा। मुझको अँगरेजी भाषाका अच्छी तरह बोध नहीहै। समय बड़ा टेढ़ा है परंतु मुझे इन बातों की कुछ पर्वाह नहीं है। मैंने सब कामोंको तिलांजुलि देकर इस लड़की को उत्तम शिक्षा देनेका बोझा अपने ऊपर लिया है"। बालवयसेही इनकी माता इन्हें एक साधारण बालिका की तरह घरके काम काज शिखाने लगीं। ठेठसेही सादे भोजनकी टेव डाली केन्सिंगटनके राजभवनमें सादगीके सिवाय किसी प्रकार का आडंबर न रक्खा गया। उस समय महारानीकी सहेलियोंमें इनकी बहन (डचेज्के प्रथम पतिकी कन्या) फियोडोरी रहा करतीथी॥

बालिका विक्टोरियाको पुष्पोंपर बड़ी प्रीति थी। वह केन्सिंगटन राजप्रासादकी खिड़कियोंके गमलोंको अपने हाथसे सींचा करती थी। विक्टोरियाके बालवयमें इंग्लैंडका बाजार आजकलकी तरह खिलौनोंसे भराहुआ नही था। वह घरके खेल खेलनेके अतिरिक्त अपने गधेपर चढ़कर केन्सिंगटनके बागमें फिरा करती थीं और जब कभी उनका जी उकताता वह बुड्ढे यहूदी सर मोसेस मोंटीफ्योरके बगीचेमें जाकर विश्राम लेती थी॥

कुमारीकी चौथी वर्षगांठपर राजा चतुर्थ ज्यार्जने इनको अपना चित्र भेंट किया था। वह राजकुमारी के साथ बड़ा प्रेम रखतेथे और कभी २ इन्हें दावत दियाकरते थे। इनका हास्यवदन और चित्ताकर्षक सौंदर्य देखकर इन्हें सबही लोग खेल खिलाया करतेथे। इनपर लोगों का अधिक प्रेम देखकर इन्हें बड़ा आश्चर्य होता और यह कहतीं कि, मुझसे लोगोंका इतना प्रेम क्योंहै?

छः वर्षकी बालिका विक्टोरिया ।

मेरी बहन फियोडोरी को क्यों नहीं खिलाते हैं । एक बार यह गाडीमें बैठकर फिरने जातीं थीं । गाड़ीके एक छोटा टट्टू जुता हुआ था । एक बालक गाड़ी हांकताथा । अकस्मात् एक कुत्ता टट्टूके पैरोंमें आकर चिपटगया । टट्टू चौंका और बालिका विक्टोरिया सहित गाड़ी उलटगई । संयोगवश एक सैनिक जिसका नाम प्राइवेट मेलोनी था उस जगह उपस्थित था । उसने गिरतेही इनको उठालिया और इस कारण बालिका कुचलनेसे बचगई ॥

राजकुमारीकी माताने इनको मितव्ययताकी भलीप्रकार शिक्षा दी थी । एक दिन बालिका खिलौने खरीदने के लिये बाजार में गई थीं । वहां जाकर उन्होंने अपने सब भाइयों और बहनोंके लिये खिलौने मोल लिये । चलते २ उन को एक बालककी याद आगई उन्होंने उसके लिये दूकानदार से एक पेटी मांगी । महारानीके साथमें जो आया था उसने कहा कि, अब पैसे चुकगये हैं पेटी लेने के पैसे नहीं रहे हैं महारानी सुनकर चुप होगई । दूकानदारने विनयपूर्वक कहा कि, मैं आपको यह पेटी भेंट करता हूँ परंतु महारानीने ऐसे अवसरपर उसकी भेंट स्वीकार करना उचित न समझा ॥

विक्टोरियाकी सैर ।

श्रीमती जब नौ वर्षकी हुई माता उन्हें साथ लेकर फिरने जाया करती थीं बालिका विक्टोरियाके दर्शन करने लोगोंके झुंड इकट्ठे होजाते थे । श्रीमतीके मुखको देखकर लोग आँखोंकी पलकें मारना भूल जाते थे । इनके स्मितहास्य पर सब फिदा थे । बालक उनके पीछे झुंडके झुंड चला करते थे । राजकुमारी बालकोंका बड़ा सत्कार करती और गरीब बच्चोंको कुछ दिया करती थी । एक दिन एक दीन बालककी टोपी पानीमें गिरगई । बच्चा केन्सिंगटन के मार्गमें खड़ा २ रोने लगा । उस समय श्रीमती माताके साथ कहीं जा रही थी । बालकको रोता देखकर हृदय भर आया । अपनी मातासे नम्रतापूर्वक कहा— " माता, तुमने मुझे खिलौनेके लिये पैसे दिये हैं उनके खिलौने न लेकर मैं जो चाहूं करसकती हूं ? " माता हँसकर बोली " हाँ " माताके स्वीकार करतेही राजकुमारी दौड़ती हुई उस बालक के पास गई और उसके हाथमें दो क्राउन (सिक्का) रखकर चुपचाप माताके पास आ खड़ी हुई । मातासे हँसकर कहा—" क्यों माता मैंने अच्छे खिलौने लिये ना ? " ॥

राजकुमारी कईवार लंडनके बाजारमें जाकर दूकानदारों को अपने कामोंसे हँसाया करती थी । एकवार किसी जौहरी की दूकानपर जाकर कुछ खरीदने लगी । इतनेहीमें एक अपरिचित स्त्री वहां आ खड़ी हुई । स्त्री खड़ी २ सोने की एक कंठीकी ओर ध्यानपूर्वक देखने लगी । उसका चित्त उस कंठीपर गड़गया था परंत कंठी का मूल्य अधिक था । स्त्री बिचारी मन मारकर चली गई । विक्टोरिया उसके मन मारनेसे दुःखित और आनन्दित हुई । जौहरी को कंठी का मूल्य देकर उसे एक डिबियामें बंद करवाया और उसमें एक चिट्ठी रखकर वह दूकानदार द्वारा उस स्त्रीके पास भेजदी ॥

बालिकाके पिता ड्यूक आफ् कैंटकी सेनामें हेलमैन नामक सिपाही बड़ा वफादार था । ड्यूक की सेनाने जिस समय उपद्रव किया इस सैनिकने उनकी अच्छी सेवा की थी । ड्यूक जब इंग्लैंड आया उसने इस सिपाहीको अपने महलके पड़ोसमें एक झोपड़ा बनवाकर रक्खाथा । ड्यूक जब मरने लगा तो अपनी स्त्रीसे इस सिपाही और उसके कुटुंबकी रक्षाका अनुरोध करगया था । हेलमैन मरगया । राजकुमारीने उसके रोगी बालककी रक्षाका भार अपने ऊपर लिया । और राज्यासनपर विराजनेपरभी उसे न भूली । एकबार उसे एक पत्र लिखकर उसमें समाश्वासन दियाथा कि " मैं यद्यपि इंग्लैंडकी रानी हूं परंतु तुम्हें भूली नहीं हूं " ॥

अध्याय ४.

शिक्षा ।

जिस समय राजकुमारी का वय छः वर्षका हुआ इंग्लैंडकी पार्लियामेंटने इनकी शिक्षाके लिये ६ हजार पौंड वार्षिक व्यय नियत किया । एक स्त्री और एक पुरुष बालिकाको शिक्षा देने लगे । ईश्वरदत्त विचक्षण बुद्धि और माताके सुसंस्कारोंसे अल्पकालमें राजकुमारीने फरान्सीसी और जर्मनभाषा अच्छीतरह बोलना सीख लिया । लेटिन् और इटालीकी भाषा सीखकर वरजिल और होरेसके काव्य समझनेकी शक्ति संपादन की । ग्रीक भाषाका अभ्यासकर हिसाबपर हाथ डाला ॥

राजकुमारीको उत्तम प्रकारकी शिक्षा देनेमें श्रीमतीके मामा राजकुमार लियोपोल्ड बहुत ध्यानदियाकरतेथे । विक्टोरिया नित्य जितना सीखती एकपुस्तकमें लिखा जाताथा। उसे प्रतिमास माता सुनती और दिन २ विद्यामें अपनी प्यारी कुंमारीकी उन्नति देखकर आनन्दित होतीथीं ॥

श्रीमती बालवयसेही गानेमें जैसे चतुर थीं वैसेही नाचनेमेंभी बड़ी प्रवीण थीं । इन्होंने तीरंदाजी का अच्छा अभ्यास कियाथा । घोड़ेपर चढ़कर दौड़ानेमें राजकुमारी बहुतही प्रवीण होगई थीं । जिस समय आप स्काट्लैंडकी यात्रा करने गईं घोड़े दौड़ानेमें अच्छा कौशल दिखलाया था ॥

राजकुमारीके दोनों ताउओंके शासनमें इंग्लैंडका दर्बार अनीतिका घर था और इसी कारण यह शंका कीजाती थी कि जो कुछ कालतक इंग्लैंडके राजवंश की ऐसी स्थिति रहैगी तो सर्व नाश होजायगा । इस विचारसे बालिका विक्टोरियाकी शिक्षापर विशेष ध्यान दिया गयाथा और पढ़लिखकर तैयार होनेतक श्रीमतीसे उनके राज्यारोहणकी भावी आशा गुप्त रक्खीगई थी । पुराने समयके राजाओं और बादशाहोंके शासनमें राजकुमारों को साधारण बालकोंकी तरह कड़ी शिक्षा देने और पढनेके समय मारपीट करनेके अनेक उदाहरण सुननेमें आते हैं । ऐसी ही घटना श्रीमतीके अध्ययनमें हुईथी। एक दिन राजकुमारी केन्सिंगटनके बागमें अपनी माताके साथ टहलरहीथीं । इतनेही में एक पाठशालाकी कितनीही लड़कियां वहां आ निकलीं । लड़कियोंने राजकुमारीसे सलाम किया परंतु प्रमादसे उन्होंने उत्तर न दिया । लडकियां अपने रस्ते चलीगईं । यह बात माताको बुरी लॅगी । डचेज्ने लड़कियोंके पास नौकर दौड़ाकर उन्हें रोंका, राजकुमारीको अपने साथ लेकर उनके पास पहुँची और बेटीसे उनकी सलामका जवाब दिलवाया॥

राजकुमारी की शिक्षाके लिये जो वार्षिक वेतन गवर्नमेंटने नियत किया था उसका बहुतही सँभालके साथ खर्च कियाजाता था। माताने राजकुमारीको दस्ती कारीगरीकी ओर प्रवृत्त किया और जो बालपन वा राजघरानेके बालकोंमें हठ अथवा यथेच्छ चलनेके दोष होते हैं उनको जड़से उखाड़दिया था। जिस समय राजकुमारी किसी बातमें अन्याय करने का हठ करतीथी माता तुरंत दीनोंके दुःखकी कथा सुनाकर उनके हठका वारण करादिया करती थीं। ब्रिटिश शासनप्रणाली की शिक्षा देनेका काम मिस्टर एमोस नामक व्यक्तिको सौंपा-गयाथा। इसके सिवाय राजमाता अपनी दुलारी पुत्रीको कारखानोंमें लेजाकर मजदूरों और गरीबोंकी स्थिति दिखलाया करतीथी। राजकुमारी को निज खर्च के लिये बहुतही थोड़ा वेतन दिया जाताथा और उसमेंसे राजमाता बालिकाके हाथसे दीनोंको दिलवाकर सुदानकी उनमें टेव डालतींथी॥

डचेजूने श्रीमतीको मितव्ययता शिखानेके लिये उनके खर्च का स्वतंत्र प्रबंध रक्खाथा। एक दिन विक्टोरिया अपनी माताके साथ किसी दूकानपर गुड़िया खरीदने गई। गुड़ियाका मूल्य छः शिलिंग् ठहरा परंतु राजकुमारी अपने मासिक वेतन को खर्च करचुकीथी। उन्होंने मातासे गुड़िया खरीदवा देनेका आग्रह किया परंतु यह बात माता को स्वीकारन हुई। उन्होंने कहा—"बेटी! तुझे जब आगामि मासका वेतन मिलै तब गुड़िया खरीदलेना अभी मैं पैसा न दूंगी।" माताके वचन सुनकर राजकुमारी महीना पूरा होनेके लिये दिन गिननेलगी। उत्कंठा और आशामें जैसे तैसे महीना पूराहुआ। वेतन पातेही राजकुमारी गुड़िया लेनेके लिये दूकानदार के पास दौड़ीगई। छः शिलिंग देकर गुड़ियालेनेके बाद कुमारीने गुड़िया कलेजेसे लगाई और बड़े प्यारके साथ उसे लेकर ज्योंही दूकानकी सीढ़ियां उतरनेलगीं साम-नेसे एक भिखारी आता दिखाई दिया। भिखारीने बालिकाको देखकर कुछ मांगनेके लिये होंठ फरकाये परंतु लज्जा और डरसे अकचकाकर रहगया। भिखारीका दयाजन-क मुख देखकर कुमारीका हृदय भर आया। गुड़ियाका प्यार तुरंत हवाकी तरह उड़गया। प्यारके बदले दयाने हृदयमें वास किया। कुमारीने भिखारीसे पूँछा, "तुम क्या चाहते हो?" भिखारी बोला—"बाई मुझे अत्यंत भूख लगी है। जो मैं भूखसे न मरता होता तो आपसे कभी पैसा न मांगता"-राजकुमारीने मुँह बिगाड़कर कहा—"खेद है कि मेरेपास इससमय पैसा नहीं है होता तो" इतना कहतेही उन्हें कुछ उपाय सूझा। वह दबेपावं दूकानदारके पास गई और उससे कहा—" कृपाकर यह गुड़िया अपनेपास रखिये और पैसे मझे देदीजिये। मैं फिर आकर गुड़िया लेजाउंगी।" दूकानदारने सहर्ष पैसे लौटाकर गुड़िया लेली। राजकुमारी दौड़ी

हुई भिखारीके पास गई और उसके हाथमें चुपचाप छहों शिलिंग रखदिये । भिखारी बालिकाकी दया देखकर भौंचक होगया । उसने आशीर्वाद दिया कि "परमेश्वर तुझे रानी बनावै तबभी तेरी दयाका पूरा बदला नहीं है ।" यह कहकर भिखारी चलता बना । माता पुत्रीकी दया और सुशिक्षाका उत्तम फल देखकर विस्मित होगई और उन्होंने जानलिया कि यदि परमेश्वरने इसे इंग्लैंडका राज्य दिया तो यह अवश्य प्रजाका उपकार करैगी । उसी दिन माताने अपनी दुलारीसे उसकी आशाका संकेत किया । और उन्हें इस बातसे अधिक हर्ष हुआ कि, बालिकाने राज्यकी आशासे अपरिचित रहकर योग्य शिक्षा पाई है । जो मैं इसे पहलेसेही बतलादेती तो इसमें ऐसे सद्गुण आनेकी कभी आशा न थी ॥

श्रीमतीको सुशिक्षा देनेमे केवल उनकी माताहीका ध्यान न था बरन आपकी नानी भी बहुतही दत्तचित्त थी । होम साहिबने श्रीमती के चरित्रमें लिखाहै कि रानीको विश्वास है कि, उनमें मस्तिष्क और विचारकी जितनी शक्ति है वह को बर्ग की डचेज़ (नानी) से प्राप्त हुई है क्यों कि वह बड़ी प्रसिद्ध स्त्री थीं। उनके विचारोंमें पुरुषोंकीसी दृढ़ता, स्त्रियोंकासा प्रेम, हृदयकी कोमलता और बुद्धि थी ॥

बाल्यावस्थाकी सुशिक्षासे श्रीमतीका विद्याकीओर दिन २ अनुराग बढ़तागया और सिंहासनारूढ़ होकर राज्यप्रबंध करने और विवाहकर घरेलू काम काज करने-पर भी आपने पढ़ना लिखना न छोड़ा । पतिवियोगसे दुःखित होकर जब श्रीमती ने कुछ कालतक इंग्लैंडमें वास कियाथा उस समयके पत्रोंका संग्रहकर उन्होंने उसे पुस्तकाकार छपवायाथा । उसकी सरल और भावपूर्ण भाषा देखकर अंग-रेजी लिखे पढ़े लोगोंको बड़ा आनन्द होताहै । भाषाकी सरलता और विचारकी प्रौढ़ताके कारण श्रीमतीकी अँगरेजीकी लोगोंमें बड़ी प्रशंसा है और इसी कारण इस प्रकारकी भाषाको लोग (क्वीन्सइंग्लिश) कहने लगेहैं। स्त्रियोंकी भाषामें जिस प्रकारकी अशुद्धियां रहा करतीहैं वैसी श्रीमतीके पत्रोंमें नहीं रहतींथीं और श्रीमतीको पत्र लिखनेका बडा अभ्यासथा। नित्यके आवश्यक पत्रोंका नित्य उत्तर देना श्रीमती अपना प्रथम कर्तव्य समझती थीं । आपकी सब संतानोंसे आज्ञाथी कि सप्ताहमें एक बार वे उनके नाम अवश्यपत्र लिखाकरैं। घरेलू और राजकार्यके आवश्यक पत्रोंके सिवाय भिखारियों और पागलोंकीभी आपके नाम बहुत चिट्ठि-यां आयाकरतीं थी और ऐसा कोई पत्र नहीं आताथा जिसका उत्तर न दियाजाय । श्रीमतीके अक्षर बहुत स्वच्छ और पढ़नेयोग्य होतेथे । उनके अक्षरोंमें भ्रामक-ता बिलकुल न थी । आपको इतिहास पढ़नेमें बड़ा अनुराग था। धर्मके विषयमें "बाइबिल" ही आपकी प्यारी पुस्तक थी ॥

श्रीमतीको पढ़नेलिखनेमें बहुत अभिरुचि थी । इसका उदाहरण सबसे बढ़कर यह है कि, वृद्धावस्थामें आपने राजकार्यकी झंझट, कुटुंबकी उलझाहट और आप्तवर्गका शोक सहनेपरभी उर्दू पढ़ना सीखाथा । इसकार्यके लिये आगरेके एक मुसल्मान हाफिज़् अबदुलकरीम सी. आई. ई. नियत थे । श्रीमती थोड़ेही कालमें शिक्षा पाकर उर्दू भलीभाँति बोलने लगीथीं और इस बातसे उन्होंने बतला दियाथा कि उनका भारतवर्ष की प्रजापर कितना प्रेम है ॥

श्रीमतीने अपने इंग्लैंड निवास और यात्राकी पुस्तक लिखनेके सिवाय अपने प्रियपतीके चरित्र लिखनेमें सर थियोडोर मार्टिनको बहुत कुछ सहायता दीथी । सुना गया है कि, श्रीमतीरचित एक पुस्तक अभी अमुद्रित है और वह शीघ्रही प्रकाशित होनेवाली है ॥

अध्याय ५.

राजकुमारीका प्रथम नृत्य और सौंदर्य ।

जिससमय राजकुमारी आठ वर्षकी हुई ड्यूक आफ् यार्कका देहांत होगया । इनका कुमारी विक्टोरिया पर बड़ा स्नेह था इसलिये मा बेटीको बड़ा खेद हुआ । उस समय राजकुमारी यह नहीं जानती थी कि ड्यूक आफ् यार्कके मरनेसे इंग्लैंडका राज्यासन मेरे एक पीढ़ी निकट आगया है । राजकुमारी की बहन (डचेज् आफ् केंटके पूर्व पतिकी कन्या) फियोडोरी का विवाह बीस वर्षके वयमें हो इन लाइलेनवर्गके राजकुमारसे जिसकी उमर केवल ९ वर्षकी थी, हुआ । और बहन फियोडोरी के सुसराल चले जानेसे कुमारीको बहुत दुःख हुआ क्योंकि श्रीमतीका इससे परम स्नेह था ॥

सन् १८२८ में पुर्तुगालकी रानी मराया डीग्लोरिया के सन्मान में इंग्लैंडके राजा चौथे ज्यार्ज ने एक बाल (नाच) दिया । इस समयसे पूर्व कुमारी विक्टोरिया पढ़ने लिखनेके सिवाय कभी राजदर्बारमें नहीं जानें पाती थीं । दर्बारमें जानेका यह पहलाही अवसर था । बालिका पुर्तगालकी रानीका ठाट और प्रभाव देखकर दंग होगई । पुर्तुगालकी रानीके वस्त्र जरीके और आभूषण हीरे मोतीके थे किन्तु राजकुमारी विक्टोरिया बहुत सादे वेशमें थीं । दर्शक लोग दोनोंका नाच देखकर चकित होगये । मंत्रमुग्धकी तरह लोगोंसे वाह २ और शाबाश २ के अतिरिक्त कुछ भी कहते न बनपड़ा । इस समय राजकुमारीने प्रथमवार नार्फोक के ड्यूक के पुत्र लार्डफिट्जलन, सेक्स विमरके राजपुत्र

विलियम, तरुण उमराव ईसूर हेजी और जरसीके राजपुरुषोंके साथ नृत्य किया । लीहंट नामक ग्रंथकारने " प्राचीन राज्य" नामक पुस्तकमें लिखाहै कि, " होनहार रानीके प्रथम दर्शनसे हमे जो आनन्द हुआ था वह मुझे अभीतक ज्यों का त्यों याद है । वह जिस समय आइसवाटरके राजद्वारपर से अपनी समवयस्का सखीको साथ लिये आई उसे आते देखकर हमें बोध हुआ था कि, मानो कोई स्वर्ग की अप्सरा आरही है । उसकी मुखमुद्रा और छवि दर्शकके चित्तको आकर्षित किये बिना नहीं रहती थीं " ॥

क्लेरमोंटके एक झोपड़ेमें एक वृद्धा स्त्री रहती थी । उसकी बेटी मिसजेन जिसने " स्काटके उमराव" नामक पुस्तक बनाई थी। इसी मिसजेनकी माताने बालवयमें राजकुमारीको देखनेका सौभाग्य प्राप्त कियाथा । इसने एक घरू चिठ्ठीमें लिखाहै कि—" हमारी माता राजकुमारी चार्लोटको बहुत चाहती थीं । और इसी तरह उनका राजकुमार लियोपोल्डपर बड़ा प्रेम था। परन्तु राजकुमारी विक्टोरिया कुमारी चार्लोटसे बिलकुल मिलती जुलती है । मेरी माता राजकुमारी विक्टो-रियाका सौंदर्य और असाधारण उत्साह देखकर बहुत हर्षित होती थी । उनके कथनकी मेरे हृदयपर अभीतक ज्योंकी त्यों छाप अंकित है । " बाल्यावस्थामें राजकुमारीकी लावण्यमयी मूर्ति, मुखपर आनन्दकी झलक हरिणोंकीसी तेजस्वी आँखें और चित्ताकर्षक सम्भाषण तथा बुद्धिकी तीव्रताके विषयमें उस समयके ग्रंथकारोंने बड़ी प्रशंसाकी है परन्तु उन दिनों समाचारपत्रोंमें ऐसी गप्पें उड़ा-करतींथीं कि रानी निर्बल है, उनमें चलने फिरनेकी शक्ति नहीं है।" जिससमय ऐसी गप्पें उड़तीथी उसी अवसरपर कुमारी क्लेरमेण्टके मैदानमें गबड्डी लगाया करतीथी । जब लोगोंको अन्य २ बातोंमें इनकी योग्यता अच्छी तरह विदित होगई तब एकाएक ऐसी गप्प उड़ना बन्दहुआ और साथही लोगोंकी भक्ति बढ़ निकली ॥

राजकुमारी फियोडोरीके विवाहसे पूर्व ड्यूक आफ् यार्कका देहान्त होचुकाथा* इसकारण इस विवाहके पश्चात् जब माता कुमारी विक्टोरियाको लेकर यात्राको गई गावांके लोगोंने कुमारीको बहुत ध्यानपूर्वक देखकर अधिक आनन्द सम्पादन कियाथा ।

अध्याय ६.

राज्यासनकी आशा ।

जिससमय राजकुमारी विक्टोरियाका जन्म हुआ इंग्लैंडमें श्रीमतीके पिता-मह तृतीय ज्यार्जका राज्य था । एकही वर्षके अनन्तर अर्थात् सन् १८२० में राजा स्वर्गको प्रयाण करगया । उसके बड़े पुत्र चतुर्थ ज्यार्जने सन् १८२० से सन् १८३० तक राज्यकिया । दूसरे भाई चतुर्थ विलियमके राज्यारंभसेही

महारानीकी शिक्षकासे बातचीत ।

लोगोंको आशा होगई कि विक्टोरिया किसीदिन इस साम्राज्यकी स्वामिनी होगी परन्तु तृतीय ज्यार्जके सातपुत्र और तीन कन्यायें थीं। दो पुत्र बचपनमें मरगये। राजा चौथा ज्यार्ज अपुत्र मरगया। ड्यूक आफ् यार्ककी भी यही दशा हुई और चौथें विलियमके कोई सन्तान न हुई। और बातकी बातमें विक्टोरिया के भाग्यका मैदान खालीकर एक २ करके उनके पूर्वाधिकारी खसकगये। महारानीके पिता ड्यूक आफ् केंटकी मृत्यु और राजा चौथे विलियमके सन्तान नहोनेसे राजकुमारी विक्टोरियाको जो राज्य मिलनेकी आशा थी वह जबतक बालिका बारह वर्षकी न हुई उनसे छिपा रक्खी गई। इसका तात्पर्य यही था कि, राजमाता, राजा विलियम और इंग्लैंड का मंत्रिमण्डल जानता था कि शिक्षा प्राप्त करनेसे पूर्व अपक्क वयमें यदि राजकुमारीको अपने सौभाग्य की खबर हो जायगी तो उनका चित्त पढ़ने लिखने और सदाचार ग्रहण करनेमें न लगैगा। इन लोगोंका विचार सच्चा निकला और इसी परामर्शका यह फल हुआ कि, राज्यासन पर विराजने बाद संसारके अनेक उपकार करनेमें यह बालिका समर्थ हुई। संसारका उपकार और इंग्लैंडकी उन्नतिके लिये मानो परमेश्वरने राजकुमारीके सौभाग्यके आड़में अनेक पूर्वाधिकारियोंको पड़दा डालकर उन्हें उत्तम शिक्षा ग्रहण करनेका अवसर दिया था और शासनके योग्य योग्यता संपादन करने बाद एक २ करके उन लोगों को खसका दिया॥

जब राज्यासन प्राप्त करनेका समय निकट आया राजमाताने राजकुमारी की शिक्षका बेरोनेस लीजन को इंग्लैंड के राजघराने की वंशावली दिखाई। राजकुमारीको इस बातकी सूचना देनेके लिये वंशवृक्ष उनकी पुस्तक में रखदिया गया। उन्होंने पुस्तक खोलतेही अचानक उसे देखा और अपनी आशाके सुखमें मग्न होगई। इस अवसरमें श्रीमतीके पास एक दासी आई। उससे राजकुमारीने पूंछा कि "यदि वर्तमान राजा—मेरे ताऊकी मृत्यु हो जाय तो फिर राजा कौन होगा?" दासी बोली—"क्लारेंसके ड्यूक।" फिर बालिकाने पूंछा—"और उनके बाद?" दासीने कुमारीको उलझाहट में डालने के लिये कहा कि—"आपके अभी बहुतसे चाचा हैं।" परन्तु उन्होंने वंशावली दिखा कर सूचित किया कि "यहां तो ड्यूक आफ् क्लारेंस के बाद मेरे पिता है इससे निश्चय होता है कि, मेरे ताऊकी मृत्युके पश्चात् मैं ही इंग्लैंड की रानी होऊंगी।" दासी चुप होगई। राजमाताने एकाएक हर्षसे पुत्रीके हृदय

पर आघात पहुँचनेका डर कर राजकुमारीसे कहा—"बेटी, हमें पिछली बात पर भी ध्यान देना चाहिये। अभी तेरी ताई क्लारेंस की डचेज् की उमर अधिक नहीं हुई है। यदि उनके बालक होगा तो तेरा कुछ स्वत्व नहीं रहैगा। परन्तु तू मानले कि, तेरे दोनों ताऊ संतान विना मर जायँगे और तूही इंग्लैंडकी रानी होगी तो ऐसी दशामें तुझपर जो बोझा पड़ैगा उसका विचार कर और इस राज्यको रत्न समान देदीप्यमान करने और प्रजाका उपकार करने योग्यहो।"

राजकुमारीकी स्त्री शिक्षकाने एक पत्रमें लिखाहै कि, राजमाताकी सम्मतिसे उनकी पुस्तकोंमें मैंने इंग्लैंडकी वंशावली रक्खी। दूसरे दिन कुमारीने पुस्तक खोलकर मेरे समक्ष आश्चर्यपूर्वक कहा कि, मैं अब राजगादीके निकट आपहुँचीहूं। इसबातसे बहुतेरे बालक घमंडमें चूर होजातेहैं परंतु वे नहीं जानते हैं कि, इसमें कितनी विडंबना है। इसमें प्रतिष्ठा बहुत है परंतु जोखिमभी कम नहीं है। मैंने (शिक्षकाने) कहा कि "आपकी ताई एडीलेड अभी युवती है। मानलो कि उनके संतान हुई तो?" "राजकुमारी बोली अच्छी बातहै। इससे बढ़कर मेरे लिये हर्षकी क्या बात है। मैं इस बातसे निराश नहीं होतीहूं" ॥

जिस समय राजकुमारीने प्रथम बार वंशवृक्ष देखा उनका वय १२ वर्षकाथा उन्होंने हर्षसे विह्वल होनेके बदले इस बातको जानतेही अपने उत्तरदातृत्वके लिये शिक्षकासे कह दियाथा और उसी दिन उनको यह बोध होगया था कि, "इसीकारण उनकी शिक्षापर इतना ध्यान दियागयाहै। उन्होंने उससे कहाथा कि, इस वैभवमें जवाबदारीका बड़ाभारी बोझा है। मैं अब जान गई हूं कि, इसीलिये मुझे लैटिन् व्याकरण और इंग्लैंडके राज्यप्रबंधकी शिक्षा दी गई है ॥

"होनहार विरवानके होत चीकनेपात" इस कहावतके अनुसार इंग्लैंडके सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखक सर वाल्टर स्काटने पांचवर्षके वयमें बालिका विक्टोरिया को देखकर कहदियाथा कि "इनकी शिक्षा बहुत ध्यानपूर्वक होतीहै। और इनके ढंगको देखकर मानों कोई देवता इनसे कहरहाहै कि, तुम.इंग्लैंडकी रानी होगी"। जिस समय १८ वर्षके वयमें राजकुमारीने यौवनावस्थामें पैर रक्खा उनका एकान्त वास प्रथमबार भंग किया गया था। उनको बाइबलकी वारंवार शिक्षा दीगई थी क्योंकि राजमाता और गवर्नमेंटको विश्वास था कि ब्रिटिश जातिकी उन्नति करनेवाली यही पुस्तक है ॥

सन् १८३६ के २१ अगस्तको विंडसर राजभवनमें राजा चौथे विलियम् की वर्षग्रंथि का उत्सव था। उस दिन रविवार था इसलिये उत्सवमें अधिक धूम धाम नहीं की गई थी। राजमहलमें अनुमान सौ मनुष्यों की भीड़ थी। राजाके

एक ओर राजमाता डचेज् की वैठक थी । दूसरी ओर उनकी वहनें थीं । कुमारी विक्टोरिया राजसिंहासनके सामने थीं । रानीकी इच्छासे राजाके स्वास्थ्यकी मंगल-कामनाके लिये रीतिके अनुसार मद्य पियागया राजाने सब लोगोंकी मंगलप्रार्थना के उत्तरमें कहाकि"मुझको ईश्वरपर पूरा भरोसा है । मैं नौ मास वाद मरजाऊंगा । मेरी मृत्युपर रिजेंसीका प्रबंध न होगा किन्तु (राजकुमारी विक्टोरियाकी ओर इंगित करके) यही मेरी उत्तराधिकारिणी होगी । और उस व्यक्तिके हाथमें मेरा मुकुट न जायगा जो बुरीसंगतिमें पड़ाहुआहै। मैं विना आनीकानीके कह ाहूं कि, उस मनुष्यने मेरा वहुत अपमान कियाहै परंतु मैं अपनी प्रतिष्ठाके विरुद्ध कोई वर्ताव नहीं करना चाहताहूं । उन बातों में एक यहभी है कि, वह कुमारी जान बूझकर मुझसे अलग रक्खी गईहै । मेरे दर्वारमें इसे सर्वदा उपस्थित रहना चाहिये था परंतु यह विचारी इस सम्मानसे अवतक वंचित कीगईथी । आशा है कि, अवसे ऐसा काम न होने पावेगा । मैं इसे जताये देताहू कि, मैं राजाहूं । मेरे अधिकार की मानरक्षा करना अपना मुख्य कर्तव्य समझताहूं और आगेसे मैं आज्ञा देताहूं कि, राजकुमारी अपना कर्तव्य समझकर मेरे दर्वार में सदा उपस्थित हुआकरै । यद्यपि राजाने यह वात प्रेमपूर्वक कहीथी और इसमें राजकुमारीके भविष्यत् शासनका संकेत भी था परंतु मिस्टर सी वार्नेट स्मिथने अपनी पुस्तकमें लिखाहै कि, यदि यह व्याख्यान दियाजाना सत्य है तो इससे उससमय बड़ी हल-चल मची होगी।मिस्टर वार्नेटने यह बात ऐतिहासिक ग्रेवाइलके आधारपर लिखीहै उनको इस कथनमें संदेह है. परंतु उन्होंने लिखा है, कि, इस वाक्यसे रानीको वहुत दुःख हुआ । राजकुमारी रोपड़ी । समस्त उपस्थित लोग घवराउठे । और डचेज् आफ् केंटने चुपचाप वहांसे खसकजानेके लिये गाडी मँगवाई । मिस्टर बार्नेट स्मिथका कथन है कि, इसमें अत्युक्ति अधिकहै परंतु इतना निश्चय है कि, राजाका स्वभाव विगड़गया था और उन्होंने सारी बात राजमाताको इंगित करके कही थी ॥

इस घटनाके एक वर्ष पूर्व अर्थात् ३० अगस्त १८३५ को सेंटजेम्सके सर्कारी गिरजेमें केंटरवरीके प्रधानपादरी के हाथसे विक्टोरिया दीक्षितहुई थी । उससमय राजमाता, राजा रानी एडेलेड और सेक्सविमरके ड्यूक तथा डचेज् और कितनेही राजकुटुंवके मनुष्य इकट्ठे हुएथे । उक्त पादरीने राजकुमारीको समझा दिया था कि, उनपर कितने वड़े पदका बोझा पड़नेवाला है । उस अवसरपर श्रीमतीको राजाधिराज परमेश्वरकी भक्ति और विश्वासपर कार्य करनेका उपदेश दियागया था । इस बातसे राजकुमारीके वस्त्र आंशुओंसे भीगगये और अपनी माताके कंधेपर शिर रखकर वहुत देरतक सिंसकारे खाती रहीथी ॥

राजकुमारीके सिद्धान्त और उत्तमताकी एक बात और भी विदित हुईहै । जिस समय उन्होंने प्रथमबार इग्लैंडके इतिहासमें वंशवृक्ष देखा वहांकी गादीके लिये अपना निकट स्वत्व देखकर अपनी शिक्षकासे कहाथा कि–" मैं अबतक सिंहासनसे जितनी निकट अपनेको समझतीथी उससेभी अधिक निकट निकली। मैं अब अच्छी होउंगी।अब मैं जानगई कि, आप मुझे इतना ध्यानपूर्वक क्यों पढाती हो । और लैटिन् सिखानेमें आपका इतना परिश्रम क्यों है। अब मैं सब बातें अच्छी तरह जानगई और मैं अब अच्छी होउंगी" ॥

अध्याय ७.

राज्यारोहणसे पूर्वकी विशेष घटनायें ।

शिक्षा प्राप्तकर प्रवाससे विशेष अनुभव संपादनकरनेके लिये राजमाताके साथ राजकुमारीको थोड़े कालतक प्रवास कराया गयाथा । जहाँ जहाँ राजकुमारी गई प्रजाने बहुतही हर्ष और हार्दिकप्रेमके साथ श्रीमतीका आदरकिया और अभिनन्दनपत्र दिये । सन् १८३३ में आइल् आफ् वाइट्से लौटते समय एडिथस्टोन और नौरिशके मध्यमें एक पुरानी नौकाके टुकड़ेसे राजकुमारीका जहाज टकरागया । टकरातेही जहाजका एक भाग टूटगया । संडर नामक पाइंटर राजकुमारीको तुरंत उठाकर एक ओर लेगया और इसतरह उनके प्राण बचे । सब साथियोंको प्रथम बड़ी चिन्ता हुई और फिर लोगोंने हर्षकी बधाइयां दीं ॥

यात्रासे लौटनेपर राजकुमारीको बहुत भयंकर बीमारी भोगनीपड़ी । आरोग्य होनेके अनन्तर वेस्ट मिन्स्टर राबीके एक बडे जलसेमें राजकुमारी उपस्थित हुई और सन् १८३५मे उन्होंने एस्कोटमें घुड़दौडकी शर्तें और सेनाकी कवाइद देखी।

जिन दिनों राजकुमारी विक्टोरिया अपनी माता सहित केनसिंगटनके राजमहलमें निवास करती थीं सैक्सकोबर्गके ड्यूक अपने दो पुत्र राजकुमार अर्नेस्ट और राजकुमार एलबर्ट सहित यात्रा करते समय राजकुमारी के यहां आकर चार सप्ताहतक पाहुने हुए। राजकुमारी को अपने भावी प्राणनाथके दर्शन होनेका यह पहलाही अवसर था । आगत पाहुनोंका यहाँ बड़ा स्वागत हुआ । इसी अवसरपर राजकुमारी विक्टोरिया और राजकुमार एलबर्टके हृदय मंदिरमें परस्परके प्रेमने निवास किया । इसीसमयसे दोनों जानने लगे कि प्रणय क्या वस्तु है, मनहीमन दोनोंके प्रणय की तरंगें उठने लगीं और दोनोंही भावीसुखके लिये मनहीमन आनन्दसागरमें निमग्न हुए । मनके विचारों और पर-

स्परकी ताक झांकके सिवाय इस समय कुछ बातें न हुई और एक मासके तीस दिन एक घड़ीके समान बिताकर दोनों प्राणप्रिय प्राणप्रियाकी माधुरी मूर्तियां अपने २ हृदयमन्दिरमें निवासकरा वियोगका सुख अनुभव करनेके लिये अलग हुए । इनके मनोंकी उलझाहटकी किसी को खबर न हुई ॥

२४ मई सन् १८३७ ई० को राजकुमारी विक्टोरियाने पूरे अठारह वर्ष व्यतीत कर बाल्यावस्थासे युवावस्थामें पैर रक्खा । अब बालिका विक्टोरिया युवतीविक्टोरिया कहलाने लगीं। उस दिन वर्षग्रंथिके हर्षमें केन्सिंगटनका राजप्रासाद दुंदुभी और अन्यान्यनादोंसे गाजउठा । दिनभर अभिनंदनसूचक पत्रों और बधाईकी चिट्ठियों से राजभवन भरगया । राजा चौथे विलियमने दो हजारके मूल्यका एक पायनो बाजा भेंट किया। और यहभी प्रकाशित किया कि, मैं अपने निज खर्चमेंसे दश हजार पौंड वार्षिक दिया करूंगा। परंतु राजकुमारी मेरे मंत्रियोंकी सम्मतिसे कामकरैं । राजकुमारीने यह शर्त स्वीकार न की । इस महोत्सवमें लंडनके बडे २ उमराव इकट्ठे हुएथे किन्तु राजा विलियम बीमारीके कारण नही आसके । इस दिन लंडन नगरमें घर २ दिवाली हुई और राज्यभरमें उत्सव कियागया । इसी अवसरपर लंडन नगरकी सिटी कौन्सिलने राजकुमारीको एक अभिनंदनपत्र भेंट किया । इसे लेकर लंडनके लार्ड मेयर केन्सिंगटनके राजमहलमें आये । पत्रके उत्तरमें राजमाताने कहा कि–"राज्यके प्रत्येक पक्षसे हम बिलकुल अलग रहीहै । मैंने अपनी प्रियपुत्रीको प्रजाहित और राजधर्म शिखानेमें न्यूनता नही रक्खीहै । मैंने स्वतंत्रलोगोंका मुख्य कर्तव्य राजकुमारीको भली भाँति समझादिया है । राजकुमारी अब अपनी युवावस्थाको पहुँचगईहैं । मुझे आशा है कि, जो काम इसे दियाजायगा उसे यह पूर्ण कुशलतासे संपादनकरैंगी । इसका मुख्य कर्तव्य यहीहै कि–धर्म, ज्ञान और स्वतंत्रता, उद्योग प्रजाकी सम्मति और प्रजाके हितकी कामना करना" । राजकुमारीने अभिनंदनपत्रके विषयमें परम मधुरस्वर और मृदुहास्यसे कहा कि–" आपके स्नेहका मैं उपकार मानतीहूं । मेरी माताने मेरी इच्छा भलीप्रकार प्रकाशित कीहै" ॥

अध्याय ८.

राजा विलियमकी मृत्यु ।

सन् १८३०ई० में जब राजा चतुर्थ ज्यार्जका देहान्त हुआ उनके भाई ड्यूक आफ् क्लारेन्स चौथे विलियमके नामसे गादीपर विराजे । राजा विलियमके

संतान होनेकी आशा न थी इसलिये कुछ कालके पश्चात् पार्लियामटमें राज्यके भावी वारिसके विषयमें रिजेंसीविलके नामसे लार्ड लैंडहर्स्टने एक पांडुलिपि उपस्थित की। इसमें यह निश्चय किया गया था कि यदि राजा विलियम बिना संतान मरजावे तो राजकुमारी विक्टोरिया राज्यासनपर विराजे और उनकी माता उनकी रक्षाको नियत हो। इस पांडु लिपिके पास होने पर राजकुमारीकी शिक्षाके लिये ६ हजार पौंडकी जगह १० हजार पौंड नियत हुए। राजा विलियमके पट्टाभिषेकके समय राजकुमारी विक्टोरियाको उपस्थित न होनेदियाथा। इसबातकी लंडनके समाचारपत्रोंने बहुत निन्दा की और दोषका बोझा राजमातापर मढा। वे उस समयतक नहीं जानते थे कि, इस अवरोध से देशकेलिये बहुत बड़ा कल्याण होनेवालाहै ॥

राजकुमारी विक्टोरियाकी उन्नीसवीं वर्षगाँठके दिन बीमारीके कारण राजा विलियम नाचमें उपस्थित न होसके थे। मईका अंत होनेके साथही राजाकी अशक्ति बढ़गई। उनके शरीरमें श्वास लेनेकाभी बल न रहा। १८ जूनको राजाने राजद्रोहियोंका अपराध क्षमा करनेके पत्रोंपर हस्ताक्षरकिये। वह दिन वाटर्लू युद्धमें विजय पानेका था। राजाने डाक्टर चैम्बर्ससे कहा कि, भाई! आजके विजयी दिवस भरमें फिर जीना चाहताहूं। दूसरे दिन अर्थात् १९जूनके प्रभातमें राजा जागा और दिनभर ईश्वरप्रार्थना और रानीके संबोधनके अनन्तर स्मरण रक्खो कि "मैं आस्तिक राजाहूं"। कहते हुए रात्रिके दो बजे इस असारसंसारको छोड़कर उसने स्वर्गका मार्ग लिया। और ऊपर जिस बिलका वर्णन हुआहै उसके अनुसार राजकुमारी विक्टोरिया उत्तराधिकारिणी हुई ॥

राजाकी मृत्युपूर्व हेनोवरका परगना इंग्लैंडके साथ जोड़ादिया गयाथा और तबसेही इंग्लैंड और हेनोवरका राज्य संयुक्तथा। परंतु हेनोवरके राज्य नियमानुसार वहांका मुकुट स्त्रीके शिरपर रखनेकी चाल नथी. इसलिये हेनोवरका राज्य इंग्लैंडसे अलग किया गया और कम्बलैंडके ड्यूक जान अर्नेस्ट आगस्टसको वहांका राजा बनायागया। हेनोवरकी प्रजाको ड्यूकके अत्याचारोंका कष्ट हुआ और इंग्लैंडकी प्रजानें समझा। कि, इस राज्यके अलग होनेसे बहुतसा खर्चेका बोझा टलगया इसकारण उसने हर्ष किया ॥

अध्याय ९.

राज्यप्राप्तिके समाचार पाते समय विक्टोरिया का चित्र ।

सिंहासनारोहण ।

राजा चतुर्थ विलियमका स्वर्गवास हुआ । २०जूनके प्रातःकालके सूर्योदय के साथही रानी विक्टोरिया, त्रिटिशजाति और भारतवर्षके भाग्यका उदय हुआ । राजाके मरणकी शोकसूचना और रानी विक्टोरियाके सिंहासन प्राप्त करने की वधाई लेकर कैंटरवरीके प्रधान पादरी, लार्ड चैम्बर्लेन, अर्ल एलवरमैन ओर सर हेनरी हेली फाक्स विंडसर केसलसे रात्रिके २॥ वजे चलकर प्रभातके पांच वजते २ केन्सिंगटन महलमें पहुँचे । द्वारपालको जगानेके लिये किंवाडे खटखटाये, घंटा वजाया और पुकार मचाई परंतु द्वारपाल जो सुखकी गाढ निद्रामें सोरहा था न जागा । थोडी देर मार्गप्रतीक्षा करनेवाद द्वारपाल जागा । उमरावोंका संदेशा लेकर वह भीतर गया और तुरंतही लौटकर कहा कि– " राजकुमारी प्रगाढ निद्रामें मग्न है । इस समय जगानेका हमारा साहस नहीं होता है" । उन्होंने क्रोधके साथ द्वारपाल को समझाया कि–" भैया, राज्यका वहुत आवश्यक काम है । रानीको शीघ्र जाकर जगाओ" । तुरंतही राजकुमारी जागी । और हडवडीमें उठकर रात्रिके वस्त्र पहने हुए, दुशाला लपेटकर, पैरोंमें स्लीपर पहने, कंधेपर विखरेहुए केशोंसे, मंदगति और आँसूभरी आँखोंसे वाहर आई । उमरावोंका संदेशा सुनतेही अकचकागई और रोते २ कहा "आप सव मेरेलिये ईश्वरसे प्रार्थना कीजिये" । यह रुदन पितृव्यके मरण के लिये न था और न राज्य पानेके हर्षके आनन्दाश्रु थे किन्तु अपने ऊपर काम और कर्तव्यका वडाभारी वोझा पडता देखकर उसके पालन करनेकी चिन्ताकी सूचना देते थे । सुनतेही सव लोगोंने रानीके साथ मिलकर एकचित्तसे ईश्वरसे प्रार्थना की । शुभ सूचना और ईश्वरप्रार्थनाके पश्चात् सरदार वहांसे विदा हुये ॥

इसके अनन्तर रानी विक्टोरियाने प्रथम कार्य किया । वह कार्य रानीके सच्चे अंतःकरण और उदारवृत्तिका उत्तम उदाहरण है । रानीने उसी समय मृतराजाकी पत्नीके नाम एक सहानुभूति सूचक पत्र लिखा । उसका अनुवाद लिखनेकी आवश्यकता नहीं है, किन्तु इतनाही लिखना रानीके सुविचारोंको प्रकट करताहै कि श्रीमतीने उस पत्रमें रानी एडीलेडको एक स्थलपर "श्रीमती इंग्लैंडकी रानी" के नामसे संवोधन किया। इससमय एक मनुष्य खड़ा हुआ रानी विक्टोरियाका पत्र पढ़रहा था । उसने कहा कि, अव रानी एडीलेडको इंग्लैंडकी रानी लिखना उचि-

त नहीं है क्योंकि इंग्लैंडकी रानी आप हैं । उनके पत्रमें "विधवा रानी" लिखिये" श्रीमती विक्टोरिया बोलीं—" राम राम, इस दुःखिता अबला को सबसे पहले इस कष्टकी याद दिलाना मेरा काम नहीं है । मैं जानती हूं कि, ऐसाही लिखना चाहिये परंतु मैं उनका हृदय दुखाना नहीं चाहती हूं" । इस चिट्ठीमें सहानुभूति और प्रेमके साथ लिखाथा कि " आप अपने शरीरकी रक्षापर अच्छी तरह ध्यानदें और जहाँतक इच्छाहो सुखसे विंडसरके राजमहलमें निवास करैं। वह आपका ही है" ॥

प्रातःकालके नौ बजे इंग्लैंडके प्रधान अमात्य लार्ड मेलबोर्नने रानीके महलमें आकर दोघंटेतक राजकीय गुप्तबातों में संभाषण करनेबाद प्रिवीकौंसिल जो आजकल केबिनेट (मंत्रिमंडल) के नामसे प्रसिद्ध है उसे एकात्रित करने का निवेदन किया । इतिहासवेत्ता कार्लाइलने लिखाहै कि "एक तरुणी बालिका जिसने अभीतक संसारका राग रंग नहीं देखा है, जो अभीतक नहीं जानती है कि, राज्यप्रबंध क्या वस्तु है उसने इतनी त्वरा, गांभीर्य और उत्साहसे काम किया कि जिससे उस समय और आज के मनुष्यों को आनन्दयुक्त आश्चर्य हुवा " रानीने तुरंत उठकर मेलबोर्नकी प्रार्थना को स्वीकार किया और एक सदाके अनुभवी राजपुरुषकी तरह कार्य आरंभ करदिया

महारानीका शपथ लेते समयका चित्र ।

२० जूनको दुपहरीमें केन्सिंगटनमें मंत्रिमंडल इकट्ठा हुआ। प्रिवीकौंसिल की ओरसे रानीके नामका अभिनंदन पत्र पढ़ाजानेके अनन्तर श्रीमती की ओरका ढिंढोरा बाँचकर सुनाया गया। श्रीमती शुभमुहूर्त्तमें सादे शोकवस्त्रोंसे अलंकृत होकर प्रथमबार सिंहासनासीन हुई और विराजतेही मंजुल, स्पष्ट और गंभीर शब्दोंमें कौंसिलको निम्नलिखित प्रस्ताव पढ़कर सुनाया:—

' मेरे प्रिय ताऊ श्रीमान् राजासाहबकी मृत्युसे प्रजाको बहुत बडा दुःख और शोक हुआहै। और इसी कारणसे मुझपर राज्यभार आपड़ा है। यदि मैं यह न जानतीकि इतना बडा काम मुझे ईश्वरकी इच्छासे नहीं सौंपागया है और सर्वशक्तिमान् परमात्मा इस कार्य के संपादन करनेमें मेरी सहायता न करेगा. तो इस जोखिमके कामके बोझेसे, जो अकस्मात् मेरे ऊपर आपडा है मैं दबजाती और साथही मुझे यदि यह विदित न होता कि, प्रजाके कल्याणके लिये उसकी ओरसे आश्रय न मिलैगा। मेरी प्रजाके प्रेम और भक्तिपर तथा पार्लियामेंटकी बुद्धिमानीपर मुझे पूरा भरोसाहै। मुझको बहुत बडा लाभ यह हुआ है कि, मैं जिस गादीपर आसीन हुई हूं उसके पूर्वाधिकारी अपनी प्रजा की स्वतंत्रताके स्वत्वोंके लिये बडा गर्व रखतेथे और उनकी मुख्य इच्छा यही थी कि, देशको आईन के बंधनोंकी सुउन्नति (Amelioration) करना और प्रजाके सामान्य सुखपर भलीप्रकारसे ध्यानदेना॥

"मेरी प्रिय माताकी रक्षामें रहकर मैंने जो इंग्लैंड में शिक्षा प्राप्त की है उससे मैं सीखगईहूं कि देशकी नीति का किस प्रकार आदर करना और उस से क्योंकर प्रेमरखना चाहिये। मैं देशके धर्मका संरक्षण करूंगी सब लोगों को यथेच्छ रीतिपर धर्मका सुखभोगने दूंगी और सब जाति और धर्मवाली मेरी प्रजाके हितमें सबप्रकारका श्रम करूंगी" ॥

रानीने जब इस व्याख्यानको समाप्त किया तो फिर धर्मसंबंधी प्रतिज्ञा की और उनके दोनों चचाओंनेभी सौगंद खाये। इसके बाद दोनोंने रानीके पैरों पडकर उनके हाथका चुंबन किया। रानीने उन दोनोंके सम्मान में उनके हाथ चूमे। और ड्यूक आफ् ससेक्सका आदर करने के लिये सिंहासन पर से खड़ी होगई। रानीके गंभीर भाव और इस समय यथातथ्य कार्य करनेसे ड्यूक आफ् वेलिंगटन और पील आदि राजपुरुष चकित होगये। रानीके व्याख्यानमें सुउन्नति (Amelioration) शब्दका प्रयोग हुआथा इसपर लार्ड ब्रूहमने तर्क किया। उनका कहना यह था कि, यह शब्द अशुद्ध है। सर राबर्ट पीलने उनका यथातथ्य उत्तर दिया। इस प्रश्नोत्तरसे दर्बारमें कुछ हल चल

मचगई परंतु श्रीमतीके बर्तावमें बिलकुल अंतर न आया । समस्त काम काजमें उन्होंने इतना गांभीर्य दरशाया कि, ड्यूक आफ् वेलिंगटनको स्वयं कहनापडा कि "मुझको अपनी लडकीकी ओरसे भी इससे अधिक गांभीर्यकी आशा नहीं है" । राजकर्मचारियोंने सरकारी कागजोंपर "एलेक्जेंड्रिना विक्टोरिया" नाम छपवायाथा किन्तु रानीने अपने हस्ताक्षरमें केवल "विक्टोरिया" लिखा इसलिये काम काजमें थोडी गड़बड़ मची और उन कागज़ों की काटछांट करनापड़ी ॥

परमेश्वर की कृपासे २० जूनको सेंटजैम्सके महलमें राजकुमारी विक्टोरिया ग्रेटब्रिटेन और आयर्लैण्डकी रानीके नामसे प्रतिष्ठितहुई । रानीके दर्शनके लिये राजमार्ग लोगोंके झुंडोंसे भरगया । घर २ आट्टालिका २ खिड़की २ और गोख २ में स्त्री पुरुष बालक युवा युवती और वृद्धवृद्धाके ठाठ लगगये । वृक्षोंकी डालियां और मकानके छप्परोंतकमें लोगोंको बैठनेकी जगह न मिली । आयर्लैण्डके राजद्रोही लोगोंकी मुखश्री देदीप्तहुई । उनके चित्तपरसे दुर्विचारोंने पलायन किया और बाघ बकरी एक घाट पानी पीनेकी भावी आशामें लोग परस्परका द्वेष और क्रोध भूलगये । दोबजे तोपखानेसे १०१ तोपोंकी सलामी कीगई । कानकी चैलियां उडाने वाले हर्षनादसे रानीको प्रजाने बधाई दी । ऐसे समयमें रानीने लोगोंको दर्शनदिया । यद्यपि उस समय अधिक कामकाजसे श्रीमती थकगईथी और उनके वस्त्रालंकारभी ताऊकी मृत्युके कारण शोकसूचक और सादेथे परंतु उन श्रमबिन्दुओंमें सौंदर्य और सादगीमें शोभाकी झलकथी । दर्शनकरतेही उच्चस्वरसे प्रजाने

"परमेश्वर रानीकी रक्षाकरो"

का जय घोष किया । इस गीतके समाप्त होतेही सर विलियम उडले और ड्यूक आफ् नार्फोकने भीडके समक्ष आकर राजा चतुर्थ विलियमके मृत्युसम्वाद और श्रीमती रानी विक्टोरियाके सिंहासनारूढ होनेका ढिंढोरा उच्चस्वरसे पढ़कर सुनाया । ढिंढोरा सुनतेही प्रजाने फिर "परमेश्वर रानीकी रक्षाकरो" की गर्जना करी । उस समय रानीकी आँखोंमेंसे आँसुओंकी दो चार बूँदे निकलपडीं ॥

साधारण राजरीतिसे छुट्टीपातेही रानी विक्टोरिया दौडीहुई अपनी प्रियमाताके कमरेमें गई और उनकी गोदीमें बैठकर आँसूकी नदी बहानेलगीं । माताने नम्रतासे पुत्रीको समझाया तब रानी बोलीं:—

"माता मैं कदाचित् अबभी भरोसा नहीं करतीहूं कि, मैं अब इंग्लैंडकी रानी होगईहूं परंतु मैं सोचतीहूं कि मैं रानी होगई। क्या मैं नहीं हूं" ?

माताने उत्तर दियाः—"मेरी प्यारी! तू जान्तीही है कि, तू रानी होगईहै । अभी तैंने जो दृश्य देखाहै उसीसे तुझे इसबातका विश्वास होगया होगा" ॥

रानीः—"अम्मा, जबतक मुझको अपने स्वभाव बदलनेकी टेव न पड़जावे और आपकी छोटीसी बालिका इस बृहत् राज्यकी वास्तविक स्वामिनी न बने मैं आपसे एक बात मांगे लेतीहूं। मेरी प्यारी माता मैं चाहती हूं कि, आप मुझे अभी दोघंटेतक एकांत रहनेकेलिये छुट्टीदे।" राजमाता इस प्रार्थनाका आशय समझगई और उसी दिनसे उन्होंने अपनी कन्यासे अलग होनेका आरंभ किया रानीने उस समय माताके बाहर जातेही ईश्वरसे प्रार्थना की ॥

रानी विक्टोरियाके होनहार प्रियतम राजकुमार एलबर्ट उन दिनों बोन नगरमें पढ़तेथे । उनके पास यह शुभसंवाद पहुँचा । समाचार पातेही उन्होंने श्रीमती-को एक पत्र लिखा उसका आशय यह हैः—

२६ जून सन् १९३७ ई०

"अब आप यूरोपके एक परम बलाढ्य राज्यकी स्वामिनी हैं ।आपके हाथमें लाखों मनुष्योंका सुख दुःख है । परमात्मा आपको इस बृहत् और कठिन कार्यमें सहायता दे। मुझे आशा है किं, आपका शासन दीर्घ, हर्षप्रद और प्रभावशाली होगा। और आपको अपने परिश्रमके बदलेमें प्रजाकी ओर से धन्यवाद और प्रेम प्राप्त होगा" राजकुमारकी इससमय विलक्षण दशा थी । उनके चित्तपर प्रियासे शी-घ्र समालाप करनेकी उत्कंठा बढ़गईथी और वह अनेक प्रकारके सोच विचारमें निमग्नथे किन्तु रानी और राजकुमारके मित्रोंने दोनोंकी आन्तरिक इच्छाका इस समय प्रकाशित होना उचित न समझा । और मित्रोंके परामर्शसे राजकुमार एलबर्ट अपने भाई सहित स्विट्जर लैंड और इटालीकी ओर चलेगये ॥

रानीके राज्यारंभसेही उनपर प्रजाके प्रेमका इससे बढ़कर क्या उदाहरण होसकता है कि एकबार किसी राजद्रोही दुष्टने कहदिया कि "इस बालिका रानीको गादीसे उतारकर ड्यूक आफ् कम्बरलैंडको बिठाओ" इसपर ओकोनलने जोशमें आकर उसको इतना डांटा कि, उसके होश उडगये । मिस्टर ओकोनल बोले—"जिस युवतीसे इंग्लैंडका राज्यासन अभी शोभित हुआहै उसके प्राण, प्रतिष्ठा और शरीर की रक्षाके लिये मैं इसीदम ५ लाख वीर आयर्लैंडवासी सैनिकोंको इकट्ठे करसकताहूं" ॥

राज्यप्राप्तिके साथही साथ प्रजाकी रानीपर भक्ति बढ़ने के अनेक कारणथे । उनमेंसे एक यह भी है कि वह दया करनेमें अप्रतिमथीं। राज्यप्राप्तिके प्रथम वात्सरि-क उत्सवके बाद ड्यूक आफ् वेलिंगटनने एक पत्र उपस्थित किया उसमें एक सैनिकको जिसने कुछ सेनासंबंधी अपराध कियाथा फाँसी देनेकी

इस समयके नियमानुसार आज्ञा माँगी गईथी । रानीने पत्र सुनतेही पूछाः- "क्या इस सैनिक की ओरसे बचाव के कुछ प्रमाण नहीं हैं"? इसपर वेलिंग्टनने कहा-"जी हां यह बहुत बुरा मनुष्य है इसे अवश्य दंड मिलना चाहिये"। इसपर रानीने ड्यूक से आज्ञा की कि "इसपर एकबार फिरभी विचार करलो" ड्यूक बोले- "सरकार, मैं पहलेही प्रार्थना करचुका हूं कि, यह सेना में रखने योग्य नही है परंतु कोई २ कहते हैं कि, इसका घरू बर्ताव अच्छा है"। सुनकर रानीने उस पत्र पर लिखदिया कि " इसका अपराध क्षमा किया गया " उसी दिनसे पार्लियामेंटने जानलिया कि, रानीकी बडी दयालु प्रकृति है। इसलिये उसने फाँसी की आज्ञाका कार्य रानीसे लेकर रायल कमीशनको दे दिया ॥

अध्याय १०.

शासनारंभ ।

राजा विलियम लिबरलपक्षका था परंतु इस बातसे सदा डरा करता था कि कहीं प्रजामत बल न पकड बैठे इसलिये दोनों दलोंसे मिलजुलकर चलता था। उसके समयमें मंत्रिमंडलभी लिबरलथा किन्तु राजाके संकीर्ण विचारके कारण सदा मन खोलकर कोई काम नहीं करता था। राज्यपरिवर्तनके साथ ही मंत्रिमंडलने चमक दिखाई। कन्सर्वेटिव दल नरम होगया क्योंकि रानीकी माता और रानी दोनों लिबरल मतके थे। इससे जो समाचारपत्र लिबरल दलके थे उन्होंने जयघोष किया और प्रतिपक्षी कुढ़ने लगे। प्रधान अमात्य लार्ड मेलबोर्न मध्यस्थ बनकर रानीको अपनी ओर करनेके लिये जबतक कोई प्राइवेट सेक्रेटरी नियत न हो नित्य उन्हें कामकाज समझाने जाया करते, लिबरल और कन्सर्वेटिवके भेददिखाने और समस्त झंझटकी बातें सुझाया करते थे। इनकार्यों के लिये कभी २ उन्हें दिनमें चार पांच बार तक मिलना पडता था। यह बात ड्यूक आफ् वेलिंग्टनको पसंद नथी परंतु लार्ड मेलबोर्नकी चालसे वह कुछकर नहीं सकते थे ॥

रानीने सिंहासनपर विराजतेही लार्ड डरहामको जी. सी. बी. की उपाधि दी। यह कार्य उन्होंने माता, शिक्षका और लार्ड मेलबोर्नकी प्रेरणासे किया। लार्ड मेलबोर्न सदा श्रीमतीको अच्छी सलाह दिया करते थे और रानी उनपर बडी दया रखती थीं। उनपर रानीका पूरा भरोसा था परंतु सदा उन्हीके कहनेके अनुसार नहीं चलतीं थीं किन्तु स्वतंत्रतासे अपनी सम्मति दिया करतीं थी ॥

अबसे श्रीमती बकिंगहामके राजप्रासादमें रहने लगीं। १३ जुलाईसे वहां रहना आरंभकर ४ दिन पीछे पार्लियामेंट विसर्जन किया। जिस समय वह बकिंगहाम महलसे पार्लियामेंट भवनको गई राजमार्ग में लोगोंकी भीड़से तिल-धरनेका स्थान न था। प्रजाने रानीकी जयघोषणाकर हर्ष प्रकट किया। दर्बा-रमें पहुँचतेही उमरावोंने झुक २ कर सलाम किया। रानीने आसन लिया और सबलोग खड़े रहे। उस समय श्रीमती श्वेत साटिनका गौन पहने हुएथी। गार्टर क्रास कंधेपर लटकता था। मस्तकपर रत्नजटित मुकुट और गलेमें हीरेका हारथा। सिंहासनपर विराजतेही लार्ड मेलबोर्नने कानमें कहा " लार्ड लोगों को बैठनेकी आज्ञा दीजिये क्योंकि विना आज्ञा ये बैठेंगे नहीं " रानीने उमरा-वोंसे कहा– " मेरे लार्डो बैठो "–सब लोगोंके यथा स्थान बैठते ही श्रीमतीने अपना प्रथम व्याख्यान पढ़कर सुनाया। उसका अंतिम वाक्य यह था–"परमे-श्वरकी कृपासे मैं अपने शिरका बोझा उठासकूंगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि, वह मेरा सहायक होगा। मैं धार्मिक और सांसारिक कार्योंकी रक्षा करूंगी। बहुत उन्नति करूंगी, सबको समान गिनूंगी और मेरी इस योग्य इच्छाके लिये पार्ली-यामेंट सहायता देगी" वस्तुतः अंत समयतक श्रीमतीने अपने वचनोंका पालन किया और इसीकारणसे उनका दीर्घ शासन काल यशस्वी कहलाया। इस व्याख्यानको उन्होंने बहुतही मधुर और उच्चस्वरसे सुनाया। सुनकर श्रोता-गण दंग होगये। फेनी केम्बल नामक ग्रंथकार जो उस समय उपस्थित था उसने लिखाहै कि "जिससमय रानीने व्याख्यानके आरंभ में संबोधन करनेके लिये " मेरे लार्ड और शिष्ट पुरुषो " कहा सभाका सन्नाटा एक ऐसे मृदु और मंजुल स्वरसे भंग होगया जिसे एकवाद्यकी उपमा दे सकते हैं"। उस समय रानीका सौंदर्य रतिको लज्जित करता था। तुलसीदासजीकी–"सुंदरता कहँ सुन्दर करही। छवि गृह दीपशिखा जनु बरही"–चौपाई आँखके सामने नाच रही थी॥

राज्यासनपर विराजतेही श्रीमतीने लार्ड मेलबोर्न से कहा कि " मुझे अपने पिताका ऋण चुकाना है। मैं इस कार्यको प्रथम करूंगी। यह मेरा पवित्र धर्म है"। यह बात कहते २ ही रानीकी आँखोंमें आँसू डबडबा आये। कोमल कपोलोंपर जलकी धारा बहने लगी और गला भर आया। ड्यूक आफ् केंट बडे उदार परोपकारी और खर्चीले थे। उनको वेतन बहुतही थोडा मिलता था इसकारणसे उनको ऋण होगया था। जबतक श्रीमतीने पिताका ऋण न चुकाया उनके चित्तको चैन न हुआ। पिताको ऋण फिटजू

विलियम और डनडास नामके दो उमरावोंका देना था। रानीने अतिविनीत-भावसे पत्र लिखकर उन्हें धन्यवाद देते समय कहा कि "आप लोगोंने इतने समयतक धैर्य रक्खा जिसकेलिये मैं बहुत उपकृत हूं"। ऐसाही पत्र उन्होंने पिताके मित्रोंको लिखा था॥

शासनारंभके पश्चात् अनेक प्रकारकी गप्पें उडने लगीं। कितनेही लोग कहनेलगे कि रानीमें दम नहीं है। वह अपनी सखी बेरनस्लेज़की सलाहसे चलती हैं और कोई कहता था कि, लार्ड मेलबोर्नही उनके पास कर्ता धर्ता हैं। ऐसी गप्पें उडने का एक कारण यह मानाजाता है कि, राजा चौथे विलियम के कृपापात्र सरजान कानराय पर रानीका अचानक कोप हुआ। यद्यपि इसका कारण कुछभी प्रकाशित नहीं हुआ परंतु लोगोंने अनुमान किया कि रानीकी सखी बेरनस्लेजसे उसकी शत्रुता थी। कितनेही लोगोंका कथन यह है कि, राजा विलियमने राजमाता डचेजूसे भरे दर्बारमें जो कटुवचन कहे थे वे इसीकी प्रेरणासे थे और इसीकारण विक्टोरिया सरजान कानराय पर अप्रसन्न हुई। वास्तवमें बात यह है कि, ये गप्पें मिथ्या हैं और सरजान कानराय अपनी इच्छासे ही अलग रहा था॥

लार्ड मेलबोर्नका रानीपर बहुत बडा प्रभाव था। ग्रेविलने लिखाहै कि "रानी-केवल राजकाजमें ही मेलबोर्न पर भरोसा नही रखती थीं किन्तु साधारण कामों-मेंभी उनकी सम्मति से चलती थी"। एकबार किसी व्यक्तिने अपनी पुस्तक रानीके समर्प्पण करनेकी इच्छासे आज्ञा मांगी। रानीने कहा कि "मैं विना इस पुस्तकका स्वरूपजाने इसबातको स्वीकार न करूंगी"। और जांचकेलिये पुस्तक मेलबोर्न को देदी। उन्होंने पुस्तक देखकर कहदिया कि "इसका समर्पण स्वीकार करना उचित नहीं है। बस रानीने पुस्तक लौटादी"। लोग चाहे जो कहैं परंतु इस अध्याय में लिखी हुई घटनाओंसे मेरी समझमें यह सिद्ध नहीं होताहै कि, रानी मेलबोर्नके हाथका खिलौना थीं अथवा जैसे उनकी सखी सम्मति देतीं थीं वैसेही चलतीं थी॥

एक दिन राजघरानेकी एक प्रतिष्ठित स्त्री रानीसे मिलने आई। उसे नियत समयसे आनेमें कुछ देरी होगई थी। लेडीने श्रीमतीसे क्षमा माँगकर कहा कि "मुझे भय है कि, मैंने आपको बहुत देरतक रोक रक्खा।" रानी बोलीं—"निस्संदेह! दश मिनट और अब मैं चाहतीहूं कि ऐसीबात आगेसे कभी न होनेपावे" इतना कहतेही लेडीके होश उडगये। घबराहटमें उसके कंधेसे शाल गिरगई। रानीने जानलिया कि, मेरे कथनसे इसके चित्तपर आघात पहुँचाहै इसलिये उन्होंने

उसकी शाल अपने हाथसे ठीक करके कहा कि "अस्तु, जो हुआ सो हुआ । अब मुझे आशा है कि, हम अपना काम यथासमय करलेंगे" ॥

रानीके शासनके विषयमें जो गप्पें उडरहीथी उनमें कहाँतक सत्यता है और लार्ड मेलवोर्नका उनपर कितना प्रभावथा इसवातका निर्णय होनेकी कोई सामग्री नहीं है । लोग चाहें जितनी गप्प उडातेथे कि, रानी काम करनेमें अशक्त है और जो कुछ मेलवोर्न करतेहैं वही होताहै । किन्तु यह विश्वासनीय मार्गसे जानागया है कि वह जितने पत्र श्रीमतीके समक्ष उपस्थित करतेथे उनपर अच्छी तरह प्रश्न किये और उनकी देखभाल किये विना श्रीमती कभी हस्ताक्षर नहीं करतीथीं । एकवार किसी आवश्यक काग़ज़पर मेलवोर्नने अक्षरकरानेका हठकरनेके साथही कहाथा कि, यह पत्र राज्यके वहुतलाभका है परंतु रानीने स्पष्ट उत्तर देदिया कि, "चाहे जैसा लाभदायक हो किन्तु जवतक मैं अच्छीतरह समझ न लूंगी अक्षर कदापि न करूंगी"।कुछभीहो इतना अवश्यहै कि, लार्ड मेलवोर्नसे रानीने राजकार्य की वहुत शिक्षापाई थी और वह उनका सबसे अधिक सम्मान करती थी ॥

अध्याय ११.

गिल्डहाल का दरबार और पहली पार्लियामेंट ।

राज्यासनके प्रथम वर्षमें सितंवर की २८ तारीख़को विंडसरके मैदानमें सेना-की क़वाइद हुई । मैदान दर्शकोंसे भरगया। पैररखनेकीभी जगह न रही । इससमय रानीनें पुरुषोंकीसी सैनिक वरदी पहनकर लोगोंको दर्शन दिये । पुरुषके वेशमें स्त्री का सौंदर्य एक अद्भुतप्रकारका देखपडता है । साडीकी जगह टोपी और गौनके वदले कोट, हाथमें सुंदर सुवुक पंखेके स्थानमें शत्रुका मदमर्दनकरनेवाली किरिचको देखकर वोधहोताथा कि, मानों शृंगाररसने विश्वविजयकेलिये वीरता-के चिह्न धारणकिये हैं ॥

सदाके नियमानुसार रानी विक्टोरियाके शासनमें लार्ड मेयरके गिल्डहालवाले दर्वारका पहला अवसर आया । ९ नवंबरको शुभसमयमें रानीने वकिंगहाम महलसे गिल्डहालको प्रयाणकिया । राजमार्गके दोनों ओर दर्शकोंकी भीड़ लगगई । आप चार घोड़ेकी गाडीमें सवार थी । श्रीमतीका गौन उठानेका काम सदरलैंडकी डचेज़को दियागया था और एलविमोरलके अर्ल गाड़ी हांकते थे । श्रीमतीने पीले रंगके वस्त्र पहनरक्खे थे, उनमें रुपहरी तारे चमकते थे और शिरका मुकुट अपनी चमकसे सुंदर केशोंको अधिक चमका रहाथा । सवारी निकलतेही गिर-

नोंमें घंटानाद हुआ । और लोगोंने उच्चस्वरसे "रानी विक्टोरियाका जय" का हर्षनादकर आकाश व्याप्त किया । हाट बाट, ध्वजा पताका और तोरणोंसे सजायागया था । जगह २ रानीका सुंदर चित्र विराजमान था । लोगोंका हर्षनाद सुनतेही रानीने बडे विनीतभाव, हास्यवदन और गंभीर आकृतिसे लोगोंसे सलाम किया । मार्गमें रानीके स्वागत चिह्न देखकर श्रीमती हर्षित थी । इतनेही में प्रधान सेनाध्यक्ष ड्यूक् आफ् वेलिंगटनने रानीके सत्कारमें "हुर्रे २" की गर्जना की । टेम्बल बारपर पहुँचतेही नागरिकोंने आपका स्वागत किया । नगरमें प्रवेश करतेही एक एल्डरमैन (पुराध्यक्ष) विचित्रप्रकारपर घोडेसे गिरगया । हँसीसे भीडमें कहकहा मचगया । चपल सवार लोगोंके चंचल चित्तको शांत करनेकेलिये ऐसी फुरतीसे घोड़ेपर फिर चढ़ा कि लोग चकित होगये । हँसीकी जगह सन्नाटा छागया । टेम्बल बारके पास आनेपर लार्ड मेयरने लण्डन नगरकी ओरसे तल्वार भेंटकी । रानीने तल्वार अपने हाथमें लेकर थोडी देरमें लौटादी ।

श्रीमतीकी सवारी बडेठाटके साथ सेंटपालके गिरजेके निकट पहुँची । क्राइस्ट कालेजके विद्यार्थियोंने श्रीमतीका रथ खडाकर आपके अभिनन्दन पत्र दिया । विद्यार्थियोंके मुखसे "ईश्वर रानीकी रक्षा करै" सुनकर रानीने कालेजके प्रिन्सिपालको धन्यवाद दिया । श्रीमतीके गिल्डहालके निकट पहुँचतेही राजपुरुषोंने स्वागत किया । रानीजी गाड़ीसे उतरकर दर्बारमें गई । सिंहासन पर विराजतेही गीतवाद्य होनेलगे । भोजनारंभ हुआ । कार्मार्थन परगनेकी टिवीनदीमेंसे एक लँगडे मल्लाहने सोलोमन नामकी मछली, जिसकी इंग्लैंडमें बडी चाव है भेटके लिये डाकद्वारा भेजी थी और लार्ड मेयरसे निवेदन किया था कि मेरी प्रीतिपूर्वक भेटको श्रीमतीकी टेबलमें स्थान मिलना चाहिये । वही मछली रानीके भोजनमें रक्खी गई । भोजनारंभसे पूर्व सब लोगोंने एक साथ उच्चस्वरसे रानीकी मंगल कामनामें स्वास्थ्यका मद्यपान किया । इस अवसरपर रानीजी एक बात भूल गईं । एक व्यक्तिने ऊँचे स्वरसे पुकारकर इस भूलका संशोधन किया । और उसीके कथनानुसार लंडन नगर और लार्ड मेयरकी सलामतीका प्रकाशकर भोजनारंभ कियागया । परंतु नगरकी सलामतीके लिये जो मद्यका प्याला भराथा वह एकाएक टूटगया और उसमेंसे मद्य रानीके शरीरपर गिरगया । लोगोंके मन खिन्न होगये । इस भोजनमें चालीस लाख रुपयेकी रकाबियाँ इकट्ठी हुई थीं । आनन्दपूर्वक भोजन समाप्त हुआ और रात्रिके साढ़ेआठबजे रानी बिदा हुई । लार्ड मेयर फाटकतक पहुँचाने गये । श्रीमती उनसे हाथ मिलाकर अभ्यर्थनाकेलिये धन्यवाद दिया । जाते-

समय नगरवासियोंने जैसा सत्कार किया था वैसाही लौटतीवार किया । श्रीमती ने लार्डमेयर तथा सर जान् कोवेनको बेरोनेट, सर् मोजिजमोंटफ़ेर और सर जान केरलको नाइटकी पदवी दी। सर् मोजिज़से पहले किसी यहूदीको उच्च उपाधि नही मिलीथी इसकारण इनके पदवी पानेसे लोगोंको निश्चय होगया कि, श्रीमती ईसाई और यहूदियोंका द्वेष मेटना चाहतीहैं ॥

राजकार्यसे छुट्टी पानेपर रानी अपनासमय गान,पुस्तकावलोकन, समाचारपत्र पढ़ने, चित्रकारी करने, घोड़े दौड़ाने और सैर करनेमें बिताती थी । इटालियन गायनसे श्रीमतीको बडा प्रेम था । चित्रकलामें वह बड़ी प्रवीणा थी । कभी २ वह अपने संबंधियों और भाई बंधुओंको बुलाकर भोजदिया करती थीं । उससमय उन लोगोंसे कहती कि " मैं अभी रानी कहलाने योग्य नहींहूं, क्योंकि मेरी उमर कमहै" इससमय इनकी ऊँचाई पांच फुट दो इंच थी परंतु राजरथपर बैठकर बाहर निकलते समय अच्छी लंबी दिखलाई देती थी ॥

इसी अवसरमें रानी और राजमाताका वध करनेकी धमकी देनेके अपराधमें जर्मनी निवासी 'स्टवर' नामक व्यक्ति पकड़ागया। यह पागल निकला।४नवंबरको जब श्रीमती अपनी मातासहित सेंटजेम्सके बर्डकेज वाक स्थानको गाड़ीपर सवार-होकर जारही थी दूसरे एक व्यक्तिने गाडीके बराबर आकर घूँसा उठाया और बहुतसी गालियाँ देनेकेसाथ कहा कि 'मैं, तुम और तुम्हारी माको गादीसे उतार दूंगा'। यह कहकर भागाजाता था परंतु तुरंतही पकड़लिया गया। पकड़नेपर विदितहुआ कि, यह जान गुड नामका पागलहै ॥

२० नवंबरको श्रीमतीने प्रथमवार पार्लियामेंट खोली । पार्लियामेंट भवन-में जाते समय मार्गमें रानीका बडा सत्कार हुआ । रानीने लार्ड सभाकी गादी-पर विराजकर लार्ड चैंसलरसे अपना प्रतिज्ञापत्र पढ़वाया । इसकेबाद पार्लियामेंटमें राजकुटुंबके लोगोंके वेतनकी लिस्ट पेश हुई । इसके अनुसार रानीजीको राजकोषमेंसे ३८॥ लाख रुपया देना निश्चय हुआ । इनमेंसे भोजनखर्चके ६ लाख रुपये, घर खर्चेके १३१२६००), और कामके लिये १७२५०००) तथा राजमहलकी रक्षाकेलिये १३२०००) नियत हुए । और फुटकर कामोंकेलिये ८०४००) ठहरे । इस प्रस्तावका मिस्टर जोजेफ़ ह्यूमने विरोध किया और कहा कि, इतना खर्च करना उचित नहीं है । परंतु उनका विरोध किसीने न माना । राजमाताके खर्चेमेंभी अस्सी हजार रुपयेकी वृद्धि कीगई ।

अध्याय १२.

राज्याभिषेक ।

रानी विक्टोरियाके सिंहासनारूढ होनेके बाद एकवर्षतक मृतराजाका शोक पालागया । पट्टाभिषेककी तैयारीकेलिये बहुत दिन पहलेसे धूम मच गई । इस शुभ अवसरपर राज्यकर्त्ताका ओष्ठचुंबन करनेकी वहांके उमरावोंमें चाल है । लोगोंका अनुमान था कि इससमयकी राज्यकर्त्री स्त्री है इसलिये यह नियम उठादिया जायगा परंतु यह रीति ज्यों की त्यों बनी रही । इसकार्यमें रानीके चाचा और अन्य सर्दारों की गिनती छःसौके लगभग पहुँचनेवाली थी । इस क्रियामें रानीके शिरको हाथसे छूना और उनके गालका चुंबन करनाही कार्य था । परंतु अधिक लोगोंने इस कार्यको न किया । रानीका प्रथम सिक्का जिसमें रानी विक्टोरियाका चित्र था १४ जुलाईको प्रथमबार ढालागया। और राजा चौथे विलियमका राजमुकुट बहुत भारी था इसलिये उसे तोडकर नये शिरेसे बनाया गया। इस मुकुटमें १ विशाल हीरा, १बडा नीलम, १६ छोटे नीलम ११ पन्ने १२४६ पुखराज१४७ चपटेमणि ४ मोती बडे और२३ छोटे मोती जडेगये। राजा पंचम हेनरीने एजिनकोर्टके रणक्षेत्रमें एक बडा हीरा प्राप्त किया था। वही इसके बीचमें लगाया गया । राजाका मुकुट ७ सेरका था किन्तु इसका बोझा केवल तीनसेर हुआ । इस मुकुटके बनवानेमें कुल १ करोड १२ लाख ७६ हजार रुपया व्यय हुआ। यह रंडलबिज नाम जौहरी की मार्फत बनायागया था। उन्होंने तैयार करनेबाद जब इसका प्रदर्शन किया तब दर्शकोंकी बड़ी भीड़ इकट्ठी होगई थी। इस मुकुटकी प्रशंसामें राजकवियोंने काव्य निर्माण किये थे और इस उत्सवपर विशेष प्रकार से पदक राज्यकी ओरसे बाँटे गये थे ।
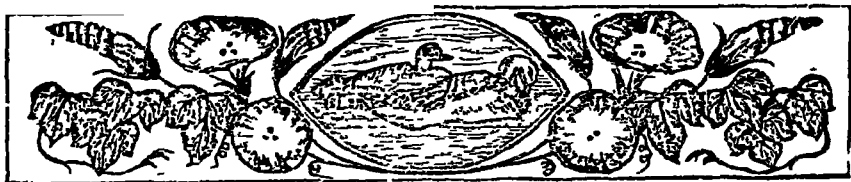
महारानीका राज्याभिषेक ।

इंग्लैंड राज्यका सिंहासन ।
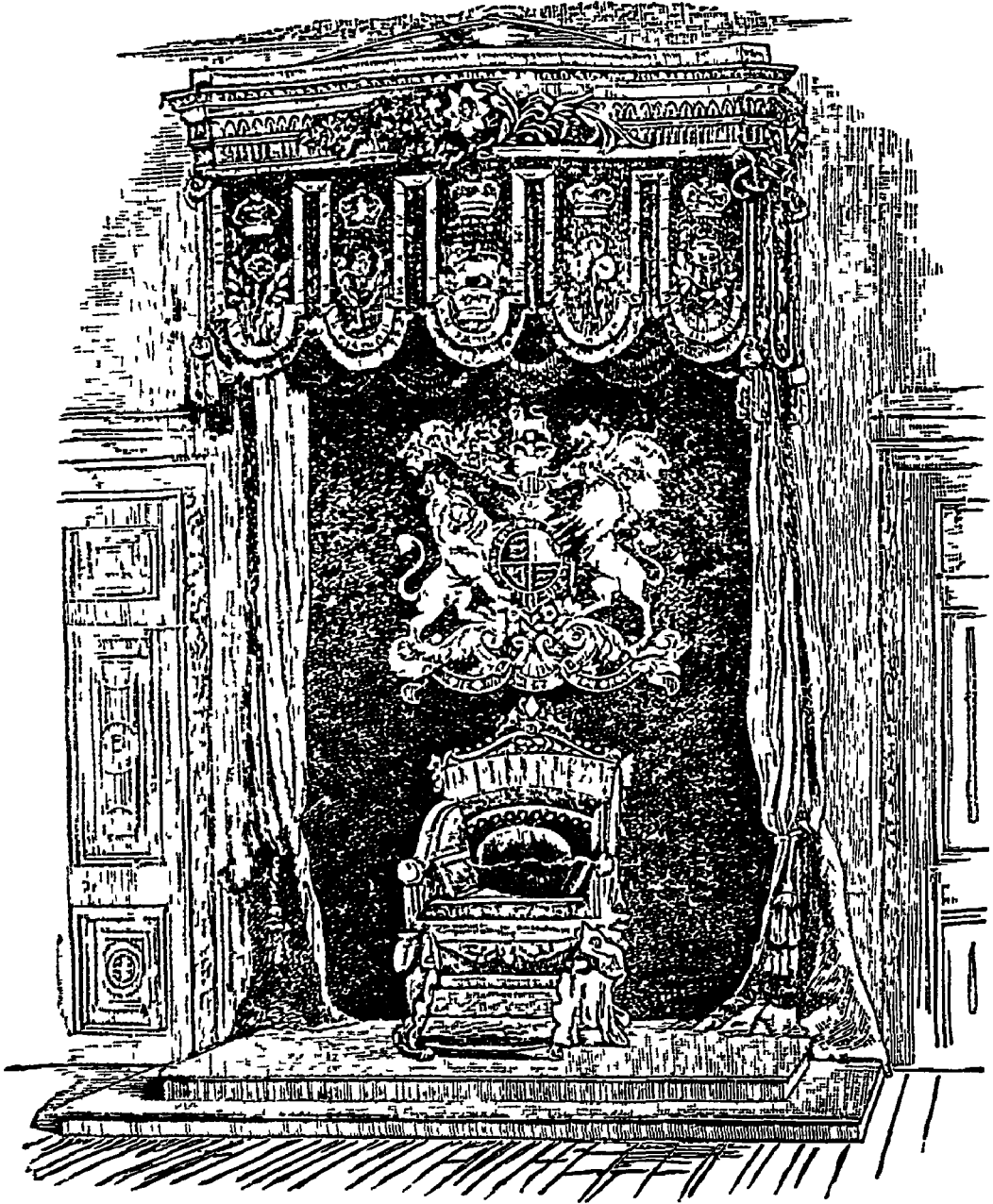
महारानीका मुकुट।
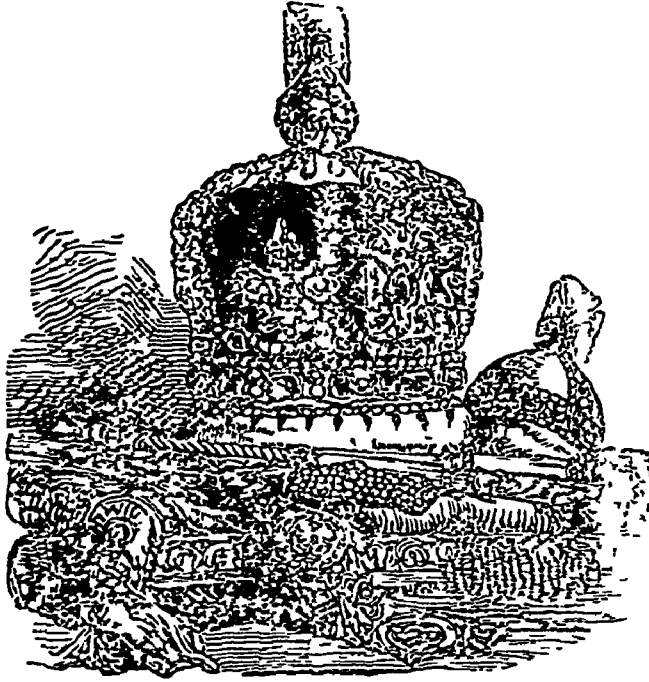
२८ जून सन् १८३८ के सूर्योदयके पूर्वसेही आकाश मेघाच्छन्न होगया बादल इधर उधर दौडकर लंडनकी शोभा इन्द्रलोकवालोंको सुनाने लगे। वर्षाकी बूँदोंने आनन्दमें आनन्द बढ़ाया। कोहरेसे अंधेरा छागया। लोग उमंगके मारे अंधकारमें अपने हर्षका प्रकाश कर काम काजके लिये इधर उधर दौड़ने लगे। गिरजाओंमें ईश्वर प्रार्थना आरंभ हुई। नगरके नर नारी सुन्दर वस्त्रालंकारों से सज धज कर तैयार हुए। लोगोंके बहुत देरतक टकटकी लगाकर राह देखनेके पश्चात् श्रीमतीकी सवारी बकिंगहाम राजभवनसे निकली। यूरोपियन राज्योंके प्रतिनिधि नेपोलियनका शत्रु ड्यूक आफ् वेलिंगटन और ब्रिटिश राज्यके उमराव श्रीमतीकी गाड़ीके पीछे २ चलेते थे। गगनभेदी जयघोषसे लंडन नगरी भरगई। इस सवारीमें राजकुटुंबके लोग, राजमाता, श्रीमतीके शरीररक्षक और बड़े २ राजकर्मचारी साथ थे। रानीके शिरपर राजचिह्नसहित सुनहरी दंडका छत्र था चारों ओरसे जयध्वनि गूँजरहीथी। बंदीजन साथ २ स्तुतिपाठ करते जाते थे। बडे ठाठके साथ धीरे २ चलती चलाती सवारी दोनों ओर भीड़को फाडती हुई वेस्टामिन्स्टर एबी नामक गिरिजेमें पहुँची उसके पश्चिम द्वारपर एक सुवर्णलेख है जिसमें 'यहां, राजवंशियोंको पवित्र राज दंड मिलताहै' लिखा है।

दुपहरके लगभग सवारी गिरिजेमें दाखिल हुई । द्वारपर पहुँचतेही गिरजेका प्रधान राजचिह्न और पादरी बाइबल लेकर आया । वहां पर रानीका पाद-प्रक्षालन हुआ रथमेंसे उतरकर श्रीमती कपड़े बदलने के कमरेमें गई । वहां का बडा भव्य मंडप था । बीचमें पाषाणकी एक कुरसी थी । इसके पास एक पाषाणथा । इसी पर प्रथम एडवर्ड राजाके समयसे पट्टाभिषेककी क्रिया होतीहै राजसिंहासनके इधर उधर अमीर उमरावोंकी कुरसियां थीं

मध्याह्नके समय सब लोग अपने २ स्थान पर खड़े रहे । प्रथम अभिषेक स्थलपर वेस्ट मिन्स्टरका पादरी और रानीके प्राइवेट कर्मचारी दाखिलहुए । उनके पीछे लार्ड प्रिवि सील, लार्ड प्रेसीडेंट आफ् कौंसिल, आयर्लैंडके लार्ड चैंसलर, यार्क का पादरी, इंग्लैंडका लार्ड चैंसलर और केंटरबरीका प्रधान पादरी था । इनके बाद जुदे २ राजाओंके प्रतिनिधि और राजवंशी आये । रूमका एलची इस चाकच-क्यको देखकर भौंचक होगया । अंतमें ड्यूक आफ् वेलिंग्टन तीन पादरियों सहित बाइबल, पात्र और चौकीलेकर आये । रानीजी उससमय सुन-हरी धारीदार गौन पहने हुएथीं । इस गौनको इंग्लैंडके उमराओंकी आठ कन्यायें उठायेंथीं

श्रीमतीके मंडपमें पहुँचतेही सब लोगोंने खडेहे कर झुक२ कर सलामें की । फिर गज गतिसे आप गायकमंडलीका मुजरा सुनती हुई आगेबढीं । गिरजेके विद्यार्थियोंने "जुग जुग जियो विक्टोरिया रानी...." का गीत गाया । नियत स्थानपर पहुँचतेही रानीने घुटने टेककर ईश्वरोपासना की । फिर मुख्य सिंहासनपर बैठनेके बदले आप एक साधारण कुरसीपर बैठीं ॥

अब कार्यका आरंभ हुआ । राज्यके मुख्य २ अधिकारी एक २ करके धर्म-क्रियाके स्थानपर गये । वहां जाकर उन्होंने कहा—" राजपुरुषो, आपको विदित है कि ,राज्यकी वास्तविक स्वामिनी रानी विक्टोरिया हैं । उनके पवित्र अभि-षेकके कार्यमें आप इकट्ठे हुएहैं । उसे आप स्वीकार करो" । प्रत्येक व्यक्ति-के कथनके साथही "चिरजीयो विक्टोरिया रानी" और "परमेश्वर विक्टोरिया रानीकी रक्षाकरे" का आनन्द गर्जन होता था । इससमय प्रधान पादरी चारों दिशाओंमें फिर२ कर प्रार्थना करता जाता था । इसीतरह श्रीमतीको भी प्रत्येक बार करना पड़ता था । इससमय बाइबल और जलपात्र लिये पादरी आ पहुँचे । केंटरबरीके पादरीने अन्य पादरियोंकेसाथ मिलकर स्तोत्रपाठ किया । और सबने पवित्र जलसे रानीके शिरपर आशीर्वादका अभिषेक किया । रानीजीने

प्रत्येक धर्मगुरुको प्रणामकर एक २ सुवर्णमुद्रा भेटकी । सबने मिलकर
"चिरजीयो विक्टोरिया रानी"
का गान किया। फिर उसजगह राजचिह्न लायागया। प्राचीन और नवीन धर्मपुस्तकोंमेंसे थोडे भजन गायेगये। उन भजनोंका आशय यह था कि राजा ईश्वरका अंशावतार है। और इसलिये राजाको न्याय और नीतिके अनुसार वर्तना चहिये । एक पादरीने मृत राजाके गुणोंका गान किया। और उनका अनुकरण करनेका राजकुटुंबको प्रबोध किया। इसके अनंतर राज्य कार्यमें न्याय और सद्गुणोंका वर्त्ताव करनेके श्रीमतीको शपथ दियेगये। शपथ देनेसे पूर्व ईसाइयोंकी धर्मपुस्तकमें से जितने भजन रानीको सुनायेगये उनको उन्होंने वहुत ध्यानपूर्वक सुना। ताऊके गुणोंका प्रसंग आतेही श्रीमतीका हृदय भर-आया परंतु इससमयपर आंसू गिराना अशुभ समझ, आपन शिर झुका-कर आंसुओंको छिपादिया । प्रार्थना समाप्त होतेही पादरीने रानीके पास जाकर कहा:-

"रानी क्या आप शपथलेनेमें प्रसन्न हैं ॥"

रानी-" हां मै राजी हूं!"

पादरी-" क्या आप ग्रेटब्रिटेन और आयर्लैंडकी प्रजाका और इनके अधिकृतराज्यका न्याय और आईनके अनुसार शासन करनेके अंतःकरणसे शपथ खाना चाहती हैं?"

रानी-(विनीत भावसे)-" हां मैं ऐसाही करनेका प्रण करती हूं!"

पादरी-"क्या आप अपनी शक्ति, वर्त्ताव और आईनके अनुसार कार्य करनेमें दयापूर्वक न्याय करैंगी?"

रानी-" हां"

पादरी-" तब क्या आप अपनी शक्तिके अनुसार ईश्वरके आईन, और प्रोटेस्टेंट धर्मके नियत नियमोंका पालन करैंगी? और क्या आप पादरियों और गिरजोंकी रक्षा कर उनके स्वत्वोंका पालन करैंगी?"

रानी-(दृढता पूर्वक, स्पष्टतासे)-" इन सब बातोंका मैं प्रणकरती हूं!"

इतना होतेही लार्ड चैम्बरलैनने रानीके हस्तकमलमें एक तलवार दी । उसे हाथमें लेकर रानीने बाइबलपर हाथ रक्खा और प्रधान पादरीको दंडवत प्रणाम कर कहा-" यहां पर मैने अभी जो कुछ कहा है उन वचनों और प्रति-

ज्ञाओंको मैं यथान्याय और सद्बुद्धिसे उचितरीतिपर पालन करूंगी । परमेश्वर मेरा सहायकहो" । यह कहकर प्रतिज्ञापत्रपर हस्ताक्षर किये । फिर उसका चुंबनकर घुटने टेककर प्रणाम किया और गिरजेके गायकोंने ईश्वरकी स्तुति और रानीकी विजयका गान आरंभ किया !

धर्मकार्यकी समाप्ति होनेपर राजकीय कार्य आरंभहुए। रानीने राजा एडवर्डकी कुरसीपर आसनलिया । चार नाइट आफ गार्टर पदवीवाले सरदारोंने एक सुवर्णमय वस्त्रके चारोंकोने पकड़कर श्रीमतीपर छायाकी । वेस्टमिन्स्टरके पादरीने एक तेलभरा पात्र उठाकर उसमेंसे सुगंधित तैल एक चमचेमें लिया और उसे श्रीमतीके शिरपर डालकर उसकी आकृति क्रूस (ईसा पैगंबरके फांसी चढने का चिह्न) कीसी बनाकर कहा-"जैसे राजा, पादरी और पैगंबरोंका अभिषेक हुआथा उसीप्रकारसे तेरा हुआहै । सोलोमनने जेडोकके राजाका जैसे अभिषेक कियाथा उसी तरहसे पवित्र तेलसे तेरा हुआ है । परमेश्वरने आशीर्वाद देकर इसलोककी रक्षा करनेके लिये तुझको योग्य गिनाहै । यहां तू पिता पुत्र और पवित्रात्माके नामसे राज्यकर" इसकेबाद राजमुकुट और राजदंड प्रदान करनेके लिये मंडपमेंसे सात पादरियोंने मिलकर दोनोंको उठाया । मुकुट रानीको पहनायागया । पहनतेही "ईश्वर रानीकी रक्षाकरै" के गानसे गिरजा गूंजउठा । अमीर उमराव और उनकी स्त्रियोंने राजमुकुटके नजरें की । घंटानाद होतेही एक साथ तोपोंकी गर्जना होनेलगी ॥

एक नार्वेनिवासिनी स्त्रीने वहांसे हाथका सहारा देकर रानीको उठाया । श्रीमती अब जाकर मुख्य सिंहासनपर विराजी । उनके हाथमें प्रथम बायबल और फिर राजदंड रक्खा गया । दंड हाथमें आतेही एक २ करके सब लार्ड लोगोंने श्रीमतीके पास जाकर सदा राजभक्त रहनेके शपथ खाये और रानीके मुकुटपर हाथ लगाय बायबलपर चुबंन करने बाद अपनी२ जगहपर आ बैठे । वृद्ध लार्ड रोली अभिवंदनके लिये रानीके पास आते २ गिरनेलगे तब श्रीमतीने सहारादेउनको उठाया । इसकार्यके समाप्त होतेही गिरजेके गायक लोगोंको पदक दियेगये । सुंदरगीत और वाद्यके मध्यमें नारफाकके ड्यूकने श्रीमतीके हाथमें दोराजदंड रक्खे

अंतमें रानी, प्रधान पादरी (केंटर बरीके आर्चबिशप) और लार्डचेंबरलेनको लेकर, मंडपमेंगई। वहां श्रीमतीको बाइबल सुनायागया । रानीने सोनेकी मुद्राओंसे भरीहुई एकथैली भेटकी । राज्यका असलमुकुट उतारकर अपना नवीन मुकुट शिरपर धारण किया । वहांसे उठकर रानी राजा एडवर्डके गिरजेमें गई ।

यद्यपि वरावर तीनघंटेके परिश्रमसे श्रीमती थकगईथी परंतु लोगोंके आशीर्वाद और हर्षनादसे उन्हें विलकुल थकावट मालूम न हुई और वह वरावर राजभक्त प्रजाको सलाम करके उन्हें धन्यवाद देनेमें न हटीं । और कार्य समाप्तकर, जिस तरह आई थी उसीतरह राजमार्गमें होकर पीछी अपने निवास स्थानपर पधारीं । मार्गमें रानीका जय जयकार होने लगा ।

उसी रातको ड्यूक आफ् वेलिंग्टनने एक वाल दिया । नगरमें आतिश-वाजीकी धूममची। नगरमें वडी भव्य रोशनी हुई और कितनेही दिनोंतक जब श्रीमती वाहर निकलतीं तवही लोग उनपर पुष्पवृष्टि करतेरहे । राज्याभिषेकके कार्यमें ६९४२१० ॥।=)४ खर्च हुआ । चौथे जार्जके समय दशलाख रुपये व्यय हुए थे । रानीसे लोगोंकी भक्ति इतनी वढगई थी कि एक स्काटलैंड वासी मनुष्य श्रीमतीका हस्त चुंवन करने आया और चुंवन कर२ के श्रीमतीको सताने लगा और जवतक राजकर्मचारीने उसे वहांसे न हटाया वह न डिगा । चार दिनतक हाइड्र पार्कमें मेला हुआ । नगरके नाटक और मेले तमाशे रानीकी आज्ञासे दर्शकोंके लिये विना मूल्य खुले रक्खे गये । राज्यभरमें इसका महोत्सव हुआ ।

इस उत्सवके थोड़ेकाल पीछे एकदिन श्रीमती राजकीय गाडीमें चढ़कर कहींको जारहीं थी । मार्गहीमें एक मनुष्य भीडमेंसे निकलकर रानीके मुख पर एक पत्र फेंककर भागा । अपराधी पकड़ लिया गया । और स्वल्पदंडके पश्चात् उसकी छुट्टी हुई । उन दिनोंमें इसप्रकारकी अनेक घटनायें हुईं परंतु उनका यहां उल्लेख करना आवश्यक नहीं है । केवल एकवातही ऐसी हुई है जिससे चित्तको हँसी आये विना नहीं रहती । एक वार श्रीमती हाइड् पार्कके-वागमें टहल रही थीं । इतनेमें एक व्यक्ति घोड़ा दौडाता हुआ कभी हंसता और कभी तरह २ के संकेत करता हुआ इधर उधर घूमने लगा । कर्नल केपें-डिशने इसे पकड़कर पुलिसके हवाले किया और वहां उसपर ५ पौंड दंड हुआ और २०० पौंडकी दो जमानतें लीं गईं ॥

अध्याय १३.

शयन गृहका जाल ।

पट्टाभिषेककी धूमधाम समाप्त होनेके वाद कुछ कालतक सब काम शांति पूर्वक चलता रहा। एकाएक राज्य प्रवंधमें गड़वड़ खड़ी हुई । केनाडामें युद्धकी संभावना हुई । इंग्लैंडमें असंतोष फैलनेलगा और प्रधान मंडलपरसे प्रजाका

उठगया । इसी अवसरमें लेडी फ्लोरा हेस्टिंग्सके अभियोगकी हलचल मचगई । रानीने इस हलचलको मेटनेका वहुतेरा प्रयत्न किया परंतु कुछ सिद्धि न हुई । प्रतिकूल पक्षने युवती रानीके कलंक लगानेका प्रयत्न किया । लेडी फ्लोरा का अभियोग जांचनेके लिये रानीने मेलबोर्नको नियत किया । जांच करते२ही वह स्त्री मरगई और इस कारणसे लार्ड मेलबोर्नपर औरभी संदेह बढ़गया ।

रानी विंडसरके राजप्रासादमें निवासकर नित्य प्रातःकालके आठवजे उठती और वहीं नास्ता लेती थीं । प्रत्येक कामके कागजोंकी वह स्वयं जांच करती और दिनके ग्यारह बजे लार्ड मेलवोर्न वहां आकर आवश्यक कागज़ पेश करते थे । दिनके दोवजे लार्ड मेलवोर्नको साथ लेकर घोड़ा दौडाने जाती और लौटनेपर बालकोंसे ठठोल करने और गाने वजानेमें समय विताती थीं । रात्रिके भोजनके समय लार्ड मेलवोर्न और एमेरिकाके प्रतिनिधि अवश्य उपस्थित रहते थे । रात्रिके ग्यारह बजे सोनेसे पूर्व अपने घरवारकी रिपोर्ट सुनती और देखभालके वाद सुखकी निद्रा लेती थीं ॥

यद्यपि लार्ड मेलवोर्नकी सम्मति और वर्त्तावको श्रीमती वहुत पसंद करती थी और उन्हींके कथनानुसार चलतीं थीं और उनके समान श्रीमतीके लिये कोई उत्तम और न्यायी मंत्री न था परंतु यह बात उनके विरोधियोंको वुरी लगती थीं और इसीलिये वे कहा करतेथे कि रानी मेलवोर्नके हाथकी गुडियाहै और जिस दिन वह कामसे अलगहोंगे रानीको प्रवंध करनेमें वड़ी कठिनता पड़ैगी । कैनेडाके युद्ध और मेलवोर्नपर पार्लियामेंटकी आशंका के कारण पार्लियामेंटमें गड़वड़ मचगई । लार्ड मेलवोर्न ने ७ मई सन् १८३९ ई० को इस्तीफ़ा देदिया । श्रीमतीने सर रावर्ट पीलको प्रधान अमात्य वनाया । उसी समय नवीन प्रधानने कहा कि नवीनमंत्रिमंडलपर विश्वास प्रकट करनेकेलिये अपनी कितनीही सहेलियोंको पदच्युत करदीजिये । ये सहेलियां लार्ड मेलवोर्नके पक्षकी थीं । इससे बात बढ़गई । सररावर्ट पीलने इस विषयमें एक चाल कीथी । चाल व्यर्थ गई । उसी दिनसे इस चालका नाम "शयनगृहका जाल (Bed chamber plot)" प्रसिद्ध होगया । इस चालमें ड्यूक आफ् लिंगट भी संयुक्त थे । इसका नाम "शयनगृहका जाल" इसीकारणसे पडाहै कि इसमें रानीकी सखियोंको निकालनेका प्रयत्न कियागया था । युवती रानीने किसीकी कुछ न सुनी और जितने २ प्रमाण और तर्क श्रीमतीसे कियेगये उनका आपने यथातथ्य उत्तर दिया । अंतमें श्रीमतीने सर रावर्ट पीलसे स्पष्ट कहदिया कि "मानलो कि आपही पहलेसे मुझे सम्मति और सहायता देनेवाले होते और आपही के पक्षकी सहचरियों मेरे पास रहती

तो क्या मैं उन्हें दूसरे पक्षके कहनेसे निकाल देती।स्मरणरक्खो कि मैं लार्ड मेल-बोर्नके लिये आपको कुछ कहने न दूंगी। "

यह बात पुराने मंत्रिमंडलको विदित हुई। वे लोग लार्ड मेलबोर्नके यहां इकट्ठे हुए। इसविषयमें श्रीमतीका एकपत्र मेलबोर्नके नाम गया जिसमे लिखाथा कि "आप किसी बातका डर न करैं। मैं सब बातें शांतचित्तसे सुनूंगी। आज वे लोग मेरी सखियोंको निकलवा देना चाहते हैं।कल्ह मेरी नौकरानियोंको निकालना चाहैंगे। वे लोग मुझे अबोध बालिकाकी तरह सिखाना चाहते हैं। परंतु मैं उन्हें बतलादूंगी कि मैं इग्लैंडकी स्वामीनी हूं।" मेलबोर्न पत्र पढतेही उछल पड़े। उन्होंने अपने मित्रोंसे कहा कि" रानी एलिजाबेथसे भी अधिक दृढ औंर सप्तम हेनरीसे अधिक शक्तिमती हैं।" पीलने रानीकी दृढता देखकर नवीनमंत्रिमंडल संगठन करनेका विचार उठा रक्खा। कानोकान नगरमें बात फैलतेही रानीकी मुक्तकंठ से प्रशंसा होनेलगी। लिबरल और कंसर्वेटिवदलमें आपसकी लड़ाई मचगई। पीलने फिर सहचरियोंको नही बरन कईएकको अलग करनेका अनुरोध किया। रानीने स्पष्टकहदिया कि—"मैं लार्ड मेलबोर्नसे कदापि अलग न होऊंगी, वह मुझे कभी बुरी सम्मति नदेंगे और उनका त्याग मुझसे कभी न होसकैगा।" इस विवाद का परिणाम यह हुआ कि पीलके दलने इस्तीफा दिया और मेलबोर्न फिर प्रधान अमात्य हुए॥

ऐसी दृढता और बुद्धिमानीसे उन्होंने मंत्रिवर्गका दमन कर उनसे विजय पाया। राजकर्मचारियोंमें उनका आतंक फैलगया और प्रजाकी भक्ति दिन २ बढ़ने लगी॥

अध्याय १४.

राजकुमार एलबर्ट से प्रणय।

जिस शुभसंवत्सरमें रानी विक्टोरियाका जन्महुआथा उसीमें अर्थात् २६अगस्त सन् १८१९ ई० को सैक्सकोवर्ग और शेलफील्डके ड्यूकके पुत्र राजकुमार एलबर्ट का जन्महुआ। इनका जन्मस्थान सेसन्यू कोबर्गसे चारमील है। यहां ड्यूक उष्ण कालमें निवासकिया करते थे। यह उन सैक्सन लोगोंके वंशधर थे जिन्होंने अपने देशकी स्वतंत्रताको जर्म्मनीवालोंके आक्रमणसे बचानेमें नामकर यूरोप के इतिहासकी वीरमंडलीमें स्थान पाया था।इनके दो बड़े भाई थे। दुर्भाग्यवश इनके जन्मके पश्चात् इनके पिता माता में परस्परका मनमुटाव होगया जिसका

परिणाम यह हुआ कि दोनोंने विवाहबंधन तोड़दिया । और इसलिये राजकुमार एलबर्टको माताका संग त्यागकर पिताके पास रहनापड़ा।यहबाल्यवस्थासे ही कोमल, सुंदर, अशक्त और तीक्ष्ण बुद्धिमान् तथा चतुर थे । इनकी दादीने इनका पालन पोषण किया था । छः वर्षकी उमरसे इन्होंने अपनी डायरी लिखना आरंभ करदियाथा । डायरीमें एक दिन लिखा कि "आज खेल कूदमें दिन बिताया और बडे भाईको कुश्ती मारी" दूसरे दिन "हारखाई परंतु कल फिर लड़ना" लिखा । राजकुमार चपल और वीर थे । छः वर्षके वयसे इनकी अशक्ति जाती रही थी । एलबर्टकी दादीने बचपनेसेहि इनकेसाथ विक्टोरियाका मेल जोल करादिया था । एलबर्टकी दादी कोबर्गकी डचेज् अर्थात् रानी विक्टोरियाकी माता डचेज् आफ्केंट्की माता अर्थात् विक्टोरियाकी नानी थी । तरुण राजकुमारको नानाप्रकारकी शिक्षा दीगई और पंद्रह वर्षकी उमरमें वह बड़े पुरुष गिने जानेलगे । राजकुमार जिस समय बारहवर्षका हुए इनकी दादीका देहांत होगया । इन्होंने साइंस, साहित्य, राजनीति, संगीत, और नानाशास्त्रोंमें अच्छी योग्यता प्राप्तकर देशाटन किया । होलेंड, जर्मनी, आस्ट्रिया और इंग्लैंडके प्रवासमे इनकी बुद्धि खिल निकली । बेरन स्टाकमरके साथ इन्होंने इटाली और स्विटजर लैंडका अवलोकन किया।इससे पूर्व यह बोनगरमें पूर्ण शिक्षा समाप्त कर चुके थे। बेलजियमके राजा एलवर्टका विक्टोरियासे विवाह करनेकी बहुत दिनसे इच्छा रखतेथे किन्तु इंग्लैंडके राजा चौथे विलियमने यह बात स्वीकार नही की थी । उससमय रानी विक्टोरियासे विवाहकरनेके पांच उम्मेदवारथे किन्तु उन्होंने निश्चय कर लियाथा कि "जो विवाह करूंगी तो प्यारे एलबर्टसेही ॥"

महारानीके पति राजकुमार एलबर्ट।

सन् १८३९ ई० के वसंतऋतुमें एकदिन राजकुमार आखेट करने गये थे । एरनवर्ग स्थानके अपने कमरेमें राजकुमारने लौटतेही अपनी बहन (फूफीकी लड़की) विक्टोरिकाया चित्र देखा । जैसे पूर्णिमाका चंद्रमा राहुसे ग्रसागयाहो, जैसे हरिण भिल्लिनियोंके गानपर मोहित होगयेहों और जिसतरह प्रणय सुखको न जाननेवाले अज्ञान यौवनक पुरुषके चित्तपटलपर प्रथमवार प्रियतमाके दर्शनका संस्कार हुआहो उसी तरह राजकुमार उस चित्रपटमें रानी विक्टोरियाका मंद२ मुसक्यान और मदभरी चितवन देखकर पानी होगये । मंत्रमुग्ध सर्पकी तरह एलवर्ट कभी आंखें बंद करते कभी अंगडाई लेते, कभी लज्जित होते और कभी प्रेमके अगाधसमुद्रमें गोते लेतेथे । राजकुमार जिससमय बाहरगये उनके महलमें विक्टोरियाका चित्र न था । रानी विक्टोरियाकी आज्ञासे सेवकोंने चित्र ऐसेही ढंगसे अवसर साधकर रक्खा था जिससे थके हुए राजकुमारकी बाहरसे आनेमें एकाएक दृष्टिपडे।रानीकी युक्तिका प्रणयमें बहुत कुछ प्रभावहुआ। सैरसे थके हुए राज-कुमारके चित्तमें रानीकी मोहिनीमूर्तिने इसप्रकार निवास करलिया जैसे मूर्तिकोहृदय में स्थान देनेके लिये थकाकर उनके शरीरके बंधन ढीले कियेगये हों । चित्रके साथही राजकुमारको रानी विक्टोरियाका एक पत्र मिला । पत्रमें इंग्लैंड जाने-का निमंत्रण पाकर अपने ज्येष्ठ बंधु अर्नेस्टके साथ इंग्लैंडको प्रयाण किया । और वहां पहुंचकर विंडसरके राजप्रासादमें डेरा दिया ॥

उस समयकी रूपलावण्यता देखकर रानी विक्टोरियाका चित्त एलवर्ट में जावसा । उन्होंने अपने मामा लियोपोल्डको लिखा–" एलवर्टका सौंदर्य चित्ताकर्षक है । वह परमप्रीतिवर्द्धक और सुंदर है । थोड़ेमें यही कहनाहै कि बड़ाही मनमोहन है । " इतना लिखते २ रानीको बोध हुआ कि मेरे हार्दिक विचार अनवसर पर प्रकट हुए जातेहैं इस लिये उन्होंने पत्रके अंतमे लिखा कि–" दोनों भाई मिलनसार हैं । दोनों इंग्लैंडमें रहैं तो बहुत अच्छाहो । " जबतक लंडनमें राजकुमार एलवर्ट रहे रानी नित्य उनसे मिलाकरती थी । राज माता और लार्ड मेलबोर्नको साथ लेकर दोनों नित्य वायुसेवनको जाते नित्य सायंकालको साथ भोजन करते और सप्ताहमें तीन बार नाच होता जिनमें रानी अन्य राजपुरुषोंको छोड़कर राजकुमार एलवर्टके साथ नाचती । एक दिन रानीने अपना शिरोरत्न भेंटकिया । इसे पाकर राजकुमारको प्रणयका

पक्का निश्चयहोगया जबतक राजकुमार इंग्लैंडमें रहे रानीने उनके साथ रानी-पने का वर्ताव न किया किन्तु जैसे एक साधारणस्त्रीका साधारण पुरुषके साथ प्रणयहो उसीतरह रानी रहनेलगी ॥

इस समागममें रानीने राजकुमारकी इच्छाकी टटोल करनेकेलिये एक-दिन उनसे पूंछा—"आप इंग्लैंडको कैसा चाहते हैं ?" इसके उत्तरमें राजकुमा-रने कहा—"बहुतही अधिक" एकवार रानीने फिर पूंछा—"आप इंग्लैंडमें रहना पसंद करतेहैं ?" यह बात पूंछते समय रानीकी आंखेंनीची, चित्त स्थकित और शरीरमें सनसनाहटथी। राजकुमार सुनतेही दंग होगये । प्रेमाकुल होकर उन्होंने कहा—"निः संदेह"—सुनतेही रानी बोली—"तब यहांका निवास करना आपके ही हाथ है" इतना कहकर अपने प्रियतमको नेत्रवाणसे बद्धकर रानी वहांसे सटकगई ।

प्रणयका आरंभ पुरुषकी ओरसे होताहै । पुरुषही स्त्रीका इसकार्यके लिये प्रार्थी होताहै किन्तु इस प्रणयमें विपरीतता हुई । प्रणयके प्रकाशितहोने पूर्व ग्लो-सेस्टरकी डचेज् रानीसे मिलनेगई। उससे रानीने कहाकि"मैंही अपनाविचार कल प्रकट करूंगी" लेडीने रानीकी हँसी की । कहनेलगी—"यह बात स्त्रीजातिके हृदय की गंभीरताके विरुद्ध है।"रानीबोली—"मैंने इससेभी अधिक निर्वलताका कार्य कियाहै ।" लेडीने पूंछा—"वहक्याहै?" रानी—"वह यही है कि मैंने अपना मन राजकुमार एलवर्टको देदिया है ॥"

अध्याय १९

प्रणयका प्रकाश ।

१५अक्टूबर सन् ३९ ई० का प्रभात राजकुमार एलवर्ट केलिये सुप्रभातथा । "राधा तू बड़भागिनी कौन तपस्या कीन । तीन लोक जाके वसे ते तेरे आधीन।"कि-सी कविके इस मर्म वाक्यकी सत्यता करनेकेलिये राजराजेश्वरी विक्टोरिया राजकु-मार एलवर्टको उसदिन अपना प्राणेश्वर वनाना चाहतीं थीं । राजकुमार दुपहरको आखेटसे लौटे । महलमें घुसतेही रानीने उनको निमंत्रणदिया। राजकुमार दवे-पावं रानीके भवनमें गये । उस समय रानी अकेली थीं । प्रियतम प्रियतमाके प्रथम संयोगसमयमें जैसे दोनों अवाक्रहतेहैं, जैसे दोनोंके हृदयकी बातें

कंजूसके धनकी तरह बाहर नही निकलतीहैं इसीतरह परस्पर प्रेमालाप न हुआ । रानीनेही प्रथम प्रेमका बीजडाला था और रानीहा पौदेको उगानेमें समर्थहुई । अपने मनकी बात प्रकाशितकर रानीने स्त्रीत्व नहीं किन्तु राज्यत्वका शौर्य संपादनकिया । टूटे फूटे शब्दोंमें रानीमे अपनी इच्छा सुनाई । जिस हस्तकमलका चुंबन करनेके लिये बडे२ अमीर तरसते और अपनी शोभा समझतेहै,जो शत दंड धारणकर शत्रुका दमन करने; दुराचारियोंको दण्डदेने और सज्जनोंकी रक्षाके लिये पुरुषके कठोर हस्तसेभी कठोरहै वह अपनी कठोरता कुलिश को प्रदानकर पुष्पसमान कोमलता धारण करता हुआ प्रियतमके हाथमें जापहुंचा वही हाथ आजएक अबला वास्तवमें बलहीना स्त्रीका हाथ होगया।जिस मस्तकपर राजमुकुट धारण होताहै जिसके आगे बडे२राजा महाराजा शिर नमातेहैं वही शिर शरीरकी सनसनाहट और हृदय कंपके साथ प्रियतमके कंधेपर पहुंचा। और एक राजराजेश्वरीने राजकुमारके हृदयमंडलमें निवासकर भूमंडलपर राज्य विस्तृत करनेकी प्रतिज्ञाके साथही अपने हृदयमंदिरका राज्य राजकुमारको देदिया मानो रानीके हृदयके साथही ब्रिटिश साम्राज्यके राजकुमार राजा बनगये । यह समय बडा अद्भुत था । जो लोग प्रणयकी कसौटीमें कसेगयेहैं उनके अतिरिक्त इस सुखको जाननेकी शक्ति किसीमें नहीहै ॥

रानीके प्रियमित्र बेरन स्टाकमोरसे थोडेसमय पूर्व रानीने कहाथा कि "अभी कुछ वर्षोंतक मैं विवाह करना नही चाहती हूं।" इसप्रतिज्ञा भंग होनेसे डरते २ रानीने उसे एक पत्र लिखाः—"मैं अपने अपराधके लिये आपको क्या लिखूं । कुछ नही जानती हूं । परंतु मुझे आशा है कि आप इसबातको क्षमाकरेंगे । एलबर्ट ने मेरा हृदयजीतलियाहै । आज प्रातःकाल सब ठहराव होगयाहै । मुझे निश्चय है कि उनसे मुझे और मुझसे उन्हें अवश्य सुखहोगा।" इसीतरह राजकुमारने अपनी दादीको यह पत्र लिखाः—रानीने मुझको अपने पास एकांत बुलाकर परम प्रीतिपूर्वक कहाकि "आपने मेरा हृदय जीतालिया है । और जो मेरे आप जन्म संगाती बननेमें हानि उठा । वैंतो मैं आपको सुखदेनेमें तत्पर हूं क्योंकि वह मानती हैं कि मैं उनसे संबंध करनेमें अपने सुखको हानि पहुंचाता हूं । और उनका कथन यह हुआ कि वहमेरे योग्य नही हैं । उनके प्रेम मय संभाषणनें मेरे ऊपर जादू करदिया मेरामन पिघलगया । और मैंने अपना आप उनके अर्पण करदिया" रानीने अनेक बार कहाथा कि "मेरेलिये मेरे एलबर्टने बहुत हानि उठाईहैं । " यह बात आश्चर्यजनक है । आश्चर्य इसबातका कि एक देशकी स्वामिनीसिज

मनुष्यका पाणिग्रहण करै उसकी इस विवाहसे हानि क्योंकरहुई । परंतु रानीका कथन यह था कि उन्होंने मेरेलिये अपना घरबार, देश, माता पिता छोड़कर विदेशमें निवास किया है । और साथही उनको एक अपरिचित राज्यका बोझा उठाना पड़ा है । इसके सिवाय स्त्रीका संतोषकर उसका समाश्वासन करना अलग है । इससंयोगसे पीछे जितने दिन राजकुमार लंडनमें रहे दोनोंने बहुतही सुखसे कालयापन किया। थोड़े समयके अनन्तर राजकुमारने स्वदेशको गमन किया ॥

लोगोंमें ऐसी गप्प उड़ी कि रानीने इससंबंधकी बात पहलेसे किसीको नही जतलाई यहांतक कि लार्ड मेलबोर्नकोभी इसकी खबर न हुई परंतु रानीकी दिनचर्यामें लिखाहै कि सगाईके प्रथम दिन अर्थात् १४ अक्टूबरको रानीने मेलबोर्नसे कहाथा । मेलबोर्न सुनकर बहुतप्रसन्न हुए और उन्होंने कहाकि" इतना स्मरण राखिये कि स्त्री किसीभी स्थल और स्थितिमें अकेली शोभा नहीं पाती है । आपको इस कार्यसे बहुत सुख होगा । "

बेलजियमके राजा इस संबंधमें बहुत अनुराग रखते थे । उन्होंने इस बातके समाचार पाने पूर्व रानी विक्टोरियाको लिखा थाकि "जैसे २ आपका इसके साथ सहवास बढ़ता जायगा आप उसको अधिक २ पसंद करने लगेंगी । एलबर्ट योग्य साथीहै । उसकी रीति भांति, और रहनसहन ऐसा उत्तमहै कि कोईभी उससे अलग होना नहीं चाहता । मुझको वह बहुत प्रियहै। उसे अपने पास रखनेकी बड़ी उत्कंठा है । वह बड़ाखिलाड़ी चतुर और शूर है । वह विना कांटेका गुलाब है । " इसके उत्तरमें रानीने बेलजियमके राजा लियोपोल्डको जो उनके मामाथे एक पत्र लिखाः— " प्रिय मातुल, मेरे हितमें आपका सदाध्यान रहता है इसलिये इसपत्रको पाकर आपको अधिक आनन्दहोगा । मैंने दृढ निश्चय कर अपने विचार आज प्रातः एलबर्टसे कहदिये हैं । उन्होंने यह आनन्ददायक समाचार सुनतेही जो प्रेमदर्शाया उससे मुझे बड़ाहर्ष हुआ है । वह योग्यपतिहैं और मुझे आशाहै कि मैं बहुत सुख पाऊंगी । एलबर्ट मुझे सबसे अधिक प्रियहै । और उन्होंने मेरेलिये जो हानि उठाई है उसका मैं बदलादूंगी । यह वृत्तान्त अर्नेस्टके अतिरिक्त और किसीको विदित न होना चाहिये क्योंकि पार्लियामेंट खुलने पूर्व मैं इसबातको प्रकाशित नहीं करसकती । लार्ड मेलबोर्नका मेरे साथ सदाकी तरह स्नेह है । एलबर्टने इस बातको स्वीकार कियाहै और फरवरीमें पार्लियामेंट खुलनेपर विवाह स्थिर करूंगी । " इसके उत्तरमें मामाने बडी प्रसन्नता प्रकटकी ।

जैसे रानी विक्टोरियाको योग्यवर मिलनेका हर्षथा उसी तरह एलबर्टभी गुणवती रानीको प्राणेश्वरी पाकर फूले अंग नही समाते थे। अपनी प्रियतमाका वारंवार प्यारी विक्टोरियाके नामसे संबोधन करतेसमय उनके हर्षका ठिकाना नहीं रहता था। उन्होनेबैनर स्टाकमोरको लिखाथाकि– "मैं रानीके साथ संबंध करनेसे अपनेको बड़ा भाग्यशाली समझता हूं।" राजकुमार बड़े सज्जन, चतुर, और प्रजा प्रिय थे। थोड़ेही कालके इंग्लैंडनिवासमें उन्होंने लोगोंके मन जीतलिये। उन्होंने स्वयं कहाथा कि अब मैं बड़ा अमीर बनूंगा। आपके सन्मान करनेसे मेरी पदवी बढ़ेगी। उनका दूसरी मातासे यह उल्लेख था कि "मैंने अपने जीवनमें अनंत जनपर उपकार करना निश्चय किया है। इससे मुझे बहुत कुछ सहायता मिलैगी।"

सुखपूर्वक लंडनमें निवास करनेबाद जब १४ नवंबरको राजकुमार एलबर्ट अपने भाई सहित विदाहुए तो रानीको पतिवियोगका प्रथमवार असह्यदुःखहुआ॥

संयोगके अंतमें वियोग और सुखके अंतमें दुःख होता है। अनेक सप्ताहतक प्रियतमसे प्रेमालाप करनेके अनन्तर रानीको पतिवियोगका कष्ट हुआ। पतिके विदा होतेही उन दोनोंकी आंखोंमें प्रेमाश्रु बहने लगे। न अब उनका खेल कूदमें दिल लगताथा और न उन्हें गाना नाचना सुहाता था। रानीको दिन रात एलबर्टकी और एलबर्टको विक्टोरियाकी लौ लगी रहतीथी। एक दूसरेके चित्रोंको निरखकर उनका आलिगनकर चुंबनकर और चित्रोंसे प्रेमालापकर कालयापन करने लगे। रानीने अपनी ताईको लिखाः–"मेरा प्राणवल्लभ जो दिन रात मेरे समीप रहताथा वह मोहिनी मूर्त्ति मुझे छोडकर चलदी। यदि मेरे पंख हों तो मैं उसके पास उडकर पहुंचूं।" एलबर्टने प्यारीको लिखा–"मुझे अनेक आनन्द दायक वस्तुऐं मिलती हैं परंतु जिसने मेरा मन हरण किया है उसके विना मुझे चैन नही है"। इस प्रकारके परस्पर पत्र व्यवहारसे वियोग जनित दुःखको प्रकाशित कर दोनोंने कालक्षेप किया॥

अध्याय १६

पार्लियामेंटकी सम्मति और राजकुमारका सत्कार।

यद्यपि इंग्लैंडकी प्रजा सामाजिक बातोंमे स्वतंत्रहै। स्त्री और पुरुषको विवाहके लिये किसीकी आज्ञा लेनेकी आवश्यकता नही पड़ती है परंतु राजराजेश्वरी विक्टोरियाको अपना संबंध राजकुमार एलबर्टसे करने पूर्व पार्लियामेंटसे आज्ञा लेनी पड़ी। रानी अपनी माता सहित विंडसर केसलसे चलकर बकिंगहाम

राजमहलमें आई और २३ नवंबरको अपना मंत्रिमंडल इकट्ठा किया । वहांपर वृद्धपुरुषोंके समक्ष एक युवतीका पतिके विषयमें वार्त्तालाप करना स्त्रियोंकी स्वाभाविक लज्जा प्रियतके विरुद्ध था । रानीकी भी इसी कारणसे थोड़ी देरतक हिम्मत नहुई। पार्लियामेंटकी आज्ञा विना रानी इसकार्यको कर नहीं सकती थीं। प्रियतमका प्रेम उनको आतुर किये डालता था। लज्जाके किंवाड जिह्वाको प्रेम संवाद प्रकाशित करनेसे रोकते थे । अंतमें दवी जवानसे रानीने अपने विचार प्रकट किये। रानी उससमय हीरेजड़ी पहुंचीमें राजकुमारका चित्र धारणकिये थीं। चित्रने पतिके प्रेमकी याद दिलाई । लज्जाको दवाकर नीचा शिर किये हुए कंपित वदनसे रानीने कहा। इस विषयमें रानीने स्वयं अपनी दिनचर्या में लिखाहै यह लेख रानीके हृदयके भावको प्रकाशित करताहै । उसमें लिखा है कि—"मैं ठीक दोवजे सभामें गई।मुझे कुछ खवर नहीं है कि वहां कौन २ था । लार्डमेलवोर्ने सजलनेत्रोंसे मेरीओर देखरहा था । वह दूर था । थोड़ेसे में मैंने अपना प्रस्ताव पढ़ सुनाया । उससमय मेरा सर्वांग कांपताथा । परंतु पढ़नेमें मैंने किंचित् भी भूलनही की । लार्ड लैंसडाउनने कहाकि इसवातको मुद्रित करानाचाहिये। मैं तुरंतही राज भवन छोड़कर चलीगई। इसकार्यमें दो तीन मिनटसे अधिक न लगे होंगे"। रानीका प्रस्ताव यह था:—"मैंने इससमय आप लोकोंको एककार्यकी सूचना देनेकेलिये जिससे मेरी प्रजाकी भलाई और मेरे भविष्यत् जीवनका घनिष्ट संवंध है, बुलाया है । सेक्सकोवर्ग और गोथाके राजकुमार एलवर्टके पाणिग्रहण करनेका मैंने संकल्प किया है । इस भावी संवंधके लिये मैंने अच्छी तरहसे विचार करलिया है। और मुझे दृढनिश्चय है कि परमेश्वरकी कृपासे इसकार्यमें मुझको घरूवातोंमें सुख होगा और देशका लाभ होगा । मैंने इस प्रस्तावको आपलोगोंको शीघ्रही सुनादेना उचित समझाहै क्योंकि आप लोग एक ऐसे आवश्यक कार्यपर जो मेरे और मेरे-राज्यकेलिये परम आवश्यक है विचार करलें। और मुझे भरोसा है कि यह कार्य मेरी प्रिय प्रजाको स्वीकृत होगा" । इस प्रस्तावके प्रकाशित करनेकेसाथही वह अपनी प्यारी प्रजाको न भूलीं । उन्होंने अपने जेवखर्चसे मेनोर हालमें वंदीगृह मुक्त अनाथ स्त्रियोंकी सहायतामें ५००) रुपया दिया ।

१६ जनवरी सन् १९४० ई० को राजरीतिके अनुसार श्रीमतीने स्वयं उपस्थित होकर पार्लियामेंट खोली । ऐसा जनरव था कि अपनी चाची हेस होमवर्गकी लेंडग्रेवाइनकी मृत्युके कारण श्रीमती स्वयं उपस्थित न होसकैंगी परंतु यह बात असत्य हुई । इस विवाहसे प्रजाको वहुत हर्ष हुआ क्योंकि उसे निश्चयथा कि यह संवंध प्रेमका

परिणाम है। राजकीय प्रपंचसे नहीं हुआ है। पार्लियामेंटमें रानीका जो इस विषयमें व्याख्यान हुआ उसमें यह कहागयाकि "मैंने आप लोगोंको पहले सूचित कर दियाहै कि मैं अपना विवाह राजकुमार एलबर्टसे करना निश्चयकरचुकीहूं। ईश्वरसे प्रार्थना है कि वह इस जोड़ीकी वह बूदी करै और इससे मेरी घरेलू सुख और प्रजाके लाभका कर्तव्यसाधन करनेकी शक्ति प्रदान करै। पार्लियामेंटद्वारा यह मेरा प्रस्ताव स्वीकृत होनेपर मुझे अतीव हर्ष होगा। मुझपर और मेरे कुटुंबके साथ आप लोगोंका स्नेह देखकर मुझे विश्वास है कि आपलोग राजकुमारके पद और राजसिंहासनकी प्रतिष्ठाके योग्य उनके लिये प्रवन्ध करनेमें सहायक होंगे।" पार्लियामेंटने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया। राजकुमार एलबर्टको "हिजूरायल हाईनेस" की उपाधि और ब्रिटिश सेनामें 'फ़ील्डमार्शल' का पद दिया। दोनों सभाओंमें राजकुमारके वार्षिक वेतनके विषयमें २७ जनवरीको बड़ा विवाद हुआ। लार्ड रसलने ५ लाख रुपया वार्षिक देनेका प्रस्ताव किया। मिस्टर जोज़िफ़ ह्यूम इस बातके विरोधी हुए। उन्होंने कहा कि "२लाख १०हजार देना चाहिये क्योंकि एक युवा व्यक्तिको लण्डनमें बसाकर उसे अधिक रुपया देना हानिकारक है।" परन्तु उनका कथन बहुमतसे अस्वीकार हुआ। और कर्नल सिबथार्पकी सम्मतिके अनुसार ३ लाख रुपया वार्षिक का ठहराव हुआ। उस अधिवेशनमें किसीनें यह प्रश्न किया कि "यदि राजकुमारको ऋण देना हो तो क्या वह ब्रिटिश कोषसे दियाजायगा ?" लार्ड रशलने कहा कि–"जिससमय राजकुमार युवावस्थाको पहुंचे उन्हें अपनी माताकी ओरसे २४०००) रुपये वार्षिककी जागीर मिली थी। रानी विक्टोरियासे सम्बन्धहोनेकेसाथही राजकुमारने उसमेंसे अपने नौकरोंको पेन्शनदेकर जागीर अपने भाईको देदी। इसके सिवाय उन्हें किसीका देना नहीं है॥"

राजकुमारकी पदवीके विषयमें पार्लियामेंटमें बहुत वादानुवाद हुआ। मंत्रिमण्डलने श्रीमान्को "प्रिंसआफ् वेल्स" का पद देना चाहा। परन्तु इसकार्यसे युवराजके स्वत्त्वोंमें आघात पहुँचनेकी सम्भावना थी। इस कारण रानीने यह बात स्वीकार न की। पार्लियामेंटमें पदवीके विषयमें बड़ी हलचल मची। प्राचीन उदाहरण देखनेके लिये पुरानी पोथियां देखीगई। परन्तु कहीपर कुछ पता न चला। सभाने यह कार्य रानीकी इच्छापर छोड़दिया। रानीने आज्ञादी कि "राजकुमारएलबर्टका दर्जा केवल मुझसे उतरता रहै।" यह बात सबको स्वीकार हुई। और उसीदिनसे राजदर्बारमें राजकुमारको रानीके निकट स्थान मिला॥

अध्याय १७.

विवाहोत्सव ।

विवाहके लिये १० फ़रवरी नियत हुई । ८ को दक्षिण किनारे से एक जहाज़ने आकर लंगर डाला । किनारेपर उतरकर राजकुमारने अपनी प्राणवल्लभाके पास गमन किया। उन्होंने प्रथमभेंटमें एक बहुमूल्य चूडामाणि भेंट किया। प्रेमभरी भेंट पाकर आनन्दकी सीमा न रही । ९ फ़रवरीको रविवार था । राजकुमारने दिनभर रानीके लोगोंसे मिलने भेटनेमें बिताया । उनके मेलजोल और सद्व्यवहारसे राज कुटुम्बको बड़ा हर्ष हुआ । रात्रि के ग्यारह बजे अपनी दुलहिनको अंतिम-बार अकेली छोड़कर राजकुमार अपने घर गये । रात्रि दोनोंकी उत्कंठा, हर्ष, भावी सुखके विचार, समागमकी तरंगें और प्रेमसंकल्पोंमें बीती । प्रातःकाल सूर्यके प्रकाशके साथही दोनोंके हृदयकमल विकसित हुए । मंगलकार्य की तैयारियां होने लगी । परिचारिकोंकी दौड धूप मची । प्यारी प्रजा विवाहके समय की राह देखती,नवीन जोड़ीके दर्शनकेलिये घरके कामकाज छोडकर हाट बाट गली चौराहेपर आ बैठी । किसीने हड़वड़ीमें जैसे तैसे अपना काम किया। कोई चूल्हेपर देगची और तवेपर रोटी जलती छोडकर उठधाई । मार्ग भीड़से खचाखच भर-गया । रस्ते चलना कठिन हुआ । कई दिन पहलेसे जिनलोगोंने मार्गके मकान खिड़कियां वाछतें इसकार्यकेलिये भाडेलेली थीं वे डंटकर आबैठे । साधारण स्थितिके लोग इधर उधर ताकझांक करनेलगे । लोगोंकी खचाखच और भीडमें पीठ से पीठ छिलने परभी कुशल इतना ही हुआ कि किसीको कुछभी चोट न आई । ड्यूक् आफ् नार्फ़ोकने अपनी सेना सजाकर यथास्थान ला खड़ी की । पहले समयमें विवाह सायंकाल अथवा रात्रिको हुआ करता था परन्तु इसवार रीति परिवर्तनकर दुपहरका समय नियत कियागया । समयसे पूर्व लग्न मंडप युवक युवतियोंसे भरगया ॥

दुलहिन विक्टोरिया।

ठीक सवाबारह बजे दूलहराज सजधजकर तैयार हुए। राज महलसे बरात विदाहोकर सेंटजेम्सके महलमें गई। दूलहके वस्त्र ब्रिटिशसेनाके फील्डमार्शेल पदके योग्य थे। साथमें पिता और भाई थे। मंडपमें पहुँचतेही लोगोंने तालियां पीटकर रूमाल हिलाये। प्रजाका सत्कार पाकर राजकुमार हर्षित हुए। राजकुमारके गलेमे हीरेका हार और छातीपर रानीके दियेहुए दो राजचिह्न चमकते थे। महलमें पहुचने पर सेनाने सलामी उतारी और बाजे बजने लगे। और लोगोंने "वर राजा बहुत वर्ष जियो" का मंगल नादकिया।

इधर दुलहिन विक्टोरिया शृंगार सजकर बकिंगहाम्के महलमेंसे विदा हुई। उनके साथ राजमाता और लीजनकी बेरोनेस थी। दुलहिनके कानमें रत्नजटित एरिंग और गलेमें बहुमूल्य हीरेका हार था, हाथमें मोती की चूडियां और शिर पर नारंगी रंगकी टोपी थी। श्वेतसाटिनका गौन था जिसपर १० हजार रुपये की किनारी लगी थी। इस लँहंगेको बनानेमें २०० मनुष्य लगे थे और उन्होंने आठ मासमें इसे तैयार कियाथा इस गौनकेसाथ दुलहिनका मुखचन्द्र देखकर आकाशका चन्द्रभी गौण भासित हुआ॥

रायलचैपलमें प्रथम राजकुमार अपने पिता और भाई समेत पहुंचे। उससमय उनका वदनकमल हर्षसे विकसित था। इतनेहीमें उनकी प्रियतमाकी सवारी आई। दुलहिनके साथ राजकुमारी सोफिया मेटिलडा और लार्ड मेलबोर्न थे। लार्डके हाथमें राजसी तलवार थी और राजमाता पीछे २ चलती थी। बारह सखियोंने रानीका गौन उठारक्खा था। ये सब लार्ड लोगोंकी कन्यायें थी। समवयस्का षोडशी बालाओंके मध्यमें दुलहिन तारागणके बीच चंद्रमाके समान देखपडती थीं। उस दिन रायल चैपल भी खूब सजायागया था। विवाहके लिये गिरजेके बीचोबीच मंडप बनायागया था। गिरजा किरमिची मखमलसे मंढा था। मखमलकी किनारें सुनहरी थी। टेबल पर रंगबिरंगी रकाबियां सजीथी। एक ओर पादरियोंके लिये बैठक थी। मंडपके बाईं ओर चार सुंदर कुरसियां थी। उनपर ससेक्स और केम्ब्रिजके ड्यूक राजकुमारी आगस्टा और ग्रोसेस्टरकी डचेज्थी। मध्यभागका एक विशाल सिंहासन दुलहिनकेलिये था और उनके पासही राज माताकी कुरसी थी। सामनेकी दो कुरसियोंमेंसे एकपर राजा चौथे विलियमकी रानी और दूसरीपर दूलह राज थे। मंडपके निकट दो कुरसियां वार दुलहिनके लिये अलग थीं। इन्हींपर बैठकर विवाह कियागया था। गिरजेकी दीवारोंपर राजचिह्न शोभा देरहे थे॥

गिरजेमें सबलोग यथास्थान जा बैठे । गिरजेकी सजावट बर दुलहिनका ठाट और सहेलियोंके सौंदर्यको देखकर दर्शकोंके चित्त इंद्रसभाकासा सुख अनुभवकर ते थे । कैंटरवरीकें आर्च बिशपने विवाह आरंभकिया । लंडनका प्रधानपादरी इस कर्मकांडमें सहायक हुआ । वर दुलहिन धीरे २ ईश्वरोपासनामें संयुक्त हुए । ईसाईधर्मके अनुसार कार्य समाप्त होनेपर कैंटरबरीके पादरीने प्रश्न किये । सारा कार्य रानी और राजकुमारके नामपर नहीं किंतु एलबर्ट और विक्टोरियाके नामपर हुआ ॥

कहतेहैं कि विवाहसे पूर्व लंडनमें ऐसी गप्पें उडतीथीं कि रानी यह विवाह रानी बनकर करना चाहती हैं । कैंटरवरीके आर्चविशपने विवाहके पहले दिन उनसे पूँछाकि "क्या आप विवाह क्रियामें कुछ लौटफेर करना चाहतीं हैं । " रानीने कहा" नही कुछ नहीं, मैं रानी बनकर विवाह नहीं करतीहूं किन्तु एक साधारण स्त्रीकी तरह और इसकारण धर्मके अनुसार सब प्रकारके प्रणकरनेको तैयार हूं । " इसीके अनुसार बडे पादरीने विवाहके समय पूंछा— "रानी, आप अपने पतिकी आज्ञा पालन, उनसे प्रेम करना, उनकी सेवा करना, उनके सुख दुःखमें साथ देना, और जीवनपर्यंत उनकी सहचरी रहना स्वीकार करती हैं ।„ करोडों मनुष्योंको अपनी आज्ञाके वशवर्ती करनेवाली प्रभावशालिनी रानीने मृदुस्वरसे कहा "हाँ करूंगी" और स्पष्ट कहदिया कि "मैं अपने पतिका मनहरण करूंगी । " ब्रिटिश राज्यकी नीतिके अनुसार राजा वा रानी ईश्वर और धर्मके अतिरिक्त किसीका पराधीन नहीं है । चाहे जैसी वहांकी स्त्रियोंमें स्वतंत्रता होनेपर भी स्त्री पतिके अधीन है । अब रानीके पति स्वाधीन होनेपर राज नियमका भंग होताथा और इसी कारण लोगोंको ऐसी आशंका हुईथी । परंतु रानीने अपनेको पतिके अर्पणकरनेमे इंग्लैंड राज्यकी स्वामिनीपनका गर्व नरक्खा । इस बातसे उनकी प्रजावर्गमें अधिक प्रतिष्ठा हुई ।

बडे पादरीने पूंछाः—दूलहको दुलहिनका पाणिग्रहण कौन करवावैगा?" । ड्यूक आफ् ससेक्स कन्यादान करनेपर तैयार हुए । बडे पादरीने दुलहिनका हाथ पकड़कर दूलहके हाथमें दिया । ईसाई धर्मके कितनेही भजन और कर्मकांडके पश्चात् दोनोंसे फिर प्रश्न हुए ।रानीने कहाः—"प्रीति करूंगी, संवर्द्धन करूंगी और आज्ञा पालन करूंगी । " इस समय इस जोडीकी सुंदरता अपूर्व थी । इसी समय बड़े पादरीसे आज्ञा लेकर वरने दुलहिनके हाथमें एक अंगूठी पहनाई । तत्क्षण झंडी फ़हरातेही किले और पार्कमेंसे तोपोंकी घर घराहट आरंभ हुई । लंडनके यावत गिरजाओंके घंटे टनटनाहट करनेलगे ।और "चिरजीवो नववरवधू" का गान आरंभ हुआ । सब लोगोंने आशीर्वाद दिया । और नगरमें जयजयकार-व्याप्त होगया ।

कैंटरबरीके बड़े पादरीने दोनोंको बाइबलका उपदेश सुनाथा । दोनों राजकुटुंबके लोगोंसे मिले । कन्यादान देनेवाले ड्यूक आफ् ससेक्सने दूलहसे मिलकर उनके हाथोंका चुंबन किया । अब वरवधू अपनी २ कुरसियोंसे उठकर राजा चौथे विलियमकी विधवा रानी ऐडीलेडके पास गये । दूलहने रानीके हस्तचुंबन किये । दोनोंने पादवंदन किये और उन्होंने दोनोंको आशीर्वाद दिया । दोनों परस्पर पाणिग्रहण कियें हुए गिरजेके बाहर निकले । राजमार्गपर आतेही प्रजावर्गने रूमाल और टोपिया हिला२कर हर्षनाद किया । आशीर्वाद और स्वागतके शब्दोंसे गगनभेदी शब्द हुआ । और वर वधूको आनन्दमें मग्न देखकर प्रजाके हर्षका ठिकाना न रहा ॥

वरवधू जब राजमहलमें पहुंचे विवाहका प्रतिज्ञापत्र उपस्थित कियागया। राजसिंहासनके कमरेमे जाकर रानीने एलेक्जेंड्रिना विक्टोरिया गल्फी और राजकुमारने फ्रांसिस एलबर्ट आगस्टस चार्ले एमेन्युएल ब्युसिसी के नामसे हस्ताक्षर किये । इस पत्रपर ड्यूकआफ्ससेक्स और उन्तीस अन्य उमरावोंने तथा ड्यूक आफ् वेलिंगटनने साक्षी की । सेंटजेम्सके राजमहलमें सर्वक्रिया समाप्तहोनपर नवजोड़ी बकिंगहाम गई ।

अध्याय १८

विवाहमें भोज ।

विवाह सकुशल होगया । रात्रिमें बकिगहाम महलमें बहुत बड़ा भोज हुआ । इस दावतमे राजकुटुंब, मंत्रिमंडल, अमीर उमराव और बड़े २ नागरिक इकट्ठे हुए । इस अवसरपर यूरोपियन लोगोंमें एक रोटी बनाईजातीहै जिसे विवाहकी रोटी (Wedding cake) कहते हैं । इस विवाहमें वेडिंग् केक अद्भुत प्रकारका था । उसका घेरा ९ फुटका था । और उसमें ३।।। मन बोझा था। उसका मूल्य १०५०) रुपयेका था । इसकी मोटाई सोलह इंच और ऊंचाई एक फुट थी। केकपर दूलह दुलहिनके चित्र थे। रानीके चित्रके नीचे स्वामिभक्त कुत्ता था। कुत्ता स्वामिभक्ति प्रकाशित कर रहाथा । रानीके निकट एक कपोतकी जोड़ी थी । इससे विवाहके पश्चात् संसारसुखका अनुभव होता था । कामदेव (Cupid) घुटनेपर बही रखकर विवाहकी रजिस्टरी कररहा था और उसीतरहके अनेक सुंदर कामदेव उसका अनुकरण करतेथे । केकके शिरपर श्वेत साटिनके तुर्रे इष्टमित्रों और उपस्थित महाशयोंमें वितरण करनेके लिये सजाये

गये थे । उनके ऊपर V और A के अंगरेज़ी अक्षर अंकित थे । इनके लिये वही कामदेव खड़ेथे । इस केकका गुलाबी और नारंजी रंगथा ।

इस अवसरपर रानीकी ओरसे एक २ ब्रूच आभूषण सहेलियोंके भेट किया गयाथा । इसकी आकृति एक पक्षीकीसी थी । पक्षीका शरीर हरेपन्नेकाथा । नेत्रमें रत्न चमकतेथे । पीठ हीरेकी बनी हुई थी । पंजोंमें सुवर्ण झलकता था । शेषभागमें मोती चमकरहे थे । यह आभरण रानीकी विशेष आज्ञासे बनायागयाथा । भोजन समाप्त होनेबाद सायंकालको सब मिलकर विंडसरके महलमें गये। मुख्यगाडीमें वर दुलहिन विराजे । उनके पीछे दूसरी गाडीमे राजकुमारके पिता और भाई सुशोभित थे।नवीन वरवधूको अपने प्रकाशसे प्रकाशित करनेके लिये सूर्यनारायणने बादलमेंसे निकलकर अपनी अस्तप्राय किरणोंसे आभूषणोंको चमकाया। दंपतिके सम्मानकेलिये मार्गके मुख्य२स्थानोंपर रोशनीकीगईथी । ईटन कालेजकी विचित्र शोभा देखकर दर्शकोंके मनहरण होतेथे।कालेजके द्वारपर "विक्टोरिया एलबर्टकी जोड़ी चिरंजीवी रहो" वाक्य स्वर्णाक्षरोंमें दीप्तिमान्था। विंडसर केसलमे पहुंचते२ सारानगर तरह २ और रंग २ की रोशनीसे व्याप्तहुआ । उससमय भी दंपति को निहारनेके लिये हाट बाट गली बाजार भीड़से भरगया था लोगोंकी जय ध्वनि मेघगर्जनाको मात करतीथी ॥

ठीक सात बजकर बीसमिनटपर दंपति विंडसर केसलकी हाईस्ट्रीटमे पहुंचे । धीरे२ घंटानाद होनेलगा । लोगोंने जयध्वनिकी और राजकुमारने हाथका सहारा देकर दुलहिनको गाड़ी परसे उतारा । रात्रिको राजमाताने १०० जनको भोजन दिया । रानी एडीलेडनें और अन्यान्य उमराओंने अलग २ भोजदिये । [illegible] किंतु रानीने [illegible] खोलदिये । [illegible] सेतमें नाटक देखानेकेलिये नाटक गृह [illegible] उस समय लंडन नगर आनन्दपूर्ण था । मानो आनन्दही शरीरधरकर वहांका शासन करताहो, इसतरह बोध होता था ॥

अध्याय १९.

सुहागरात और दम्पतिका प्रेम ।

अनेक दिनोंके वियोगके अनन्तर दम्पातिका संयोग हुआ । ११ फरवरीकी रात्रिको दोनोंका प्रथमवार एकान्तवास हुआ । दोनों आनन्दप्रमोदमें दिन बितानेलगे । रानीने बेरन स्टाकमोरको पत्र लिखकर अपना आनन्द प्रकट क्रिया । "संसारमें राजकुमारसे बढ़कर मुझको कोई प्रिय नहीं है । वही अति-

निर्मल और परम कुलीनहै । " यह पत्र १२ फरवरीको लिखागया था । इसी-दिन राजमाता राजकुमारके पिता और अनेक राजकुटुंबके लोग दम्पतिसे मिलने आये । सबने दोनोंको विवाहकी बधाई दी । विवाहसे प्रथम मासमें युरोपियन लोग प्रियतमाको साथलेकर विहारकेलिये विदेश जायाकरते हैं । इसे हनीमून कहते हैं । भारतवासियोंमें इसप्रकारकी कोई रीति नहीं होती है इसीलिये हमने इसको सुहागरातके नामसे परिलक्षित किया है । नव वरवधूकेलिये सुहागरात आनन्दका प्रथमदिन है और युरोपियन लोगोंमें हनीमून प्रथममास है । इनका प्रथममास साधारणलोगोंका सा न था। यह जोड़ी एक मास राज्यकार्यको छोड़कर बाहर नहीं विचरसकती थी । दोही दिनके बाद दम्पतिको लण्डन आनापड़ा ॥

१८ फरवरीको रानीने बकिंगहामके राजभवनमें सिधारकर पार्लियामेंट खोली । सभाने विवाहके हर्षमें श्रीमतीको अभिनन्दनपत्र दिया । उसीदिन लण्डन-के पादरी, कार्पोरेशन, केम्ब्रिज विश्वविद्यालय और स्काटलैंडके गिरजोंकी ओर-के मानपत्र आये । २६ फरवरीको श्रीमतीने अपने प्रियतमको जी. सी. बी, की उपाधिदी और ११ वी लाइट् ड्रेगून सेनाका अध्यक्ष बनाकर उसका नाम "प्रिंस-एलबर्ट हुसार्स" रक्खा ॥

२८ फरवरीको राजकुमारके पिता कोबर्गके ड्यूकने जर्मनीको प्रयाण किया। पितृवियोगसे राजकुमारका हृदय भरआया क्योंकि आज ही से पितासे सदाके-लिये अलग होनेका आरम्भथा । पतिको पितृवियोगसे जो दुःख हुआ उसकी आंतरिक पीड़ाका रानीने अपनी 'दिनचर्या' में इस तरह वर्णन किया है । "पतिने मुझसे कहा कि तुम्हारे पिता नहीं है इसलिये तुम मेरे आन्तरिक दुःखको नहीं जानसकती हो । मेरा बालवय बड़ा सुखसे बीता था । अब उनके पास केवल अर्नेस्टही है । वही पिताकी आंखोंका तारा है । परन्तु यदि मैं आजकलकी तरह प्रियतमका प्रेम सम्पादन करनेमें समर्थ होसकूंगी तो मेरा परम सौभाग्य है । ओहो ! मेरे प्रियपतिकेलिये यह कैसा कठिन समय है । उसने पिता, भाई, मित्र और देशको मेरे—केवल मेरेही लिये छोड़दिया । ईश्वरकी कृपासे मैं सुखी, अपने प्रियपतिको सुखी करनेकेलिये बहुतही सुखी होऊं । जहांतक मुझसे होसकैगा मैं उसे प्रसन्न करूंगी ।" थोड़े काल पीछे जब भाई अर्नेस्टके बिदाहोनेका अवसर आया। ऐसाही वियोगजनित कष्ट राजकुमा-रको फिर सहना पड़ा ॥

रानीको अपने सुख और पतिके स्वत्व स्थापित करनेके लिये अपनेसे उतरता दर्जा पतिको देकर इस विषयके आज्ञापत्र प्रकाशित करनेके लिये शीघ्रता करनी

पड़ी । आज्ञापत्र प्रकाशित होतेही सब गड़बड़ मिटगई । राजकुमार बडे बुद्धिमान् और धीर थे । वह रानीको अपनी इच्छानुसार चलानेके बदले उन्हें स्वतंत्रतासे बर्तनेदेते और आवश्यकता पड़नेपर उचित रीतिसे सम्मति देते थे । उन्होंने अपने पिताके नाम एक पत्रमें लिखा था कि मैं विक्टोरियाको यथेच्छ बरतने देताहूं ।" वह अपनी प्रियतमाके कार्य निर्वाहके लिये मार्ग निष्कंटक करनेका प्रयत्नकरते । वह कभी राज कार्यका स्वतंत्र बोझा अपने शिरपर न लेते परंतु सामाजिक और निजके कार्योंमे कुटुंबके मुखिया, राजनैतिकबातोमें गुप्तमंत्री, घरेलू कामोंके प्रबंधक और राजप्रबंधमें सहायक बनकर सहायता करते थे । यदि हजारों और लाखोंमें किसी विवाहसे दम्पतिको सुख होता है, दोनोमें परस्परकी हार्दिक प्रीति होतीहै तो वह विवाह रानी विक्टोरिया और राजकुमार एलबर्टका था ॥

यद्यपि अनेक ग्रंथकारोंने राजकुमार एलबर्टको राज्यप्रबंधके कार्योंसे अलग बतलाया है और उन्होंनेभी अपने पत्रमें इसबातका उल्लेख किया है परंतु सन्५२ में जब इंग्लैंड और फ्रांसकी खूब चलरही थी और फारेन आफिसमें कामकी बड़ी धूमथी श्रीमतीने अपने मातुल बेलजियमके राजा लियोपोल्डको लिखाथा कि "एलबर्ट दिन२ राजनैतिक कामोंके अनुरागी होतेजाते हैं । वह इसकार्यके पूर्ण योग्य हैं । मैं इसे दिन २ नापसंद करतीजाती हूं । हम स्त्रियां शासनकरनेके लिये नहीं बनाईगई हैं । यदि हम उत्तम स्त्रियां होना चाहैं तो हमें पुरुषोचित कार्योंको छोड़देना चाहिये । परंतु आवश्यकतापर ऐसे कार्य करने पड़ते हैं । इसीलिये मुझको करना पडता है ।" राजकुमारने राजनैतिक कामोंमें वा अन्य विषयेंमें उत्तम सम्मति देकर रानीने यह कहलवालिया था, नहीं २ प्रजासे यह कहदिया था कि राज्य रानी नही किन्तु उनके पति करते हैं । उन्होंने बलवेके समयमें भारतका जो उपकार किया था उसका वर्णन आगामि किसी अध्यायमें होगा ॥

अध्याय २०.

दम्पत्य सुख और दंपति पर गोली ।

अब कुमारी रानीका गृहराज्य आरंभ हुआ । दंपति आमोद प्रमोदमें कालयापन करनेलगे । संसार सुखके आरंभके साथही घरके प्रबंधमें गड़बड़ मची। नौकर चाकर स्वतंत्र होगये । राजमाता युवती विक्टोरियाको छोड़कर अलग रहनेलगी । पति एलबर्ट चाहतेथे कि रानीके घरका ठीक २ प्रबंधकिया जाय। रानीभी उनको सदा अपनी आँखोंपर रखती थी परंतु घरकी अव्यवस्था उन

के चित्तपर खटकती थी। उनको यह बात यहांतक बुरी लगी कि उन्होंने अपने मित्र लोवेन स्टीनको लिखा कि:—“मैं बहुतप्रसन्न और संतुष्टहूं परंतु मैं अपने पदकी रक्षा करने में असमर्थ हूं क्योंकि मैं केवल पति हूं किन्तु गृहस्वामी नहीं हूं।” जब यह बात रानीके कानतक पहुंचाई गई तब उन्होंने कहाकि:—“मैंने आत्म समर्पण किया है अर्थात् मैं अपने पतिके आज्ञापालन और प्रेम तथा सन्मान करनेमें वचनबद्ध हूं। और यह पवित्र प्रण कभी सीमाबद्ध न किया जायगा”। लार्ड चैम्बर्लेन और अश्वाध्यक्षके रहनेका राजमहलमें स्थान न था। स्टुअर्ट बिलकुल स्वतंत्र था। नौकरोंके आगे उसकी कुछ पीरी नही चलती थी। सब लोग यथेच्छ काम करते और चाहें जब जाते आते थे। इसी तरह की गड़बड़ बहुत वर्षोंतक चलती रही॥

दंपतिने ईस्टरका त्योहार विंडसरमें किया। वहांपर दंपतिका परम श्रद्धा पूर्वक धर्मसंस्कार हुआ। अपरेल मासमें पेरिसके राजकुटुंबमें विवाहथा। इस विवाहपर दंपति वहांगये। विवाह पुर्तगालके राजाकी साली विक्टोरियाका था। दुलहिनका राजकुमार एलबर्टसे संबंध था। नवीन दुलहिनका बाल वयमें बहुत कालतक उनके पास निवास रहा था। इनका प्रेम बहनोंसेभी बढ़कर था। विवहोत्सवमेंसे लौटकर इंग्लैंड आनेबाद एकदिन दंपति सादा वस्त्र पहने बाहर वायुसेवनको गये थे। मार्गमें अकस्मात् बादल चढ़आये। रुमझुम २ मेह बरसने लगा। कहीं छाया का स्थान न मिला। पास रक्षाके लिये छातेभी न थे। इतनेहीमें एकदीन ग्रामीण स्त्रीकी झोंपडी देखपडी। दंपति रक्षापानेकी इच्छासे उसमें गये। स्त्री ने इनको पहँचाना तो नही किन्तु अच्छी तरह सत्कार किया। उसने राजा चतुर्थ विलियमकी पुत्री चार्लोट और पुत्र लियोपोल्डकी बहुत प्रशंसा की। दोनों सुनकर प्रसन्न हुए। बहुतबार झोपडीमें रहनेसे जब मेह थमता न देख पड़ा तब दोनों वहांसे अकुलाकर चलदिये। बुढ़ियाने अपना छाता देकर कहा—“भैया शीघ्र लौटाना।” दंपति वहांसे विदा हुए किन्तु बुढियाने इनका सादापन देखकर पहँचाना नही। इसी वर्षके जून मासमें दासव्यापार बन्द करनेके लिये एक सभा हुई थी। इसमें प्रथमबार राजकुमारने बड़ा प्रभावोत्पादक व्याख्यान दिया। यही सभा संसारसे दासव्यापारका नामतक उठा देनेमें समर्थ हुई और इस विषयमें संसारका उपकारकर इंग्लैंडने बड़ानाम पाया॥

१० जूनको सायंकालमें बकिंगहामके राजभवनसे दंपति वायुसेवनके लिये विदा हुए। दोनों चारघोड़ेकी खुली गाडीमें सवार थे। गाड़ी कान्स्टीटयूशूवल

पहाड़ीके निकट बाटिकाके पास पहुंचतेही एक युवा पुरुषने इनपर गोली दागी। शब्द सुनतेही दोनोंने गाड़ीमेंसे उझककर उधरकी ओर देखा। रानी देखनेके लिये खड़ी होना चाहती थीं परन्तु पतिनें उनका हाथ पकड़कर बिठ ला दिया। उस युवाकी पहली गोली रीती जा चुकी थी इसलिये उसने दूसरा वार किया। दर्शक और पुलिस उसकी ओर दौड़े। उसने भागना आरंभ किया परंतु पुलिसने पकड़ लिया। उसका नाम एडवर्ड आक्सफर्ड था और वय उसका १७ वर्षका था॥

इस आकस्मिक घटनासे रानी बहुत घबरागई। परंतु लोगोंकी घबराहट और चिन्ता देखकर उनका संतोष करनेके लिये उन्हें सावधान होना पड़ा। रानीको कहीं चोटतो नहीं आईहै। इस बातके जाननेकी प्रजाको बड़ी उत्कंठा हुई। भीड़मेंसे इसीप्रकारकी पुकार उठती देखकर रानी गाड़ीमें सब लोगोंको दर्शन देनेके लिये खड़ी होगई। और उच्च परंतु मृदुल स्वरसे कहाः– "ईश्वरकी कृपासे मैं प्रसन्न हूं।" सुनतेही भीड़में आनन्दका प्रसार हुआ। वहांसे चलकर दंपति राजमातासे मिले। । माताने हर्षसे पुत्रीका आलिंगन किया। इस घटनासे इंग्लैंड क्या बरन यूरोप भरमें बड़ी हलचल मचगई। राज-कुटुंब, इंग्लैंडके अन्य भद्र पुरुषों और विदेशी राज्योंके प्रतिनिधियोंने बधाईदी। उसदिनसे दंपति विना अंगरक्षकोंके कभी अकेले बाहरन निकले। १२ जूनको इस बातके हर्षमें बहुत बड़ा दर्बार हुआ। और जिन लोगोंने इस घटनाके बाद श्रीमतीके दर्शन नही किये थे उन्होंने एस्काटकी घुड़ दौड़में दोनोंको निहारकर आनन्द पाया॥

अपराधी ८ जुलाईको दौरा सिपुर्द हुआ। उसके घरकी तलाशी लेनेपर कितनीही गोलियां और बारूद मिला। और 'तरुण इंग्लैंड' नामकी एक मंड-लीके कितनेही कागज़ पत्र मिले। इनमें लिखा था कि सदा इस क्लबके मेंबरोंको तलवार और पिस्तोल लेकर फिरना चाहिये। इसके सिवाय मेंबरोंके नामका पता न चला। अभियोगकी जांचके समय आक्सफर्ड पागल बनगया परंतु जब लार्ड आक्साब्रिजने उसे जेलमें जाकर देखा तो वह अच्छा भला पाया गया। उसने पूंछाः– "क्या अभीतक रानी जीती हैं। मैंने अपनी पिस्तोलमें प्राण नाशक गोली डाली थी।" उसने स्पष्ट रीतिपर अपराध स्वीकार कर बडे जजके समक्ष इसविषयके पत्रपर हस्ताक्षर कर दिये। परंतु उसकी ओरसे जिन २ लोगोंने साक्षियांदी उनका यह कहना था कि "यह पागल है और इस कुटुंबमें वंश परंपरासे पागल होते आये है। इसका पिताभी पागल होकर मरगया था।" ज्यूरीने उसका अपराध स्वीकार कर उसे पागल माना। इसका फैसला यह

हुआ कि "जब रानी चाहें तब यह कैदसे छूट सकै ।" पैंतीस वर्ष कैद रखनेके बाद इसको देश निकालका दंड दिया गया ॥

अध्याय २१.

सगर्भा रानी ।

विवाहके वाद थोड़ा समय वातकी वातमें निकलगया । अव राज भवनके नौकर चाकरों और कर्मचारियोंमें कानाफूसीका समय आया । किसीने कहा "रानी सगर्भा है," कोई वोला:—भई परमेश्वर रानीको पुत्रप्रदान करै तो इंग्लैंड की गादीका वारिस हो । " दिन रात इसीवातकी चर्चा होनेलगी । एकदिन सुअ-वसर साधकर रानीने मृदुहास्यके साथ लज्जित होकर पतिको यह शुभ संवाद सुनाया । पतिको सुनकर वड़ा हर्ष हुआ । वात कानोकान मंत्रिवर्ग में पहुंची । पार्लियामेंटमें रिजेंसी विल उपस्थिहोनेका अवसर आया । इसमें ठहराव यही हुआ कि "यदि दैवयोगसे (ईश्वर न करै) रानीकी मृत्यु हो जाय तो युवराज वा राजकुमारके युवा होने तक रानी पति रिजेंट नियत हो और उन्हीकी आज्ञासे राज्यका शासन हुआ करै ॥"

गर्भवती रानीने मधुर भाषण, आनन्दमें प्रमोद और सैरमें नौमास विताये। पतिने सदा अपनी प्रियतमाको आनन्दमें रहनेका उद्देश्य साधन किया । नगरके छोटे २ वालकोंको खेल कूदमें देखकर दोनों अपनी संततिकी वालक्रीडाकी आशा मनमोदकसे सुखानुभव करनेलगे । इस समयभी रानीने राज्यकार्यको न छोड़ा । लार्ड मेलवोर्न पेशी लेकर नित्य नियत समयपर आते और आवश्यक कागजों पर हस्ताक्षर कराकर लेजाया करते थे ॥

पार्लियामेंटमें से टोरीमतके लोग जो आजकल कंसर्वेटिवके नामसे प्रसिद्ध हैं, पहले २ राजकुमारसे घृणा करते थे परंतु उन्होंने अपने सद्गुणोंसे सबके मनोंको जीत लिया । मेलवोर्न और वेलिंग्टनने रिजेंसी विल उपस्थित होते समय इनकी वड़ी स्तुति की और रानीने राजनीतिका प्रचलित भेद इनके लिये निकाल डाला ॥

राजकुमार एलवर्टके साथ रानीने प्रथमवार २१ अगस्तको पार्लियामेंट वंदकी। इस मासकी २६ तिथिको रानी पूर्णवयको पहुंची। २८ को रानीके पतिको लंडनकी स्वतंत्रता दीगई । राज्यकी विधिके अनुसार लार्ड चैवर्लेनने कहा:— "राजकुमार वड़े सज्जन हैं और यह सदा रानीके सच्चे भक्त रहैंगे इसलिये इन्हें

नगर की स्वतंत्रता देना योग्य है।" यद्यपि भारत वासियोंकी दृष्टिमें पतिको पत्निका भक्तबताना और पत्नीका पतिको सेवक मानकर कार्यकरना अयोग्य है परंतु इस विषयमें रानी पत्निहोनेपरभी इंग्लैंडकी स्वामिनी थीं और राजकुमार पति होने-परभी रानीके दर्बारमें एक उच्चपदस्थ उमराव थे। उन्होंने लंडन नगरकी स्व-तंत्रता प्राप्तकरते समय कहा कि:-"लंडन नगरकी स्वतंत्रता मिलनेसे मैं परम सम्मानित हुआहूं। इस अवसरपर आप लोगोंके समक्ष खड़ा रहनेमें मुझको परमानन्द प्राप्त है। आपने मुझपर बड़ी कृपा की है। संसारके यावत् नगरोंमें लंडनकी शोभा और सम्पत्ति अपार है। आपका साथी (नागरिक) बननेका मुझे बड़ा गर्व है और मैं आप लोगोंका रानीपर भक्ति भाव देखकर बहुत प्रसन्न हुआ हूं"। इसकेबाद वह प्रिवी कौन्सिलके मेंबर नियत हुए। इसकार्यको उन्होंने बहुत-ही चाव और सावधानीसे किया और एक बैरिस्टरको नियतकर अंगरेजी आईनका अध्ययन किया॥

अध्याय २२.

राजकुमारी का जन्म।

नवंबर के आरंभमें रानीके लिये सोवड़की तैयारियां हुईं। प्रसूतिकाल नि-कट आता देखकर रानी विंडसरके किलेसे निकलकर लंडनके बंकिंगहाम मह-लमें गईं। रानीने १३ नवंबरसे उस महलमें निवास किया और २१ तारीख-को राजपुत्रीका दुपहरके १ बजकर ४० मिनटपर जन्म हुआ। उससमय जन्म होनेके कमरेमें राजमाता, पति एलबर्ट, दाइयां और मिसेज लिली उप-स्थित थीं और पासके दीवानखानेमें ससेक्सके डयूक, कैंटरबरीके आर्चबिशप, लंडनके प्रधानपादरी और लार्डमेलबोर्न आदि अनेक भद्रपुरुष इकट्ठे हुएथे। युवराजके जन्म समयमें प्रिवी कौंसिलके यावत् मेंबरोंका वहां उपस्थित रहना आवश्यक था इसलिये प्रायः सबही लोग वहांआगयेथे। जन्मके दश मिनट बाद मेम लिली राजकुमारी को हाथ में उठाकर सब लोगोंको दिखानेके लिये बाहर लाईं। कुमारीका शरीर दृढ और सुंदरथा। बालकको एक टेबलपर लिटायागया परंतु रो २ कर उसने लोगोंके कान फोड़ दिये। लड़कीको भीतर लेगये और सबलोग वहांसे विदा हुए। तोपोंके फेरोंसे नगर वासियों को विदित होगया कि राजकुमारी का जन्म हुआ है॥

पतिको भयहुआ कि कहीं नगरवालेंके चित्तको युवराजके बदले कन्या

उत्पन्नहोनेंसे दुःख न हो परंतु रानीने उनसे कहाः—"क्या चिन्ता है अबकी बार पुत्रहोगा और अपनी ताईकी तरह मैं भी बहुत बालकोंकी माता होऊंगी ॥"

जिसदिन राजकुमारीका जन्म हुआ उसीदिन जोन्सनामक लड़का बकिंग हामके राजमहलमें पकड़ागया। यह लड़का रानीके सोनेके कमरेके पडौसके एक मकानमें आरामकुर्सीके नीचे छिपाहुआ था। लोगोंने उससे पूंछा—" तू यहां कैसे आ पहुंचा ?" वह बोलाः—"पहलेकी तरह। मैं जब चाहूं यहां आसकता हूं। मैंने अनेक बार एकांतमें रानी और उनके पतिको बात चीत करते देखा है। नियमके अनुसार लड़केको कुछ दंड न दियागया। केवल उसे उद्योगशाला में चालचलन सुधारनेकेलिये भेजदिया ॥

सोवड़के दिनोंमें राजकुमारने प्रियतमाकी बड़ी शुश्रूषा की। रानीने अपनी दिनचर्यामें लिखाहै कि "वह दिन रात मेरे पास अडे रहते, मुझे पुस्तकें पढ़कर सुनाते और जो कुछ मैं कहती लिखा करते थे। वही मुझे पलंगपरसे उठाकर आराम कुर्सीपर बैठाते थे और मुझे पहियेदार कुर्सी पर बिठला कर दूसरे कमरेमें लेजाते थे। वह कहीं पर होते परन्तु मेरे बुलातेही चलेआया करते थे। उन्होंने इन दिनोंमें मेरी माता समान शुश्रूषा की। उस समय उनसे बढ़कर कोईभी बुद्धिमती, कृपालु न्यायी और उत्तम दाई मेरेपास न थी ॥

इस अवसरमें राजकुमार एलबर्ट बकिंगहामके बागमें बर्फपर खेलनेसे बीमा रहोगेय। रानीने उनकी योग्यसेवाकर पत्निधर्मका पालन किया और तुरंतही राजकुमार आरोग्य होगये ॥

१० फरवरी सन् १८४१ई० को बकिंगहाम राजमहलमें राजकुमारीका नामकरण संस्कार हुआ। राजा चौथे विलियमकी विधवा रानी एडीलेडकी सम्मतिके अनुसार राजकुमारीका नाम"विक्टोरिया एडीलेड मेरी ल्यूसा"रक्खागया ॥

अध्याय २३.

मेलबोर्नका पदत्याग।

यूरोपमें युद्धके भयानक बादल छागये। चीनमें संग्राम आरम्भहुआ। स्पेन और पुर्तगालके साथ जहाजी खटपट आरंभ हुई। लिवेंटके समुद्रमेंभी ऐसाही ढंग दिखाई देनेलगा। ऐसे समयमें इंग्लैंडकी पार्लियामेंटमें गड़बड़ मची। लिबरल मंत्रिमंडलकी हार हुई। नवीन चुनावमें कंसर्वेटिव दलका विजय हुआ। लार्ड मेलबोर्नको अपना पद त्यागना पड़ा। रानीको इसबातसे बहुतदुःख हुआ, उनके चित्तका खेद देख कर लार्ड मेलबोर्नने कहा "आपकिसीबातकी चिन्ता

न करैं। क्योंकि अब मुझसेभी बढ़कर आपको सलाह देनेके लिये आपके पति राजकुमार एलबर्ट मौजूद हैं। यह परमयोग्य सलाहकार हैं। सन् १८३९ई० से मैं इनको देखरहा हूं। चार वर्षकी जांचमें मुझे अच्छी तरह मालूम होगया है। " रानीने मंत्रिमंडलके परिवर्तन और मेलबोर्नके पद त्यागपर अपनी "दिनचर्या" में लिखाहै कि "सच्चे और प्रिय मित्र, अमात्यके बदलनेसे मुझे दुःख हुआ।"

पार्लियामेंटमें सर राबर्ट पील प्रधान अमात्य हुए। इस समय उन्हें शयन गृहको जाल" की तरह किसी तरह चाल बाज़ीका अवसर न मिला। लार्ड मेलबोर्नके साथही शयन गृहकी सखियोंने इस्तेफा देदिया था। राजकुमार एलबर्टकेलिये सर राबर्ट पीलने लिखाकि, यह न्यायी और विद्वान हैं इसलिये किसी प्रकारकी गड़बड़ न रही। नवीन प्रधानने कारीगरीकी उन्नति की जांचके लिये एक कमीशन नियत किया। इसके सभापति रानीके पति राजकुमार एलबर्ट नियत हुए। इन्होंने इस कमीशनका सभापतित्व पाकर स्वतंत्रतापूर्वक देशहित साधनका प्रयत्न किया और इन्हीकी प्रेरणासे और वेलिंग्टनकी सलाहसे ब्रिटिश सेनामेंसे द्वंद्वयुद्धकी हानिकारक प्रणाली उठगई। यह दोष यूरोप जैसे शिष्ट देशके फ्रांस जैसे सभ्यराज्यमें अभीतक विद्यमानहै। दो सैनिकों वा राजपुरुषोंमें किसी विषयमें जब खटपट हो जाती है और उसका निपटारा न्यायसे होना संभव नही होता है तब दोनों नियत समयपर परस्पर शस्त्र लेकर लड़नेको तैयार होतेहैं। इस युद्धमें जो माराजाता वा घायल हो जाता है उसीकी हार समझी जाती है।

अध्याय २४.

युवराजका जन्म।

९ नवंबर सन् १८४१ ई० को बकिंगहाम राजभवनमें आनन्दोत्सवका आरंभ हुआ। दिनके सात बजे राज्यके प्रधान २ कर्मचारी महलमें इकट्ठे हुए। प्रसव कालकी वेदनासे शीघ्र निवृत्त हो रानीने ठीक ग्यारहबजे पुत्रको जन्म दिया। आनन्द दुंदुभीसे नगरमें युवराजके जन्मकी चर्चा फैलगई। इस हर्षसे नगरमें जय जयकार होगया। पुत्रकी प्रसूतिसे माताको जो कुछ कष्ट हुआ था उससे दोदिनमें आरोग्य हुआ। माता पिताके पास बधाईके लिये अनेक अभिनन्दन पत्र आये।

छः वर्षके युवराज ।

भाई वहनकी आया वननेकेलिये अनेक संभावित स्त्रियां उम्मेदवार हुईं। रानीने इसकार्यकेलिये मेम ब्रूमको पसंद किया । दोनों वालकोंका पालन पोषण करनेकेलिये दशहजार पौंड वार्षिक नियत हुआ। माता पिताको असीम हर्ष हुआ। दोनों पुत्र पुत्री पाकर ईश्वरको धन्यवाद देनेलगे। भारतवर्षके राजाओंमे वालवयसे ही राजकुमार राजकुमारी अलग रक्खेजाते हैं इसकारण साधारण गृहस्थोंकी अपेक्षा इनमें संततिस्नेह कमहोता है परंतु इन माता पिताका स्नेह साधारण गृहस्थोंसेभी कहीं वढ़कर था। दंपतिको जव कभी किसी सगे संवंधी और इष्ट मित्रके नाम पत्रलिखनेका काम पड़ता तवही वह किसी न किसी वहानेसे इन दुधमुहे वालकोंकी वाललीलाका अवश्य उल्लेख करते थे । संततिस्नेहका यह एक वढ़िया प्रमाण है ॥

१५ जनवरी सन् १८४२ई० को राजकुमारका नामकरण संस्कार हुआ। इस उत्सवपर संयुक्त होनेकेलिये प्रूशियाके राजा जो पीछेसे जर्मनीके सम्राट् होगये थे तीन दिन पहले लंडन आ पहुंचे। उनको इनके धर्म पिताका पद दिया गया। कैंटरवरीके प्रधानपादरी ने इनका नाम एडवर्ड रक्खा। एलवर्ट इनके पिता-की ओरसे और एडवर्ड नानाका इस तरह नामाभिषेक हुआ । इस अवसर-पर रानीने प्रुशियाके राजा प्रथम विलियमको गार्टरकी पदवी देकर अपने हाथसे उन्हें पदक पहनाया। सेंट जेम्सके हाथमें रात्रिको भोज हुआ । इसमें केवल अंगूरी शरावकी तीस दरजन वोतलें खर्च हुईं । नामकरण संस्कारमें कुल वीस लाख रुपया व्यय हुआ ॥

रानीने प्रूशियाके राजाका अच्छीतरह आतिथ्य किया। विंडसरके राजभवनमें दोवार उनके हाथोंका चुंवन किया।आतिथ्य सत्कारमें किसीप्रकारकी न्यूनता न रही। राजा उत्सव समाप्तिके अनंतर अपने देशको विदा हुए ॥

युवावस्था रूप लावण्य, राज्य शासन, पतिसुख और इनके साथही पुत्रपुत्रीके जन्मसे लोग रानीको परमसुखी कह२कर हर्षित होने लगे। रानीकाभी दिन २ सुख वढ़ता गया। पतिपत्निमें दिन२ प्रीति वढ़ी, पुत्रपुत्रीका तोतलीवाणी सुननेकासौ-भाग्यमिला और राज्यकी दिन२वृद्धि होनेसे प्रजाके सुखऔर शांतिसे चारों ओररानी विक्टोरियाका जयजयकार हुआ। प्रजाकी राजभक्ति वढ़ी और रानीका प्रजाप्रेम वढ़ने लगा। ऐसेही जीवनको धन्य है ॥

जिस समय राजकुमार एक मासके हुए रानीने युवराजको "प्रिंसआफ्वेल्स" की पदवीदी। इससे पूर्व वह सेक्सनी, कार्नवाल, और रोथसेके डचूक, केरिक के अर्ल, रेन्फ्रूके अर्ल और आइल्सके लार्ड तथा स्काटलैंडके ग्रेट स्टुअर्ड कह लाते थे। वेल्सका प्रिंस वनानेके समय उनको जो सनद दीगई उसमें लिखागयाकि:— "रीतिके अनुसार हम इन्हें उक्त जागीरें प्रदान करती हैं। इनके धारण करनेके लिये तलवार, शिरकेलिये मुकुट, उंगलीके लिये अंगूठी और शासनकेलिये सुनहरी दंड देती हैं। यह अव वहांका शासन और रक्षा करैगा" ॥

अध्याय २५.

पुत्र पुत्रीकी शिक्षा ।

बड़ी राजकुमारी और युवराज (प्रिन्स आफ्वेल्स) की शिक्षाके विषयमें यहांपर लिखना विषयांतर होताहै परंतु इनकी शिक्षाके लिये रानीने जैसा कुछ ध्यान दिया है वह आज कलके राजाओंकेलिये शिक्षाप्रद है। एक बृहत् राज्यकी स्वामिनी होनेपरभी रानीने अपने प्यारे बालकोंको शिक्षा देनेका कैसा प्रबंध किया था। बहुत बड़े राज्यके राजकुमार होनेपरभी उन्होंने किस कष्टसे शिक्षा पाईथी। यही इस अध्यायका उद्देश्यहै ॥

केवल इन्हीं दोनों बालकोंके लिये नहीं किन्तु इनके बाद जो २ बालक हुए उन सबकी शिक्षापर दंपतिका विशेष ध्यान था। वे दोनों संतानको शिक्षा दीक्षा उत्तम प्रकारकी देना राज्यशासनसे भी बढ़कर अपना कर्तव्य समझते थे । माताने अपनेको आदर्श बनाकर संतानको शिक्षा दी थी। धर्मशिक्षामें उनका विशेष ध्यान रहताथा। राज्यकार्यसे कभी २ अवकाश न मिलनेपर उनको खिन्न होकर कहना पड़ता था कि—"अनेक कामोंमें लगी रहनेसे मैं इनकी शिक्षाके विषयमें मातृधर्मका पूर्ण रीतिपर पालन न करसकी। इस बातका मुझे खेदहै । संतानको धार्मिक शिक्षा देनेकेलिये राजकुमार एलबर्टने लिखाथा कि—" इन्हें इसप्रकारकी शिक्षा देना चाहिये जिससे ईश्वरकेलिये इनके हृदयमें पूर्ण आस्था उत्पन्न होकर ये अपने कर्तव्यको समझें। इहलोक और परलोक साधनकेलिये यथार्थ धर्म जानना चाहिये केवल प्रार्थनासे क्या लाभ है । जीवन, उसका उपयोग, प्रभुज्ञान और मृत्युको अच्छी तरह स्मरण रखना चाहिये।" माता पिताने केवल पुस्तकसंबंधी शिक्षा ही नहीं दी थी किन्तु घरके काम और आज्ञापालन सिखाने पर विशेष ध्यान दिया था। दीनातिदीन मनुष्योंके बालक जैसे मनमें आता है बोलते हैं, चाहे जैसी गालियां देते हैं और माता पिताको मारते और आपसमे लड़ते तथा दिनभर रोयाकरते हैं। बड़े धनवानोंके लडकोंमें इन दुर्गुणोंके सिवाय उद्धतपन और लुच्चपनका ऐब होताहै परंतु रानीने ठेठही कह दिया था कि "बालकोंको बहुतही सादीचाल सिखाने और घरके कामकाजमें निपुण करनेकी मेरी इच्छा है ।" और इसीलिये वह बालकोंको कभी अपनेसे अलग नही होनेदेतीथीं और सदा अपने पतिके साथ आस्बर्नके राजमहलमें इसीलिये निवास करती थी । युरोपियन लोगोंकी चाल है कि संतानको बालवयसे पाठशालाओंमें भेजकर दिनरात वहां ही रखते हैं । वे केवल वर्षमें दो चार बार छुट्टियोंपर घरआकर माता पितासे मिलसकते हैं । इसरीतिसे कुछभी लाभ होताहो परंतु इतनी हानि अवश्य होती है कि माता पिताका पुत्रपर और पुत्रका माता पितासे स्नेह नहीं

रहता है और यही विवाहके अनंतर पुत्रके माता पितासे अलग रहनेका कारण है । यहरीति बहुतबुरी है और रानीभी इसके बहुत विरुद्ध थीं । उन्हें सदा अपने बालकों को आंख तले रखकर शिक्षा दिलवाना पसंद था । इसचालसे राज-पुरुष होनेपरभी उनके पुत्रोंमे उद्धतादि दुर्गुणोंके बदले सद्गुणोंने निवास किया है ॥

आस्वर्नके महलके बागमें प्रत्येक बालकको बाग लगानेके लिये अलग २ धर-ती दीगई थी । इसमें धरती खोदना, खाद डालना, पौदा उगाना, सीचना, छांटना और अपने २ बागोंमें अपनेही हाथसे सुंदर पुष्प और स्वादिष्ट तरकारी उत्पन्न करना सिखाया जाता था । उनकी शिक्षाके लिये राजमहलमें एक छोटा संग्रह-स्थान अलग बनाया गया था । इसमें बालक समुद्र वा नदी किनारेसे भिन्न २ वस्तुयें लाकर इकट्ठी करते और पितासे इनके विषयमें ज्ञान प्राप्त करते थे । लड़कोंके लिये एक बढ़ईकी दूकान और लड़कियोंके लिये एक पाकशाळा अलग बनी हुई थी । इनमें लड़कियां नानाप्रकारके पकान्न मिठाई चटनी मुरब्बे आदि पदार्थ बनाना सीखती थीं और लडकोंको बढ़ईका काम सिखाया जाता था । एक गो-शालामें दूधसे भांति २ के पदार्थ बनानेकी इन्हें अलगही शिक्षा दीजाती थी । माता पिता अवकाश निकालकर बालकोंके साथ खेलमें आनन्द करते परंतु पढ़नेका समय निकट आतेही किसीकी मजाल नही थी जो एक मिनट भी अपने शिक्षकोंके पास जानेमें विलंब करसकै । साधारण-धनवान्भी प्रायः अपने बालकोंसे शिक्षकोंको कमदर्जेका गिनते हैं और इसकारण बालकोंपर उनका दबाव नही पड़ता है परंतु इसघरमें यह बात न थी । एकबार बालकोंकी शिक्ष-काने रानीसे विनय किया—" श्रीमती, मेरीमाता बहुत बीमारहैं । मुझे खेद है कि इन बालकोंकी शिक्षाका काम अधबिचमें छोड़कर मुझे छुट्टी लेनी पडैगी ।" श्रीमतीने कहाः—" कुछ चिन्ता नही, तुम निडर होकर अपनी माताकी सेवा करो । तुम्हारी अनुपस्थिति में बालकोंको पढ़ानेका काम मैं कर-लूंगी । तुम्हारे बदले कोई दूसरी नही रक्खी जायगी । " इस विचारीके छुट्टी लेकर घर पहुंचनेबाद माताका देहान्त होगया । यह स्त्रीशोकसूचक काले वस्त्र पहने हुए छुट्टीसे लौटी । श्रीमतीने इसे दुःखित देखकर बड़ी दया की और हजारों काम होनेपर भी उसकी माताका मृत्यु दिवस याद रखकर उसदिन एक काले पाषा-णकी चूड़ी जिसपर उसकी माताका नाम और मृत्युका दिन खुदाहुआ था उसकी भेंट की ।

श्रीमतीने अपने बालकोंकी शिक्षाकेलिये कितनेही नियम स्थिर किये थे । उनमेंसे मुख्य ये हैं:—" बालकोंको यथा शक्ति सादगी सिखलाकर सांसारिक कामोंके योग्य करना । उनके अध्ययनमें किसीतरहकी त्रुटि नहो इस प्रकारसे उन्हें सदा अपनेपास रखना । और प्रत्येक कार्यमें उन्हें माता पितापर विश्वास करनेकी टेंव डालना । धर्मकी शिक्षा मातासे बढ़कर कोई नहीं देसकता है । "

श्रीमतीने इस नियमपर बहुतही ध्यान दिया था । ईसाई धर्मकी शिक्षा उन्होंने अपने बालकोंको स्वयं दी थी । एकदिन लंडनके आर्च डीक। (पादरी) ने इन बालकोंकी धर्माभिरुचि देखकर उनकी शिक्षकाकी प्रशंसा की । सुनतेही बालकोंने कहाः—" परंतु धर्मज्ञान तो हमें हमारी माता शिखाती हैं । " जब ईश्वर-कृपासे ये बालक बड़े हुए और राजकीय कामकाजसे श्रीमतीको इनकी शिक्षाकी देख भाल करनेका अवसर कम मिलनेलगा तब उन्हों ने एक बार कहा थाः—" मेरे बालकोंको मेरे निकट ईश्वरप्रार्थना करनेका अवसर न मिला इस बातका मुझे परम खेद रहता है । '

पुस्तक संबंधी शिक्षा, नीति और धर्मका ज्ञान और गृहस्थीपनेकी शिक्षाके अतिरिक्त श्रीमतीने अपने पुत्रोंको युद्धसंबंधी शिक्षा भली प्रकारसे दिलवाई थी। और सबके सब पुत्र पौत्र जल और स्थलके युद्धमें पटु, शरीरके दृढ़, साहसी वीर और दयालु हैं ।

अध्याय २६.

इंग्लैंडमें हलचल और श्रीमतीका नाच ।

सन् १८४२ ई० में भारत वर्षकी ईस्ट इंडिया कंपनीसे अफगानिस्तानके अमीर की खटपट होगई । ब्रिटिश गवर्नमेंटके उच्चाधिकारी सर एलेक्जेंडर बर्न और सर विलियम मेकनाटन सेनासहित काटेगये । यह दुःखदायक समाचार इंग्लैंडमें एकमास पीछे पहुंचा । कंपनीकी चाल प्रिंस एलबर्टको पसंद न हुई । सरकारी सेनाके दुबारा काबुलपर चढ़ाई करनेसे विजय हुआ । इसी समय चीनमें युद्ध आरंभ हुआ । और वहांभी अंतमें पिनांगका प्रदेश अंगरेजोंके हाथ आया ।

दोनों ओरके युद्ध समाप्त होतेही इंग्लैंडमें हलचल मचगई । राज्यका महसूल घटगया । और 'कार्नला' की गड़बड़ आरंभ हुई । इससे दीनोंको अन्न मिलना कठिन होगया । लोगोंकी पुकार सहन न होसकी । प्रजाको शान्त करनेके लिये श्रीमतीने स्वयं उपस्थित होकर ३ फरवरीको सदाकी अपेक्षा अधिक धूमधामसे पार्लियामेंट खोली । इससमय राज्ञीपति प्रिंस एलबर्टभी साथथे । श्रीमतीके मधुर भाषण और सुधारकी आशा देनेसे प्रजा संतुष्ट हुई ॥

इसी वर्षके मार्चमें रानीके पति राजकुमार एलबर्टके ज्येष्ठ बंधु राजकुमार अर्नेस्टके विवाहका निमंत्रण आया । श्रीमतीने अपने मामा और श्वशुरको पत्र लिखकर इस कार्यकी बधाई दी । पतिभाईतो विवाहमें जानेको तैयार हुए परंतु इससमय इंग्लैंडका मामला बड़ा बेढब था । रानीको ऐसे समयपर सलाह देनेवाला कोई मनुष्य न था । क्षुधातुर लोगोंने स्काटलैंडकी खानोंमें उपद्रव मचा रक्खा था। लोगोंमें जोश फैलरहा था और कार्नलाकी गड़बड़ मची हुईथी । इनकारणोंसे वह भाईके विवाहमें न जासके ॥

प्रजाकी स्थिति सुधारनेके लिये आईन बनानेके सिवाय जुलाहों और कारीगरोंकी रक्षाके लिये श्रीमतीने पुराने ढंगके नाच करनेका ठहराव किया। नाच ३ मई सन् १८४२ को हुआ। इंग्लैंडके राजा तीसरे एडवर्डका पार्ट राजकुमार एलवर्टने और रानी फिलीपीका पार्ट रानी विक्टोरियाने लिया। चासर और फ्राइसरकी पुस्तकोंका अवलोकनकर इंग्लैंडके अमीर उमरावोंने पुराने ढंगके वस्त्र आभूषण पहने। इस नृत्यके अवसरपर बकिंगहाम राजभवनमे १३ से १८ हजारतक मनुष्य इकट्ठे हुए। हज़ारों और लाखोंके वस्त्रालंकारोंसे अमीर उमराव सजेहुए थे। रानी और राज्ञीपतिने इस उत्सवके लिये विशेषप्रकारकी पोशाकें बनवाई। नाचके समय युवकयुवतियोंकी शोभा, परस्परप्रेम, नृत्यके हावभाव कटाक्ष स्त्रियोंके मान और श्रृंगाररसकी यावत् सामग्रीको देखकर रतिनाथ कामदेवको अपने सुखमें स्पर्द्धा होती थी। कविजनोंने इस नृत्य वैभवका वर्णन करनेमें हार खाई। गीत वाद्य और विनोद आमोदने इन्द्रके वैभवका लोगोंको अनुभव कराया। यह नाच "प्लेनटजनेट राजा" के अनुकरणमें हुआथा इस लिये उसीके नामसे प्रसिद्ध है। नाच क्याथा मानो उन्नीसवी शताब्दिकी अद्भुत रासथा। नाच में टिकटसे जो आय हुई उसमेंसे खर्च निकालकर जुलाहोंको उसकी बचतसे सहायता दीगई ॥

अध्याय २७.

प्राणसंकट ।

जैसे राजाओंकी शक्ति अनंत है वैसेही उनपर कामका बोझाभी अधिक होता है। जैसे राजाओंको सुख अधिक होता है उसी तरह उनके प्राणपर संकटभी अधिक होताहै। यूरोपके राजाओंके प्राण भारतवर्षकी अपेक्षा अधिक भयमें रहते है। भारतवर्षकी प्रजा कैसाभी कष्ट सहकर राजाको ईश्वरका अवतार मानती है और यूरोपकी प्रजा जरासी बातमें रुष्ट होकर राजाके प्राणलेनेपर उतारू होती है। श्रीमतीके प्राणोंपरभी इस प्रकारके अनेक वार संकट आये थे। दो एक अवसरका वर्णन पहले हुआ है ॥

सन् ४२ई०की ३० मईको श्रीमती सायंकालके समय वायु सेवनकेलिये पधारी थी। मार्गमें सात फुटके अंतरसे फ्रांसिस नामक युवाने पिस्तोल मारी। अपराधी पकड़ लिया गया। उसने इसकार्यका कोई कारण न बतलाया। इसबातसे इंग्लैंडमें बड़ी घबराहट मचगई। इस घटनाके दोही चार दिन पीछे रानी अपने पतिके साथ रविवारकेदिन 'रायलचैपल' नामके गिरजेमें प्रार्थनाकेलिये जाने लगी। भीड़मेंसे एक मनुष्यने बाहर निकलकर रानीपर पिस्तोल ताकी और गोली चलाने का अवसर न देखकर पिस्तोलही गाड़ीमें फेंक दी। इस दुर्घटनासे रानीका स्वास्थ्य बिगड़ गया। डाक्टरोंने बाहरका फिरना बन्द किया। पतिपत्निने प्राण बचने

पर ईश्वरको धन्यवाद दिया । रानीको इसघटनासे भय तो न हुआ किन्तु अकस्मात् ऐसा कार्य होनेसे उनके हृदयमें धक्का लगा और यही बीमारीका कारण हुआ इस घटनासे लोगोंने रानीके दृढ विचारोंकी अच्छी तरह जांच करली । अपराधी फ्रांसिसपर दोष प्रमाणितहोकर उसे फांसी दीगई थी परंतु रानीने दयाकर उसे सात वर्षका जेल दिलवाया ॥

इसी वर्षमें तीसरीघटना और हुई । ३ जुलाईको श्रीमती बेलजियमके राजाके साथ गिरजेमें जातीथीं । मार्गमें विलियम बीन नामक मनुष्यने पिस्तोल चलाना चाहा । वह गोली मारनेसे पहलेही पकड़ लियागया। मार्गमें श्रीमतीको इसबातकी खबर न हुई । महलमें आतेही प्रधान अमात्य सर रावर्ट पीलने राज्ञीपतिसे कहा। सुनतेही रानीकी आंखोंमें आंसू भर आये । सर रावर्ट पीलने पार्लियामेंटमें इस प्रकार की घटनायें रोकनेकेलिये एक बिल उपस्थित किया । इसके अनुसार रानी वा अन्य राजपुरुषपर आक्रमण करनेवालेको सातवर्षको देशनिकाल और बेतकी सजा देनेका निश्चय हुआ । परंतु रानीकी आज्ञासे बीनको केवल १॥ वर्षकी क़ैद हुई ॥ पांच सात वर्षतक इसप्रकारकी कोई बात न हुई । सन् १८४९ ई० में आयर्लैंडके एक कारीगरने गोली और उसके बाद एक पदच्युत कप्तानने श्रीमती के मुखपर छड़ी मारी। सन् १८७२ ई० में एक पागल लडकेने एक हाथमें पिस्तोल और दूसरे में प्रार्थना पत्रलेकर रानीपर आक्रमण किया। दशवर्ष बाद दूसरे पागलने आपपर गोली मारी। इसके सिवाय आपपर कई प्रकारके संकट आयेथे । उनमेंसे कईएकका वर्णन पहले हुआहै । परंतु ईश्वरने उनकी सदाही रक्षाकी थी । और इस बातसे यह प्रमाणित होता था कि ईश्वरने उनको संसारका उपकार करनेके लिये उत्पन्न कियाथा ॥

अध्याय २८.

फ्रांस और बेलजियम की यात्रा ।

फ्रांस और बेलजियम की यात्रा करने पूर्व श्रीमतीने अपने पतिसहित प्रथम स्काटलैंड और फिर आइल् आफ् वाइट्, डार्ट माउथ, प्लाइमौथ और फालमौथ में नौका की सवारीपर सैर की थी । फालमौथसे चेरबर्ग जाते समय मार्ग में एक विशेष बात हुई । इसका वर्णन एक पुस्तकमें इसतरह लिखाहैः—"रानी नौकामें ऐसे स्थलपर बैठीथीं जहां होकर मल्लाहोंके आने जानेका मार्ग था । मल्लाहोंसे जाड़े में मद्य विना काम न होसका । लार्ड एडोल्फसने श्रीमतीसे कहा कि 'आप यहांसे हटकर अन्यत्र जा बैठिये ।" रानीने पूंछाः—"क्यों ? क्या यहां कोई उपद्रव होनेवालाहै ? क्या संकट आपड़ा जो मुझे यहांसे हटातेहो" । लार्ड साहव बोलेः— "आपत्ति कुछ नहीं है। मल्लाहोंसे मद्यविना काम नहीं होताहै। और मद्य इसकोठरी- मेंहै ।" रानीने कहाः—"मैं हटूंगीतो सही परंतु पहले इनके मद्यकामुझे एक

प्याला पिलानेका करारकरो।" रानीके मार्ग देतेही मल्लाहोंने एक प्याला मद्य लाकर दिया और श्रीमतीने उसे चखकर उसकी प्रशंसाकी। मल्लाहोंको इस बात से परम हर्षहुआ। और रानीकी सादगीकी सबने प्रशंसाकी। यह यात्रा सन् १८४३ में हुईथी॥

एक वर्ष बाद श्रीमतीने २ अगस्तको प्लाइमौथके टापूसे फ्रांसके राजा फिलिप से मिलने के लिये प्रस्थान किया। इयू के बंदर पर जहाज पहुँचतेही फ्रांसनरेश मिलने के लिये आये। उन्होंने रानीके हाथ का चुंबन किया। बंदरपर फ्रांसी-सियोंकी भीड़ इकट्ठी थी। राजा अंगरेज़ी कम बोलसकता था इसलिये एक बार चकरागया फिर जैसे तैसे उसने अपनाभाव अंगरेज़ीमें प्रकाशित किया। जहाज़से उतरतेही फ्रांसीसियोंने रानी के स्वागतमें हर्षनाद किया। फ्रांस नरेशने श्रीमती की बहुत अच्छी तरहसे अभ्यर्थनाकी। फ्रांसीसीलोग रविवारकी छुट्टी कम मानते हैं परंतु अँगरेजोंके साथमें उन्होंने रविवारका त्यौहार पाला। दूसरे दिन इनकी बड़ी धूमधामसे दावतहुई। एक दिन राजा फिलिप रानी विक्टोरियाके साथ और राज कुमार एलबर्ट फ्रांसीसी रानीके साथ वायु सेवनके लिये गये। चार पांच दिन वहां रहकर श्रीमती इंग्लैंडको विदाहुई।

फ्रांससे लौटकर इंग्लैंड आने बाद थोडे दिन विश्राम लेकर दंपतिने बेल-जियमकी यात्रा की।१५ सितंबरको ब्रुजिश पहुंचे। राजा रानीने दंपतिका बहुत सत्कार किया। इस प्रवासमें कोई बात विशेष नहीं हुई॥

वहांसे लौटकर इंग्लैंडमें दोनोंने केम्ब्रिजका विश्वविद्यालय देखा। राजकुमार एलबर्टको विश्वविद्यालयकी ओरसे एल्.एल् डीकी पदवी मिली। इसी वर्षमें रानीने सररावर्ट पीलके घरपर जाकर उनका सत्कार किया।

अध्याय २९.

श्वशुरकी मृत्यु।

दंपति अपने प्रिय बालकों सहित विंडसरके राजमहलमें सुखसे काल यापन करतेथे। इतनेहीमें श्रीमतीके श्वशुर,राजकुमार एलबर्टके पिता ड्यूक आफ् कोवर्ग और गोथाकी ६०वर्षकी पकी उमरमें मरनेकी खबर मिली।श्रीमतीके पतिको पिताकी मृत्युसे बहुत दुःख हुआ। चार वर्षसे उन्होंने पिताके दर्शन नहीं कियेथे। अनेक बार मिलनेका संकल्प किया परंतु किसी न किसी कारणसे न होसका इस संवादको सुनतेही श्रीमतीने बेरन स्टाक्मोरको लिखा कि:— "तुम जो यहां होते तो जानसकते कि मेरे प्राणनाथको कितना दुःख है।वह कहते है कि अब मेरे सिवाय उन्हें सुख देनेवाला नही है परंतु मैं उनके इस दुःखमें किस कामकी?"

पतिके शोकमें प्रियतमाने पूरा साथ दिया । राजकुमारने अपने एक मित्रको लिखा कि– "जो कुछ दुःख पड़ा सो भोगा परंतु मैं अंतसमयमें पिताजीकी सेवा करने और उनसे आशीर्वाद लेनेके लिये उपस्थित न होसका । यहां मैं, फुफी और विक्टोरिया रोतीहैं ।" तुरंतही राजकुमार जर्मनी जानेके लिये तैयार हुए । विवाहसे पश्चात् दंपतिको एकभी दिन अलग रहनेका अवसर नहीं आयाथा । इस आकस्मिक वियोगसे दोनोंको बड़ा कष्ट हुआ । इस वियोगके दिनोंमें दंपतिके परस्पर जो प्रेमभरेपत्र आयेगये उनके पढ़नेकी पाठकोंको इच्छा होगी।परन्तु खेद यह है कि स्थानाभाव उन प्रेमपत्रिकाओंको यहांपर प्रकाशित करनेमें बाधक होताहै । प्रियतमाका "कल आपके साथजहां आमोद प्रमोद कियाथा वह स्थान आज खाली किन्तु मेरा हृदय आपविना खालीनहीं है । आपमेरे हृदयमें निवास करतेहैं ।" और प्रियतमका खेद कि " मैं जैसे २ आगे बढ़ताहूं आप मुझसे दूर होतीजातीहैं" येही वाक्य उनके हार्दिक प्रेमकी साक्षी देतेहैं ।

पतिवियोगसे रानीको एकादिन एक २ वर्षके बराबर निकलताथा परंतु राजकार्यमें संलग्न होनेसे केवल एकान्तके समय वियोग अधिक व्यापताथा । आयलैंडके कितनेही राजद्रोही अपने प्रदेशको इंग्लैंडसे स्वतंत्र करना चाहते थे। डेनियन और जान ओकोनेल छःमनुष्यों सहित इस अपराधमें पकड़ेगये । और नवीन पार्लियामेंट खोलते समय सिंहासनकी ओरसे जो व्याख्यान हुआ उससे यह हलचल शांतहुई । पति वियोगके दिनोंमें रानीको गृहप्रबंधकी याद आई श्रीमतीके भोजनमेंसे बचे हुए अन्नका अभीतक दुरुपयोग होताथा । श्रीमतीको यहबात विदित होतेही आपने वह अन्न दीन भिखारियोंको देनेका प्रबंध करदिया इस अन्नसे प्रतिवर्ष ११३००० मनुष्योंका पालन होनेलगा । इसके सिवाय भोजऔर दावतों पर दीन लोगोंको खिलाया जाताथा वह अलगथा ।

पति के जर्मनी से लौटने बाद जनरल टामथंब नामक एक व्यक्ति आया । यह बौनाथा । इसकी ऊंचाई डेढ़ फुटथी और उमर तीसवर्षकीथी इसकी हास्य भरी बातें और शरीरकी अद्भुत बनावटको देखकर लोग चकित होगये । इस समय इसका नाचदेखनेमें फ्रांसके राजा फिलिप भी उपस्थित थे । यह ८ अक्टूबरको आयेथे । इनसे पहले कोईभी फ्रांसका राजा युद्ध प्रसंगके विना केवल प्रीति वर्धनके लिये इंग्लैंडको नहीं गयाथा ।

इसी वर्ष में रूसके ज़ार निकोलस इंग्लैंडमें श्रीमतीसे मिलने आये और ६ अगस्तको श्रीमतीके द्वितीय पुत्र एलफ्रेड अरनेस्ट एलबर्ट अर्थात् ड्यूक आफ्एडिनबराका जन्महुआ ॥

ड्यूक आफ् एडिनबरा।

अध्याय ३०.

फुटकर बातें।

इसके बाद रानीको स्काटलैंडकी यात्राका फिर मन हुआ। वहांकी रमणीयता देखकर श्रीमतीका मन लुब्ध होगया और थोड़ेही वर्षोंके बीचमें उन्होंने तीनवार वहांकी यात्राकी। दूसरी यात्रामें एकबार श्रीमती ब्लेर एथोलीके गिरजेमें ईश्वर प्रार्थनाके लिये गईं। वह गिरजा ईसाई मतमें एपीस्कोपेल पंथका है। श्रीमतीने इस मतके अनुसार वहांपर प्रार्थना नही की इसलिये वहांके लोग वहुत भड़के परंतु रानीने उनको अपने मृदु भाषण से शांत किया।

इसी वीचमें आपने अपना श्वसुरालय देखने और जेठसे मिलनेके लिये जर्मनीकी यात्राकी। इस यात्रामें मेलिन्स स्थानमें बेलजियमके राजा रानीसे भेट हुई। वोन नामक स्थानमें रानीने अपने पतिके शिक्षकसे मिलकर उनका सत्कार किया और पतिके परम रमणीय स्थानों जो एक उत्तम उपवनमें वने हुएथे देखकर वड़ा आनन्द किया। वह पतिकी जन्मभूमि थी इसलिये रानीको उसे देख२कर बड़ा आनन्द हुआ। इस यात्रामें प्रूशियाके राजा प्रथम विलियमने इनका वहुत सत्कार किया। दो तीन दिन इधर उधर फिरनेके अनंतर आप श्वसुरकी जागीरकी राजधानी कोवर्गको गईं। यहाँ राजकुमार अर्नेस्ट, मामा राजा लियेपोल्ड और मामी रानी लुसीसे भेंट हुई। इस जगह पतिके जन्म वाले कमरेमें निवास कर दंपतिने अधिक सुखपाया। पिताकी समाधिके दर्शनसे राजकुमार एलवर्टको और श्वसुरकी समाधि देखकर रानी विक्टोरियाको बड़ा हर्ष हुआ और दोनोंने जोड़ेसे समाधि पूजन किया।

यात्रासे लौटने वाद इंग्लैंडमें रेलवेके व्यापारमें बड़ी गड़बड़ मची। आलूकी खेती विगड़ जानेसे प्रजाको वहुत हानि हुई और अन्न कष्टने 'कार्नला' का फिर वखेड़ा खड़ा किया। लार्ड रशल प्रधान अमात्य हुए परंतु उनके कार्यमें सफलता न हुई इसलिये पील हीको फिर अधिकार मिलगया। २५ जून सन् ४६ को एक राज कुमारीका जन्म हुआ। इनका नाम हेलीना आगस्टा विक्टोरिया रक्खागया। राजकुमार एलवर्टको केम्ब्रिज विश्व विद्यालयने सभापति (चैंसलर) बनाया और इस कारण प्रजाका उनके साथ संबंध और भी दृढ़ हुआ।

अध्याय ३१.

फ्रांसनरेशका पदच्युत होना।

फ्रांसके राजा लुई फिलिपके साथ श्रीमतीका घरोपाथा परंतु इस बातसे दोनो राज्योंका कुछभी संबंध नथा। अब फिलिप राजाने स्पेनके साथ संबंध

किया। फिलिपके भतीजे डयूक-डी-काडीनसे स्पेनकी रानीकी बहनका संबंध ठहरा। यह बात इंग्लैंडको पसंद न हुई। श्रीमतीको समझानेके लिये रानी एमिली आई। उनका आपने योग्य सत्कार तो किया परंतु स्पष्ट कहदिया कि इस संबंधसे फ्रांस राज्य बहुत भयमें जा पड़ैगा। हठीले फिलिप्ने यह बात न मानी और इसका परिणाम यह हुआ कि यूरोपभर में इस बातसे हलचल मचगई। फिलिप् की यह चाल फ्रांसवालोंको पसंद नहुई और इसी कारणसे उसे अपनी रानी सहित फ्रांस छोडकर भागनापड़ा। राजाफिलिप् गुप्त वेश धरकर जानस्मिथ के नामसे इंग्लैंड आया। राजाकी दुर्दशा देखकर श्रीमतीको बडादुःख हुआ।आपने उसका बहुत कुछ सत्कार किया और उसकी भूलों वा चालोंके लिये कुछभी कहनेका अवसर न आने दिया। इसीतरह फिलिप की जगह दूसरा राजा नियत हुआ उसको भी सहर्ष स्वीकार करलिया। डचेज्ञ-डी-मोंट पिंसर जिसके कारण यह बखेड़ा हुआथा बहुत दुर्दशाग्रस्त होगई। उसके शरीर पर एकभी कपड़ा बेफटा न रहा। इस समय इटाली, स्पेन और आस्ट्रियामें भी बहुत कुछ परिवर्तन हुआ और रानीके मातुल बेलजियम के राजा लियोपोल्ड को पदच्युत करने का प्रयत्न हुआ किन्तु वह बचगये और इसीतरह रानीके जेठ राजकुमार अर्नेस्टकी भी रक्षाहुई॥

इस गड़बड़ के बीचमेंही श्रीमतीने छठे गर्भसे राजकुमारी ल्यूसी केरोलाइन एलबर्ट का १३ मई सन् १८४८ ई० को प्रसव किया। इसीवर्षमें मृत राजा तीसरे ज्यार्ज की कन्या सोफिया का देहान्त होगया जिससे रानीको बहुतखेदहुआ। इंग्लैंडमें बलवा हो जाने का भयथा। कार्टीस लोगोंने उपद्रव खड़ा करदिया। इनकमटैक्स डालने और सेनाका व्यय बढ़ानेसे प्रजा असंतुष्ट होगई। कार्टीस लोग रानीके शासनसे रूठगये। इंग्लैंडमें युद्धकी तैयारी होगई। २ लाखसैनिक नये भरती कियेगये। फ्रांसके नवीन राजा लुई नेपोलियन ने रानीके शरीर रक्षक बनने की प्रतिज्ञाकी। इससमय आयर्लैंड में उपद्रव हुआ। उपद्रवियोंके मुखिया पकड़ेगये और उनको योग्यदंड दिया गया। ऐसे अवसर पर काम इतना बढ़गया कि प्रदेश विभागमेंसे एकवर्ष में २८००० पत्र बाहरगये। श्रीमतीके परिश्रम का यह एक उदाहरणहै।कैसा भी संकट पड़ता परंतु श्रीमती कभी घबराती नथी। आपने अपने मातुलको लिखाकि "कैसी भी हलचल मची परंतु मुझको कभी क्षोभ नहीं हुआ। और न मेरे चित्तमें दुर्बलता आई।" सन् १८४८ ई० में फ्रांसमें राष्ट्रविप्लव हुआ और इसी लिये वहां तीन दिन तक कतल हुआ। उपद्रव शांति का मुख्य कार्य जनरल केविगनगने किया। इस वर्षमें स्काटलैंड के बालमोरल महलकी खरीद हुई और लार्ड मेलबोर्न की मृत्यु हुई। इनकी मृत्युसे श्रीमती को बडा दुःख हुआ। उन्होंने कहा कि "जिसने विशेष बुद्धिमानी और गंभीर विचारोंसे मेरी सहायताकी उसकी मृत्युसे मुझे बड़ा शोक हुआ है॥"

ड्यूक आफ् कनाटका चित्र ।

अध्याय ३२.

जन्म मृत्यु और प्रदर्शिनी

नवंबरमें मृत राजा चौथे विलियमकी विधवा रानी एडीलेड बहुत बीमार हुई। श्रीमती उनसे मिलने गई । २ दिसंबरको उनकी मृत्यु हुई । इस बातसे श्रीमतीको बहुत दुःख हुआ क्योंकि वह उन्हें मातासेभी अधिक समझतीथी ॥

सन् १८५० ई० की पहली मईको रानीके सातवें गर्भसे तीसरे पुत्रका जन्म हुआ उसदिन महारथी वेलिंगटनका जन्म दिन था इसलिये प्रूशियाके राजा प्रथम विलियमने बालकका नाम "आर्थर विलियम पेट्रिक एलबर्ट" रक्खा । यही ड्यूक आफ् कनाट हैं । सोवडसे निपट कर एकदिन रानी केम्ब्रिजके महलमेंसे बाहर फिरने जातीथीं इतनेहीमें पेट नामक दुष्टने रानीके शिरमें लाठी मारी । अपराधीको सात वर्षका कालापानी हुआ ॥

तीसरे ज्यार्ज राजाके सबसे छोटे पुत्र ड्यूक आफ् केम्ब्रिजकी मृत्युसेभी रानीको बहुत दुःख हुआ और ऐसेही समयमें फ्रांसके पदच्युत राजाकी मृत्युके समाचार मिले । रानीने इन दुःखोंसे विश्राम लेनेके लिये फिर स्काटलैंडकी यात्रा की । यहांके हाइलैंडर लोगोंने श्रीमतीके स्वागत में डी नदीके उसपार एक भोज किया । रानीकी मंगल कामनाके लिये मद्यपानका अवसर आया परंतु इस कार्यके लिये प्याला न था । सरदार फोर्बसने पैरसे जूता निकालकर उसमें शराब डाला और तुरंत उठाकर ओट लिया । इसकी युक्ति देखकर समस्त हाईलैंडरोंने इसबातका अनुकरण किया ॥

पति एलबर्टकी योजनासे लंडनमे एक प्रदर्शिनी खोलनेका मनसूबा हुआ । पार्लियामेंटने इस प्रस्तावको हर्ष सहित स्वीकार किया । प्रजा इस बातसे बहुत प्रसन्न हुई । परंतु प्रबंध होनेसे पूर्वही प्रिंस एलबर्टके सहायक सर रार्बर्ट् पीलका देहान्त होगया । श्रीमतीने इस कारण प्रदर्शनका काम बन्द रखनेका ठहराव किया परंतु प्रजाका उत्साह और पतिकी इच्छा देखकर अंतमें इस कार्यको स्वीकार कर लिया । हाइड् पार्कका रमणीय स्थान इसके लिये पसंद हुआ । सन् १८५१ ई० की १ मईको प्रदर्शिनीका आरंभ हुआ । इसका उत्सव रानीके सिंहासनपर विराजनेके उत्सवसे भी बढ़कर था । सात लाख मनुष्य इस मेलेको देखने इकट्ठे हुए । पुलिसके सुप्रबंधसे किसी प्रकारकी दुर्घटना न हुई । इस कार्यके लिये जो क्रिस्टल पैलेस तैयार हुआ उसमें पचास लाख रुपया व्यय हुआ । प्रदर्शिनीका आरंभ १ मईसे होकर ११ अक्टूबरको समाप्तिहुई ।

प्लेवट जनेर नामक नृत्यका पहले वर्णन हुआ है उसी तरहके दो नाच श्रीमतीने प्रदर्शिनीसे निपटने बाद और किये। आपने 'रेस्टोरेशन' नामक प्रथम नाचमें आठ प्रकारसे नृत्यकर अपना नृत्य कौसल दिखलाया ।

अध्याय ३३.

बड़ी २ घटनायें और वेलिंगूटनकी मृत्यु ।

फ्रांसके नवीन राजा लुई नेपोलियनने, प्रजाके स्वत्व हरणकर रक्तकी नदी बहाने बाद, राज्य भरमें अपना आतंक स्थापित करदिया। इस बातसे फ्रांसका इंग्लैंडसे मन मोटा व अधिक होगया परंतु फरांसीसियोंकी चाल बाज़ीसे इंग्लैंडका मंत्रि मंडल उनका कुछ न करसका। सन् ५२ ई० के आरंभमें वे आफ़् विस्केमें 'रामेज़न' नामक जहाज़ जलगया। इसमें १६१ मनुष्यथे जिनमेंसे १४० मृत्युवशहुए। इसी तरह उत्तमाशा अंतरीपके निकट ब्लेकहेड जहाज़के नष्ट होनेसे ६३०- मनुष्य और २९४ बालक डूबगये। ये सबके सब सैनिकथे। इसी वर्षमें तीसरी दुर्घटना और हुई। बेलवरीका तालाव फटगया। इसमें १०० मनुष्य मरे और हजारों घर नष्ट होगये। इन बातोंसे श्रीमतीको बहुत दुःख हुआ और उन्होंने पत्र लिख२कर मृत मनुष्योंके कुटुंवको धैर्य दिया और चंदा देकर उनकी सहायताकी। इसी वर्षमें लिनकनइनके एक वैरिस्टर जे नील्ड के मृत्यु लेखके अनुसार उसकी विरासतमें २५ लाख रुपया श्रीमतीको मिला।

अधिक श्रमसे श्रमित होकर दंपति स्काटलैंडके बालमोरल महलमें निवास करनेके लिये गयेथे। १६ सितंबरके प्रातःकाल समुद्र तटका वायुसेवन करते २ रानीको अकस्मात् भ्रम हुआ कि डयूक आफ़् वेलिंगटनकी भेट की हुई घड़ी गिरगई। नाकरको तुरंत दौड़ाया। उसने लौटकर खबर दी कि घड़ी तो नहीं गई किन्तु घडीको भेंट करने वाले ड्यूक आफ़् वेलिंगूटनका स्वर्गवास होगया। सुनतेही दम्पति अकचका गये। रानीने कहाकि-" आज इंग्लैंडका-नहीं २ ब्रिटेनका गर्व, कीर्त्ति, महारथी महापुरुष नहीं रहा। इसके समान न कोई दूसरा हुआ और न होगा।" यह रानीके पिता और बेलजियमके राजाके समान वीरथे। कभी युद्धमें पीठ न दिखाने वाले, प्रामाणिक, यूरोपमें परम प्रतिष्ठा- प्राप्त महापुरुषथे। इनका देहान्त थोड़े ही घंटोंकी बीमारीमें होगया। श्रीमतीने स्वयं इसके विषयमें लिखाहै कि" स्मरणीय योद्धा ड्युक मरनेपरभी उसके सुकार्यों से सदा चिरंजीवी रहैगा। उसमें भूमंडलके सम्मानका समावेशथा। प्रजागणमें वह

सर्वोत्तम था। दोनों दल उसका आदर करतेथे। राज्यका परममित्र होनेपर भी बड़ा सादाथा। उसने सर्वकार्य सादगी, धैर्य और निर्भयतासे किये। इस राज्यको कभी ऐसा राजभक्त महात्मा नही मिलैगा। वह सदा सुसम्माति और कठिनताके समय सहायता देनेको तैयार रहताथा। ऐसा कोई मनुष्य न होगा जिसने उसकी मृत्युपर आंसू न बहायेहों।" शवको संदूकमें रखकर पार्लियामेंटने राजसी ठाट से उसे दफनानेका प्रबंध किया। तैयारीमें एक मास लगा। चार दिन तक शवका प्रदर्शन कियागया १८ नवंबरको ड्यूकआफवेलिंगटन की सवारी निकली। इंग्लैंडके छोटे बड़े सब अमीरोंके अतिरिक्त फ़रासीसी प्रजाकी ओरसे भी प्रतिनिधि आया। महारथी नेलसनकी समाधिके निकट इसे स्थान दियागया।

सन् ५३ के आरंभ में विंडसर केसलके निकट प्रिंसआफ वेल्सके महलका रसोईघर जल उठा। इससे प्राणहानि बिलकुल न हुई। इसी वर्षके अपरेलकी ७ तारीखको रानीके अष्टम संतान से चौथे पुत्रका जन्म हुआ। इस बालक का नाम लियोपोल्ड ज्यार्ज डंकन एलबर्ट रक्खागया। इनको ड्यूक आफ एल-बनीकी उपाधि दीगई। जुलाई मासमें घरभर बीमार होगया। ११ अगस्तको श्रीमतीने जल सेनाकी क़वाइद देखी। इस अवसरपर प्रूशियाके राजकुमार बटम-वर्गके राजा रानी इंग्लैंड आये। इसी मासके अंतमें डबलिनमें प्रदर्शिनी खोलीगई।

इस अवसरमें रूम रूसमें लड़ाईका आरंभ हुआ। इंग्लैंड और फ्रांसने प्रका-शित किया कि जो रूस कुछभी रूमके लिये शिर उठायेगा तो काले समुद्रमें हमारे जहाज़ पेसीपोर्ट पर अधिकार करलेंगे। ब्रिटिशमंत्रिमंडलमें बखेड़ा पडा। प्रजा युद्धकी उत्सुक हुई परंतु राजकुमार एलबर्ट इस बातके विरोधीथे। प्रजाको उन-की सम्मति पसंद न हुई इसलिये लोग उनको बुरा समझने लगे। लिबरल और कंसर्वेटिव दलमें परस्पर वैर बढ़गया। राजकुमार एलबर्टने अपने मित्र और रानीके दूरस्थ संबंधी बेरन स्टाकमोरको लिखा कि "लोग रानीको कैद करना और मुझे निकाल देना चाहते हैं क्योंकि वे मुझे राजद्रोही समझने लगे हैं।" इस बातको जानकर श्रीमतीने लार्ड एबर्डीनको लिखाकि "स्मरण रक्खोकि जो मेरे प्रियतमको बुरा कहते हैं वे मेरे शत्रु हैं। और उनको इस बातका बदला दिया जायगा।" जनवरी सन्१८५४ई०में पार्लियामेंट खुलतेही लार्ड रशल और लार्ड एबर्डीन प्रधान अमात्यने प्रजाके कथनका खंडन किया। इस बातसे सब प्रकारकी शांति होगई। लड़ाईके घिरे हुए बादल बिखरगये। और रानीके विवा-हके चौदहवें वर्षक उत्सव पर सब प्रकारका आनन्द होगया।

अध्याय ३४.

राजकुमारियोंके विवाह ।

जर्मनीके नरेश प्रथम विलियम अपने पुत्र फ्रेडरिकके (जिनका वय २५ वर्ष का था) विवाह के लिये बड़े उत्सुक थे। श्रीमती रानी और उनके पति राजकुमार एलबर्ट दोनोंकी इच्छा हुई कि पंद्रह वर्षके वय वाली प्रथम राजकुमारी का विवाह दोनोंकी इच्छासे कियाजाय । अवसर साधकर जर्मनी के युवराज इंग्लैंड आये । दोनों में प्रेमालाप हुआ । युवराजने अपनी इच्छा राजकुमारी को जतलाइ । राजकुमारीने युवराज को बरना स्वीकार किया। २९ सितंबर को रानीने दोनों के संबंधकी बात प्रकाशित की । आपने अपनी 'दिनचर्या' में लिखाहै कि–"हमारी प्यारी विक्टोरिया का संबंध प्रूशिया के युवराज फ्रेडरिक विलियमसे आज पक्का होगया । २० सितंबर को उसने अपने आपही इच्छा प्रकाशित की । युवराज की उमर युवा और कुमारी की अल्पवय होनेसे हमें प्रथम इस संबंध में हिचर मिचर हुआ। इससे हमने निश्चय किया कि दोनों एक बार फिर इस बातका विचार कर स्थिर करैं अथवा दूसरी बार के लिये यह बात उठा रक्खी जाय। परंतु आज दोनों वायु सेवन करने गये उस समय युवराजने राजकुमारी को प्रेम चिह्नमें एक श्वेतमूर्त्ति भेंटकी । कुमारीने वह लाकर मुझे दिखाई इससे बात पक्कीहोगई और विवाह दृढ हुआ। राजकुमारीका विवाह मार्च में निश्चय हुआ। दो मास पश्चात् दूलह इंग्लैंड आया। इस अवसर में राजकुमारी एक दिन किसी कागज़पर मुहर कर रहीथीं। इतनेही में उनके हाथके दस्ताने सुलग उठे। राज कुमारी एलिसने धूलडालकर आग बुझाई। कुमारी बहुत जलगई परंतु उन्होंने धैर्यसे दुःख सहनकर कहाः "माता-को यह बात न जतलाना । नहीं तो वह घबड़ा उठैंगी और पिताजीको शीघ्र बुलवाओ ।" थोड़े समयमें राजकुमारी आरोग्य होगई। इसी अवसरमें १अप्रेल सन् १८५७ ई०को श्रीमतीके नवम गर्भसे राजकुमारी बियेट्रिसका जन्म हुआ।

राजकुमारीका विवाह निकट आनेसे अस्सी हज़ार रुपया वार्षिक और चार लाख रुपये विवाहमें दहेज देनेके लिये नियत हुए। इसी वर्षमें रानीने पतिको "प्रिंसकंसर्ट" की उपाधि दी । और इसी वर्ष में भारत वर्षमें बलवा हुआ। जिसके समाचार आगे लिखे गयेहैं ॥

राजकुमारी "विकी"[1] के शुभ विवाहसे इंग्लैंडमें बड़ा आनन्द हुआ । नगरमें धूम धाम मचगई । बरात आनन्दपूर्वक इंग्लैंड आई । २५जनवरी सन्१८५८ई० को विवाहका मुहूर्त्त स्थिर हुआ । १८ जनवरीकी रात्रिमें राजमहलमें नृत्य हुआ। इसमें दुलहिनने अपना नृत्य कौशल दिखलाया । रानीने इस विवाहमें अधिक धूमधाम करना चाहाथा इसलिये लंडन नगरमें बहुत दिन पहलेसे तैयारियां हुई। २८ जनवरीको ईसाई धर्म और इंग्लैंडकी राजरीतिके अनुसार बड़े ठाटसे विवाह हुआ । २९ को दूलह दुलहिन विदा हुए, रानीने विदा करते समय कुमारी और दामादका वात्सल्यसे चुंबन किया । प्रिय कुमारीके विदा होनेसे दम्पतिको वियोगजनित खेद हुआ ।

कुछ कालके अनन्तर प्रथम राजकुमारीसे मिलनेके लिये दम्पति जर्मनी गये । मेगडेवर्गके निकट वाइल्ड पार्कके स्टेशन पर राजपुत्रीने हाथमें कलंगी लिये माता पिताका स्वागत किया । चौदह दिन वहां निवासकर दंपति अपनी प्रियपुत्रीको वहीं छोड़ इंग्लैंड लौट आये । २७ जनवरी सन् ५९ ई०को लंडनमें शुभ संवाद सुनाई दिये । सुनतेही दंपतिको परमहर्ष हुआ । संवाद ऐसे वैसे नही थे । जर्मनीके तारसे राजकुमारी विक्टोरिया (रानीकी प्रथम कुमारी) के उक्त तिथिको पुत्रप्रसव होनेकी खबर थी । यही बालक आजकल जर्मनीके सम्राट् द्वितीय विलियम हैं ॥

नवीन वालंटियर सेनाकी २३ जूनको हाइडपार्कमें कवाइद हुई । नेशनल राइफल एसोशियेशनमें रानीने प्रथम वार बंदूकका फेर किया । इसके बाद २२ सितंबरको जन्मभूमिके दर्शन करने राजकुमार एलबर्टके साथ रानीने प्रयाण किया । गोथा पहुंचने पर रानीकी द्वितीय सास का देहान्त होगया । इस यात्रामें प्रथम राजकुमारीसे दंपतिकी फिर भेंट हुई । यहां एक भयंकर घटना हुई । रानीके पति एकदिन गाड़ीमें चढ़कर वायुसेवन को गयेथे । अकस्मात् गाड़ीके घोड़े भड़क उठे । घोड़ोंने यथेच्छ भागना आरंभ किया । भागते २ गाड़ी एक छकड़ेसे टकराई । टकरातेही उसका चूर चूर होगया । पति गाड़ीमेंसे कूदकर बचगया किन्तु कोचमैनके बहुत चोट आई । समाचार पातेही रानी काँप उठी । आंखोंमेंसे आंसू बहने लगे । पतिके मिलनेपर दोनोंको हर्ष हुआ और कुटुंब सहित ईश्वरकी प्रार्थनाकी । इस यात्रामें ब्रुसेल्स होते हुए १६ अक्टूबरको विंड-सर आपहुँचे ॥

---

१ बड़ी राज कुमारीका छोटा नाम.

राजकुमारी एलिसके विवाहकी इन दिनों इंग्लैंडमें बहुत चर्चाथी। हेसी-डारमेस्टैंडके राजकुमार राजकुमारी से विवाह करनेके उम्मेदवार थे। वह दिसंबर मासमें इंग्लैंड आकर श्रीमतीके मेहमानहुए। इस विवाहके विषयमें श्रीमतीने अपनी "दिनचर्या"में लिखाहै कि "दिनका भोजन किये पीछे राजकुमारी एलिस और राजकुमार लुइस अंगीठीके पास बैठकर गुपचुप परन्तु हँस२कर बातें करते थे। जब मैं दूसरे कमरेमें गई तब थोड़ी देरमें दोनों मेरे पास आये। एलिसने डरते २कहा कि "मुझे इन कुमारके साथ विवाह करना स्वीकार है। और मैं आपसे आशीर्वाद चाहतीहूं।" मैंने उसका हाथ प्रेमसे दबाकर कहा "बेशक यह बहुत उत्तम है।" इस वार्त्तालापके पश्चात् कामकाजसे निपट कर मैं एलिस को साथ लिए हुए एलबर्ट और लुइसके कमरेमें गई। लुइस हमसे बहुतप्रीति पूर्वक मिला और उसने मेरे हाथका चुंबन किया। इसके बाद सन् १८६२ ई०में विवाह हुआ। जिसका वर्णन आगामि अध्यायमें है॥

अध्याय ३९.

राजमाताकी मृत्यु और राजकुमारीका विवाह।

श्रीमतीकी माता, केंटकी डचेज़् जिनकी सुशिक्षासे उनमें इतने गुणोंने वास किया, जिनकी योग्य शिक्षाने श्रीमतीको वास्तविक देवी बनाकर संसारका उपकार किया उन्हींको पिचहत्तर वर्ष के वयमें बीमारीने घेरा। दिन२ शरीरकी शक्ति घटने लगी। सन् १८६१ई० के आरंभमें राजमाताका स्वास्थ्य बिगड़ना आरंभ हुआ। मार्चमें हाथमें कुछ पीडा आरंभ हुई इसकारण कुछ चीर फाड़ करानी पड़ी। १५मार्चको दंपतिको खबर मिली कि राजमाता का स्वास्थ्य अधिक बिगड़गया है। कभी २ अचेत होजाती हैं और हिचकियांभी आनेलगी हैं। सुनते ही दोनों दौड़े हुए फ्रागमोरके महलमें राजमाताके पासगये। श्रीमतीको बाहर छोड़कर राजकुमार एलबर्ट सासके पास कमरेमें गये। थोडीदेरमें बाहर आकर अपनी प्रियतमासे रोनेके सिवाय कुछ न कहा। दंपतिने भीतर जाकर देखा तो राजमाता पलंगपर बैठी हुईथीं। श्रीमतीने प्रणाम कर माता के हाथका चुंबन किया और अपना चुंबन करानेके लिये अपना कोमल कपोल माताके होठोंके लगाया परन्तु माने चुंबन न किया। केवल पुत्रीके शिरपर हाथ फेरकर रहगई। माताकी दशा देखकर दोनोंके चित्तपर खटका होगया। श्रीमतीने डाक्टरोंसे पूंछा तो उन्होंने कहा कि अब इनके जीनेकी आशानहीं है॥

कुछ मास पूर्व श्रीमतीके पतिने अपनी पुत्रीको लिखाथा कि संसारमें मेरे समान कोई सुखी नहीं है क्योंकि मैंने अभीतक किसीकी मृत्यु नहीं देखी है।यही स्थिति रानीकी थी। दम्पतिके असीम सुखमें एकाएक इस दुःखका बोझा आपड़ा श्रीमती अपनी माताके पास उसीतरह लाड प्यारसे रहतीथी जैसे उनका ढंग बालवयमेंथा । आपको प्रथम बारके दुःखने कातर करदिया । रात्रि बड़ी कठि-नतासे तारे और घंटे गिनते बीती । प्रभात होतेही पतिने श्रीमतीको बहुत आश्वासन दिया । रानीने माताकी नाडी मंद देखकर कहा "हाय! माता विना-संसार का सुख फीकाहै ।" इस विषयमें श्रीमतीने अपनी "दिनचर्या" में लिखाहै कि "रोते २ मुझे हिचकियां आनेलगी । मैंने उसके हृदयपर गिरकर अंतिम चुंबनकिया।एलबर्ट मुझे दुःखसे मुक्त करनेको दूसरे कमरेमें लेगये । वहां जाकर उन्होंने माताकी अंतिम ख़बर सुनाई । मैंने दौड़कर माताके दर्शनकिये । हे परमेश्वर ! कैसा भयानक दृश्य था ! उसके प्राणात्माकी निवृत्ति हुई। सब दुःखों का अंतहोगया । मेरी प्रियमाता ! अब मेरी नहीं रही अब वह चल बसी ।"

दंपतिने जाकर राजमाताका कमरा देखा तो वह बहुत व्यवस्थासे था । एक ओर केनेरी पक्षी गारहाथा दूसरी ओर टोपीका कसीदा अधूराथा । दंपति के शोक की सीमा न रही। मरनेसे पूर्व राजमाताने अपनी प्रियपुत्री विक्टोरियाको अपना वारिस किया ॥

२५ मार्चको माताकी अंतेष्टि क्रिया हुई । राजमाताको जो पेन्शन मिला करतीथी वह अबसे उनकी द्वितीय पुत्री को मिलने लगी । उनके सब नौकरों को पेन्शन दीगई और मुख्यपरिचारिका को रानीने अपने पास रक्खा । इनकी मृत्यु पर नगर और पार्लियामेंटमें बहुत शोक हुआ ॥

राजमाताके शोक की समाप्ति नही होने पाई थी इतनेहीमें राजकुमारी एलिसके विवाह की तैयारी हुई । पार्लियामेंटने तीन लाख रुपये का दहेज और साठ हजार वार्षिक देना निश्चय किया । बरात लंडन आपहुंची । इस उत्सवपर जो मेहमान आये थे उन्होंने श्रीमती का शोक दूर कराया । माताके दुःखमें पुत्रीका विवाहकर दंपतिने अंतिम बार सुखानुभव किया परंतु यह सुख अब अधिक कालतक टिकनेवाला न था । विवाह के अनंतर आयर्लैंडकी यात्रामें एक दिन अकस्मात् श्रीमतीके मुखसे निकलगयाः—" खेद ! कहीं ऐसानहोकि हमारी यह अंतिम भेट हो!" इस अनायास कथनपर उससमय किसी ने लक्ष न दिया किन्तु बात यह सच्ची निकली ॥

विवाहसे लेकर सन् १८६१ ई० तक बहुतही आनन्दरहा । दम्पतिने सुखके सिवाय दुःखका नामतक भी न जाना । माताही इस सुखकी जन्मदात्री थी उसी ने श्रीमतीको पढ़ा लिखाकर सुखभोगनेके योग्य कियाथा और सच पूंछो तो रानी विक्टोरिया का सुख माताके साथही विदा होकर मातृवियोग के दिनसे श्रीमती के दुःखका आरंभ होगया ॥

अध्याय ३६.

दुःखका आरंभ ।

राजमाताकी मृत्युसे दुःखका आरंभ होगयाथा । श्रीमतीके जीवन खेतमें दुःखका बीज बोदिया गयाथा परंतु जबतक अंकुर उत्पन्न न हुआ उसकी किसीको चिन्ता न हुई । "सुखस्यानंतरं दुःखं दुःखस्यानंतरं सुखम् । चक्रवत्परिवर्त्तन्ते दुःखानि च सुखानि च ॥" इस लोकोक्तिके अनुसार श्रीमतीके सुखके दिन स्वप्न होगये अब दुःखकी पारी आई । दम्पतिके यौवन सुख, राज्य लक्ष्मी, प्रभुत्व और संतति सुखमें आनन्द पूर्वक कालयापन करते२सन् १८६१ ई०के अंतिम भागमें एकाएक राज्ञीपति एलबर्टका सास्थ्य बिगड़ा । परंतु उन्होंने इस बातकी कुछ पर्वाह नकी । राजकुमार जैसे स्वधर्म निष्ठ और आस्तिक पुरुषको मृत्युका कुछ डर न हुआ । एक दिन उन्होंने अपनी प्रेमपात्री रानीसे कहाः— "मुझे जीनेका किंचित्‌भी लोभ नही है । मेरी इच्छित और प्रियवस्तुकी ठीक रक्षा हो सके तो मैं कल मरनेको तैयार हूं ।" उस समय रानीको ऐसे कर्ण कटु वाक्यसे दुःख तो हुआ परंतु पतिका कथन साधारण समझ कर उन्होंने इस पर लक्ष्य न दिया । सैंडहर्स्टकी युद्धशालाका निरीक्षण करनेमें २२ नवंबरको थकावट और वृष्टिसे उनका स्वास्थ्य अधिक बिगड़गया । शरीरके जोड़ों में पीड़ा होने लगी । इतने हीमें समाचार मिले कि एमेरिका में ब्रिटिश जहाज़ 'ट्रीरेंट' पकड़ लिया गया । सुननेसे चित्तको बहुत धक्का लगा "ट्रीरेंट" धूमपोत हेवानासे डाक लेकर इंग्लैंड आरहाथा । इसमें सीडन और एसन नामक दो व्यक्ति सवारथे । ये दोनों एमेरिकाके चार्लेसटाउन से भागकर क्यूबा होते हुए यूरोप जातेथे । प्रतिपक्षियोंने इन दोनोंको 'ट्रीरेंट' के अध्यक्ष से मांगा । जहाज़ वालोंने शरणागत वत्सलताके विचारसे दोनों भगेडुओंको न दिय' । बस इसीपर एमेरिकाके "सेंटजेसिंटोंटो" जहाज़ने ट्रीरेंट पकड लिया । इंग्लैंडमें समाचार पहुंचते ही बड़ी हलचल मची । प्रिंस एलबर्टकी सम्मति और प्रयत्नसे वाशिंगटनके ब्रिटिशदूतके साथ इस विषयकी लिखापढ़ी हुई । इस परिश्रमसे उनके

स्वास्थ्यमें अधिक गड़बड़ हुई । ज्वर आनेलगा । राजकुमारने श्रीमतीको अधिक चिन्ताग्रस्त देखकर कहाः—"साधारण बीमारी है । चिन्ता मत करो" परंतु दीवान पामर्स्टनके चित्तपर खटका होगया ।

बीमारी बढ़ती देखकर सरकारी डाक्टर जेनर और सर जेम्स क्लार्कको इलाज सौंपा गया । उन्होंने आरोग्य होनेकी आशादी परंतु बीमारी दिन २ बढ़ती गई। रोग बढ़नेके साथही रानीकी चिन्ता बढ़ी । ७ दिसंबरकी रातमें उन्हें बहुत बुरे२ स्वप्न आये । स्वप्नमें दो देवताओंने उनको घेर लिया जिससे वह बहुत भयभीत हुई । ८ दिसंबरको राजकुमार को उस कमरेमें से उठाकर दूसरे गृहमें लेगये । वह कमरा अशुभथा । उसमें पहले राजा चौथे ज्यार्ज और चौथे विलियमका देहान्त हो चुकाथा परंतु पहलेसे इसबातका किसी को विचारनथा । एलबर्ट की आज्ञासे राजकुमारी एलिसने प्यानो बाजेमें भजनगाया । भजन सुनते ही राजकुमारकी आंखोमें आँसू भरआये और उन्होंने हाथ जोड़कर परमेश्वरसे पापके प्रायश्चित्तकी प्रार्थना की ॥

८ दिसंबर को रविवारथा । रानीने पतिकी मृत्यु के अनन्तर एक मित्रको पत्रमें लिखाथा कि "गत रविवार को प्राणनाथ भूमिपर थे उसदिन राजकुमारी एलिसके साथ उन्होंने आनन्दमें समय विताया । पिताके कहनेसे कुमारीने भजन गायेथे । गानसमाप्त होने पर उन्होंने ईश्वर प्रार्थना की । यद्यपि उन्होंने कुछ कहानहीं किन्तु उनके मुखकी चेष्टा और हाथकी हाल चालसे स्पष्ट मालूमहोता था कि उनका समय ईश्वर प्रार्थनामें जाताहै ।" पिताकी बीमारी में कुमारी एलिसने बहुत सेवाकी । दिन रात उनके पलंगके पास अड़ीरही । और किसी न किसी तरह उनका मन बहलानेके लिये प्रयत्न करती रहीं । पिताको उठाने बैठाने, लिटाने और सेवा करनेमें पुत्रीने बहुत परिश्रम किया और इसकारण दंपतिने उनको आशीर्वाद दिया। रविवारके दिन डाक्टरोंने आशा तो न छोड़ी परंतु पादरियोंके प्रयत्नसे उन्हे ईसाई धर्मकी पुस्तकों में का कुछ भाग "ईश्वराज्ञा" और "दूतवचन" सुनाये । रात्रिको पतिकी दशा रानीको कुछ अच्छी जानपड़ी। पतिने मृदुहास्यसे "हृदयेश्वरी प्राणवल्लभा" का संबोधनकर रानीके मुखपर हाथफेरा । इससे रानीके चित्तको विश्रातिहुई ॥

सोमवारको ज्वरने बलपकड़ा। परंतु डाक्टरों ने आशा छोडी नहीं । रात्रिको उन्होंने रानीके शयन समय उनका चुंबनकिया । बुध गुरु और शुक्र को कोई विशेष बात नहीं हुई । शनिवार ता० १४ दिसंबर सन् १८६१ई० का प्रातःकाल श्रीमती, राजकुटुंब और ब्रिटिशराज्यपर वज्रपात् करनेके लिये उदयहुआ ।

दिनभर प्राणपतिकी प्रकृति अच्छी रहनेसे रानीको जो आशा हुई थी वह एक साथ निराशामें बदलगई। डाक्टरको सन्निपातके लक्षण मालूम होगये।डाक्टरका संकेत पाकर रानीके होश उड़गये । उससमयसे उन्होंने पतिको बिलकुल न छोड़ा। थोड़ेही कालमें पतिकी दशा अधिक बिगड़ती देखकर श्रीमतीने अपनेको कोसना आरंभकिया । उससमय पिताके चरणोंमें युवराज और राजकुमारी हेलेना दोनों बैठेथे। महलमें चिड़िया बोलनेका शब्द तक नहीं था । सब सूनसान था । आंसूकी नदियाँ बहरहीथी। पौने ग्यारहका समय हुआ । श्वासकी गति मंद होगई । मुखकी आकृति, प्रभाव और सौंदर्यमें किसी तरहका अंतर न आया। ऐसे समयमें अपनी प्रियपत्नीको सदाके लिये शोकसागर में डाल ब्रिटिश राज्यके मुकुटका मुकुट, प्यारे संतानके पूज्य-पिता, प्रजाके सच्चे शुभचिन्तक, परोपकारी, विद्वान्, बुद्धिमान्, वीर संसारसे विदाहुए । उनका शव मरण शय्यापर सोता रहा। रानी और एलिसको मूर्च्छा आगई। महल में रोना कूटना मचगया। हाय ! कैसा दुःखदायी समय !!

अध्याय ३७.

पतिका स्वर्गवास ।

रात्रिके शांतिमय समयमें अशांतिफैली।निद्रादेवीके वशीभूत नागरिकोंको सेंट-पालके गिरजेके वृहत् घंटने टनाटनके भयानक और हृदयभेदी शब्दसे जगादिया उसीसमयसे लंडनमें हाहाकार मचा। सूर्यके उदय होतेही तारपर तार उड़नेलगे। बातकी बातमें ग्रेटब्रिटेन क्या बरन यूरोप और एमेरिकामें इस शोक संवादने जा प्रवेशकिया। ४२वर्षके वयमें रानी, सुरसुन्दरी विक्टोरिया सधवासे विधवा होगई। २१ वर्षतक अपने बहुमूल्य विचारोंसे जिस महापुरुषने ब्रिटिश साम्राज्यकी सहायताकी थी, जो दयामयी देवीका प्राणनाथ था जिसके लिये यूरोप और एमेरिकाके यावत् बुद्धिमानों और दीनोंकी पूज्यबुद्धिथी उसके प्राणोंने सदाके लिये प्रयाण कर संसारमें से एक रत्न उठादिया। रानी विक्टोरियाके शाशनकी सुकीर्त्ति स्थापन करानेके दोही कारणथे। एक उनकी माता जिन्होंने उनके कोमल अन्तःकरणमें सद्गुणोंको स्थानादिया और दूसरे उनके पति राजकुमार एलबर्ट । प्रौढावस्थामें रानीने पतिसे राज्यशासनमें बहुत कुछ सहायताली थी। केवल सहायताही क्यों रानीके नामसे यही इंग्लैंडका शासन करते थे।

विंडसरके राजभवनमें रुदनका गगनभेदी शब्द होने लगा। रानीके शोकाश्रुने प्रजाके हृदय विदीर्ण करडाले।पति वियोगमें भारतकी आदर्श नारियां सती होती हैं । इंग्लैंडकी यहचाल नहीं है परन्तु इसमें यह न समझना चाहिये कि वहांकी

रमणियोंमें पतिभक्ति नहीं है।रानी पतिभक्तिकी मानों मूर्त्तिथी । प्रजोपकारके लिये उन्होंने शरीर रक्खा और इसीकारण वह पतिके सहगामिनी नहुई। इतना होनेपरभी उनका स्वास्थ्य वहुत विगड़गया । पतिकी मृत्युके साथही रानीके लिये चिन्तावढ़ी और प्रजाने उनको इस शोकका वोझा हलका करनेके लिये विडसर छोड़नेकी सम्मति दी परंतु एक परम साध्वी रमणीसे ऐसे दुर्घट समयमें इस प्रकारका दुःसाहस क्यों कर हो सकता है । पतिके मरणका घाव हृदय पर लगतेंही श्रीमतीके वालक पितृ वियोगसे पीडित हुए और इसी पीडामें उनको ज्वरने आदवाया इसलिये लाचार होकर रानीको आस्वर्न जाना पड़ा ।

राजकुमार एलवर्टकी समाधि राजमाता केंटके निकट तैयार हुई । २३ दिसंवरको राज्ञीपतिके शवकी सवारी निकाली गई । साथ राज्यके मुख्य २ अधिकारियोंके सिवाय छः घोड़ोंकी गाड़ीमें श्रीमतीका राज मुकुट लेकर अर्ले आफ् स्पेन्सर और राजदंड, तलवार और टोपी लेकर लार्ड ज्यार्ज लिनोक्स गये । शव छः घोड़ेकी गाड़ीमें रक्खा गया । शवके साथ मंत्रि मंडल, ड्यूक आफ् कनाट, प्रूशियाके युवराज, वेलजियमके राजकुमार, महाराजा दिलीप सिंह आदि अनेक राजपुरुष थे ।

गिरजेमें पहुँचने वाद प्रार्थना हुई । रानीकी ओरसे एक हीरक पुष्पोंका हार और तुर्रे भेंट हुए । शवके निकट युवराज आदि पुत्र इकट्ठे हुए । मिनट २ के अनंतर तोपें चलाकर राजकुमारका राजसी सत्कार हुआ । सव लोगोंके देखते, प्रजाके शोककी अश्रुधारा वहाते राज्ञीपतिका शरीर भूमि समर्पण किया गया । प्रजावर्गने एक स्वरसे उस समय 'सद्गुणी राजकुमार' के नामसे पुकार कर हृदयका दुःख हलका किया ।

अध्याय ३८.

राज्ञीपतिका शासनान्त ।

मैंने इस पुस्तकमें अव तक राज्ञीपतिको 'राजकुमार' के नामसे लिखाहै । यह शब्द उनके नामके साथ अधिक व्याप्त था किन्तु राजकुमार केवल राज्ञीपति अर्थात् रानी विक्टोरियाके पति ही नहीं थे किन्तु रानीके साथ ही वह व्रिटिश राज्यके भी स्वामी थे । विवाहसे थोड़े दिन वाद उन्होंने लिखाथा कि"मैं पतितो हूं किन्तु गृह स्वामी नहीं हूं । " घरमें अप्रवंध नौकरोंकी स्वतंत्रता और रानीके प्रवंधमें हाथ डालना उचित न समझ कर उन्होंने ऐसा लिखदिया था परंतु थोड़ेही कालमें उनकी प्रियतमाने उनकी यह वृत्ति वदलदी । वह प्रत्येक राज कार्यमें पतिकी सम्मतिसे काम करने लगी और उन्होंने इस विषयमें अपने मातुल

को जो पत्र लिखा वही इस बातका प्रमाण है। मातुलके नाम का पत्र प्रिय पाठक अध्याय १९ में पढ़ आये हैं। इसके दो एक प्रमाण नीचे लिखे हैं। इनकी मृत्युसे श्रीमतीने एक बहुमूल्य मंत्री और सहायक तथा प्रजाने सच्चे और परमार्थी मालिकको खोदिया। सन् १८४७ ई०के जुलाई मासमें बेलजियम नरेश श्रीमती के मातुल राजा लियोपोल्डकी पुत्री के विवाहमें कार्यवश श्रीमती नहीं जासकी थी। उससमय आपने अपने पतिको अपनी जगह भेजकर लिखाथा कि-"आपके साथ मेरा स्नेह कितना है इसकी जांच इसीमें समझिये कि मैंने अपने सर्वश्रेष्ठ प्यारे एलबर्ट को आग्रह पूर्वक भेजाहै । उनकी अनुपस्थिति में मुझे बहुतही दुःखहोता है। इतने अधिक बालबच्चे होते हुएभी मुझे उनके बिना सुहाता नहीं है। उनके बिना मानो मेरे घरका प्रकाशही बुतगया है।" प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ मिस्टर सी ग्रेविलने अपनी पुस्तकमें लिखाहै कि-"प्रिंस एलबर्ट मानो स्वयं राजा होगयेहैं। उन्हें काम करना बहुत पसन्दहै। रानी चाहे रानीकी उपाधिधारण करती हैं परन्तु शासनतो वास्तवमें राजकुमार एलबर्ट काहै। सब प्रकारसे वही इंग्लैंडके राजाहैं।" उनकी मृत्युके बाद सेक्सनके राजदूतसे भरे दरबारमें इंग्लैंडके प्रधान अमात्य मिस्टर डिसराइली (लार्ड बीकान्स फील्ड) ने स्पष्ट कहाथा कि-"प्रिंसएलबर्टके साथ मानो हमने इंग्लैंड के राजा को समाधि देदी। इस जर्मन राजकुमारने अन्य राजाओंकी अपेक्षा हमारे समक्ष अधिक बुद्धिमानी और उत्साहसे इंग्लैंडका शासन किया था। रानीके वह सदा प्राइवेट सेक्रेटरी और प्रधान अमात्य थे । हमारे कईएक वृद्ध पुरुषोंके जीवन समाप्त होने तक यदि वह जीवित रहते तो कंसर्वेटिव राज्यमें स्वतंत्रता के स्वत्व किसप्रकारसे भोगे जा सकतेहैं उन्हें दिखला देते। और जो युवा पुरुष मंत्रिमंडलमें भरतीहुए हैं वे प्रिंसके अनुसार प्रसन्नता पूर्वक चलते ।" सन् ५७ के बलवे के समय उन्होंने भारत का जो उपकार किया था उसका उल्लेख अन्यत्र है ॥

अध्याय २९.

दुःख में दया।

संसारमें राजपाट पुत्र पौत्र वैभव सब कुछ है परन्तु साध्वी पतिव्रता स्त्रीके लिये पतिसे बढ़कर कुछ नहीं है। बालक बालिकाओंके होते हुए श्रीमती को अल्प कालके लिये पति वियोगसे जो कष्ट हुआथा उसका उदाहरण श्रीमतीके गत अध्यायमें प्रकाशित पत्रसे विदित होता है । अब श्रीमतीने सदा के लिये प्राणनाथको विदा कर दिया। इस दुःख का अनुमान वेही करसकतेहैं जिन्हें इसप्रकारका दुःख भोगना पड़ा है। उन्होंने एक दूसरे पत्रमें लिखाथा कि

"हाय! अब मुझे केवल 'विक्टोरिया' कहकर पुकारने वाला नहीं रहा।" उस दुःखके समय श्रीमतीका स्वास्थ्य बहुत विगड़गया था और उनके जीवन मेंभी संदेह किया जाता था परन्तु जिस समय १६ जनवरी सन् ६२ई० को पति मरणके एकही मासवाद उन्हें हार्टली परगनेसे एकभयानक दुर्घटना का संवाद मिला वह अपने दुःखको विलकुल भूलगई। उसदिन उस परगने की एक कोयले की खानमें एकाएक अग्नि लगगई। इस वडवानलने २०४ मनुष्योंका स्वाह करदिया। दो सौ चार मनुष्यों के जीते जल जानेकी खवर पाकर श्रीमतीका हृदय विदीर्ण होगया। आपने आस्वर्नके राजभवनमेंसे खान वालों को तारदिया "कोयले की खानमें जल भरने वाले दीन मनुष्योंके वचनेकी यदि आशा हो तो इससे वढ़कर मुझे कोई हर्ष न होगा। उन दीनोंके लिये मेरा शरीर जलताहै।" श्रीमतीकी आशा फलवती न हुईऔर विचारे दीन मजदूर दम घुट२कर मरगये। इसके वाद राजधानीमें इस दुर्घटनापर शोक प्रकाशित करनेके लिये एक महती सभाहुई उसके सभापतिके नाम आपने लिखवायाः— "श्रीमती अपने ऊपर भारी कष्ट पड़ने परभी हार्टलीकी प्राणघातक दुर्घटना पर वहुतही ध्यान देती रहीं। और अंततक उन्हें आशा थी कि दीन मजदूरो में से कितनेहीं जीवित निकल सकैंगे परन्तु उनकी आशा निरर्थकगई। इसवातसे श्रीमतीको वड़ा दुःख हुआ। श्रीमतीने मुझको आज्ञादी है कि दीन विधवाओं और माताओंकी ओर वह वहुतही सहानुभूति रखती हैं। और अपने ऊपर जो आपत्ति आपड़ी है वह उससेभी वढ़कर इस दुःखको समझती हैं। उनको आशाहै कि इन लोगोंके संकट टालनेके लिये जो उपाय किये जांयगे उनमें संयुक्त होनेसे उन्हें संतोष और हर्षहोगा" यह पत्र श्रीमतीके प्राइवेट सेक्रेटरीकी ओरसे लिखागया था। इसके साथ श्रीमतीने १०० पौंडअपने निजखर्च मेंसे भेजे। इसका इतना प्रभाव पड़ाकि आगमें जलकर मरजाने वालोंके कुटुंवकी रक्षाके लिये जो फंड इकट्ठाहुआ उसमें ८१ हजार पौंड आये॥

अध्याय ४०.

वैधव्यका दुःख।

कमललोचनी, मृदुभाषिणी रानीविक्टोरियाने पतिके स्वर्गवास पीछे शोक व्रत धारण किया। उनका मुखकमल सूर्यास्तसे मुरझा गया, आंखोमें से जलके स्रोत वहने लगा, प्राणेश विना शरीर पीला पड़गया, मस्तिष्क शून्य होनेसे काममें अव्यवस्था होने लगी,और इसी कारण अपने दुःखसे प्रजाको दुःखित देखकर उन्होंने अपने शोक परित्यागका संकल्प किया परंतु"मेरा प्यारा एलवर्ट" उनके हृदयमें से न हटा॥

पति वियोगमें सहानुभूति प्रकाशित करने श्रीमतीके पास बेलजियमका राजा लियोपोल्ड और जर्मनीके कुमार होलिनलोही आस्वर्न आये । इन्होंने रानीको बहुत कुछ बोधदिया परंतु यह असाधारण कष्ट था । एक दोदिनके समझाने बुझानेसे इसका दुःख दूर होना संभव नथा। दोहीमास बाद युवराजने पूर्व देशकी यात्राकी । अब माताका आश्वासन करनेके लिये उन के पास केवल राज कुमारी एलिस और बिथेट्रिस रहगईं । १ जुलाईको किसी प्रकारकी धूमधाम विना राजकुमारी एलिसका विवाह करना पड़ा क्योंकि वह वरयोग्य होगईथीं और उनके विवाहका समय अब टल नहीं सकताथा ॥

इसीवर्षकी १ सितंबरको लेकनमें युवराज (प्रिंसआफवेल्स) की अपनी भावी प्रियतमा डेनमार्कके राजाकी राजकुमारी परमसुंदरी एलेकज़ेंड्रा से प्रथम भेंट हुई । यहांकी बातचीतमें विवाह निश्चयहुआ ॥

फ्रागमोरके मैदानमें समाधि तैयार होजानेपर राज्ञीपति एलबर्टकी अस्थि सेंट ज्यार्जके गिरजेमेंसे निकालकर समाधिमें लाईगई । यह समाधिस्थल बड़ादर्शनीयहै । बीचमें मुसलमानोंके मकबरेके ढंगकी समाधि और उसके चारों ओर हरित कुंजहै । समाधिके भीतर एबर्डीनका संगमर्मर लगाया गयाहै और उसके ऊपर तांबेकी छतहै । इसके ऊपर सुवर्णका क्रूस चढ़ाया गयाहै । समाधिके ऊपर राजकुमार एलबर्टकी श्वेत पाषाणकी मूर्त्तिहै । समाधिको देखकर शृंगार प्रिय लोगोंके चित्तमें प्रेमका और वैराग्य प्रिय लोगोंके मनपर विरागका चित्र खिंचताहै । इससमाधि स्थलमें लेटिन भाषाका एक लेख अंकितहै ।इसमें लिखा है कि—" वियोगिनी विधवा रानी विक्टोरियाने प्रिय पति प्रिंस एलबर्टके शरीर के यावत् नश्यमान पदार्थ यहां रखवाये । यहीं पर वहभी अन्तमें प्रियपतिके साथ सुखकी निद्रालेगी ॥"

एलबर्टके वार्षिक श्राद्धके लगभग सदरलैंडकी डचेज़ने रानीके पास एक बाइबिलभेंटमें भेजी । यह भेंट इंग्लैंडकी अनेक राजभक्त विधवाओंकी ओर सेथी । श्रीमतीने भेंट स्वीकारकर डचेज़को एक पत्रमें लिखा कि—" राजभक्त विधवाओंकी ओरसे सहानुभूति सूचक पत्रके साथ भेंटपाकर मेरे हृदयमें प्रेम उत्पन्न हुआहै । कृपापूर्वक विधवा रानीकी ओरसे विधवा बहनोंको इस सहानुभूतिके लिये धन्यवाद दीजिये । यद्यपि इस संसारमें अब प्राणनाथके दर्शन दुर्लभ हैं परंतु मृत्युके अनन्तर सदाकी भेंटका विचार करनेसे मुझे परम संतोषहै । उन 'अनेक विधवाओं' को ईश्वर शांति और सहायतादे यही चूर्ण हृदया रानीकी हार्दिक प्रार्थना है।"

युवराज (प्रिंसआफ्वेल्स)
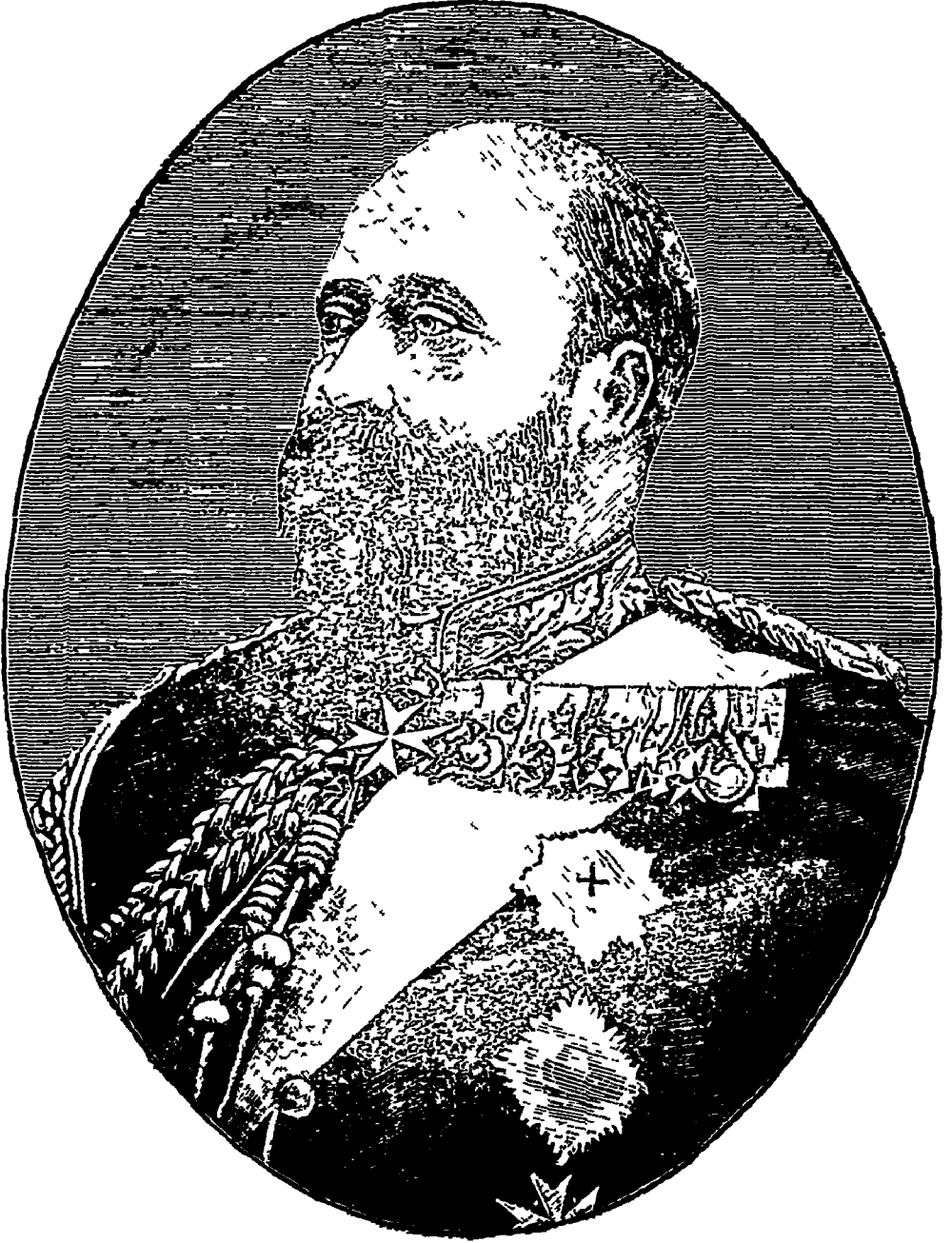
युवराजपत्नी एलेक्ज़ेड्रिना।

अध्याय ४१.

युवराजका विवाह और श्रीमतीकीयात्रा।

७ मार्चको जब श्रीमान् युवराजकी दुलहिन डेनमार्क जैसे दूरदेशसे चलकर लंडनमें आई लंडनही क्या बरन इंग्लैंडभरमें हर्षकी दुंदुभी बजनेलगी। राजकुमारी एलेक्जेंड्राके साथ उनके माता पिता भाई और बहन थे। युवराजने राजकुमारीका स्वागत किया और दोनों साथ २ लंडनमें फिरने के लिये निकले। नगरवासियोंने हर्षगर्जनासे इस भावी जोड़ीका स्वागत किया। रानीने मिलते समय पुत्रीके समान प्रेम किया। १० मार्च सन् १८६३ ई० को विवाह स्थिर हुआ। उस दिन सेंटजेम्सके गिरजेमें बड़ी धूमधामसे तैयारी हुई। रानी पुत्रका विवाह देखनेके लिये आई तो सही परंतु शोकसूचक वस्त्र पहनेहुए आकर विवाहमण्डप से बहुत दूर बैठगई। विवाहके अनन्तर वरवधू सुहागरातके लिये आस्बर्नमें जाकर बसे। विवाहकी रात्रिमें लण्डन नगरमें रोशनी कीगई थी। इसकी शोभा देखनेके लिये बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई इस भीड़में कुचलकर छः मनुष्योंके प्राण गये। इसी वर्षमें राजकुमारी एलिसके पुत्रका जन्म हुआ।

एकान्तवाससे श्रीमतीके शोकमें न्यूनता न हुई और वारम्वार पतिके स्मरणसे उनका हृदय अधिक दुःखित रहनेलगा इसलिये श्रीमतीने जर्मनी और बेलाजियमकी यात्राकी। इन्होंने बेलजियमके राजाको साथ लेकर प्रथम पति एलबर्ट की जन्मभूमि ऐसेन्यूको गमन किया। पतिका जन्मस्थान देखतेही रानीको पुरानी बात स्मरण होआई। और बहुत देर तक श्रीमती रोती रही। ७ सितम्बरको यात्रासे लौटकर आपने इंग्लैंडके बालमोरल स्थानमें अपनी पूंजीसे पति के स्मारकमें एक स्तम्भ बनवाया। यह स्तम्भ त्रिशंकुके आकारका बनाहुआ है। इसपर श्रीमतीने लिखवायाः—"महाशय और पुण्यशाली अतिवल्लभ राज्ञीपति एलबर्टके स्मरणार्थ उनकी विदीर्णहृदया विधवा रानीने बनवाया, अगस्त २१ सन् १८६२ई० "॥

७ अक्टूबरको राजकुमारी एलिस और हेलेनाको लेकर रानीने स्काटलैंडकी यात्राकी। एलथ नाग्युथेस्कमें श्रीमती वायु सेवनके लिये गईथी। दो मील तक अन्धकारमें चलने बाद गाड़ी एकाएक उलट गई। सवारियां नीचे गिरीं। श्रीमतीके मुख और हाथ में चोट आई। दोनों घोड़े उलटे गिरगये। परंतु ईश्वरने सब लोगोंके प्राण बचाये॥

अध्याय ४२.

पौत्रका जन्म और शोक मुक्त रानी।

८ जनवरी सन् १८६४ ई० को युवराज (प्रिंस आफ् वेल्स) के पुत्रका जन्म हुआ। यह प्रसव अकस्मात् हो पड़ा। जन्म के समय न कोई दाई पास थी और न दासी। सब लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। श्रीमतीको पौत्र जन्मसे अतीव हर्ष हुआ। आपने राजकुमारका नाम एलबर्ट विक्टर रक्खा। इसी दिनसे पतिशोक कम हुआ और राजकीय धूम धाम, जो तीन वर्ष तक बन्द रहाथा, फिर प्रचलित हुआ। इसके अनंतर राजकुमारी हेलेनाका राजकुमार क्रिश्चियनके साथ विवाह हुआ।

अब एकान्त वास छोड़कर श्रीमतीकी इच्छा प्रकाश रूप पर राजकीय काम करनेकी हुई। पतिमरणके अनन्तर पार्लियामेंट संबंधी काम काज श्रीमतीने परोक्ष रीतिसे किया था किन्तु सन् १८६६ई०की १६ फरवरीको प्रजाका अधिक आग्रह देखकर श्रीमतीने स्वयं पार्लियामेंट खोली। इस समय यह उत्सव सदाकी अपेक्षा अधिक धूम धामसे किया गया किन्तु श्रीमतीने अपने शोकसूचक वस्त्रोंका त्याग न किया। और निसासे डालती हुई सिंहासन पर विराज कर-पुत्र बधूसे हाथ मिलानेके सिवाय किसीसे बात चीत नकी। इस वर्षके अक्टूबर मासमें एबर्डीन नगरमें पानीके नल लगानेके लिये जो काम तैयार हुआ उसके उत्सवमें श्रीमती उपस्थित हुईं। इस उत्सव पर श्रीमतीने पति वियोगके बाद प्रथम ही व्याख्यान दिया। आपके मुखके सारगर्भित, प्रेम भरे वाक्य सुनकर प्रजाको अधिक हर्ष हुआ।

हृदयसे पतिका शोक हलका करनेके लिये श्रीमतीने पतिका चरित्र लिखनेका कार्य लेफ्टिनेंट जनरल सीग्रेको सौंपाथा। पुस्तक लिखनेका कार्य उन्होंने इसी वर्षमें समाप्त किया। श्रीमतीने इसकी रचनामें बड़ा उत्साह दिखाया और अपने याद की सारी बातें ग्रंथकारको लिखवादी।

स्विट्ज़र लैंडकी यात्रासे लौटकर जब आपने विंडसर महलमें निवास किया तब एक दिन आप वायु सेवन करतीं २ एक बनवासिनीके झोंपडेमें जा पहुंची। उसके पास बैठकर आपने धर्मका उपदेश दिया। इस घटनासे ब्रिटिश प्रजाके हृदयमें विश्वास दृढ होगया कि श्रीमती गर्व छोड़कर अमीर गरीबको समान गिनने वालीहैं। इसीवर्ष में राजकुमारी लुसीका मार्किस आफ् लोर्नसे विवाह ठहरा। इसविषयमें श्रीमतीने अपनी दिनचर्या में लिखाहै "बाहरसे

फिरकर जब मैं सातबजे घर पहुंची तब डरती२ लुसी मेरे पास आई। उसने शिर नीचा किये हुए लज्जित होकर मुझसे कहाकि आज लोर्नेने मुझपर बड़ाप्यार दिखलाया और मुझसे विवाहकी बातचीतकी । मैंने इस आशासे 'हां' कहदिया कि आप इस बात को स्वीकार करलोगी। " श्रीमतीने इस बातको स्वीकार किया । सन् १८७१ ई० की २१ मार्चको इनका विवाह हुआ । इसके बाद अपरेल मासमें श्रीमतीने राजधानीमें फ्रांसके पदच्युत राजा नेपोलियनसे भेंटकर उनका बड़ा सत्कार किया ॥

अध्याय ४३.

युवराजकी बीमारी ।

२५ नवंबर सन् १८७१ ई० को अकस्मात् युवराज (प्रिंसआफ्वेल्स) को ज्वर पीडा हुई । राजकुमारी बियेट्रिसेन भाईकी बड़ी सेवाकी । बीमारीकी ख़बर पातेही राज्यभरमें खलभली मचगई । ८ दिसंबरको रोगने अधिक बल पकड़ा । प्रजाकी बेचैनीका ठिकाना न रहा। घड़ी२आरोग्य होनेके समाचारोंकी लोग राह देखने लगे । १० दिसंबरको राज्यभरके गिरजों और मन्दिरोंमें ईश्वर प्रार्थना की गई । १४ दिसंबर को रोग औरभी बढ़गया परन्तु फिर ईश्वर कृपासे शनैः२ आरोग्यहुआ और प्रजाकी सहानुभूतिका श्रीमतीने एक विशेष आज्ञापत्रमें प्रेम पूर्वक उत्तर दिया । उसमें लिखाथा किः—"मेरे प्राणप्रिय युवराज (प्रिंस आफ वेल्स) की बीमारीमें प्रजाने जैसी सहानुभूति प्रकाशितकी है और उसकी आरोग्यता चाहीहै उससे मेरा बड़ा उपकार हुआ । समस्त प्रजा और मेरी प्रियपुत्रियोंने इस भयानक और दयाजनक स्थिति में जैसी दया युवराजके लिये दिखाई है वह उसके हृदयमें सदा अंकित रहैगी । यह बात नई नहीं है । दशवर्ष पूर्व मेरे चतुर प्राणनाथकी बीमारीके अवसर परभी प्रजाने ऐसीही राज-भक्ति और प्रेम प्रदर्शित किया था । जिसके लिये मैं धन्यवाद देतीहूं । मैं अपने पुत्रकी ओरसे प्रजाका उपकार मानकर आशा करती हूं कि युवराजकी संपूर्ण आरोग्यता के लिये प्रजा ईश्वरसे प्रार्थना करैगी । " युवराजके आरोग्यहोने पर २७ फरवरीको लंडनमें एक त्योहार मनाया गयाथा। उसदिन सेंटपालके गिरजे में बड़ीधूमधामसे परमेश्वरकी प्रार्थना कीगई । श्रीमती भी उस समय अपने कुटुम्ब सहित उपस्थित हुई । इस उत्सव पर अनुमान तेरह हज़ार मनुष्योंसे गिरजा खचाखच भरगया था ॥

दो दिन बाद श्रीमती सायंकालको वायुसेवनके लिये गईथीं । लतामण्डपमें से एक लड़का एक हाथमें पत्र और दूसरेमें पिस्तोल लेकर निकला । और लपक कर गाड़ीपर चढ़आया । श्रीमती स्थानसे विचलित न हुई । लड़का उसी समय पकड़ लिया गया । उसके पास एक पत्र था जिसमें एक राजद्रोही कैदीको छोड़ देनेकी प्रार्थना थी । इस लड़केका नाम आर्थर ओकोनर था । लड़केको न्याया-लयसे एक बर्षका जेल और बैतका दंड मिला । सन् १८७४ई० की २३ जनवरी को ड्यूक आफ् एडिनवरा रूसके सम्राट्की राजपुत्रीसे विवाहकर लण्डन आये । इस वर्षके जून मासमें श्रीमतीने पशु पक्षियोंपर दयाकर उनके कष्ट मिटानेवाली मण्डलीकी ज्यूबिलीमें संयुक्त होकर इस दयामय कार्यकी उत्तेजनादी । इसी वर्ष के अक्टूबर मासमें श्रीमतीके सेवक जान ब्राउनका पिता मरगया । रानी उसके शवसंस्कार में पैदल चलकर स्मशान तक गईं ।

अध्याय ४४.

अनेक घटनायें ।

सन् १८७८ ई० में स्काटलैंडकी यात्रासे लौटने बाद श्रीमतीको टैम्स नदी में वूलविच के निकट दो जहाजोंके टकराकर डूबजानेके समाचार मिले । इसमें छः सौ मनुष्य जलमग्न होगये । इस घटना से श्रीमतीको बड़ा दुःख हुआ । इस वर्ष में आपने राजकुमारी लुसीके पति मार्क्विस आफ् लार्नको केनेडाका गवर्नर जन-रल बनाया । श्रीमतीके शासनमें राजकुटुम्ब के लोगोंको सेनाके सिवाय प्रबन्ध विभागका उच्चपद देनेका यह प्रथम और अन्तिम अवसर था क्योंकि इनके सिवाय कोई राजपुरुष अबतक कहीका गवर्नर अथवा गवर्नर जनरल नहीं हुआ ।

सन् ७९ ई० की जनवरीमें एडवर्ड बेंजामिन नामक पागलने श्रीमतीपर गोली चलानेकी धमकी दी । सन् ८२ई० की १ मार्चको रोजर मेकलीने विंडसर स्टेशन पर श्रीमतीको गोली मारी । श्रीमती ईश्वर कृपासे बचगई । १४ मार्चको ड्यूक आफ् एलबनीका विवाह हुआ । सन् ८३ में अकस्मात् श्रीमती महल में फिरते२ गिर गईं । पैरमें चोट ऐसी आई जिससे आपको एक वर्ष तक वेदना भो-गनी पड़ी ॥

सन् १८८१ ई० के अपरेल मासमें इंग्लैंडके प्रधान अमात्य राजनीति-कुशल लार्ड बीकान्सफील्डका देहान्त होगया। यह बडे चतुर, विद्वान्,साहसी और सज्जनथे। दीनस्थिति से बढ़ते २ राज्यके दीवान हुएथे । रानीका इनपर बड़ास्नेहथा इस

लिये श्रीमतीने इनके स्मारकमें एक स्तंभ बनवाया। इसके शिलालेख में लिखवाया कि—"लार्ड बीकान्सफील्डकी सम्मानिनीया और स्नेही रानी विक्टोरियाने उनके सम्मानमें यह स्तंभ खड़ाकिया। वह सत्यभाषी और राजसेवी थे।"

सन् ८५ की २३ जूलाईको श्रीमतीकी सबसे छोटी पुत्री कुमारी बियेट्रिसका राजकुमार हेनरी आफ् बेटनबर्गसे विवाह हुआ॥

अध्याय ४५.

महारानीकी संततिकी मृत्यु।

यद्यपि माता और पतिके मरणसे श्रीमतीको बहुतदुःख हुआथा और वह दुःख श्रीमतीके साथही गया परंतु सन् १८७८ ई० तक आप अपनी संततिके सुख से सदा सुखी रहतीथी। इसवर्षमें श्रीमतीकी दुलारी कन्या राजकुमारी एलिसको डोरमेस्टरके राजमहलमें संग्रहणीकी बीमारीहुई। साथही ज्वरने आघेरा। कुमारी एलिस श्रीमतीकी सब संतानोंमें स्वभावकी अच्छी, परिश्रमी और दयालुथी। राजकुटुंबमें किसीके बीमार होतेही वह आगे पड़कर उसकी सेवा कियाकरती और उनकी दयालु प्रकृतिको देखकर लोगोंकी उनपर अधिक पूज्यबुद्धिथी। राजकुमारीकी बीमारीसे प्रजाको बहुत चिन्ता हुई। अकस्मात् सन्निपात होगया। प्रलापमें बड़ बड़ाने लगी। और मरने पूर्व कहा कि:—"अब मैं शान्त निद्रामें दीर्घ कालके लिये शयन करतीहूं।" पिताकी मृत्युकी सतरहवी बरसीको राजकुमारीका देहान्त होगया। इनकी मृत्युसे रानी, राजकुटुंब और प्रजाको बहुत शोकहुआ॥

दुःखपर दुःख पडताहै। पुत्रीकी मृत्युका घाव अभी पुरनेका समय नही आया था इतनेहीमें श्रीमतीपर दूसरी आपत्ति आई। अंतिम पुत्र माताको अधिक प्रिय होताहै। श्रीमतीको ड्यूक आफ एलबनी पर विशेष प्रीतिथी। वह स्वभावके कोमलथे। शारीरिक बलके कामोंमें वह अधिक परिश्रम करने योग्य न थे। उनको विद्यासे बड़ी प्रीतिथी। वह एकान्तमें रहना अधिक पसंद करते थे। वह साहित्यके बड़े प्रेमीथे और व्याख्यान उनका बड़ाछटादार होताथा। उनके एकही कन्या थी। इनका नाम एलिसथा। सन् १८८४ ई० के मार्चकी २७ तारीख़को इनके पैरमें गहरी चोटआई और दूसरेही दिन केन्स स्थानमें मृत्यु वशहुए। यह खबर तारद्वारा राजधानीमें पहुंची। माता और पत्निके शोक, की सीमा न रही। श्रीमतीने विंडसरसे प्रयाणकर क्रेमोंटमें अपनी पुत्रवधूके शोकमें सहानुभूति की। ५ अप्रेलको

अंतेष्टि क्रियाहुई । युवराज केन्स जाकर भाईका शव लंडन लाये । माताने अंतिम बार पुत्रके मुखका गिरजे में अवलोकन किया । अश्रुपातसे राजकुटुंब के कपड़े भीग गयेथे । महारानीके हृदयपर पुत्रशोकका वज्रपात् हुआ । मिट्टीमें मिट्टी मिलगई ॥

श्रीमतीके दुःखका यहींपर अंत नहुआ । सन् १८८८ई० के अपेरलमें एकाएक श्रीमतीके प्रथम राजकुमारीके पति जर्मनीके सम्राट् श्रीमान फ्रेडरिककी बीमारी के समाचार विदितहुए । श्रीमतीको इसबातसे बड़ी चिन्ता हुई । मई और जून मासमें रोग कम होगया । परन्तु १४ जूनको फिर समाचार मिले कि फेफडोंका शोथ बहुत बढ़गयाहै । १५ जूनको दिनके ११। बजे श्रीमान्का देहान्तहोगया । इस समय इनका वय ५७ वर्षका था । इन्होंने केवल ९९ दिन राज्य किया । इनकी मृत्युके अनंतर इनके बड़े पुत्र सम्राट् द्वितीय विलियमको जर्मनीका राज्य मिला । १८ जूनको पार्लियामेंटकी दोनों सभाओंने मिलकर महारानी विक्टोरिया और उनकी बड़ी राजकुमारी (मृत सम्राट्की प्रियपत्नी) के साथ बहुतही प्रभावोत्पादक और हृदयद्रावक शब्दोंमें सहानुभूति और शोक प्रकाशित किया । और इस व्याख्यानमें उनके गुणोंका वर्णन किया ॥

श्रीमतीके हृदयपर चौथा आघात उनके प्रिय पौत्र ड्यूक आफ क्लोरेंसकी मृत्युसे, जो भारतमें प्रिंस एलबर्ट विक्टरके नामसे प्रसिद्धथे, पहुंचा । भारतवर्षकी यात्रामें आनन्द प्रमोद और प्रजाके प्रेम और भक्तिका अनुभव प्राप्त करने बाद प्रिंस एलबर्ट विक्टरको विलायतमें पहुंचे अधिक काल नहीं होने पायाथा इतनेही में एकाएक उन्हें ९ जनवरी सन् ९२ई०को सरदी लगगई । सरदीने इतना बलपकड़ा कि तुरंतही उन्हें इन्फ्ल्यूऐंजा हुआ । उन दिनों में इस रोगने राजधानीमें हैज़े के समान मारकता ग्रहण कररक्खी थी । डाक्टर पर डाक्टर आये 'रत्नोंका जतन' करने के लिये अच्छी तरह उपाय कियागया । खूब दौड़ धूपहुई । परन्तु बीमारहोनेसे छठे दिन अर्थात १४जनवरीको आपने श्रीमतीको, अपने माता पिता,भाई और राजकुटुंबको शोकसागरमें डालकर स्वर्गकी यात्राकी।इससे कुछही सप्ताह बाद श्रीमान् का विवाह टेककी राजकुमारीसे होना निश्चय हो चुकाथा परंतु कालने यह अवसर न आने दिया । उनकी मृत्युसे ब्रिटिश साम्राज की संपूर्ण प्रजाको शोक हुआ । भारतकी प्रजा उनके दर्शन करचुकीथी इसलिये उसे अधिक शोक हुआ और श्रीमतीके अन्यान्य दुःखोंकी अपेक्षा भारत वासियोंने विशेष रूप पर शोक प्रकाशित किया । राजकुमारकी समाधिके दिन युवराज (प्रिंस आफ् वेल्स) ने एक पत्र प्रकाशित किया:—" ग्रेट ब्रिटेन, आयर्लैंड,

उपनिवेशों और भारत वर्षकी श्रीमतीकी प्रजाने हमारे प्रिय ज्येष्ठ पुत्रकी मृत्युके समय हम पर जो आपत्ति पड़ी उसमें सार्व जनिक सहानुभूति प्रकाशित कर हमें उपकृत किया इसलिये हम उसे धन्यवाद देतेहैं । यदि ऐसे अवसरमें सहानुभूतिसे चित्तको विश्राम मिलता हो तो हमारे दुःखित हृदयमें हमारे शोकमें उनका भागी होना हमें सदा स्मरणीय होगा और यदि संभव होगा तो इस बातका स्मरणही उन्हें अपने प्रिय राज्यका प्रेम भाजन करैगा । " इसी तरह २७ जनवरी के लंडन और भारत वर्षके सरकारी गजटमें श्रीमती महारानीका एक पत्र प्रकाशित हुआ जिसमें लिखाथा कि:—"मुझ पर, मेरे कुटुंब और जातिपर एक बारके सिवाय ऐसी दुःखदायिनी और हृदय विदारक आपदा पहले कभी नही आई थीं । इस समय मेरे साम्राज्यके प्रत्येक विभागकी प्रजाने हार्दिक सहानुभूति और राजभक्ति प्रकाशितकी उसे मैं स्वीकार करती हूं । मेरा प्रिय पौत्र अचानक कली फूलने पूर्वही अलग होगया । वह बड़ा शिष्ट, होनहार और सर्व प्रियथा । उसकी मृत्युके दुःखको उसके दु.खिया माता पिता, उसकी प्यारी दुलहिन, और उसकी दादी ईश्वरकी अनिर्वाय इच्छा पर छोड़ती है । लाखों मनुष्योंकी हार्दिक और सच्ची सहानुभूतिके लिये, जो उन्होंने ऐसे अवसर पर प्रकाशित की मैं अपनी और अपने बालकोंकी ओरसे, सच्चे अन्तःकरणसे धन्यवाद देतीहूं । मेरे पौत्रको मै अपने पुत्रके समान जानतीथी और वहभी मुझसे पुत्रकासा वात्सल्य रखताथा । उसके वियोगमें प्रजाकी सहानुभूतिसे मेरे और मेरे कुटुंबके दुःखमें बहुत कुछ विश्राम और सहायता मिलैगी । मेरे शासनके अंतिम तीन वर्षमें मुझपर बहुत आपत्तियां आई हैं । चाहे मेरा परिश्रम, चिन्ता, और मेरे पदके अनुसार उत्तर दातृत्व बहुत भारी है परंतु परमेश्वरसे मेरी प्रार्थना है कि वह जबतक मेरा शरीर रहै मेरे देश और साम्राज्यका भला करनेके लिये मुझे शक्ति और स्वास्थ्य प्रदान करै । "—

दोही वर्षके बाद राजकुटुब पर एक आपदा और आई । श्रीमती महारानीकी प्रियपुत्री राजकुमारी बियेट्रिसके प्रियपति राजकुमार हेनरी आफ् बेटनबर्ग अपनी सेना सहित ६ दिसम्बर सन् ९३ई०को कुमासी लोगोंसे युद्ध करनेके लिये श्रीमतीसे विदा हुये, मार्गहीमें जहाज 'ब्लोंड' पर केप कोस्ट केसलसे मदीरा जाते हुए उनको एफ्रिकाके प्राणघाती ज्वरने धर दबाया । दो दिनकी भयानक बीमारीमें २० जनवरी सन् ९४ई०को उनका प्रिय प्राण प्रयाण करगया । २२ जनवरी को तारद्वारा यह शोकजनक सम्वाद लण्डन में पहुँचा । श्रीमती महारानी और उनकी प्रियपुत्रीको इस बातसे बड़ा शोक हुआ । राजकुटुम्बने २३ जनवरीसे ५

मार्च तक इसका शोक किया । ३ फरवरीको राजकुमार हेनरीका शव इंग्लैंडको लाया गया और वही दफनाया गया । इस समयभी महारानीने पौत्रके मृत्युकी तरह प्रजाकी सहानुभूतिका उपकार माना ॥

पांचवर्षतक राज कुटुंबमें किसी प्रकारकी आपत्ति न आई । श्रीमती महारानीके अंतिम वर्ष में अर्थात् सन् १९०० ई० में अपने पिताकी जागीर कोवर्ग और गोथामें श्रीमतीके द्वितीयपुत्र ड्यूक आफ् एडिनबराका अचानक देहान्त हो-गया । महारानीका जीवन समाप्त होते २ इस आघातने आपको बहुत दुःखित किया और इसके सिवाय ट्रांसवाल युद्धमें एकदौहित्रकी मृत्युका शोक श्रीमतीको अंत समय तक रहा । श्रीमतीकी मृत्युके छः मास बाद सन् १९०१के अगस्त मास में इनकी बड़ी राजकुमारीका देहान्त जर्मनीमें होगया ॥

अध्याय ४६.

महारानीकी संतति ।

"बहु कुटुंबी बहु सुखी और बहु कुटुंबी बहुदुःखी" यह कहावत महारानीके विषयमें ठीक चरितार्थ होतीहै । श्रीमतीके वृहत कुटुंबमें पुत्र पौत्र पुत्री पति और माताकी मृत्युसे महारानीको जो शोक हुआ उसका दिग्दर्शन गत अध्यायमें हुआ है श्रीमतीके पुत्र पुत्रियों के जन्म विवाहादिके समाचार इस पुस्तकके भिन्न२अध्यायोंमें प्रकाशित होचुके हैं। श्रीमतीके उदरसे चारपुत्रहुए । युवराज १ ड्यूक आफ् एडिनवरा २, ड्यूक आफ् कनाट३ और ड्यूक आफ एलबनी ४ इनमें प्रथमपुत्र आजकल भारतेश्वर श्रीमान् सम्राट् सप्तम एडवर्ड हैं । तृतीयबहुत वर्षोंतक बंबई प्रान्तकी सेनाके अध्यक्ष रहचुके हैं । द्वितीय और चतुर्थ पुत्रका देहान्त होगया ॥

श्रीमतीकी पांच पुत्रियों में प्रथम राजकुमारी विक्टोरिया आज कलके जर्मन सम्राट् द्वितीय विलियमकी माता थी । इनके सिवाय चारपुत्रियोंमें एकका देहान्त होगया । शेष सब विद्यमानहैं । पांचवी कन्या बियेट्रिस विधवा हैं । पांचोंकन्या और चारों पुत्रोंके नाम संततिका ब्यौरा विवाहादिका वर्णन इस पुस्तकमें वंशवृक्ष छपाहै उससे मालूमहोगा ॥

श्रीमतीके चारपुत्र और पांचपुत्रीकी कुल८०संतानमें ६६ इससमय विद्यमानहैं। १४ का देहान्त होगया । विद्यमानमें श्रीमतीके दोपुत्र, ३ कन्यामें, ३ पौत्र, १० पौत्री, ७ दौहित्र, १२ दौहित्री, पौत्र और पौत्रीके पुत्र ३ पुत्री ५ दौहित्री और दौहित्रके पुत्र १४ पुत्री ७ हैं ॥

श्रीमतीके बड़े राजकुमार आज कल भारतके सम्राट और ग्रेट ब्रिटेनके राजा सप्तम एडवर्डहैं । बड़ी पुत्रीके पुत्र जर्मनीके सम्राट् द्वितीय विलियमहैं । पौत्रीके पुत्र रोमेनियाके भावीराजा राजकुमार केरोलहैं । दौहित्रीको पुत्र ग्रीसको भावीराजा राजकुमार ज्यार्जहैं । और दूसरी दौहित्रीकी कन्या राजकुमारी ग्रेंड डचेज़ ओलगी रूसके वर्तमान सम्राट् जार निकोलसके पीछे रूसके राज्यासनपर बैठने वालीहैं । इसतरह इस समय श्रीमतीके कुटुंबमें पांच राज्यहैं । श्रीमतीके कुल ८० पुत्र पौत्रादिकोंमेंसे इस समय जो ६६ विद्यमानहैं, उनमें पुत्री दौहित्रीके पात और पुत्र पौत्रोंकी पत्नियोंकी गणना नही कीगईहै । ईश्वर इस वृहत् कुटुंबको चिरंजीवी करै ॥

अध्याय ४७.

राजपौत्र और पौत्रीके विवाह !

युवराज (प्रिंसआफ् वेल्स) के द्वितीयपुत्र ड्यूक आफ् यार्क, जिनका नाम राजकुमार ज्यार्जहै, उनके विवाहसे श्रीमतीके शासनमें कौटुंविक अंतिम आनन्द था। ड्यूक आफ क्लारेंस से राजकुमारी टेकका विवाह पक्का हुआथा किन्तु विवाह से कुछ सप्ताह पूर्व उनकी अकाल मृत्यु होगई और उन्ही राजकुमारीका संबंध इनसे निश्चय हुआ । यह विवाह ६ जुलाई सन् ९३ को हुआ । विवाहके बाद जिससमय श्रीमान् नवीन दुलहिनको लेकर राजमार्गमें निकले प्रजाको परम हर्ष हुआ । महारानी विक्टोरियाको पति पुत्र पौत्रादिके मरणसे जो दुःख हुआथा उसकी ६ जुलाईको शांतिहुई । श्रीमतीके वृहत्जीवनमें आपने अनेकही दुःख और सुख देखे परंतु पौत्रके विवाहसे बढ़कर उनके लिये कोई सुख न था। केवल इतना ही नहीं किन्तु श्रीमतीने इस जोड़ीका फलभी दर्शन कर लिया । श्रीमतीके आगे ड्यूक आफ् यार्कके तीन पुत्र और एक कन्या हुई। श्रीमतीका वह चित्र जो इस अध्यायमें लगाया गयाहै इस सुखसे दर्शकोंके चित्तको आनन्दित किये विना नहीं रह सकता । यह युद्ध विद्यामें बडी प्रवीण और ब्रिटिश सेनाके एक अध्यक्ष हैं । इनके बड़े पुत्र श्रीमती महारानीके बड़े प्रपौत्र राजकुमार एडवर्ड एलवर्टका जन्म २३ जून सन् १९९४ ई०का है ।

इसके सिवाय सन् ९६ की जूलाईमें राजकुटुंबमें एक और मंगल कार्य हुआ। बकिंगहामके प्राइवेट गिरजेमें युवराज (प्रिंस आफ् वेल्स) की कुमारी माडका विवाह डेनमार्कके राजकुमार चार्लसके साथ हुआ। दूल्हका वय पच्ची-स वर्षका था। यह दुलहिनसे उमरमें दो वर्ष चार मास कम था। दूल्ह दुलहिन मामा फूफीके भाई बहनहैं। दोनोंहीको बाल वयसे पास खेलनेका काम पड़ाथा। २० जूलाईके शुभ मुहूर्तमें यह महोत्सव हुआ। उस दिन लंडनमें दीपमालिका की गई। विवाह कर दूल्ह दुलहिनको अपने देश डेनमार्क लेगये।

राजपौत्र ड्यूक आफ् यार्क ।

राजपौत्र वधू।

प्रपौत्र प्रपौत्री समेत महारानी।

राजकुमारी विक्टोरिया आफ़ यार्क राजकुमार हेनरी आफ़ यार्क महारानी
राजकुमार एलबर्ट आफ़ यार्क राजकुमार एडवर्ड आफ़ यार्क

अध्याय ४८.

युवराजका रौप्य विवाह और इम्पीरियल इन्स्टीटच्यूट ।

यूरोपियन लोगोंमें विवाहसे पच्चीस वर्ष बाद रौप्य विवाहके नामसे एक उत्सव करनेकी चाल है । युवराजके विवाहको १० मार्च सन् ८८ को पचीस वर्ष हुए । यद्यपि जर्मनीके सम्राट् श्रीमती महारानीके बड़े दामाद फ्रेडरिककी मृत्यु का अभी शोक नवीनही था परंतु यह उत्सव किया गया । शोकके कारण उत्सवमें विशेष धूम धाम न हुई । मार्लबरो हाउस के जलसेमें लंडनकी म्यूनिसिपेलिटीने युवराज को इम्पीरियल इन्स्टीटच्यूटका नमूना चाँदीमें बनवाकर भेट किया । इस उत्सवमें श्रीमती भी उपस्थित हुई । नगरमें उस दिन दिवाली की गई ।

इसी वर्षकी २१ मार्चको श्रीमतीने इटालीकी । यात्राकी मार्गमें फ्लोरेंस होते हुए आपने इन्सब्रूकमें आस्ट्रियाके सम्राट्से भेंटकी और वहांसे बर्लिन जाकर दामाद फ्रेडरिकसे जो उस समय तक बीमारथे मिली । लंडन पहुंचकर सन् ८९ के आरंभमें मटावली लैंड (एफ्रिका) के राजा लोबेंगूलाके दो प्रतिनिधियोंसे मिलने बाद आपने वसंत ऋतुमें फिर बाल मोरल की कौंटेसके भेषमें यात्राके लिये प्रयाणकिया । ७ मार्चसे २७ मार्चतक बियारिजमें निवासकर स्पेन की राजमातासे भेंटकी । इससे पहले इंग्लैंडका राजा वा रानी स्पेनको नही गयाथा । सन् १८९० ई०में श्रीमतीने फिर चेरबर्ग होकर एक्सकी यात्राकी ॥

सन् ९३ की १० मईको केन सिंगटनमें श्रीमतीने इम्पीरियल इन्स्टीटच्यूट खोला । बकिंगहाम से महारानीकी सवारी बड़े ठाटके साथ उक्तस्थानको गई । मार्गमें दर्शकोंकी बड़ी भीड़थी । इस नवीन महलके निकट एक मंडप खडाकर उसमें उत्सव किया गयाथा । मंडपमें श्रीमान् इन्दोरनरेश, जोधपुर नरेशके भाई श्रीमान् सर प्रतापसिंहजी और अनेक भारतवासी राजा महाराजा उपस्थित हुएथे । भारत के राजाओंके विलायत गमनका प्रायः यह प्रथमही अवसर था । महारानीके साथ राजकुटुंबके सब व्यक्ति इकट्ठे हुएथे । इन्स्टीटच्यूट खोलते समय श्रीमतीने जो व्याख्यान पढ़ा वह उनकी वृद्धावस्था और मंदस्वरके कारण उपस्थित लोगोंके सुननेमें नहीं आया । फिर श्रीमतीकी आज्ञासे युवराजने मकानको खोलनेकी क्रिया की । उत्सव समाप्त होने बाद जब श्रीमती वहांसे चलने लगी तब चलते २ भारतवासी राजाओंके पास खड़ी रहकर आपने सबसे हाथ मिलाया और प्रत्येक का कुशलप्रश्नकिया । इसके सिवाय श्रीमतीने कृपाकर देशी राजाओंको राजप्रासादमें पृथक् २ मिलनेकाभी अवसर दिया और उनसे सत्कार पूर्वक बातचीत कर उन्हें प्रसन्नकिया ॥

इसी वर्षकी २६ नवंबरको रूसके ज़ार द्वितीय निकोलससे श्रीमतीकी कुमारी एलिसकी पुत्री एलेक्ज़ेंड्राका विवाह सेंटपीटर्सवर्गमें हुआ । इस हर्षमें महारानी ने राजधानीमें उत्सव किया और नवीन ज़ारको ब्रिटिश सेनाका कर्नेल बनाया॥

सन् ९५ की फरवरीमें जर्मनीका ' एलब' नामक जहाज ४०० मनुष्यों सहित लोस्टोफ्टके निकट समुद्रमें डूबगया । केवल एकही स्त्री तैर कर बची । उसका नाम मिस वाकरथा । श्रीमतीने उसके मुखसे इस दुर्घटना का वर्णन सुननेके लिये उसे बुलवाया । और ४०० मनुष्योंकी मृत्युके समयकी हड़बड़ी और दया-जनक स्थिति सुनकर आपका हृदय भरआया । आँखोंमेंसे आँसू बहने लगे ॥

नवंबरमें श्रीमतीने इंग्लैंडमें पुर्तगालके राजा और वेचुआनालैंडके राजा खामा का स्वागतकिया । खामाने श्रीमतीको शेरके चमडेके वस्त्र भेंटकिये ॥

सन् ९६ में आपने नाइसके निकट सीमिज का निरीक्षण करनेके लिये यात्रा की । ९ मार्चको श्रीमती सीमिज पहुंचीं । १३ को आपसे आस्ट्रियाके सम्राट् मिलने आये । सीमिजमें कुछ काल पूर्व पहाड़ गिर गया था । इसीको देखने श्रीमती गईं थीं ।

अध्याय ४९.

प्रजा प्रेम ।

महारानी विक्टोरिया का प्रजाके साथ माताके समान प्रेम था और उनकी प्रजा उन्हें इसी भावसे देखती थी।श्रीमतीके पति,पुत्री,पुत्र,पौत्र और दामादकी मृत्युपर ब्रिटिश साम्राज्य भर की प्रजाने शोकके आँसू बहायेथे । उनके कुटुंबमें ज़रासाभी किसीके शिर दुखतेही राज्यभरमें और विशेषकर भारत वर्ष के मंदिर मसजिद और गिरजों में इनकी मंगल कामनामें ईश्वर प्रार्थना होने लगती थीं । जहां कहीं प्रजाके कष्टका थोडासाभी संवाद उनके कानपर पहुंचता उसी समय वह तार वा पत्र द्वारा वहां की स्थितिका अन्वेषण करतीं और जहांतक होसकता अपने पाससे द्रव्य देकर वा राजकर्मचारियों से अनुरोध कर सहायता करतीं । अस्पताल में जाजाकर युद्धसे लौटे हुए घायलों की देख भाल करना, उन्हें फूलके गुलदस्ते, पुस्तक वा ऐसेही और पदार्थ प्रेम पूर्वक भेंट करना उनकी स्वाभाविक चालथी । १४ मई सन् ९८ को आपने नेटली अस्पतालमें चित्रालके घायलोंको देखकर पुष्प गुच्छ भेट किया था।और ट्रांसवालसे लौटे हुए वीर घायलोंको भी आप कई बार देखने गईंथीं । इस विषयका एक चित्र नीचे लगाया गया है ॥

अस्पतालका निरीक्षण ।

राज कुटुंबमे किसीकी मृत्यु होने पर इस विशाल राज्यकी भिन्न २ जातिकी प्रजाकी ओरसे एकतंत्र वा अलग २ जो सहानुभूति प्रकाशित हुई उनपर आपने हार्दिक धन्यवाद दिया था। इन धन्यवाद पत्रोंका अनुवाद पहले दो बार इस पुस्तकमें प्रकाशित हुआहै। श्रीमतीको इस प्रकारके धन्यवाद पत्र प्रकाशित करनेका कुल ७ वार अवसर पड़ा था। १ पतिकी मृत्युपर, २ युवराजकी बीमारी पर, ३ कुमारी एलिसकी मृत्यु, ४ श्रीमतीपर आक्रमणहोने पर, ५ ड्यूक आफ् एलबनी की मृत्यु पर, ६ राजपौत्र विक्टरकी मृत्यु पर और ७ पुत्री वियेट्रिस और प्रथम राजकुमारी के विधवा होने पर इन सब पत्रोंके प्रकाशित करने का इस लघु पुस्तकमें स्थान नही है। श्रीमती पर आक्रमण होने के समय जो प्रजाकी ओरसे सहानुभूति प्रकाशित हुई उसके उत्तरमें आपके प्राइवेट सेक्रेटरीने लिखाथा कि—"श्रीमती इंग्लैंडसे विश्राम लेनेके लिये विदा होने पूर्व सच्चे अंतःकरणसे प्रकाशित करतीहैं कि मेरी सब जाति की प्रजाकी ओरसे और अन्यदेशों, राज्यों और राजा प्रजाकी ओरसे मेरी आपत्ति पर जो प्रेम, भक्ति और सहानुभूति प्रकाशित हुई उससे मुझे बहुत आनन्द हुआहै। रानी नही जानतीहैं कि इस धूमधामके लिये वह क्योंकर और किसतरह पर अपना धन्यवाद और आनन्द जो, उनके चित्तमें हुआहै, प्रकाशित करसकेगी परन्तु वह चाहतीहै कि सर्वोच्चसे लेकर दीनाति दीनकी सेवामें मेरे अन्तःकरणका बहुत२ धन्यवाद पहुंचायाजावे। उनकी यह सदासे इच्छाहैकि जहांतक मुझसे होसकै मैं अपने प्रिय देश की प्रतिष्ठा और वैभव बढाऊं और उन लोगों की उन्नतिका प्रयत्न करूं जिनपर मैं दीर्घ कालसे शासन करतीहूं। और इसीप्रकार का प्रयत्न मेरे अंतिम श्वासतक प्रचलित रहेगी॥"

अध्याय ५०.

महारानीकी आय।

भारतवर्षके राजामहाराजा राज्यके द्रव्यको अपना समझकर अपने सुख और वैभवके के कामोंमें आजकल व्यय करतेहै और अनेक अवसरपर उनकी दीनप्रजा भूखों मरा करतीहैं परन्तु इंग्लैंडकी यह प्रथा नही है। वहां राजकोषसे राजाका कुछ प्रयोजन नहीं रहताहै। राज्यकी ओरसे उसके वार्षिक व्ययके लिये वेतन नियत रहताहै और विवाह शादियोंके लिये राज्य उन्हें अलग खर्च देताहै बस उसीमेंसे खर्च करनेका उन्हें अधिकारहै। राजकोषका द्रव्य प्रजाका समझाजाताहै। श्रीमती महारानी विक्टोरिया के निजखर्चके लिये भी इसी तरह वेतन नियतथा।

श्रीमतीके प्राइवेट सेक्रेटरीने सन् १८८५ई० में कहाथा कि महारानीके पास इस समय दश लाख पौंड भी नहींहै । उस वर्षके बाद उनके खर्चकी व्यवथा करनेसे बचत बढ़ने लगीथी । परन्तु सन् ८७ ई० की ज्युबिलीमें श्रीमतीने राजकीय द्रव्यके सिवाय अपने पाससे भी बहुत कुछ रुपया लगायाथा इसकारण आपपर कुछ ऋणहोगयाथा । श्रीमती को ब्रिटिशराज्यसे निज खर्चके लिये ६० हज़ारपौंड, घरेलू कामों के लिये १ लाख ७२ ॥ हज़ार पौंड, नौकरोंके वेतन और पेन्शनके लिये १ लाख ३१ हज़ार २६० पौंड तथा पुण्यार्थ, इनाम और ईश्वरोपासना के लिये ८ हज़ार ४० पौंड मिला करताथा ॥

इसके सिवाय ८ हज़ार पौंड श्रीमतीको उनकी माताकी जागीरका मिलताथा । उनके पतिका वार्षिक वेतन ३० हज़ारपौंड अलग हीथा । युवराजकी आय इससे अलग और उनको वेतनभी सरकारसे अलग मिलताथा । उनकी वार्षिक आय ५० हज़ार पौंड थी । श्रीमतीको वृद्धसुनार होवर्डने जिसकी तृतीयज्यार्ज के समय लंडनमें बहुत बड़ी दूकानथी ५ लाख पौंड विरासतमें दियाथा । श्रीमतीको अपने पतिकी मृत्युके समय ६ लाख पौंड उनके पाससे मिलाथा सन् ८१ में उन्होंने ७८ हज़ारपौंडके मूल्यकी एक जागीर खरीदकीथी । इसी तरह उन्होंने आस्बर्नकी जागीरभी मोललीथी । उनकी जागीरमें ३७३७२ एकड़ भूमिथी । इससे २० से २५ हज़ारपौंड तक वार्षिक आय होतीथी । क्लेरमोंट उन्हे राज्यकी ओरसे सन् ६६ में इस शर्तपर दियागयाथाकि उनकी मृत्युके पश्चात् उसका खालसा होजाय और उसपर श्रीमतीके वारिसोंका स्वत्वनरहै । ज्युबिलीके वा अन्याय उत्सवोंपर प्रजावर्ग वा विदेशीराजाओंने श्रीमतीको जो२ पदार्थ भेंट किये उनका मूल्यभी बहुतही बढ़करहै। उनके पास जवाहिरातका बहुत कुछ संग्रहथा । इनका मूल्य हज़ारोंपौंडसे कम नहीहैं ॥

अध्याय ५१.

श्रीमतीकादान ।

श्रीमतीके दानका विस्तार पूर्वक लेखानहीं प्रकाशित होसकताहै । लोग उनके गुप्तदानके विषयमें बहुतही कम जानते हैं । उन्होंने प्रकाश रूपपर जन साधारणके फंडोंमें जितना दियाथा उससेभी बढ़कर उनका गुप्तरीतिपर पुण्यार्थ कामोंमें व्यय होताथा । कोबर्गमें राज्ञीपतिके गाड़ीसे गिरकर बचजानेपर श्रीमती ने वहांके लोगोंके एक हज़ारपौंड इसलिये दियाथा कि इसके व्याजसे इसघटनाके

दिन प्रतिवर्ष एकउत्सव किया जाया करे । इसमेंसे युवा स्त्री पुरुषोंको जो नेक चलनहों धनोपार्जनके लिये औजार दियेजाँय और लड़कियोंके विवाहमें दीन माता पिता की सहायता की जाय । सन् ७७ में आपने १ हजारपौंड देकर हेबुडमें वहांकी प्रजाके सुखके लिये एक बाग बनवादियाथा । श्रीमतीने दीन अनाथ और अशक्त जानवरोंपर दयाकरनेवाली मंडलीको १०० पौंडदिया और सन् ९० के क्रिस्टमस (बड़े दिन) को लंडनके ११६८ वृद्ध स्त्री पुरुषोंको जिनका वय ८० से ९० वर्ष तकका था पालन पोषणके लिये द्रव्य दिया । और यह सदा नियम रक्खा कि राजधानीके हजारों अपाहिजों और दीनोंको प्रति वर्ष बड़े दिन पर भोज दिया जाय । जहां कहीं श्रीमती यात्राके लिये जाती वहाके छोटे बड़े कर्म चारियोंको जो आपकी सेवामें नियत किये जाते, भरपूर पारितोषिक देतीं और प्रत्येक स्थानके अनाथोंको मुक्त हस्तसे दिया करतीथी । श्रीमतीकी जागीरके प्रत्येक बालकोंको खिलौना देना आपका साधारण नियम था ।

क्रीमियाके युद्धका विशेष वर्णन अन्यत्र हुआ है । इस स्थलपर इतना लिखना आवश्यक है कि इस युद्धमें मिस फ्लोरेंस नाइटिंगेलने घायल सिपाहियोंकी युद्ध क्षेत्रमें बहुत कुछ सहायता कर प्राण पर जोखिम उठाईथी । जब वह स्त्री युद्धसे लौटी तो आपने उसका सत्कार करने के लिये अपने पास बुलाया और उसे एक जवाहर युक्त आभूषण जिसपर "दयालुका आशीर्वाद" खुदा हुआ था भेट किया । यह एक नमूना है । इसी तरह लोगोंका उत्साह बढ़ानेके लिये श्रीमती दिया करतीं थीं । भारतमें जब २ अकाल पड़ा आपने बड़ी उदारतासे चंदेकी लिस्टमें सबसे प्रथम अपना नाम लिखवाया और हजारों पौंड अपने पाससे दिया । ट्रांसवालके युद्ध (सन् १८९९–१९००) में आपने लेडीस्मिथके किलेमें घिरने वाले अंगरेज और भारत वासियोंको एक २ चाकलेटका बाक्स भेंट किया । एक पारसीने भारतके अकाल पीड़ितोंकी सहायताके लिये अपना बाक्स बेच दिया । उससे बहुतसा द्रव्य आया ।

अध्याय ९२.

समाज शोधन की रुचि और धैर्य ।

प्रजाकी स्थिति सुधारनेपर श्रीमतीका बहुत ध्यान था । वह जहांतक हो सकताथा इस कार्य के लिये गुप्त और प्रकट प्रयत्न किया करती थीं । प्रजामें शिक्षा फैलाना उनका मुख्य उद्देश्य था । ड्यूक आफ् आर्गाइलका कथन था कि–" इस देशके राजा रानी प्रजामें शिक्षा फैलानेका प्रयत्न करते हैं । यह

उनका कर्तव्य है । श्रीमती सुख और दुःखके समय समान रूपपर इस बातपर ध्यान देती रही हैं । ” सन् १८४६ ई० में पतिकी सम्मतिसे आपने सार्वजनिक शिक्षाका इंग्लैंडकी प्रजाके लाभार्थ प्रस्ताव किया था । सप्ताह भरमें एकदिन धर्म संबंधी शिक्षा के लिये पाठशालाओंमें नियत करना उनका मुख्य उद्देश था ।

वारंवार की रेल्वे दुर्घटना और प्राणघातसे श्रीमतीको निश्चय होगयाकि मेरी जितनी रेल्वे यात्राके समय सुश्रूषा की जातीहै उतनीही सर्व साधारणके लिये उपेक्षा होती है । इस बातको जानकर श्रीमतीने एक आज्ञा रेल्वे के प्रबंधकोंके नाम सन् १८६५ ई० में प्रकाशित की । उसका आशय यह था:—“श्रीमतीको आशाहै कि जबसे रेल्वे के प्रबंधकोंने देशभरकीयात्रा का मार्ग अपने हाथमें ले लियाहै और अन्यमार्ग उठगये हैं उन लोगोंका उत्तर दातृत्व कितना बढ़गयाहै उसे वे अच्छी तरह जानते होंगे ।”इस आज्ञा का इंग्लैंडकी रेल्वे लाइनोंपर चाहे जैसा प्रभाव पड़ाहो किन्तु भारतके कार्यकर्त्ता लोग इसे बिलकुल नहीं जानते क्योंकि यहांके लोगोंके कष्टकी गुहार श्रीमतीके कान तक नहीं पहुंचती थी । सर्व साधारण में दया और साहस उत्पन्न करनेके लिये श्रीमतीने, आत्म समर्पणकर दूसरे के प्राण बचाने वालोंको देनेके लिये विक्टोरिया क्रास और एलबर्ट मेडल नियत किये थे ॥

यद्यपि ‘कंसेंटएक्ट’ भारत वासियों में सहवास और गर्भाधान संस्कार की प्रणाली के अनुकूल न था परन्तु जब भारतवासी अंगरेजोंने और उनके से स्वभाव वाले देशियों ने श्रीमतीके कान तक देशी स्त्रियों के कष्टकी बात सुनाई तब उन्हों ने इस कार्यके विषयमें इंग्लैंडमें जो आन्दोलन हुआ उसमें साथ दिया था और इसी तरह लार्ड डफ़रिन साहब की मेमके नामपर जो भारत वर्ष में वृहत् उद्योगसे अस्पताल स्थापित हुए उन में भी मुख्य प्रेरणा श्रीमती की थी और जब २ नवीन वाइसराय नियत होकर आने से पूर्व श्रीमतीसे मिलने गये तब ही तब उनकी पत्नियों को उन्होंने इस सुकार्य पर ध्यान दिलाया था ॥

चाहे प्रकाश रूपपर स्त्रियोंकी स्वतंत्रताके लिये उनके शासनमें कोई विशेष आईन न बनाहो और पार्लियामेंटमें मेंबर चुननेका अधिकार स्त्रियोंको देनेके विषयमें भी उक्तसभा अभीतक आनाकानी कर रही है परन्तु इंग्लैंडका वर्तमान उत्कृष्ट स्त्री स्वातंत्र्य श्रीमतीके शासनकाही परिणाम है । इसमें संदेह नहींहै कि वह स्त्रियोंको स्वतंत्रताकी सीमासे अधिक नहीं बढ़नेदेना चाहती थीं । विवाह

और एक पति तथा एकपतिव्रतको वह बहुतही पवित्र समझती थीं।और राजकुटुंबमें कोईभी पुनर्विवाह न करे ऐसी इनकी इच्छाथी।इस उद्देश्यके पालनके लिये वह कभी ऐसी स्त्री वा पुरुषका अपने पास आनाजाना पसंद नही करतीथी जो पुनर्वि-वाह के पक्षपातीहों। थोड़े वर्ष पूर्व एक अमीरकी लड़कीने अपना दूसरा विवाह करना चाहा। एक पतिको छोड़कर दूसरा वरने वालीके साथ उनकी पूरी२घृणाथी इस-लिये श्रीमतीने उस लेडीको अनेकवार इसकार्यसे वारणाकिया परंतु जब उसने न माना तो आपने उसका अपने पास आना जाना बन्द करदिया। और इसी तरह राजकुटुंब और प्रजावर्गको समान माननेके लिये उन्होंने अपनी एक कन्याका विवाह किसी राजकुटुंबके व्यक्तिके बदले साधारण उमरावके लड़केसे कियाथा। इंग्लैंडके राजकुटुंबमें पतिकी मृत्युके पीछे दूसरा पति करनेकी चालहै। श्रीमती की माता डचेज् आफ्केंटनेभी प्रथम पतिके मरनेबाद श्रीमतीके पितासे विवाह कियाथा परंतु श्रीमतीने पातिव्रतका पालनकर संसारको दिखलादिया कि सच्चा पति प्रेम ऐसा होताहै ॥

सर्वत्रके राजा अपने दुःखको प्रजाके दुःख से अधिक समझतेहैं और इसीतरहका वर्त्ताव करनेमें प्रजाको कुछ अनुचितभी नही जानपड़ताहै परंतु जब ट्रांसवाल युद्ध (सन् १८९९–१९००) से इंग्लैडकी प्रजाकी ओरसे भेजी हुई सेना विजयपाकर लौटी उसीके साथ श्रीमतीके दौहित्र प्रिंसक्रिश्चियनकी मृत्यु की खबर मिलीथी। यहशोकसंवाद ऐसाथा कि यदि श्रीमती चाहती तो सेनाके स्वागतकी धूम धाम बन्दकर सकती थीं परंतु अपने दुःखको दबाकर प्रजाके सुखमें श्रीमतीने भंग न होनेदिया।और इस शोक संवादको उस समय प्रकाशित होने दिया जबकि धूमधामसे सेनाका स्वागत होचुका। इसकार्यके करनेसे श्रीमतीने राजा और प्रजामें इसबातका उदाहरण कर दिया कि प्रजाके सुखमें राजाओंको अपना दुःख भूल जाना चाहिये ॥

अध्याय ६३.

श्रीमतीका परिश्रम।

महारानी परिश्रम करनेमें कभी थकती नही थी। वह आशासे अधिक लोक सेवा और राजकीय कामोंमें समय बिताती थी। सन्१८४८ ई०के बारहमासमें उन्होंने २८ हजार डिस्पेचोंको पढ़ा और उन पर सम्मति दीथी। यह संख्या

विदेशीय विभागके कागजोंकी थी किन्तु उपनिवेश विभाग और होम विभागके कागज़भी इनसे कम नथे । सन् ५४ से कागज़ इकट्ठे होते होते उनकी संख्या १६००० होगईथी और इनका फैसला करनेमें श्रीमती पर बहुत बोझा पड़ना संभव था इसलिये सन् ६२ में सेना संबंधी कागजों पर हस्ताक्षर करनेके लिये पार्लियामेंटने एक कमीशन नियत करनेका प्रस्ताव कियाथा ।

श्रीमतीके एक सेवक ने उनके चरित्रमें लिखा है कि मैंने“ श्रीमतीको कभी विश्राम लेते वा कुछ भी नहीं करते हुए नही देखा । ” राज्यशासन का बोझा उनके ऊपर पड़तेही वह सोतेसे शीघ्र उठने लगीं और अठारह वर्षके वय में इतना भारी बोझा अपने ऊपर झेलकर उन्होंने एक दृढ पुरुषके बराबर परिश्रम किया । इस समय भी उन्होंने प्रातःकालका वायु सेवन नही छोड़ा । ” इंग्लैंड और विदेशके मुख्य २ दैनिक समाचार पत्रोंको पढ़ना और अमात्यों और प्रिवी कौंसिलसे नित्य मिलकर प्रत्येक कागज़ को ध्यान पूर्वक पढ़ना और फिर उसपर हस्ताक्षर करना उनका नित्य नियम था ।

विवाहके पश्चात् अन्य स्त्री पुरुषोंकी तरह भोग विलासमें पडनेके बदले उन्होंन काममें अधिक परिश्रम करना आरंभ किया और राज्ञीपति इसमें सहायक हुए । इसके सिवाय उनके निवास करने के महलोंको भी उन्होंने अपनेही समक्ष देख भालकर अपनी योजनासे बनवाया । राज्ञीपतिको संगीत अधिक प्रियथा इसलिये पतिको प्रसन्न करनेकी इच्छासे उन्हें नित्य इस कार्यमें भी समय लगाना पड़ता था । इसके सिवाय “डायरी” में नित्य अपनी दिनचर्या लिखना और नित्यके आये हुए पत्रोंका नित्य ही उत्तर देना उनका साधारण कार्यथा । भारत वर्षके बलवे और क्रीमियाके युद्धके दिनोंमें उनकी चिन्ता बढ़गई थी और शासनारंभके कितनेही वर्षोंतक इंग्लैंडके व्यापार और शिल्पकी दशा अच्छी नहीं थी इस कारण बीसों वर्षतक उन्हें नित्यके कामोंके सिवाय इन बातोंपर बहुत ही विचार करना पड़ाथा । बीमारी और यात्राके दिनोंमें भी वह अपना काम नहीं छोड़तीथी । परंतु धर्म क्रियाओंके लिये श्रीमती रविवारके दिन कुछ काम नहीं करतीथीं । एक वार शनिवारको आपका एक मंत्री ऐसे समयमें कुछ कागज़ लेकर आया जब श्रीमती किसी आमोद प्रमोदके काममें लगी हुई थीं । मंत्रीने कहाकि:—“कामतो आवश्यक है परंतु अभी आपके आनन्दमें मैं विघ्न नहीं डालना चाहताहूं । कल आकर कागज़ सुनादूंगा ।” श्रीमती बोलीं:—“ नहीं कल धर्म कार्य का दिन है । मैं कल कोई राजकीय कार्य

न करूंगी । परसों कागज़ देखनेसे काममें देर हो जायगी इसलिये मुझे अभी सुना दो । " अपना काम छोड़कर श्रीमतीने उसी समय उस कागज़को देखा और उसपर हस्ताक्षर कर दिये ।

अध्याय ५४.

महरानीका स्वभाव ।

महारानी विक्टोरियाके सरल स्वभाव, दया, बुद्धिमता और साहसके अनेक किस्से सुनेजातेहैं उनको संग्रहकर पृथक् पुस्तकाकारमें छपवाना पाठकों के लिये वहुत मनोरंजक और उपदेशजनक होसकताहै किन्तु इस पुस्तकमें उनको संग्रह करनेसे स्थानाभावका डरहै । इस कारण दशपांच किस्से इस जगह लिखताहूं ॥

क्रिटीकियर नाम की बुढ़ियापर श्रीमतीकी बड़ी दयाथी।यह स्त्री आपके महल के निकट पहाड़ीपर किसी झोपडीमें रहती थी । वहां पुराने ढंगके चरखेसे सूत कातनाही इसका पेशा था । एक दिन श्रीमतीने उसकी झोपडीमें जाकर उसे एक गर्म लहँगा दिया । स्त्रीने लहँगेको देखकर कहाः—'परमेश्वर तुम्हारी और तुम्हारे वालकोंकी दोनों लोकमें रक्षा करेगा । परमेश्वर तुम्हारा पथदर्शक होगा और तुमको सव हानियोंसे वचावेगा ।" विचारी बुढ़ियाके सरल हृदयका आशीर्वाद सरल हृदया रानीके लिये वहुतही योग्यथा ॥

श्रीमतीका वालकों से वड़ा प्रेमथा।सन्१८७६ई०में आप लंडनके एक अस्पतालको देखने गई थी। जिस समय वह अस्पतालका निरीक्षण कररही थी उनके आनेकी ख़वर एक वीमार लड़की ने सुनी । लड़कीने दाईसे पुकार कर कहाः— "कृपाकर मुझे रानीके दर्शन करा दो, मैं देखते ही अच्छी हो जाऊंगी । " किसीने श्रीमती से लड़की की वात कहदी । वह उसी समय उसके पास लौटकर गई और मीठी २ वातोंसे लड़की का अच्छी तरह मनोरंजन करदिया । उसके हृदयकी पीडा मिटगई और इसके द्वारा उसके आरोग्य होनेमें वहुत कुछ सहायता पहुँची ॥

महारानीको प्रजाके साथ दिखावटी प्रेम नहीथा । लोगोंपर प्राणसंकट होनेका आघात श्रीमतीके हृदयतक पहुँचताथा । प्रजाके चित्तसे आपके हृदयका टेलीफोन लगाथा । जिस समय क्रीमियाके घोर संग्राममें हज़ारों अँगरेज सैनि-

कोंका वध वा मृत्यु हुई श्रीमती सुन २ कर बीमार होगई थीं । प्रधान सेनापति किसी कार्यसे विंडसरके महलमें महारानीसे मिलने गये । श्रीमतीके बालकोंने उनसे कहा कि "आप शीघ्र जाकर सैनिकोंकी प्राण रक्षाकरो नहीं तो हमारी माता मर जायगी । "

जिस समय महारानी बालिका थीं एक दिन राज कुटुंब के लोगोंके साथ कहीं जारहींथी । पानी बरसनेके कारण मार्गमें कीचड़ होगयाथा । किसीने कहा—" मार्ग बहुत बुरा है । चलनेमें शीघ्रता न करो । नहीं तो गिरजाओगी । " श्रीमती उसके कथनपर ध्यान न देकर "मार्ग बुरा! बुरा"!करतीं ज्योहीं आगे बढ़ीं धडामसे धरतीपर गिरगई। तब उस मनुष्यने कहा—" मार्गकी बुराई अब मालूम होगई होगी" आप बोलीः— "यह बात मुझे जन्मभर स्मरण रहैगी ॥"

श्रीमतीके सादापनका एक उदाहरण यह है कि, आप सन् १८६८ई०में स्काटलैंड के हाईलैंड प्रदेशकी यात्रा करनेगई थी।वहांके एक बनरक्षकने श्रीमतीसे कहा कि "मुझ जैसे दीनमनुष्यके बालकका बपतिस्मा यदि आपदें तो मैं अपना सौभाग्य समझूंगा " श्रीमतीने उसका प्रेम देखकर इसबातको स्वीकारकर लिया । हाईलैंडकी यात्राकी आपने एक पुस्तक प्रकाशितकी है उसमें लिखा है कि "जानथामसन नामक अरण्यरक्षकके चौबीस दिनके बालकका बपतिस्मा देने मैं गई । उसके झोंपडेमें खिड़कीके पास एक टेबलपर एक श्वेत कपड़ा बिछाया और उसके ऊपर एक पानी भरा पात्र, बाइबल और बालिकाकी जन्मातिथिका एकपत्र रक्खाथा । मेरेहीनाम पर उस बालिकाका नाम "विक्टोरिया" रक्खागया और मैंने ही उसे बपतिस्मा दिया ॥"

श्रीमतीको चापलूसी पसंद नहीथी। वह सदा स्पष्ट संभाषणको अच्छासमझतीथीं। उनके पास रहनेवाले मंत्री और यावत् कर्मचारियों को कठिन आज्ञाथी कि, वे श्रीमतीसे बातचीत करनेमें कभी चिकनी चुपड़ी बातें न करैं । एक बार उन्होंने अपने एक नौकरकी स्त्रीको बुलाकर उससे कहदियाथा कि तुम अपने पतिको अच्छीतरह समझादेना कि वह कभी मुझसे चापलूसी न करै ॥

एक बार श्रीमती विना किसीको साथलिये बाहर फिरने चलीगई।आसपासके बीमारों और अशक्त दीनोंकी संभाल करना उनका नियमथा।चलते२ एक टेकरी की किसी कुटियामें पहुंची।वहांपर उन्होंने एक वृद्ध पुरुषको खटियापर पड़ा हुआ पाया। श्रीमतीने उससे पूंछा कि"क्या तुम्हारे पास कोई मनुष्य सूश्रषा करने वाला नहीहै" उसने मुंह विगाड़कर कहाकि " हांनहीहै! जो हैं वे भेडें चराने गयेहैं

उन्हें आपके दर्शन की बड़ी अभिलाषाथी इसलिये वे आपके दर्शनको जायंगे” श्रीमतीने बहुत देरतक उसके पास बैठकर उसका समाश्वासनकिया और एक पाठ बाइबलका पढ़कर सुनाया। चलते समय श्रीमतीने उसके हाथमें पांच पौंडका एक नोट रखकर कहा “जब तुम्हारे बालबच्चे जंगलसे लौटें इनसे कहदेना कि जिस समय तुम रानीके दर्शन करने गयेथे रानी तुम्हारे दर्शन करने आईथी” ॥

एक दिन श्रीमतीके निकट रक्खाहुआ एक लैंप जल उठा । श्रीमतीने खड़ी होकर उसकी बत्ती उतारदी। नौकर चाकर जो वहां खड़ेथे उनको बड़ी लज्जाआई और आश्चर्यभीहुआ । श्रीमतीने कहा—“यदि मैं यह पुकारती कि लैम्पमें आगलगगईहै। मेरी सहचरियोंमेंसे एक जनी किसी नौकरसे कहती और वह बत्तीवालेको बुलाता इतनी देरमें लैम्प बिलकुल जलजाता । इसलिये मैंने बत्ती उतार देनाही उचित समझा ।”

महारानी खर्च करनेमें बड़ी मितव्ययीथी । काम होजानेपर जो रुपया बचता वह व्यर्थ नही खोया जाताथा । कपड़े जो बालकोंके पहनने बाद उतरते वे औरोंके लिये काम आतेथे ।

सौडानके वीर गार्डन की एक बाइबलथी । वह पुस्तक गार्डन की मृत्युके अनंतर श्रीमतीकी भेटहुई । श्रीमतीने उस पुस्तकको हीरेके हारसेभी बहुमूल्य समझकर अपने पास रक्खा ।

श्रीमतीकी समयपर विशेष दृष्टिथी । वह निर्दिष्ट स्थानपर नियत समयपर पहुंचनेके लिये कोचवानको केवल पांच मिनट दिया करतीथी ।

महारानी वस्त्र बहुतही सादे पहनना पसंद करतीथीं । एक बार उनकी घुड़सालमें एक नये कर्मचारीने एक सादी पोशाक वाली बुढ़ियाका हाथ पकड़कर यह कहते हुए बाहर निकाल दिया कि—“तुम यहांसे बाहर चली जाओ। महारानी इस समय यहां आने वालीहै । बाहरी मनुष्यको यहां आनेकी आज्ञा नहीहै ।” जब उसे विदित होगया कि उसने श्रीमतीके साथही ऐसी मूर्खता कीहै तो वह बहुत घबराया । और डरकेमारे कांपनेलगा । महारानीने उसके कामकी प्रशंसा की और उसका डर दूर किया ।

एमेरिकाकी नाइगरा नदीके इसपार से उसपार रस्सीपर चढ़कर एकमनुष्य चलाजाया करताथा। इस खेलसे उसने एमेरिकामें बहुत रुपया कमायाथा। एमेरिकाके खिलाडी ब्लाडीनकी नकल इंग्लैंडमें भी होना आरंभ हुआ । इस खेलमें इंग्लैंड वालोंका चाव।दिन२बढ़ने लगा। सन् १८६३ ई०में खिलाड़ीकी आँखोंपर पट्टियां

और पैरोंमें बेड़ियां डालकर रस्सीपर चलाने की तैयारी हुई । इसकार्यमें एक स्त्रीने अपने प्राण खो दिये । श्रीमतीको इस घटना की खबर होते ही उन्होंने लार्ड मेयरको एक पत्र लिखा "आपके द्वारा प्रकाश किये बिना श्रीमतीसे रहा न जायगा कि, बरमिंगहामके एस्टनयार्कमें एक प्राणनाशक घटना होनेसे उनको बहुत दुःख हुआ है । ऐसे जोखमवाले खेलोंमें एक स्त्री की मृत्यु होनेसे उनका चित्त बहुत कातर है । इस बातके बाद भी लोगोंने इस तरह के मेले तमाशे बंद नहीं किये हैं और नये २ खेलका प्रबंध करते जाते हैं यही उनकी बुरीनीतिका उदाहरण है । जो बाग महारानीने अपने पतिके साथ मिलकर प्रजाके सुखके लिये बनवाया है उसका उपयोग आज पीछे मानुषी नियमोंके विरुद्ध कामोंमें न होना चाहिये । महारानी को आशा है कि, आगेसे ऐसा काम न किया जायगा । "

अध्याय ५५.

कर्मचारियोंको उत्तेजना और सत्कार ।

श्रीमतीका जैसा प्रजापर प्रेमथा वैसाही सरकारी कर्मचारियों पर था । वह समय२पर उनके कामों की प्रशंसा कर उन्हें प्रजापालन की उत्तेजना दिया करती थीं । जब कभी कोई उच्चपद प्राप्त कर्मचारी वा सेनाध्यक्ष कहीं जाता तब उसे उसके जाने पूर्व आप अपने पास बुलातीं और उसके साथ भोजन कर उसका सत्कार किया करती थीं । सन् ५७ के बलवेमें लखनऊ का विजय करने वाले सर कालिन केम्पबेलको लिखाथाकि—" आप और आप के वीर सिपाहियों की शूरता का मुझे बड़ा गर्व है । परंतु आपको मैं एक बातका उलाहना देतीहूं । आपको इतनी संभाल रखना चाहिये कि, अधिक हुल्लड़कर सिपाहियोंके प्राण जोखिममें न डाले जाँय । और न स्वयं भयमें पड़ियो क्योंकि आपका जीवन बहुमूल्य है । "

लार्ड एलनबरो जिस समय भारत वर्षके गवर्नर जनरल थे उनकी ईस्टइंडिया कंपनीसे बहुत तकरार होगई थी । लार्ड साहब प्रजाका कल्याण चाहते थे और कंपनीके डाइरेक्टर लोग रुपया और देश । इसविषयमें लार्ड साहबका श्रीमतीसे पत्रव्यवहार हुआ । आपको लाट साहबने लिखाकि—" भारत वर्षमें जिन २ कठिनताओं को मुझे झेलना पड़ता है और डाइरेक्टरोंकी शत्रुता बढ़ीहुई है उनमें मुझे एकही सहारा था । वह यह कि श्रीमती मेरे ढंगको अच्छी तरह जानगईं

थीं और उनकीही सहायतासे मैं देशमें शांति स्थापित कर सकाहूं। यह ऐसी शांति है जो अबतक इसदेशमें नामको भी नथी।"

इसीतरह लार्ड डेलहौसी भारतकी गर्वनर जनरली करके विलायतको लौटे तब आपने उनका बड़ा सत्कार किया था। लार्डसाहबने इसविषयमें लिखाहै कि—"जिसकृपापूर्ण शब्दोंसे श्रीमती अपने एक नौकर को, उसकी सेवा पूर्ण होनेपर शाबाशी देतीहैं उनसे मेरे हृदयपर बहुत प्रभाव पड़ा है। इसबात पर श्रीमतीको धन्यवाद देने और हर्ष प्रकाशित करनेके लिये मुझे शब्द नही मिलतेहैं। इस लिये इतनाही कहताहूं कि, यह सन्मान मेरे जीवनभरके यावत् सत्कारों और आदरों स बढ़करहै॥"

एक कविका कथनहै कि—"नौकरोंके सत्कार्यों से रानी और रानीकी कृपासे नौकर वास्तवमें सौभाग्यशाली हैं।" उनकी कृपा और उत्तेजनासे नौकर उनकी आज्ञाका पालन करनेमें बहुतही उत्साही रहते थे। क्रीमियाके युद्ध समाप्त होने बाद जनरल सिमसनने अपना पद त्यागदिया। उनका पद सर कोलिन केम्पबेल को देनेके बदले एक नीचे दर्जेके मनुष्यको देदिया। इससे सर कोलिन केम्पबेल अप्रसन्न होगये। और जब फिर लड़ाई आरंभ होनेका अवसर आया उन्हों ने जानेसे स्पष्ट नाहीं करदी। श्रीमतीको यह बात विदितहोतेही आपने उनको अपने पास बुलाया।और उदासमुखसे उनका सत्कारकर उन्हें बैठनेको कुरसीदी। उनके समक्ष सब नौकर खड़े रहते थे। किसीको बैठनेकी आज्ञा नथी। इसके बाद उन्होंने कहा—"आप युद्धपर जानेकी नाही करतेहो।इसबातसे मुझे बहुत दुःखहै।" यह कहते २ श्रीमतीका जी भर आया। इस [illegible] केम्पबेल साहब पर बहुत प्रभाव पड़ा। उन्होंने खड़े होकर श्रीमतीसे प्रार्थनाकी:—"आप जैसी कृपालु स्वामिनीका चित्त मैं कभी दुखाना नही चाहताहूं। यदि आप आज्ञादेंगी तो मैं एक साधारण सैनिकके नीचेभी नौकरी करनेको तैयारहूं।" रूठे हुए केम्पबेलके मनजानेसे लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ परंतु एक दयालु माताके प्रेमपूर्ण कथन पर नाही करनेकी किसमें शक्ति होसकतीहै।

लार्ड एलेनबरोकी तरह श्रीमतीने पश्चिम एफ्रिका की प्रजाके लाभके लिये सर ज्यार्ज ग्रेकी बहुत कुछ सहायता की थी। सरज्यार्ज देशके सच्चे सेवक और श्रीमतीके प्रीति पात्रथे। ब्रिटिश राज्यकी मान रक्षाका उन्हें बहुत विचार रहताथा। वह न्यूजीलैंडके गवर्नरके पदपर नियत होकर जब वहांगये तो उन्हें मालूम होगया कि पार्लियामेंटने यहां के विषयमें नवीन नियम बनाने में भूलकीहै। और इसके प्रचारसे श्रीमतीका वचनभंग होगा। इसभावसे उनकी निन्दाहोगी।

क्योंकि जंगली लोग यह नहीं जानतेहैं कि, आईन बनानेवाली पार्लियामेंटहै । इन विचारोंसे उन्होंने उस नियमका प्रचार न कर लिखदियाकि "दशहज़ार मीलके अंतरपर रहकर पार्लियामेंट जो आईन बनातीहै उसमें उसकी अज्ञानता प्रकाशित होतीहै इसलिये स्थानीय गवर्नरको यह अधिकार होना चाहिये कि वह जिस आईन को अनुचित समझे उसका प्रचार न होनेदे । " इस बातसे पार्लियामेंट सर ज्यार्ज से बहुत अप्रसन्न हुई परन्तु महारानीने उनके साहस और बुद्धिमानी की प्रशंसाकी ॥

इसी तरह सर् ज्यार्जग्रे जब पश्चिम एफ्रिकाके गवर्नर नियत हुए तब उन्होंनें वहां जाकर देखाकि होटेंटोट सैनिकोंको पेन्शन देनेके विषयमें प्रणकर पार्लियामेंट उनको तोड़ती है । और इस कारण उन लोगोंमें असंतोष फैलता है । इस बातसे श्रीमतीका अपमान देखकर उनसे रहा न गया । उन्होंने एफ्रिकाकी प्रबंध कारिणी सभासे रुपया लेकर एक ढिंढोरा फेरा और उसमें प्रकाशित कर दियाकि "श्रीमती अपने वीर सैनिकोंको उनके स्वत्वानुसार पेन्शन का द्रव्य देने में प्रसन्न हैं । " अपने २ स्वत्वका द्रव्य मिल जानेसे लोगोंमें शांति स्थापन हुई । पार्लियामेंटने इस बातके लिये सर् ज्यार्ज को बहुत डांटा परंतु श्रीमतीने उनकी बहुत प्रशंसाकी और इस कारण उन्होंने पार्लियामेंटकी डांटकी कुछ भी पर्वाहनकी । इस कार्यके लिये वह सदा किसी प्रकारका पार्लियामेंटके विरुद्ध साहस करने पूर्व श्रीमतीकी सम्मति लेलिया करतेथे । सर ज्यार्ज कम्प बेलके सुकार्योंसे दक्षिण एफ्रिकाकी प्रजामें महारानीकी दया बड़ी प्रसिद्ध हो गईथी। जोहानिसबर्गमें सोनेकी खान वाले व्यापारी सोनेका भाव चढ़ानेके लिये ऐसी गप्प उडातेथे कि "श्रीमतीका स्वर्गवास होगया है । " वहांकी प्रजा महारानी पर अधिक प्रेम रखतीथी इसलिये इस गप्पको सुनकर खानोंमें काम करने वाले मज़दूर काम छोड़कर रोने लगतेथे ।

सर ज्यार्ज केम्पबेल महारानीकी उत्तेजनासे समयके अनुसार चलकर एक बार भारत का भी उपकार कर चुके हैं। सन ५७ के बलवे के समय देशमें बिजलीका तार नथा और न शीघ्रगामी धूमपोतथे । उस समय आवश्यकता पड़ने पर समयानुसार चलनेकी गवर्नरोंको आवश्यकता पड़तीथी । बलवेके समय सर ज्यार्जको वहां एक स्टीमर आनेकी ख़बर मिली । उस समय भारतके मुट्ठीभर अंगरेजोंकी रक्षाके लिये पार्लियामेंटकी आज्ञा लेनेका अवसर नथा । उन्होंने आज्ञा लिये बिना भारत गवर्नमेंटकी सहायताके लिये तीन जहाज़ तैयार

कर उनपर सेना और सामग्री भेजी। इस कार्यके लिये उन्होंने अपनी गाड़ी-के घोड़ेतक देदिये और पैरों फिरने लगे। उसी अवसर पर चीनकी चढ़ाई पर जानेवाली एक स्टीमर वहां आपहुँची। सर ज्यार्जको यद्यपि विलायतकी आज्ञा बिना उस जहाज़के कप्तानसे कुछ कहनेका अधिकार नही था किन्तु उन्होंने उस समय पार्लियामेंटको कुछ भी न गिना और जहाज़ को अपने ही अधिकारसे भारतको भेज दिया। इसी सेनाकी सहायतासे सर कोलिन केम्पबेलने लखनऊका विजय किया। इस बातपर भी पार्लियामेंटने उनकी अनुचित स्वतंत्रता को अच्छा न समझा किन्तु उन्होंने श्रीमतीकी ओरसे प्रशंसा पाई॥

आजकल पश्चिम एफ्रिकाकी प्रजाको महारानीके शासनमें शांति पूर्वक रखनेका मंत्रिमंडल प्रयत्न करताहै परंतु वहां वाले इस शासन को अच्छा नही समझते और इसीलिये लडते झगडतेहैं किन्तु सर ज्यार्ज ग्रे चाहतेथे कि छोटे२देशोंको जोड़कर उनकी भिन्न२प्रजाओंको एक करदेना उत्तम होगा परंतु मंत्रिमंडल इस बातको पसंद नही करताथा। मंत्रिमंडल से सर ज्यार्ज ग्रेकी इस विषयमें न पटी और इसीलिये उसने उनको एफ्रिकासे बुलवा लेनेका प्रस्ताव किया। श्रीमतीका सर ज्यार्जसे स्वतंत्र पत्र व्यवहारथा और उनकी योजनामें सहानुभूति और प्रेरणाभी आपकी हीथी और श्रीमतीको विश्वास था कि जंगली लोगोंको मुट्ठीमें रखने और सुधारनेके लिये सरज्यार्जका प्रयत्न उत्तमहै।श्रीमतीकी सरज्यार्ज ग्रेपर कृपा देखकर मंत्रिमंडल को भी भयथा कि वह हमारे कथनसे उन्हें बुलालेना स्वीकार न करैगी। इस विषयके कागज लेकर जब प्रधान अमात्य श्रीमतीके पास हस्ताक्षर करानेगये तब उनसे आपकी क्या बातेंहुई—इस बातकी तो किसीको खबर नही हुई परंतु इतना सुनागयाहै कि आप प्रधान अमात्यपर इस बातके लिये बहुत रुष्ट हुई और कहाकि "जिस व्यक्तिने अपनेको सौंपे हुए कार्यसे अधिक करनेका प्रयत्न कियाहै जो अपने देश और रानीके लिये परिश्रम कर रहाहै और जो रानीका सच्चासेवकहै उसका अपमान कर पीछा बुलालेना योग्य नही है" परंतु राजनियमके अनुसार प्रधान अमात्यके प्रस्तावको अस्वीकार करनेमें पार्लियामेंटको तोड़ना पड़ताथा क्योंकि यह प्रस्ताव बहुमतसे पास हुआ था इसलिये आपने आनाकानीके अनन्तर उसपर हस्ताक्षर करादिये। हस्ताक्षरतो आग्रहमें आकर लार्डडर्बीने करालिये परंतु पीछेसे वह बहुत पछताये और उन्होंने एक मित्रसे कहाकि "आज मेरे हाथसे एक अनुचित कार्यहोपड़ा। इस गवर्नरको पदच्युत करना योग्य नहींथा"॥

यह आज्ञापत्र जिस समय एफ्रिकामें पढागया प्रजाको बहुतही दुःख हुआ। वहां वालोंने कहाकि "श्रीमतीने हमपरसे दया हटाली । और हमारे हृदय दुखाडाले" उन लोगोंको इतना कहनेहीसे संतोष नहीं हुआ किन्तु उन्होंने सर ज्यार्जग्रेको फिर वाइसराय नियत करनेके लिये प्रार्थना पत्र भेजा।आज्ञापातेही वह जहाज़ पर सवार होकर इंग्लैंड पहुंचे। उनके पहुंचते ही २ उनको फिर लौटनेकी आज्ञाहुई। और लार्ड डरबी का मंत्रिमंडल टूटकर लार्ड पामर्स्टन के दीवान होतेही वह फिर एफ्रिका को विदाहुए ॥

परलोकवासी महामान्य मिस्टर ग्लैडस्टनपर उनका बड़ा प्रेम और पूज्यबुद्धि थी। १४ मई सन् ९७ को तीन मासकी बीमारी के बाद जब इनका देहान्त हुआ तब आपने बहुत शोक कियाथा। उन्होंने सहानुभूति प्रकाशित करनेके लिये मिस्टर ग्लैडस्टनकी पत्नीके नाम जो पत्र लिखा वही इस बात का प्रमाणहै । उसमें लिखाथा कि-"आपका पति सदाके लिगे विश्राम करता है किन्तु मेरा हृदय आपके पास है । आज उनको समाधि करनेकी धूमधाम आपके लिये बहुत ही हृदय विदारक होगी। परंतु इस बातसे आपको हर्षित होना चाहिये कि मेरे शासनमें उस परम प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ की योग्यता, नेकचलनी और गुणों के लिये प्रजा उसका कितना सम्मान करती है और उसके वियोगसे कितनी दुःखी है। मेरे और मेरे कुटुंबके सुखके लिये वह जैसे दत्तचित्तथे उन्हें मैं सदा सम्मान पूर्वक स्मरणरक्खूंगी । " इसीपत्रसे मिस्टर ग्लैडस्टन पर श्रीमती और प्रजाकी पूज्यबुद्धि भली भाति विदित होती है। मिस्टर ग्लैडस्टन सर्वप्रिय मनुष्य थे। केवल इंग्लैंड और भारत वर्षमें [illegible] नहीं किन्तु भूमंडल भरमें वह परम बुद्धिमान् और उत्तम समझे जातेथे [illegible] और शत्रुभी उनकी प्रशंसा करतेथे ॥

अध्याय ५६.

राजनैतिक कामोंमें प्रभाव ।

कुछ काल पूर्व किसी समाचार पत्रमें मिस्टर डबल्यू टी स्टीड का एक लेख प्रकाशित हुआथा उसमें लिखाहै कि-" रानी विक्टोरियाका वास्तविक शासन सन् १८६१ ई०में आरंभ हुआ है।राज्ञीपतिकी मृत्युके पश्चात् हमें रानीके शासन से काम पड़ाहै । जबतक वह जीते रहे राजसी आज्ञापत्रोंमें रानीके हस्ताक्षरके सिवाय एक भी शब्द रानीका नहीं लिखा रहताथा किन्तु सबही उनके पति लिखा करतेथे । और उनकी मृत्यु के अनन्तर समस्त लेख रानीके हाथ का होताहै " ॥

सन् १८८५ ई० में मिस्टर ग्लैडस्टनकी और लार्ड सालिस्बरीकी परस्पर खटपट बढ़ती देखकर नवीन पार्लियामेंट का संघटन होनेतक आपने राज्यका काम चल नेमें कठिनता पड़ना निश्चय करालिया तब दोनों को दबाकर ऐसा मेल करा दिया जिससे नवीन संघटन तक किसी तरहकी गड़बड़ न पड़ने पाई । रूसके विषयमें जिस प्रकारकी नीतिका इंग्लैंड बहुत कालसे अवलंबन करता आयाहै उसका लार्ड बीकान्स फील्ड के मरने बाद भंग होने वालाथा क्योंकि सबही लोग उसके विरोधी थे किन्तु श्रीमतीने अपनी ही इच्छासे उस नीतिका परिवर्त्तन न होने दिया। सन् १८६१ ई० में एमेरिकाके प्रजातन्त्र राज्य और सन् १८६४ ई० में जर्मनी के साथ युद्धमें परिणत होनेसे श्रीमतीने बचाकर इंग्लैंड पर का बहुत बड़ा कलंक दूर कियाथा ॥

जब २ पार्लियामेंटका भंग होकर नवीन संघटनका समय आताहै और लिबरल और कंसर्वेटिव दलमें परस्पर खैंचातान बढ़ जातीहै दोनों दलोंको दबाकर ठीक मार्गपर लानेमें इंग्लैंडके शासन कर्त्रीकी बुद्धिमानी देखी जातीहै।वह समय बड़ा बारीक होताहै और आपसकी खैंचातानमें राज्य और प्रजाको बहुतही हानि उठाने की संभावना होतीहै।जब ऐसा अवसर आया श्रीमतीने अपने पूर्ण प्रभावसे लोगोंको ठीक मार्गपर चलाया । सन् १८३९ ई० में आपकेही प्रभावसे पदच्युत होनेका अवसर आनेपरभी लार्ड मेलबोर्न प्रधान अमात्य रहसके और सन् १८४५ ई० में सर राबर्ट्स पील कोभी आपनेही प्रधानत्वसे गिरते हुए बचायाथा । उनके सामने दशअमात्य हुए । और पंद्रह बार ऐसा अवसर आया जिसमें बिलकुल मंत्रिमंडलका परिवर्त्तन होगया ॥

भारतवर्षमें सन् १८५१ ई० में जो उपद्रव हुआ उसके आरंभमें लार्ड केनिंगने रिपोर्ट करते समय लिखाथा कि उपद्रवमें अधिक भयकी संभावना नहीं है परन्तु श्रीमतीने उनके कथनपर विश्वास न किया और प्रथम दिनकी सूचनाहीसे गदरका काम अधिक गंभीर समझकर मंत्रि मंडलको सचेत करदिया ॥

अध्याय ५७.

छोटे मोटे चुटकुले ।

पतिकी मृत्युके बाद कुछ कालतक एकान्त वास करने के अनंतर श्रीमती जो प्रथम बार राजमहल से निकलीं तो नेरली अस्पताल देखने पहुंची । अस्पताल बड़ा लंबा चौड़ाहै । उसकी गेलेरियां पाव मील लंबी हैं। डाक्टरों ने सोचा कि

श्रीमती एकाध गेलरी देखकर थकजायंगी । इसलिये उन्होंने एक गेलरी देख-चुकने बाद श्रीमतीको लौट जानेका अनुरोध किया परंतु आपने कहा कि "यदि मैं समस्त अस्पताल देखे विना लौट जाऊंगी तो बहुत से रोगियों की आशा भंग होगी" ॥

ड्यूक आफ् यार्कके बालकोंपर आपका बहुत प्रेम था । एकदिन श्रीमतीने अपने प्रपौत्र (ड्यूक आफ् यार्कके बड़े पुत्र) एडवर्डको अपने पास बुलाया । लड़का बड़ा दंगईथा श्रीमतीके भोजनकी सामग्रीमेंसे इधरउधर लौटपौट करनेलगा। आपने उसे धमकाकर मेजके नीचे बिठलादिया और जब सब तैयारी होगई तो पुचकार कर अपने पास भोजन कराया।तबहींसे बालकको "मेजकेनीचे" का नाम लेकर आप चिढ़ाया करतीथीं ॥

श्रीमतीको चित्र निकलवानेका बड़ा अनुरागथा । इसकार्यके लिये अलग विभाग नियतथा । समय २ पर आपके चित्र जुदे २ ढंगसे निकालेजातेथे । श्रीमतीके दीर्घ जीवनमें इतने चित्र निकालेगयेथे कि, उनकी सूची तैयारहोनेमें कई वर्ष लगेथे । आप घर और राज्यके अनेक काम होनेपरभी प्रायः समय निकालकर इन चित्रों को देखा करतींथीं ॥

आपको दिखावट बिलकुल पसंदनथी । विंडसर केसलके दक्षिणद्वारपर लोहेका फाटक लगाहै उसपर किसी कर्मचारीने श्रीमतीकी आज्ञाविना चांदीका गिलट करवादिया । एक दिन अनायास आपकी उसपर दृष्टिपडी। देखकर आपने कहा कि इसको अभी छिलवादो । बस आज्ञा पातेही गिलट छिलवाया गया ॥

श्रीमतीके पास एक स्काटलैंड वासी अनाडीसा नौकर रहताथा । उसका नाम जान ब्रौनथा । रानीकी उसपर बड़ी कृपाथी । वह प्रायः श्रीमतीसे कहाकरताथा कि "आप बड़ीकंजूसहैं । आपका लहंगा पुराना होगया।आपका कपड़ा मोटाहै...." इसपर श्रीमती बुरानहीं मानतीथीं । और राजकुटुंबके लोग तथा प्रधान मंडल उसे पदच्युत करनेका निवेदन करते तो उसे भी नहीं सुनतीथीं ॥

प्रथमज्यूबिलीके समयका
महारानीका चित्र ।

अध्याय ५८.

श्रीमतीकी सुवर्ण ज्यूबिली ।

ब्रिटिश साम्राज्यके लिये सन् १८८७ ई० का वर्ष बड़ा हर्षप्रदथा । इंग्लैंडके राज कर्त्ताओंकी एग्लों सेक्सन जातिमें तीनही राजा पचास वा इससे ऊपर वर्षको पहुँचेथे । तृतीय एडवर्ड, तृतीय ज्यार्ज और विक्टोरिया । श्रीमतीके पितामह तृतीय ज्यार्जकी ज्यूबिली सन् १८१० ई० में हुईथी ॥

२१ जूनका शुभ दिवस इस कार्यके लिये नियत किया गयाथा।उसदिन देशभरमें कामकाज की छुट्टीथी।लंडनही क्या वरन् ब्रिटिश साम्राज्यभरके बड़े२ नगरोंमें और भारतवर्षमें हाटबाट गली घर और द्वार, ध्वजा, पताका और वंदनवारोंसे सुसाज्जित कियेगयेथे।लंडनके राजमार्गपरलाखों मनुष्योंकीभीड़थी जिससमयश्रीमतीकी सवारी नगरमें निकली प्रजाने हर्षनादकिया।एकदर्शकने लिखाहैकि "उस समय प्रजाकाआन्त रिक हर्ष और नगरकी शोभा अवर्णनीयथी" सवारीमें भारतवर्षके कईएक राजाम-हाराजाभी संयुक्तथे। इनके रंगविरंगे वस्त्र और अद्भुत प्रकारके आभूषण लंडनवालोंको विचित्र शोभा दिखारहेथे।भारतीय राजाओंमेंसे इंदोरके महाराज श्रीमान् शिवाजीराव होलकर, श्रीमान् कच्छनरेश,ठाकुरसाहव गोंडल,ठाकुरसाहव लीमडी और ठाकुर साहव मोरवीके सिवाय कूचविहारके महाराजभी संयुक्तथे।इनके अतिरिक्त ईरानके सुलतान, जापानके राजकुमार कोमास्टू, हवाईकी रानी और बहुतसे पूर्वीयदेशोंके राजा महाराजा उपस्थितहुएथे । सेक्सनीके अंधराजा और आस्ट्रियाके युवराजने पधारकर इस उत्सवकी शोभा बढ़ाईथी। धूमधामके साथ श्रीमतीकी सवारी गिरजेमें पहुंची । वहां जाकर आपने उस सिंहासनको प्रणामकिया जिसपर प्रथम राजगादी होनेका उत्सव कियाजाताहै । केंटरवरीके पादरीके ईश्वरोपासना करलेनेके बाद जर्मनीके युवराजने आपके हाथका चुंवनकिया। इसकेवाद श्रीमतीके पुत्र और पुत्रि-योंको अनुक्रमसे आपने ओष्टपानकेलिये दिया परंतु उन्होंने रीतिके अनुसार श्रीमतीके हाथचूमे। फिर समस्त राजकुटुंवने झुक२कर श्रीमतीसे सलाम किया। तद-नंतर भारतके राजाओंका नंवर आया। उनलोगोंसे भी आप वहुत सत्कारपूर्वक मिली और एक२ करके सब श्रीमतीकी सेवाभें उपस्थित कियेगये। उससमय भारत की देशी सेनाके कई एक अफ़सरभी वहां मौजूदथे ॥

उसदिन लंडनमें वडाभव्य प्रकाश कियागयाथा। दूसरे दिन हाइडपार्कमें वालकों का मेलाथा। अनुमान ३०हज़ार वालक क्रमपूर्वक परेड बनाकर श्रीमतीके सामने

से निकले। उसदिन उन्हें सरकारी बाग़में खेल करनेकी पूरी स्वतंत्रताथी। सब बालकोंको एक२ नारंगी, लड्डू और अन्य खाद्यपदार्थ दिये गयेथे। इनके भोजमें श्रीमती, युवराज और अन्य राजकुटुंबके लोगभी संयुक्तथे। इस हर्षमें इंग्लैंड, वेल्स, स्काटलैंड और आयर्लैण्डकी अनुमान ३० लाखस्त्रियोंने इतनेहीपौंड इकट्ठेकर श्रीमतीकी भेटकिये। इसद्रव्यकेसाथ स्त्रियोंकी ओरका एक अभिनंदनपत्रथा। इसके सिवाय देश-देशांतरकी प्रजा और राजाओंने असंख्य अभिनंदनपत्र श्रीमतीके पास भेजे थे। उनका उत्तर श्रीमतीने २४ जूनके सरकारी गजटमें इस तरह प्रकाशित करवायाथा:—

"वेस्टमिन्स्टर एबीको जाते और वहांसे लौटते समय मैंने और मेरे बालकोंने प्रजाकी ओरसे जो आदर पाया उस कृपा, अतीव कृपाके लिये मैं अंत:-करणसे धन्यवाद देतीहूं। लंडन और विंडसरमें ज्यूबिली पर मेरी जो प्रजाने अभ्यर्थना की है उसका मेरे हृदयपर बहुत प्रभाव पड़ाहै। इससे यह निश्चय होगया कि पचास वर्षके मेरे परिश्रम और चिंतासे—(जिनमेंसे २२ वर्ष मेरे अधिक हर्षके बीते जिनमें कि मेरे पतिकी छाया और सहायता थी) जो मैंने कार्य किया उसे प्रजाने जाना है। इस बातसे और मेरे देश और प्रजाके लिये जो मेरा यावत् जीवन कर्तव्य हैं उसके अनुरोधसे अब मुझे अपने काममें और भी उत्तेजना मिलीहै। मेरा काम मेरी शेष अवस्थामें अधिक कठिन और झंझट युक्त है। इस महोत्सव पर आश्चर्य जनक शांति (व्यवस्था) और मेरी करोड़ों प्रजाका शुभ वर्त्ताव मेरे अधिक हर्षका कारण है। ईश्वर मेरे देशको रक्षित रक्खे और उसे बरकतदे। यही मेरी प्रार्थना है।

विक्टोरिया आर और आई."

इस उत्सवके हर्षमें लंडनमें कई बार सेनाकी क़वायदें हुईं। उनमें श्रीमतीने प्रजाको दर्शन दिये और युवराजकी प्रेरणासे जो इम्पीरियल इन्स्टीटयूट बनाया गया उसमें भी आप पधारी थीं॥

उस दिन गुलाब आदि परम सुगंधित और सौरभेय पुष्पोंकी महक लंडनमें विशेष रूपपर व्याप्त हो रहीथी। पाठक जानते हैं कि बालपनमें श्रीमतीका नाम "मईका कुसुम" रक्खा गयाथा। इसी कारण गुलाबके पुष्पोंका लंडन नगरके हाट, बाट, गली, कूंचे, मकान, छत और खिडकियोंमें ठाठ लगाया गया। वेस्टमिन्स्टर के मार्गपर ऐसा कोई मकान न था जिसके द्वार और खिडकियोंमें पुष्पोंके हार, बंदनवार और गुलदस्ते न हों। डिवनशायर हाऊससे नाना रंगके गुलाबोंका हार समुदाय पिकाडिली होकर श्रीमतीकी भेंटके लिये भेजा गया था। और राज भवनके फाटक पर चीनी गुलाबके गुलदस्ते रक्खे गयेथे॥

यह भी सुननेमें आया है कि जिस समय महारानीकी सवारी उत्सवकी समाप्तिके अनंतर एवींसे लौटी तो आपने वेस्ट मिन्स्टर अस्पताल के पास आते ही कोचवानको आज्ञा देदी कि "थोड़ीदेर हमारी गाड़ीको अस्पताल की खिड़कियोंके निकट खड़ी रक्खो ताकि रोगी लोगभी हमारा मुख देखकर अपने दुःखित मनमें समाश्वासन पासकें ।" इस ज्यूबिलीके शुभ अवसर पर एक विशेष घटना हुईथी । उससे श्रीमतीके राज्यमें एक देशकी वृद्धि देखनेमें आती है । वह घटना यही है कि उस दिनसे श्रीमती भारतकी तरह जुलूलैंडकी भी 'महारानी' कहलाने लगी । यह उत्सव एटशो नामक स्थानमें किया गयाथा । महारानीकी सुवर्ण ज्यूबिलीके हर्षमें हैदरावादके निजामने भारतीय पश्चिमोत्तर सीमाकी रक्षा के लिये तीन वर्षतक २० लाख रुपया सरकारके भेंट किया था ॥

वर्ष ग्रंथि और ईसाई वर्षके प्रथम दिन भारत वर्ष और विलायतमें जो उपाधियां वितरण होती हैं उनके सिवाय इस उत्सवपर भी पदवियां बांटीगई ।

भारत वर्षकी प्रजाको इस प्रकारका उत्सव देखनेका प्रथम ही अवसर था और वह यह भी नहीं जानतीथी कि किसी राजाके राज्यासनपर विराजनेके पचासवें वर्षमें कोई उत्सव किया जाता है परंतु श्रीमतीकी प्रजा प्रीति और वात्सल्यसे भारत वासियोंको विशेष प्रकारका हर्ष हुआ । इस उत्सवको स्मरण रखनेके लिये भारत वर्षके अनेक नगरोंमें स्कूल अस्पताल आदि बनाये गये । उत्सवके दिन वड़े २ नगरोंमें रोशनी, सभा और त्योहार किया गया और प्रजा और देशी राजाओंकी हार्दिक भक्ति देखकर श्रीमती और आपके प्रतिनिधि लार्ड लैसडाउनने धन्यवाद दिया । इस उत्सव पर विलायतके सिवाय भारत वासियोंको जो हर्ष हुआ और जिस प्रकार उन्होंने अपने हार्दिक हर्षको प्रकाशित किया उसके वर्णन करनेकी मेरी इच्छा होने पर भी स्थानाभाव इस कार्यमें वाधा डालता है ।

अध्याय ५९.

श्रीमतीकी हीरक ज्यूबिली ।

वातकी वातमें सुवर्ण ज्यूबिलीको दशवर्ष निकलकर हीरक ज्यूबिलीका शुभ अवसर आया । १० जून सन्१८९७ई० को श्रीमतीके शासनके६०वर्ष पूर्णहुए। इंग्लैंडकी गादीपर सबसे अधिक कालतक शासन श्रीमतीके दादा तृतीय ज्यार्जने कियाथा । वहभी उनसठ वर्ष राज्यकर स्वर्गगामी हुएथे। श्रीमतीके शासनको ६० वर्ष पूर्ण हुए। शासनभी ऐसा वैसा नहीं किन्तु प्रजापालन, राज्यवृद्धि, और

इंग्लैंडके सौभाग्य में अद्वितीय । ऐसे शुभ अवसरपर प्रजाको हर्ष होना साधारण बातहै । श्रीमतीने प्रजाको अधिक उत्साहित करनेकी इच्छासे पहलेसे प्रकाशित कर दियाथा कि "मैं लंडन नगरमें अपनी प्रजाके मुखकमलोंका अवलोकन करने और मेरे राज्यके साठ वर्ष सहर्ष समाप्त होनेके हर्षकी बधाई प्रजासे लेनेके लिये राजसीठाटसे स्वयं जाऊँगी ।" इस ठाटको देखनेके लिये केवल ब्रिटिश और भारतवर्ष की प्रजाहीनहीं किन्तु यूरोप, एशिया, एमेरिका और एफ्रिका तकके सैकडों मनुष्य इकट्ठे हुए थे । और भारतवर्ष के अनेक राजा महाराजाओं के अतिरिक्त प्रायः सबही उपनिवेशोंके प्रधान,और सैनिक, कनाड़ा,आस्ट्रेलिया और भारतकी देशी सेनाका कुछभाग,वेस्टईंडीज़्, गोल्डकोस्ट और चीनकी सेना तथा प्रायः समस्त विदेशी राज्यों और साम्राज्योंके प्रतिनिधि उन्नीसवीं शताब्दि की सर्वोत्कृष्टा रानीको मंगल वाद देनेके लिये उपस्थितथे ॥

श्रीमतीके सिंहासनासीन होनेके बाद लंडनमें ऐसा कोई उत्सव नही हुआथा जिसकी इसके साथ तुलना होसकै । इसपर ५० हजारके लगभग सेना इकट्ठी हुईथी । श्रीमतीने इसविषयमें भारतवर्ष और उपनिवेशोंको एकतार दिया था । उसका आशय यहहै:—

"मेरे अंतःकरणसे मैं अपनी प्यारी प्रजाको धन्यवाद देतीहूं । परमेश्वर उन्हें प्रसन्न रक्खै ।" इस तारको पाकर भारत वासियों को जो हर्ष हुआ वह अकथनीय है ॥

लंडन नगर की शोभा जो भूमंडल भरके नगरोंका राजा गिने जाने योग्य है इस समय अपूर्व थी । इस समय वह इंद्रपुरी के साथ स्पर्द्धा करता था । श्रीमतीकी सवारी अंगरेज़ी रीतिके अनुसार निकली थी । भारतवर्षकी सेनाने इस सवारी में उच्चस्थान पाया था। इस उत्सव पर असंख्य सभा, सोसाइटी और राज्योने श्रीमती को बधाई दी थी । और धन पुण्य भी बहुत कुछ किया गया था ॥

इस महोत्सव पर भारतवासियोंने जो हर्ष किया वह सरकार और प्रजाके चित्तमें अभी नवीनहै । देशभरमें अनेक स्कूल, अस्पताल,घंटाघर, पुलें,अनाथालय और नानाप्रकारके प्रजोपकारी कार्य खोलेगयेथे। ज्यूबिलीके दिन स्थान २ पर सभायें होकर श्रीमती और भारतगवर्नमेंटको देशीराजा और प्रजाने बधाई दीथी और सरकारने उत्तरमें हार्दिक धन्यवाद दियाथा। उससमय प्रजाने ईश्वरसे प्रार्थनाकी थी कि दशवर्षके अनन्तर तीसरी ज्यूबिली देखनेका सौभाग्य प्राप्तहो किन्तु प्रजाकी आशाफलवती न हुई ॥

उत्सवके कुछदिन बाद लंडनमें एक अपूर्व दृश्यहुआथा । ब्रिटिश जलसेनाकी १६६ जहाजोंकी क़वाइदथी । राजकुटुंबके लोग दो रेलभरकर देखनेके लियेगये थे । श्रीमतीभी राजसी ठाटसे क़वाइद देखने पधारीथी । इस सेनामें ३० हज़ारसे ऊपर मनुष्यथे । जहाज़ोंपर विजलीका प्रकाशथा । प्रकाशसे रात्रिका दिन होगया था । क़वाइदके बाद तीसों हजार मनुष्योंने एकस्वरसे कहा "महारानीकी जय" तीसहजार मनुष्योंका शब्द गगनभेदी हुआ । प्रजा और दर्शकोंने हर्षसे आशीर्वाद दिया ॥

अध्याय ६०.

प्रजाप्रेमका अंतिम उदाहरण ।

सन १८९९ई० के मार्चमें श्रीमतीने यूरोप की अंतिम यात्राकी।यद्यपि इंग्लैंड और फ्रांस का वहुत कालसे वद्धवैर चलाआताहै और सौडानमें जबसे फरांसीसियोंने इंग्लैड वालोंसे हार खाकर नीचादेखा उनका अंगरेजोंपर विशेष डाहहै परंतु श्रीमतीका वहां वालोंने वैर भूलकर स्वागत किया इसी लिये आपने दूसरी वार जानेका विचारकिया किन्तु ट्रासवाल युद्धमें फरांसीसियोंके गुप्तरूपपर वोरोंको सहायतादेने और इंग्लैंडको इसवातमें निन्दित समझनेकी घटना सन्१९००ई०में हुई । इस वर्ष आपफ्रांस होकर इटाली जाना चाहतीथी और इसकार्य के लिये सन् १९०१ ई०की वंसत ऋतु निश्चित कीगईथी किन्तु इससे पूर्वही असहन शील फरांसीसियोंने महारानीके चित्रका कईबार अपमान किया । इसवातकी ख़बर इंग्लैंड पहुंचनेपर फ्रांसका जाना रोकदिया गया ॥

ट्रांसवाल युद्धमें जानेसे पूर्व श्रीमतीने लार्ड रावर्ट्स और सरदार किचनरको अपने पास बुलाया और उनका वहुत सत्कार कर उन्हें इंग्लैंडकी सेनाकी प्राण रक्षा और ब्रिटिशके सुनामको स्थिर रखनेका अनुरोध किया । दोनोंने वहां जाकर विगड़ी हुई वात वनादी । मैफकिंग्, किम्वर्ली और लेडीस्मिथ का छुटकारा हुआ । और प्रिटोरिया को विजयकर जब लार्ड रावर्ट्स युद्धक्षेत्रसे इंग्लैंड को लौटे तो उनका पहलेसे भी अधिक सम्मान कर उन्हें गार्टर और अर्ले की उपाधिदी । श्रीमतीके शासनमें यह उपाधि सबसे पीछे दीगई क्योंकि आपकी मृत्युसे पूर्व दूसरे किसीको उपाधिदेने का अवसर नही मिला ॥

युद्ध क्षेत्रमें घायल सैनिकों की सुश्रूषा और सेवा करने के लिये वीर इंग्लैंड की अनेक साहसी स्त्रियां ट्रांसवाल जानेको तैयार हुई । आपने विदाहोनेसे पूर्व

उनको बुलाया और जब वे विदाहुई तब आपने कहाकि—"तुम्हारे सुकार्य, देशसेवा और साहसको देखकर मेरा हृदयभी तुम्हारे साथ जायगा" जबतक आपके स-मयमें ट्रांसवाल के युद्धसे घायल हो२कर ब्रिटिशसेना लौटती रही आप कई बा-र उन्हें देखने और समाश्वासन करनेके लिये नेटली और ऊलाविचके अस्पतालों को गईं। वहां दुःखित सैनिकोंने वृद्धमाताके हाथसे गुलदस्ते पाकर वहुत कुछ आरोग्यता पाई। और लंडन नगर की ओरसे दी हुई वालंटियर सेना जब वहां से लौटी तब श्रीमतीने उसके स्वागत के हर्षमें अपने दौहित्र की मृत्युको एक दिन छिपाकर यह दिखला दिया कि मैं प्रजाके सुख दुःखको अपने सुख दुःखसे अधिक समझतीहूं ॥

इंग्लैंड वालोंके ट्रांसवाल के बोरों से युद्ध करने और उन्हें घर बैठे सतानेको आयर्लैंड वालों ने बहुतही बुरासमझाथा और वे प्रकट रूपपर राजद्रोहकी बातें करने लगेथे। उन लोगोंका क्रोध यहां तक भड़काथा कि उपद्रव होजाने का सम्भव था किन्तु आयर्लैंड की सेना संग्राममें बहुत वीरताके साथ लड़रही थी। ऐसे अवसर पर श्रीमतीने स्वर्गवाससे कुछ मास पूर्व आयर्लैंड जानेका मनसूबा किया। मंत्रियोंने इसकार्यसे आपको रोका परंतु श्रीमती को निश्चय था कि मेरे मुख कमल का अवलोकन करते ही आयर्लैंड वाले ठंढे पड़ जायँगे। श्रीमतीने हर्ष पूर्वक आयर्लैंड की यात्राकी। यह यात्रा बहुत वर्षों बादहुईथी। प्रजा माता के मुख कमल के दर्शनकी बड़ी उत्सुकथी। दर्शन करते ही सारे दुःखदर्द और कुत्सित विचारोंको बिलकुल भूलगई और श्रीमतीका बहुतही भक्ति पूर्वक धूमधाम के साथ स्वागत किया। वहांसे चलते समय श्रीमतीने आयर्लैंडकी प्रजाके नाम एक पत्र लिखा। उसमें लिखा कि "मैं तुम्हारी भक्ति देखकर बहुत प्रसन्न हुई हूं और आयर्लैंड की अंतिम यात्रा मुझे सदा स्मरण रहैगी।" इसपत्र को पाकर वहां वालोंको बहुत हर्ष हुआ ॥

वृद्धा महारानी ।

अध्याय ६१.

महारानीकी अंतिम बीमारी ।

बासठ वर्षके निरंतर परिश्रम, वृहत् साम्राज्यकी चिन्ता, पुत्र पौत्रादिकों के वियोगका शोक और वृद्धावस्थाके कारण श्रीमतीका शरीर अनुमान एक वर्षसे अस्वस्थथा । अनेक वर्षोंसे आपके आंखोंमें पीडा रहा करतीथी । डाक्टरोंको भयथा कि कही आंखें जाती न रहैं । एक वर्षसे मंदाग्नि और अशक्ति बढ़ चलीथी । दृढ और विशाल शरीर सूख गया था । महलमें इधर उधर फिरना भी प्रायः पहिये वाली कुरसी द्वारा होता था । थोड़े मास पूर्व आपने जी लग नेके लिये जब यूरोप यात्राका विचार किया तब डाक्टरोंका माथा ठनका था । उन्हें इसी यात्रामें आपके शरीरपतन होनेका भयथा किन्तु उन्होंने आपका हृदय न दुःखानेकी इच्छासे श्रीमतीको वारण नही किया था । किसी न किसी बहाने से यूरोपकी यात्रा रोकी गई परन्तु आपने अस्वस्थ शरीरसे ही आयर्लैंड की यात्राकी । यात्रामें किसी प्रकारका विघ्न न हुआ किन्तु लौटने के बादसे ही स्वास्थ्य अधिक २ विगड़ता गया । डाक्टरोंने काम काज बंदकर एकान्त वासकी सम्मति दी परंतु उस समय तक किसीको यह भय न था कि आप की मृत्यु होजायगी । १९ जनवरी शनिवारको सरकारी गजटमें प्रकाशित हुआ कि " गत वर्षसे श्रीमतीकी शक्ति बहुत घट गई है । उनके चित्त को जो अनेक वातोंका कष्ट हुआ है उससे उनके शरीरकी रक्तवाहिनी धमनियां निर्बल पड़ गई हैं इसलिये श्रीमतीके डाक्टरोंने यह उचित समझाहै कि आप कामकाज छोड़कर विश्रामलें । " इस समाचार को पाते ही लोगोंको चिन्ता उत्पन्न हुई । इस अवसरमें श्रीमतीकी भोजनपर रुचि और क्षुधा विगड़गई थी । जो लोग गत ८० वर्षसे आपके स्वास्थ्यको देखरहे थे उनको बहुत भय हुआ । क्योंकि वे जानते थे कि आपके लिये ये दोनों बातें बहुत भयानक हैं । शरीरकी अशक्ति के कारणही आप लार्ड रावर्ट्स से अधिक देर तक बातचीत नहीं करसकी थीं । अंतिम वर्ष में ऐसा कोई दिन नहीं जाताथा जब ट्रांसवास युद्धकी चर्चा न हो । युद्ध में वीर अंगरेजोंकी मृत्युसे आपको बहुत खेदहोताथा और सुनते ही श्रीमती की आंखों में से आंसू बहने लगते थे । श्रीमती प्रति रविवार और ईसाइयोंके प्रत्येक त्योहारको गिरजे में अवश्य जाया करती थीं । १ जनवरीकी प्रार्थनामें भी आप संयुक्त हुइ थीं । १५ जनवरी को आप गधेकी गाड़ीमें बैठकर

आसबर्न के राजमहलके बागमें वायुसेवनके लिये निकली थीं । परंतु २१ जनवरीसे आपकी स्थिति बिलकुल बिगड़गई। रोगोंके बल पकड़नेसे बेचैनी बढ़ी । गठियाने जोर बांधा । खाना पीना प्रायः बंद होगया। बेचैनी बढ़गई और पल२ पर श्रीमती के लिये भय बढ़ने लगा। श्रीमतीके स्वास्थ्यकी प्रजाको सूचना देनेके लिये घंटे २ में विशेषपत्र (Bulletin) प्रकाशितहुए और बिजलीकी चमक की तरह तार द्वारा श्रीमती की भयंकर बीमारीके समाचार ब्रिटिश साम्राज्य क्या बरन दुनिया भरमें फैलगये । श्रीमती की चिन्तामें लोगोंने कामकाज कम करदिया । जहांदेखो वहीं इसबात की कानाफूसी होनेलगी । राजभक्तप्रजाने गिरजे, मंदिर और मसजिदोंमें जा २ कर श्रीमती की आरोग्यताके लिये ईश्वरसे प्रार्थनायें की । नानीकी बीमारीके समाचार सुनकर जर्मनीसे सम्राट् द्वितीय विलियम दौड़ेहुए लंडन आये । आस्बर्नसे जाकर श्रीमती की मृत्युके पूर्व शनिवारको युवराजने अपने भानजे जर्मनसम्राट् का स्वागत किया । वह इस समय नानी की बीमारीमें आयेथे इसलिये उन्होंने स्वागतमें कुछभी धूमधाम न करनेदी । और उतावले चलकर श्रीमतीके पास जापहुंचे । श्रीमतीने उनको पहँचानकर अपने निकट बिठलाया परंतु टूटेफूटे संभाषणके अतिरिक्त अधिक बातचीत नहीं की श्रीमती की अशक्ति और भी बढ़गई और राजकुटुंबके सब स्त्री पुरुषोंने आपके पास निरंतर रहना आरंभ किया ॥

मंगलवारको मध्याह्नके पश्चात् आस्बर्नमें उपस्थित रहनेवाले मनुष्योंने जान लिया कि समय निकट आपहुंचाहै । महलके फाटकपर लोगोंकी बहुत भीड़ इकट्ठी होगई । विशेषता यहथी कि इस भीड़में देश प्रदेश और परराज्योंके समाचार पत्रों के संवाददाताओंकी संख्या अधिकथी । तीन मदरासी जो इंग्लैंडके उत्तरभागमें व्याख्यान देतेथे इस समाचारको पाकर महलके फाटकपर पहुंचे और रानीके मुन्शी से बातचीतकर श्रीमतीके अंतिम दर्शन का सौभाग्य प्राप्तकरसके । चार बजे तक लोगोंकी आशा भंग नहीं हुईथी। जो महलके भीतरसे आता वह यही कहताथाकि "स्थिति बिगड़ी नहींहै ।" किन्तु एकाएक चार बजे महलमेंसे " जहाज़ डूबने" का शब्द आया । सुनतेही भीड़में सन्नाटा छागया । लोगोंके पैर थरथराने लगे । हृदय दुःखसे उमड़ आया । इतनेहीमें महलकी पुलिसके अफ़सर मिस्टर चार्लेस फ़्रेजरने आकर रोते २ कहाः—

"मुझे परम खेदहै कि महारानीका साढे छः बजे देहान्त होगया ।"

इस वज्रपात्से भीड़को जो शोक हुआ उसको प्रकाश करनेकी लेखिनीमें शक्ति नहीं है। उसीसमय सरकारी गजटके विशेषपत्रमें प्रकाशित हुआः—

आस्वर्न राज प्रासाद २२ जनवरी ६॥। बजे, सायंकाल।

श्रीमती रानीका ६॥ बजे सायंकालको देहांत होगया। उस समय आपके पुत्र पौत्रादिक समस्त राजकुंटुव उपस्थित था" ॥

अध्याय ६२.

महारानीकी मृत्यु और संसारमें शोक।

इस खबरके पातेही नगरका बाज़ार खटाखट बंद होगया।आठ बजेसे पहले२ लंडन जन शून्य दिखाई देने लगा। लोगोंके हृदयमें केवल एक ही बातसे संतोष होता था। वह संतोष असाधारण नही था। जिनको अपने आत्मीय वर्गमेंसे किसीकी मृत्युके देखनेका काम पड़ाहै वे अच्छी तरह जानते हैं कि मरने वालेके अंत समयके कष्टको देखकर उसके प्यारोंको कितनी व्याकुलता होती है, अपने परम प्रिय संबंधीके मरनेके समय अपने दुःखको भूलकर वे क्यों कर कहने लगते हैं कि इस कष्टसे तो छूटना अच्छा है। परंतु यह बात श्रीमतीको भोगनी न पड़ी। शरीरकी अशक्ति और किंचित् पीडाके सिवाय आपको कुछ दुःख न हुआ। "अनायासेन मरणम् विना दैन्येन जीवनम्।" इस लोकोक्तिके अनुसार एक देवताकी तरह पुण्य पुरुषके समान विना कष्ट प्राण प्रयाण कर गया। श्रीमतीका शव कई दिनोंतक मृत्यु मंदिरमें रक्खागया और दीन किसानसे लेकर वड़ेसे बड़े अमीरतकको आकर दर्शन करनेकी स्वतंत्रता दीगई। और सदाकी तरह उन दिनोंमें भी श्रीमतीके शवके पास भारतवासी सेवकोंका पहरा रहा।

इस मृत्युसे ग्रेट ब्रिटेनकी प्रजाको जो शोक हुआ उसका अनुमान लंडन नगरके प्रसिद्ध दैनिक समाचार पत्र "टाइम्स" के लेखसे होताहै। 'टाइम्स'वहांपर वड़ा प्रभावशाली पत्रहै। उसकी सम्मति प्रजाकी वास्तविक सम्मति समझीजाती है। उसने लिखाहै कि—"यद्यपि इंग्लैड राज्यके नियमोंसे बढ़कर रानीने कभी पैर नही रक्खा किन्तु वह अपने कर्तव्य पालनमें कभी विमुख न रही। वह ब्रिटिश जातिकी प्रधान न्यायाधीश बनकर सदा काम करती रही और जब कभी

आवश्यकता हुई उन्होंने अपने राजत्वके पदके अनुसार मंत्रियोंको अनुचित कार्यसे रोकनेमें त्रुटिनकी । भीतरी और बाहरी बखेड़ोंके समय यदि उनकी नेक चलनी और योग्यता सहायक न होती तो अनेक वार उपद्रव होना संभवथा । यूरोपके राजनैतिक विषयोंमें उनका कितना प्रभाव था । इस बात की साक्षी केवल इतिहास ही दे सकते हैं परंतु हमें इसके बहुत प्रमाण मिले हैं कि जिनमें उन्होंने देश और देशांतर के टंटे बखेड़े मेटनेमें बहुत सेवाकीथी । वह सेवा इतनी बढ़कर थी कि अब उनके न होनेसे हमारे साम्रा-ज्य और हमारी जातिकी स्थिति औरकी और हो जायगी । शक्ति, उन्नति, सुख, शांति और प्रजाकी वृद्धि जो उनके प्रारब्धसे, उनके दीर्घ जीवनमें प्रजाको प्राप्तहुई वह अनंतहै । और इसकारण इतिहासके पृष्ठों पर विक्टोरिया का सुवर्ण जीवन सदा अंकित रहैगा जिनकी मृत्युपर आज हमको परम, परम शोक है ।" यह समाचारपत्रोंकी सम्मति की बानगी है किन्तु इस संवादको पाकर ग्रेटब्रिटेन और आयर्लैण्ड की प्रजाको जो शोक हुआ उसे विलायती पत्रोंने अकथनीय बतलायाहै । उनका कथनहै कि समग्रदेश उससमय शोकसागरमें निमग्न था । इसके चिह्न सर्वत्र दिखलाई देते थे । झंडे आधे झुकादिये गयेथे, लोगोंने काले वस्त्र धारण किये, व्यापार और राजकीय कार्य पूर्ण रूपपर बंद रहा । प्रत्येक नग-रके लार्डमेयर, जज और प्रभावशाली पुरुषों की प्रेरणासे महती सभायें एकत्रि-तकर शोक प्रकाशित किया गया और राजकुटुंब की सेवामें सहानुभूतिसूचक तार वा पत्र भेजेगये । यही दशा श्रीमतीके वृहत् साम्राज्यके प्रत्येक नगर और ग्राम की थी । यावत् उपनिवेशोंसे इसी प्रकारके समाचार आतेथे ।

फ्रांस बहुत कालसे इंग्लैंड का कट्टर शत्रु है । ट्रांसवाल युद्धमें इंग्लैंड का अनुचितकार्य मानकर वहांकी प्रजाने महारानी और युवराजके चित्रोंका अपमान कियाथा और लोगों के ऐसे२ मलिन विचार देखकरही श्रीमती तथा युवराजने थोड़े मासपूर्व फ्रांसकी यात्रा बंद रक्खी थी किन्तु इस दुःखदायिनी घटना के समय एकस्वरसे फरांसीसी लोग श्रीमतीके गुणोंका गान करने लगे । वहांकी गवर्नमेंट की ओरसे विदेशीय विभागके मंत्री एम् डेलकासी और अन्य मंत्रि-वर्ग प्रेसीडेंट वालडेक रोसियोको लेकर ब्रिटिशराजदूतके पासगये और जो न जासके उन्होंने अपने प्रतिनिधि भेजकर मान्यवर मिस्टर माइकल हर्बर्ट ब्रिटिश राजदूतसे शोक प्रकाशित किया । फ्रांसकी प्रजाके विचार पैरिस के प्रभावशाली पत्र 'फिगेरो' से विदितहोते हैं। उसने लिखाहै कि—"इस प्रभावशालिनी रानी के साथ ही एक दीर्घ कालीन और वैभव सम्पन्न शासनका अंत होगया और

एक-सद्गुण सम्पन्न व्यक्ति उठगया । रानी विक्टोरिया की मृत्युसे ब्रिटिश साम्राज्य की ४० करोड़ प्रजाको ही केवल शोक नहीं हुआ है किन्तु यूरोप और यावत् सभ्यसंसार इससमय शोकमें निमग्न है । संसारमें जितनी जातियों की ब्रिटिशके साथ मित्रता है उसमें से फ्रांस को सबसे बढ़कर शोक हुआ है । हम उन्नीसवी शताब्दिकी परम विभव शालिनी रानीकी समाधिपर प्रतिष्ठा पूर्वक शिर झुकाते हैं और अपने शोकको ब्रिटिश लोगोंके शोकमें संयुक्त करतेहैं । अब जिस व्यक्तिने ब्रिटिश साम्राज्य का शासन अपने हाथमें लिया है वह प्रजाप्रिय [illegible] त्र और मिलनसार मनुष्य हैं । ” फरांसीसी पत्रों में “ मैटिन ” ब्रिटि[illegible] का खंडन करने में बहुत प्रसिद्ध है उसका कथनहै कि “विक्टोरिया अब संसार में नहींहै । उनकी वृद्धावस्था, उनके उत्तम कार्य और प्राचीन राजाओंके समान उनके सुशासन की जो प्रतिष्ठा थी उसका अंत आगया । यह कहना अनुचित नहींहै कि उनकी मृत्युसे संसारमें बहुत लौटफेर होगा । और बड़ी २ घटनायें होंगी । बिस्मार्ककी मृत्यु इसके सामने कुछ नहींहै । थोड़े ही दिनों में मालूम हो जायगा कि इस राजसी समाधिने क्या २ करडाला । हम जानतेहैं कि ६४ वर्षके राज्यमें ग्रेट ब्रिटेन की बहुत कुछ उन्नति हुई है । ” यद्यपि यहसंवाद रूसकी राजधानी सेंट-पीटर्स वर्ग मे २३ जनवरी को ही पहुंचगया था किन्तु प्रकाश उसका दूसरे दिन हुआ था । राज्यके झंडे आधे गिरा दिये गये और सेनाध्यक्ष, मंत्रिगण और राजकुटुंबके अनेक लोगोंने ब्रिटिश दूतके पास जाकर सहानुभूति प्रकटकी थी । वहांके समाचार पत्रोंने अपने कालमोंके काले बार्डर लगाकर इस शोकको प्रकाशित किया था । और इस प्रसंगपर कितनेही पेपरों ने श्रीमतीका चित्र भी छपाथा । जर्मनी के सब पत्रों ने मुख्य लेखोंमें इंग्लैंडका इतिहास छापा और महारानी का शोक बड़े प्रतिष्ठित शब्दों में लिखा । यद्यपि उन लेखों में दक्षिण एफ्रिका के युद्ध के विषयमें महारानी के शासनकी निंदाकी गईथी किन्तु उनके लिये बहुतही प्रशंसा थी । और जहां २ पर निंदा की गई वहां अमात्य वर्ग को दोषी बतलाया गयाथा । बर्लिनके सरकारी गजटमें जर्मन सम्राट्की ओरसे आस्बर्नसे २३ जनवरी की लिखी एक आज्ञा मुद्रित हुईथी जिसमें लिखा था कि—“मेरी प्यारी परम प्रतिष्ठित सदास्मरणीया नानी विक्टोरिया ग्रेट ब्रिटेन और आयर्लैंडकी रानी तथा भारत वर्षकी महारानी का देहान्त होनेसे मुझे और मेरे कुटुंबको परमशोक हुआ । मुझे भरोसाहै कि मेरी सेना मेरे इस असह्य कष्टमें साथ देगी और इसीलिये मैं आज्ञा देताहूं कि मेरी सेना के

समस्त अफसर लोग चौदह दिन तक श्रीमती का शोक पालैं । ग्रेट ब्रिटेनकी रानीके नामकी जर्मनीमें फर्स्टेंट्रेगून सेनामें तीन सप्ताहतक शोक मनाया जाय और इनमें से प्रथम तीन दिन सेना और सर्व साधारण दफ्तरोंके झंडे आधे झुके रहैं । ”

बेलजियमके समाचार पत्रों ने काले बार्डरके साथ विशेष पत्र मुद्रित किये । वहां नाटक बंद रक्खेगये, झंडे आधे गिराये गये और प्रजाने बहुत शोक किया। हालैंड, इटाली, स्पेन, यूनान, डेनमार्क, आस्ट्रिया और यूरोपके सबही देशोंमें रूस, फ्रांस और जर्मनी की तरह शोक किया गया । प्रूशियामें चार सप्ताह, सेक्सको बर्गमें छः सप्ताह, पुर्तगालमें एकमास, रोमेनियामें दशसप्ताह, सेक्सनीमें तीनसप्ताह स्पेनमें तीनसप्ताह, आस्ट्रिया हंगेरीमें एकमास, मोंटनेग्रोमें तीनसप्ताह, बलगेरिया में चार सप्ताह, इटालीमें दो सप्ताह, बेलजियममें आठ सप्ताह, डेनमार्कमें १४ फरवरी तक, बेडनमें तीनसप्ताह, स्वीडनमें तीन सप्ताह और रूसमें तीनमासतक राजरीतिपर शोक रहा ॥

यह संवाद जिससमय न्यूयार्क (एमेरिका) में पहुंचा सायंकालके ६॥ बजे थे । समाचार पत्रोंके कार्यालयोंके द्वारोंपर उस समय बडीभीड इकट्ठी हो रहीथी । सुनतेही लोगोंने व्यापार बंद करदिया । सरकारी मकानोंके झंडे आधे गिरादिये गये । एमेरिकाकी राजधानी वाशिंगटनमें समाचार पातेही ब्रिटिश दूतसे वहां के मंत्रिमंडलने सहानुभूति प्रकाशित की । प्रजातंत्रके समस्त मेंबरोंकी सभा इकट्ठी होकर प्रेसीडेंट मेकिनलीने राजासप्तम एडवर्डको सहानुभूति सूचक तार दिया । इस अवसरमें वहां एक घटना हुई । म्यूनिसिपेलिटीके “ सिटीहाल ” पर जो झंडा उड़रहाथा उसको नगरके लार्डमेयर बेनविकने न झुकानेदिया । यहांतक कि प्रेसीडेंट मेकिनलीने भी उनको समझाया परंतु उन्होंने यही कहा कि “ एमेरिकाकी गवर्नमेंटने जब हमको बोर जनरल जूबर्टकी मृत्युके समय झंडा न उतारने दिया तो अबभी हम न झुकावैंगे’।’इसबातसे लोग उनपर बहुत अप्रसन्न हुए परंतु उन्होंने अपना हठ न छोड़ा । यह घटना न्यूयार्ककीहै । वहां ‘ट्रिव्यून’ बहुतप्रभावशाली पत्र समझा जाताहै । उसने प्रथम पृष्ठपर श्रीमतीका चित्र देकर बहुत विस्तार पूर्वक उनका और नवीन राजाका चरित्र प्रकाशितकिया और चीनके वाशिंगटन स्थितप्रतिनिधिने उसपत्रको लिखाकि—“ विक्टोरिया बहुतही वृद्धाथी । उनके दीर्घ जीवनका मैं बहुत आदर करताहूं । ईश्वर उनके अनेक गुणोको जानताथा । जो सम्मान माताकी माताओं और पिताओंकी

माताओंका करना चाहिये वही विक्टोरिया रानीके लिये उपयुक्तहै। उनके न्याय और सरलताकी इतिहास वेत्ताओंमें बड़ीप्रतिष्ठा होगी।" एमेरिकाके समाचार पत्र बडे स्वतंत्रहैं। यहांके प्रेसिडेंटके विषयमें लिखते समयभी कभी दो तीनपृष्ठ से अधिक नहीं लगातेहैं किन्तु प्रभावशाली "ट्रिव्यून" ने सातपृष्ठ में महारानी की प्रशंसा की॥

अध्याय ६३.

महारानीकी समाधि।

श्रीमतीका देहान्त २२ जनवरीके सायंकालको हुआ था किन्तु समाधि दी गई २ फरवरी शनिवारको। उनका शव २७ जनवरीको संदूकमें रक्खा गया। उसके ऊपर हीरोंसे जड़ा हुआ श्वेत साटिन मंढाथा और उस पर राज मुकुट और श्रीमतीके पदक जो उनको भिन्न २ राज्योंसे मिलेथे रक्खे हुएथे। जब-तक समाधि न हुई लंडन नगरके गिरजोंमें महारानीकी आत्माको शांति मिल-नेके लिये प्रजावर्गने प्रार्थनाकी और राज कुटुंबके सब लोग शवके पास बैठ-कर प्रार्थना करते रहे। ७ फरवरीको आस्वर्नके राज भवनसे महारानीकी स-वारी निकली। उनका संदूक तोपकी गाड़ीमें रक्खा गया। उसे आठ घोड़ोंने खैंचा। संदूकके साथ २ सैनिक वरदीपहने नवीन सम्राट्, जर्मन नरेश, ड्यूक आफ् कनाट रहे और इस अवसर पर फ्रांसका प्रतिनिधि, बेलजियम, यूनान और पुर्तगालके राजा संयुक्त हुए। जिस समय श्रीमतीको जहाज़पर चढ़ाया गया सलामीमें उनके वयकी सूचनाके लिये ८१ तोपें चलाई गई। इस समय विदेशी राज्योंके सात सैनिक जहाज़ जिनमें एक फ्रांसका था उपस्थित थे। सब मिलाकर साठ जहाज़ श्रीमतीकी नौकाके साथ चलतेथे। जहाजसे उतार कर शव जिस समय लंडनके गिरजेमें लेजानेके लिये भूमिपर लाया गया उसके आगे सेनाको लिये हुए लार्ड रार्वर्ट्स और नवीन सम्राट् जर्मन नरेश तथा वि-देशी राजा पीछे चले। उस समयका दृश्य बहुतही हृदय द्रावक था। इस अवसर पर स्यामके राजकुमार और सीलोन, हांगकांग मलाया और लाबु-आनके प्रतिनिधि सर सेसिल क्लीमेंटीभी आपहुंचे थे। श्रीमतीको देखकर प्रजाका हृदय भर आया। लोगोंकी आंखोमेंसे आंसू बहने लगे और सबहीने पुकार २ कर महारानीकी प्रशंसाकी। इसके बाद सन्नाटा छागया। लाखों मनुष्योंकी भीड़को फाड़ती हुई महारानीकी अंतिम सवारी स्मशानमें पहुंचाई

गई । मार्गमें मेमोरियल गिर्जेमें प्रार्थना करने बाद जिस समय श्रीमतीका शव फ्राग मोरमें पहुंचा सेनाने मार्गके दोनों ओर सफ बांधकर अंतिम सलामी ली । इसके अनंतर जो क्रिया हुई वह प्राइवेट थी इसलिये राज कुटुंबके सिंवाय वहां कोई उपस्थित न हो सका । वहां पहुंचने पर पादरियोंने ईसाई धर्मके अनुसार धार्मिक महारानीकी अंत्येष्टि क्रियाकी । फिर श्रीमतीका शव उनके पतिकी कबरके निकट रक्खा गया । श्रीमती की आज्ञासे उनकी प्यारी अंगूठी जो साठ वर्ष पूर्व अपने पतिकी ओरसे उन्हें प्रथमभेट मिलीथी उनकी अंगुलीमें पहनाकर उनके शवके साथ रक्खीगई। यद्यपि यह अंगूठी बहुमूल्य नथी परंतु श्रीमतीका उसपर इतना प्रेमथा कि पांच मिनटका वियोगभी आपको सहन नहीं होताथा । इनकी अंत्येष्टिक्रियामें कुल ३५॥ हजारपौंडका व्यय कूतागयाहै । और कबरके ऊपर लैटिनभाषामें इसतरह खुदवायागया:—

यहां परमपवित्र, शक्तिमती, और सर्वोच्च रानी

विक्टोरिया

धर्मकी प्रथम रक्षका, ग्रेटब्रिटेनकी रानी और

भारतवर्षकी महारानी का

शरीर रक्खाहै ।

अध्याय ६४.

भारतवर्षमें शोक और वाइसरायका व्याख्यान ।

श्रीमतीके स्वर्गवाससे तीनदिन पहले जबसे भारतवर्षमें आपकी बीमारीके समाचार पहुंचे छोटेसे लेकर बडे तकके घरमें यही चर्चाथी। हाट बाट गली दूकान और जहां देखो वहीं लोग श्रीमतीकी प्रशंसा करतेथे । हिन्दू, मुसलमान ईसाई पारसी अपने २ मंदिर, मसजिद, गिरजे और अग्निमंदिर में इकट्ठे हो २ कर श्रीमतीकी आरोग्यताके लिये प्रार्थना करने लगे । महारानी की बीमारी की चिन्ता, भविष्यत् प्रबंधका विचार और इसी प्रकारकी बातचीतमें लोगोंने मनभर कामकरना-छोड़दिया । बड़े नगरोंके दैनिक समाचार पत्रोंने विलायती तारोंसे श्रीमतीका

दिन २ विगडताहुआ स्वास्थ्य सुनाकर प्रजावर्गको चिन्तामें डुबो रक्खाथा इतने हीमें २३ जनवरीका प्रभात हुआ । प्रथम दिन रात्रिके दो बजेकी आई हुई ख़बर अतिशीघ्रही सब नगरोंमें जहां २ तारघरहे पहुंचगई । अन्यत्र दूसरे तीसरे दिन पहुंची । विना किसी की प्रेरणाके व्यापारियोंने व्यापार बंद किया, दूकानदारों ने दूकानें उठादी और कार्यालयोंमें छुट्टीहोगई । जगह २ महारानी की दयाशी-लताकी प्रशंसा और उनकी मृत्युपर खेदके सिवाय किसी तरहकी चर्चानरही। जिन लोगोंने कभी श्रीमतीके दर्शन नहीं कियेथे, जो नवीन शिक्षा न पाकर ब्रिटिश राज्यका प्रबंध पार्लियामेंट और महारानीके विषयमें भी कुछ नहीं जानतेथे उन्होंने भी महारानीको सराहा । उनके हृदयमें महारानी की वह दया जो श्रीमती समय २ पर भारतके अपराधियोंके प्राण बचाकर दिखाया करतीथीं, निवास कर रहीहै। उसीको यादकर दीनभारतवासियोंने आंसू बहाये ।पुत्रको माताकी मृत्यु से जैसा कष्ट होताहै, छोटे बालक माके तनिकदेर हटने पर मा! मा! कहकर पुकारने लगते हैं, वैसेही अभागे भारतवासी शोकान्वित होगये । जिनलोगोंका पाषाणके समान हृदय था जो दूसरे के दुःखपर हंसा करते थे उन्हों नेभी देश माताकी मृत्युपर शोकाश्रु से वस्त्र भिगो दिये । इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है । वह साक्षात् दयाकी मूर्त्ति थी । जबर भारतवासियोंपर कष्ट पडता था वे श्रीमती तक अपनी गुहार पहुंचानेका प्रयत्न करतें थे । वे अच्छी तरह जानते थे कि माताके पास प्रार्थना न पहुंचनेही से उनपर विपत्तिहै । श्रीमती समय २ पर अपने प्रेम संभाषणसे भारतवासियोंके मनको प्रशांत करती रहती थीं । एसी माताकी मृत्यु सुनतेही देशव्यापी शोक हुआ । छोटे से लेकर बड़े तकके हृदय में मर्माहतहुआ ॥

शोकही शोककी चर्चामें एक सप्ताह निकलगया । २ फरवरी को महारानी की समाधिका दिन निकट आया । उसदिन प्रजाने अपनी इच्छा से बाज़ार बन्द कर दिया । तेल और लवणभी मिलना कठिन होगया । भारत वर्ष में उस-दिन ऐसा कोई नगर न रहा जहां हड़ताल न हुईहो । पढ़े लिखे लोगों ने मिल-कर स्थान २ पर सभायें की । अपढ़भी इन सभाओं में संयुक्त हुए । मंदिरों, मसजिदों और गिरजों में श्रीमतीकी आत्माको शांति मिलनेके लिये ईश्वरसे प्रार्थना की गई । उसदिन कलकत्ता और बंबईका अपूर्व दृश्य था । कलकत्ते के मैदानमें श्रीमतीकी मूर्त्तिके निकट सबही जाति और धर्मके मनुष्य इतने इकट्ठे हुएथे कि पैर रखनेको जगह नहीं मिलतीथी । चारोंओरसे " हरि

बोल २ "का शब्द गूंजरहा था । अमीर गरीब सबही नंगेपैर हिन्दुओंके धर्मानुसार स्मशान भूमिके योग्य वस्त्र पहने इधर उधर फिरते और भीड़में घुस २ कर मूर्त्तिके दर्शन करनेका प्रयत्न करते थे उसदिन भारतवासी रंगबिरंगे वस्त्र पहनना भूल गये थे । भीड़में श्वेतके सिवाय और रंग कम दिखाई देताथा । यही दशा बंबईकी थी । हजारों वरन् लाखों मनुष्य श्रीमती की मूर्त्तिके पास इकट्ठेथे । लोगोंने अपना हार्दिक प्रेम प्रकाशित करनेके लिये मूर्त्तिपर फूलोंके हार चढ़ायेथे । उस दिनकी भीड़को मूर्त्तिके पाससे हटानेमें पुलिस भी असमर्थ थी । जिस समय गिरजेसे लौटकर बंबईके गवर्नर लार्ड नार्थकोट वहां आये प्रजाका आन्तरिक प्रेम देखकर छक्क होगये । देशी रजवाड़ोंमें सर्वत्र शोक सूचक सभायें, शोकके वस्त्रोंका धारण करना, अंगरेजी रीतिके अनुसार तोपें दागना, उत्सवकी बंदी और राजधानियोंमें हड़ताल हुई । जोधपुर नरेशने अपने भाई बेटे और कर्मचारियों सहित देश माताको वास्तविक माता मानकर हिन्दू धर्मकी रीतिके अनुसार तालाब पर सूतक निवृत्तिके लिये स्नान किया । उस अवसरमें मुसलमानोंका कोई धार्मिक त्योहारथा परंतु मुसलमान राजाओंने किसी प्रकारकी धमधाम न की ॥

अंगरेज अफसरोंने उसदिन गिरजेमें स्थानीय अंगरेजोंके साथ नमाजें पढ़ीं। वाइसराय और बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर कलकत्तेमें और अन्य स्थानीय गवर्नर अपनी राजधानियोंमें राजरीतिपर इस प्रार्थनामें संयुक्तहुए । वाइसराय ने सरकारी कर्मचारियोंको आज्ञादी और अन्य ब्रिटिशप्रजासे अनुरोध किया कि सबलोग ६ मार्च तक पूरे और १७ अपरेल तक आधे शोक सूचक चिह्न धारण करैं । उपाधि वितरणके लिये कलकत्ते में जो राजाओं का एक छोटासा दर्बार होने वालाथा वह बंद रहा और उससमय देशभर में एक साथ शोकके बादल छागये ॥

भारतवासियोंके हृदयमें श्रीमतीकी मृत्युसे कितना शोक हुआ उसका अनुमान २५ जनवरीके 'पायोनियर' से होता है । उसने लिखाथा कि "भारत वर्षके सब भागोंसे, हमारे समस्त संवाददाताओंकी ओरसे और अधिक तर उन लोगोंकी ओरसे जिनका कभी हमने नाम तक नहीं सुना है इतने तार आ रहे हैं जिनसे हमारा दफ्तर भरा हुआ है । इस समय देश भरमें शोक छा गयाहै । इस साम्राज्यने शोक प्रकाशित करनेके लिये गवर्नमेंटके अनुरोधका मार्ग प्रतीक्षण नहीं किया है किन्तु प्रजाके हृदयमें सच्चा दुःख है और उसी को वह इस

तरह प्रकाशित कर रही है।" यह संवाद २५ जनवरीका है। भारत वासियोंके शोककी वानगी 'पायोनियर' जैसे पत्रमें प्रकाशित होना ही वास्तविक शोकका गांभीर्य वतलाये देता है। दूसरा प्रमाण भारत वर्षके वाइसराय लार्ड कर्जन (वैरन कर्जन आफ् केडस्टल) का व्याख्यान है जो उन्होंने १ फरवरीको भारत गवर्नमेंटकी व्यवस्थापक सभामें दिया था। उसका सार यह है:—

"ग्रेट व्रिटेनके मुकुटने हमको इस सभामें उपस्थित होकर भारत वासियोंकी भलाई के लिये आईन वनानेकी शक्ति दी है। उस मुकुटको एक शताब्दिके दो तृतीयांश वर्षोंतक धारण करने वाली भली महारानीके लिये जो वहुत वर्षों-तक सुशासन कर प्रशंसा प्राप्त करनेके वाद सिधार गई हैं कृतज्ञ होनेको आज हम यहां इकट्ठे हुए हैं। ऐसी प्रतिष्ठित, बुद्धिमती, पवित्र और निर्दोष रानी (राजकर्त्री) व्रिटिश राज्यमें कभी उत्पन्न नही हुई थी। भारत वर्षने भी उनके समान कोमल हृदया, उदार, न्यायी और अपनी यावत् प्रजाको, चाहे वह किसी जाति और देशकी क्यों नहो, पुत्र सम लालन पालन करने वाली महारानीको असंख्य वर्षोंमें देखाथा। भारतके देशी राजाओंको ऐसी शुद्ध हृदया महारानीके होनेका गर्वथा और भारतकी यावत् प्रजा उनमें माता और रानीके संयुक्त गुणोंको देखती थी। सरकारके सेवक चाहे जहां नियुक्तहों उनसे आज्ञाथी कि वे प्रजाकी रक्षाकरैं और उनके आदर्शपर चलैं। भारतवर्षके शासनमें उन्होंने जो सुकार्य कियेथे उनके कहनेका आज अवसर नहीं है। क्या भारतके शासन और संवंध का यावत् उल्लेख, सन् ५८ के प्रसिद्ध ढिंढोरे में जो हमारे लिये स्वर्णाक्षर युक्तनेताहै, नहीं है? इतिहासोंमे राजाओंकी प्रशंसा करने की चालहै। ऐसा हम विजेता, न्यायी, पराक्रमी और साधुओंके विषयमें पढते आयेहैं। परंतु इस जगह प्रशंसामें अत्युक्ति का नामतक नही है। श्रीमती अपने पतिके लिये उत्तमका विशेषण दिया करतीथीं वही उनके लिये उपयुक्तहै। यदि उनके राज्यमें कुछ दोषहो वा कभी उनके शासन की निन्दा हुई हो तो उसका कारण श्रीमती नहीथी। वह सर्वोपरि थी। उन्होंने प्रत्येक मनुष्यके मनपर अपने गुण अंकित करदियेथे। आजदिन भारत वर्षमें जैसा सच्चा शोकहै वैसा व्रिटिश राज्यमें कहीं नही है। गत दश दिन में मेरे पास भारतवर्षकी अनेक जातों और अनेक मनुष्योंके इतने तार और

पत्र आयेहैं जिनका ढेरसा लगाहुआ है । इस समय भारतवर्ष शोकमें डूबरहाहै। समाचार पत्रभी इस बात का पूरा प्रमाणहै कि लोगोंको हार्दिक दुःखहै । हमें केवल उनकी मृत्युपर खेदही नहीहै बरन गर्वभीहै। उनका शासन एक शताब्दिके चार पंचमांश को पहुंचकर अन्य राजाओंके शासन कालसे बढ़ निकलाथा । परम वृद्धावस्थामें अन्त तक वह प्रेम और वृद्धि के लिये सदा युवतीके समान काम करतीथीं। उन्हें राज्य और प्रजाके लिये कोई कार्य करना शेष नहीं रहाथा । और न किसी प्रकारके वैभवमें न्यूनताथी । उन्होंने ग्रेट ब्रिटेनके साथ भारत वर्षको जोड़कर उस राज्यको जगत् प्रसिद्ध करदियाथा । केवल ब्रिटिश राज्यमें ही क्यों बरन संसारभरमें यदि कोई व्यक्ति महारानी के समान गुण रखने वाला वीसवी शताब्दिमें जन्मधारण करै तो संसार का सौभाग्य समझना चाहिये । मैं आज इसी लिये इस कौंसिलमें कुछ काम नकर इसे एक सप्ताह के लिये बन्द करता हूं ।"

श्रीमान्के व्याख्यानसे महारानी विक्टोरियाके सच्चे गुण और भारत वासियोंके हार्दिक शोक का बोध होताहै । भारतवासियोंके लिये वाइसरायके वाक्य एक सनद के समानहैं । उन्होंने सन् ५८ के ढिंढोरे को जो अपना नेता बतलायाहै वह भी ध्यान देनेयोग्यहै । भारतवासियोंके शोकपर श्रीमान् नवीन सम्राट् सप्तम एडवर्डने जो धन्यवाददिया उसका उल्लेख इसीपुस्तक के अंतमें उनके चरित्रमें किया गयाहै ॥

भारतीय सेवक सहित महारानी ।

अध्याय ६९.

महारानी पर भारतकी प्रजाका प्रेम।

जिन महारानीके भारतवासियोंने कभी दर्शन नही कियेथे, जो भारतीय प्रबंधमें कभी हाथ नहीं डालतीथी और जिनकी पार्लियामेंट और मंत्रिमंडलमें भारतका एक भी प्रतिनिधि नही है उनपर भारतवासियोंका इतना प्रेम क्यों- था जिनके स्वर्गवास होनेपर यहां वालोंने इतना शोक क्यों किया और जिन्हें इस देश वाले देवीके समान क्यों समझतेथे? चरित्रके अंतमें इन बातोंपर भी विचार होना आवश्यक है। इंग्लैंड के राज्यप्रबंधके अनुसार राजाको प्रबंधके भीतरी कामोंमें हाथ डालनेकी सत्ता नही है। राजाकी सम्मतिके प्रतिकूल यदि पार्लियामेंट और मंत्रिवर्गका काम होतो वह दोनोंको बदल सकता है किन्तु उनके किये हुए कामोंमें हाथ नही डाल सकता है। भारत प्रबंधका संघटन विचित्र है। ब्रिटिश उपनिवेशोंके निवासियोंकी पुकार पार्लियामेंटमें पहुंचने का मार्ग है किन्तु भारतकी ओरका एक भी प्रतिनिधि नही है। इस कारणसे श्री- मतीके कानतक देशकी सच्ची दशा पहुंचानेका कोई उपाय नही था। इतना होनेपर भी जो बात आपके श्रवण गोचर होती थीं उस पर आप अच्छी तरह विचार कर भारत वासियोंकी सहायता करती थीं। आपने देशियोंपर प्रेम दि- खलाने के लिये उस अवस्थामें, जब भारत वासी स्वर्गको प्रयाण कर जाते हैं और जो जीते हैं वे बिलकुल अशक्त होतेहैं, भारत वर्षकी मुख्य भाषा उर्दू जो हिन्दी का एक रूपान्तर है सीखी थी। आपको इस देशपर विशेष प्रकारका प्रेमथा इसीलिये इंग्लैंडमें वहांकी रीति भांति जानने वाले बढ़ियासे बढिया सेवक विद्यमान रहते हुए भी वह अहमदखां और गुलाम मुस्तफा नामक दो सेवक सदा अपने पास रखती थी। दोनों सेवक श्रीमतीके परम कृपापात्र है। श्रीम- ती अधिक अशक्त होगईथीं इसलिये येही आपको उठाने बैठानेका काम कर- तेथे। श्रीमतीकी समाधिसे पूर्व उनकी मरण शय्याका पहरा इन्हीको सौंपा गया था। दोनों सेवक मुसलमान थे। आपके पास कोई हिन्दू नही था। इस- का कारण यह नही समझना चाहिये कि उनको हिन्दुओंसे घृणाथी किन्तु उच्चवर्णके हिन्दू आपकी सेवा स्वीकार नही कर सकते हैं और नीच वर्णका र- खना श्रीमतीकी इच्छा और वहांके राज नियमोंके विरुद्ध था। श्रीमतीने उर्दू आगरा निवासी हाफ़िज़ अब्दुल करीम साहबसे सीखीथी और अपने भारत

वासी सेवकोंके सिवाय आप राज कुमार ड्यूक आफ् कनाट और उनकी पत्नीसे भी जो बहुत कालतक भारत वर्षमें रहेथे प्रायः उर्दूमें बात चीत किया करती थीं ॥

जब कभी भारतवर्षपर अकाल, देशव्यापी रोग, रेल्वे दुर्घटना और पहाड़ टूटपडने आदिकी विपत्ति पड़ती थी श्रीमती दीन दुःखियाओंके लिये सहानुभूति प्रकाश करती और उनकी सहायताके लिये चंदा देनेमें सबसे अग्रणी बनतीथीं इसबातका ताजा प्रमाण सन् १९००ई० का अकाल और दार्जीलिंगकी दुर्घटना है। श्रीमतीको पति पुत्रोंके मरणका जब२ कष्ट सहना पड़ा तब ही तब भारतकी प्रजाने आपके दुःखको अपना दुःख समझा और महारानीको " महारानी " की पदवी मिलने तथा ज्यूबिली आदिके महोत्सवमें भारतवासियोंके हृदयका सच्चा हर्ष देखकर श्रीमतीको इसदेशकी प्रजाकी भक्तिका निश्चय होगयाथा । वह जानतीथी कि भारतवासी सदासे राजाको ईश्वर का विशेष अंश वा अवतार मानते आयेहैं और सन् ५७ के उपद्रवके बाद जब अंगरेज़ लोगोंके कोपानलकी ज्वालामें इंग्लैंडके मंत्रिमंडल की नीतिमें पड़कर भारत वासी भस्महोना चाहतेथे उससमय पतिकी सम्मतिसे आपहीने इस देशका धर्म बचाया था । सन् ५८ काढिंढोरा श्रीमतीकी इच्छासे ही लिखागयाहै। यदि उसमें आप उचित परिवर्तन न करतीं तो न मालूम भारत वर्षकी क्या दशाहोती । इसका वर्णन अन्यत्र होचुकाहै इसलिये यहां लिखनेकी आवश्यकता नहीं है । श्रीमतीका सच्चरित्र और वयोवृद्ध होनाभी उनपर भारत वासियों की पूज्य बुद्धिका कारणहै॥

श्रीमतीके भारतप्रेमकी सबसे बढ़कर साक्षी आपकी "दिनचर्या (डायरी)" है । इसमें श्रीमती नित्यकी घटना में लिखा करती थीं। यह अभीतक विलायत में प्रकाशित नहीं हुई है । छपनेसे बडी २ बातें मालूम होंगीं ॥

अध्याय ६६.

श्रीमतीका भारतमें स्मारक ।

श्रीमतीके नामपर भारत वर्ष के मुख्य२ नगरोंमें आपकी मूर्त्ति,कालेज, स्कूल, अस्पताल और अनेक स्मारक इस समय विद्यमान हैं । श्रीमतीके स्वर्गवास होनेपर इस देशके वाइसराय लार्ड कर्जनने देशभरकी ओरसे एक स्मारक बनानेका संकल्प कियाहै । यद्यपि सन्९७ और १९००के लगातार अकालने देशको दरिद्रता के शिरपर पहुंचा दियाहै, इस देशमें जो लोग धनाढ्यके नामसे प्रसिद्धहैं वेभी

अकाल और प्लेगसे दीन होने उपरांत अकाल फंड और ट्रांसवाल के युद्धमें धन और मनुष्योंसे बहुत कुछ सरकारकी सहायता करचुकेहैं परंतु वे इस समय अपनी दीनता को भूलकर "विक्टोरिया जातीय स्मारक फंड" में मुक्तहस्तसे रुपया दे रहेहैं। इस पुस्तक के प्रेसमें जाने तक इस फंडमें पचास लाखके लगभग रुपया इकट्ठा हो चुकाहै। इस देशके राजा प्रजाने केवल इसी फंडमें रुपया नहीं दियाहै वरन जातीय स्मारक के सिवाय प्रान्त २ और नगर २ में स्मारक बननेकी जुदी व्यवस्था होरहीहै। अभीतक कोई नही कहसकताहै कि, कहांपर किस प्रकार का स्मारक बनाया जायगा ॥

यद्यपि देशके अनेक विद्वान प्रजा और कितनेही ऐंग्लो इंडियन समाचार पत्र (पायोनियर आदि) कलकत्तेमें एक बृहत् भवन बनवानेके विरोधीहैं और वे चाहतेहै कि श्रीमती देशियोंपर जैसी दया रखतीथी उसके अनुरूप ऐसा स्मारक बनायाजाय जिससे भारतवर्षकी दरिद्रता दूरहो किन्तु लार्ड कर्जनने कलकत्ते के मैदानमें एक विशाल भवन बनाना निश्चय किया है इसमें श्रीमती की एक मूर्त्ति रक्खी जायगी और महलके भीतर भारत वर्षके इतिहाससम्बन्धी अनेक पदार्थ प्रदर्शित होंगे। अभीतक ठीक२ निश्चय तो नहीं है कि, इसमें क्या २ होगा किन्तु श्रीमान्ने कलकत्तेके डलहौसी इन्स्टीटयूटमें वक्तृतादेते समय कहा है कि—" विक्टोरिया हालमें बादशाह बाबरके समयसे आजतक जितने वीर मत प्रवर्त्तक, प्रसिद्ध राजा, शूर, देशहितैषी और विद्वान होचुकेहैं उनकी प्रतिमूर्त्तियां रक्खी जाँयगी। और दार्शनिक, कवि, और ग्रंथकारोंकोभी इसमें स्थान मिलैगा। इसके सिवाय अकबरकी पगड़ी, जहांगीरका बखतर तथा भारतवर्ष की प्राचीन और अर्वाचीन कारीगरीके नमूने भी इसमें स्थान पावैंगे" ॥

अध्याय ६७.

श्रीमतीको आशीर्वाद।

गत अध्यायमें जिन स्मारक चिह्नोंका वर्णन हुआहै वे चर्मचक्षुके अगोचर नहीं है किन्तु आपका मुख्यस्मारक भारतके प्रजाकी हृदयमें विद्यमानहै। श्रीमती की दया, श्रीमतीके सद्गुण और सच्चरित्रने भारतवासियोंके हृदयमें निवास कियाहै। वही स्मारक सबसे बढ़करहै और वहीं चिरस्थायीहै। जिसका

संसारमें यशहै, जिसने जन्मसे लेकर मृत्यु तक अपना जीवन परोपकारमें बिताया है, जो अपने दुःखसे प्रजाके दुःख को अधिक समझतीं रहीथीं जिन्होंने शत्रु परभी दयाकर दयाकी मूर्त्ति खड़ीकी थी, जिनके लिये ब्रिटिश और भारतवर्षकी प्रजाके सिवाय अन्य २ देशोंके लोग भी शोकके आंसू बहाते हैं, जिन्होंने भलाईके सिवाय बुराईका कोई कार्य नहीं किया, जो सदा गृहस्थीके कार्य और विशाल राज्यका बोझा शिरपर होने पर भी ईश्वर भक्तिमें दत्तचित्त रहीं, जिन्होंने पतिको ईश्वर जाना उनका स्वर्गवास होनेमें संदेह नहीं है । श्रीमतीने इस असार संसारमें अपने कर्तव्यका पूर्णतया पालन कर वृद्धावस्थामें स्वर्गका मार्ग लिया है उनका वहां भी आदर है । परमेश्वर उनका सदा आदर करै और वह अनेक युगोंतक देवलोकमें निवास करनेके साथही भारत वासियोंके सुख दुःखकी ईश्वरतक गुहार पहुँचाकर मोक्षपदको प्राप्त हों यह मेरा हार्दिक आशीर्वाद है । केवल मेराही नहीं श्रीमतीकी असंख्य प्रजाका आशीर्वाद है ॥

श्रीमतीने वृद्धावस्थामें स्वर्गको प्रयाणकर ब्रिटिश साम्राज्यके शासन करने के लिये अपने बड़े पुत्रको पूर्ण वयमें संसारका पूरा अनुभव प्राप्तकर श्रीमतीके समान गुण ग्रहण करनेके अनन्तर छोड़ा है । ईश्वर उनको अपने पुत्र पौत्रादि सहित प्रसन्न रक्खै । और उनके शासनमें प्रजाको अधिक सुख हो ॥

वर्तमान सम्राट् सप्तम एडवर्डका चरित्र इस पुस्तकके अंतमें दिया गया है ॥

श्रीः ।

श्रीमतीकेशासनकी मुख्यघटनायें ।

भागदूसरा ।

अध्याय १.

प्रथमवर्षकी तीन बातें ।

श्रीमतीके सिंहासनासीन होने पूर्वसे ही इंग्लैंडमें यहूदियोंको धर्म द्वेषसे गवर्नमेंट कीसेवामें बड़े २ पद नही दिये जाते थे । श्रीमती के गादी विराजनेके चौथेही दिन मिस्टर मोंटी फ्योर नामक यहूदी लंडन नगरका शेरीफ नियत किया गया । और इसके बाद नवंबर मासमें उसे नाइट की उपाधि दीगई । इस बातने गवर्नमेंट और प्रजाकी दृष्टिमें प्रमाणित करादिया कि श्रीमतीका शासन परस्पर के धर्म द्वेषको छोड़कर सब जाति और सब देशके लोगोंके साथ समान होगा । इस सिद्धान्त का शासनारंभके साथ जैसे आरंभ हुआ था वैसेही अंत तक निर्वाह हुआ ॥

आपके शासनारंभसे पूर्व इंग्लैंडके राज्यमें यह नियम था कि जो मनुष्य जाली क़ागज़ बनाताथा उसे फांसीका दंड दिया जाताथा । यह नियम बहुतही भयंकर था । इंग्लैंड जैसे सभ्यदेशमें जिसने संसारमें सभ्यता फैलानेका बहुत कालसे बीड़ा उठा रक्खाथा इस नियमका होना लोगोंकी दृष्टिमें बहुत निन्दनीय समझाजाताथा । इंग्लैंडकी प्रजा इस नियमसे बहुत अप्रसन्नथी । केवल थोड़ेसे हठीले कंसरवेटिव लोगों के आग्रहसे यह नियम चलरहा था । राजा चौथा विलियम लिबरल होनेपरभी उन लोगोंके दबावसे कुछ नही कह सकता था। श्रीमतीके सिंहासन पर विराजनेके सत्ताईसवें दिन इस नियमको उठादेने का बिल पार्लियामेंटमें उपस्थित हुआ। उदारनीति रानीकी हार्दिक उदारताने हठी लोंके चित्तपर ऐसा प्रभाव डाला कि उन्हें यह बात स्वीकार करनी पड़ी । बहुत वादानुवादके पश्चात् नवीन आईन पासहोगया और उसीदिनसे जालसाज़ लोग फांसीपर जाकर प्राणदेनेसे बच गये ॥

तीसरी बातने संसारका बहुतही उपकार किया। उपकार ऐसा वैसा नहीं जिससे केवल बड़े २ मनुष्योंको वा इंग्लैंडकी प्रजाकोही लाभ पहुंचाहो। इसकार्यसे मनुष्य मात्रकी स्थितिमें एक आश्चर्यजनक परिवर्त्तन हुआ। कार्य यहथा कि विद्युत शास्त्रके मुख्य आचार्य मिस्टर ह्वीटसन और कूक जो बहुतकालसे इस बातकी शोधमें लगे थे, श्रीमतीके शासनके प्रथम वर्षमें लंडनमें यूस्टन स्कैर मुहल्लेसे केमडनतक तार लगानेमें समर्थ हो सके। यदि विजलीके बलसे तार लगानेकी क्रिया संसारमें न होती तो आज कल सभ्यदेशोंकी जैसी उन्नति देखनेमें आतीहै उसका दशवां हिस्साभी न होता। श्रीमतीके शासन के प्रथम वर्षमें इस शक्तिका आविष्कार हुआ जिससे मानों यह सूचना मिली कि आपके राज्यमें कलाकौशल्यकी बहुत उन्नति होगी। इस विषयमें भी श्रीमतीके शासनने जिन बातोंका आरंभ कियाथा उनको उन्नतिके शिखरपर चढ़ाकर छोड़ा॥

अध्याय २.

काबुलका प्रथम युद्ध ।

जिससमय श्रीमतीके शासन का आरंभ इंग्लैंडमें ऐसे उत्तम प्रकारपर हुआ भारतके शासनने एक भिन्नही मार्ग ग्रहण किया। सुप्रसिद्ध यात्री कप्तान एलेक्जेंडर बर्नेस काबुलके अमीर दोस्त मुहम्मदके साथ व्यापार संबंधी कामोंमें संधि करनेके लिये काबुल गया। प्रसिद्ध इतिहास कर्ता और पार्लियामेंटके मेम्बर मिस्टर जस्टिस मेकार्थी तथा कप्तान बर्नेस ने लिखाहै कि अमीर दोस्त मुहम्मद ब्रिटिशगवर्नमेंट और प्रजाके साथ मित्रता रखतेथे। उनको ब्रिटिश गवर्नमेंट की इतनी खातिर स्वीकारथी कि यदि कप्तान साहब चाहते तो रूसीदूतको जो उससमय काबुलके दर्बारमें आने वालाथा अपने पास न बुलाकर कहरसेही टरकादेते परंतु विलायत और भारतके अंगरेज़ अधिकारियोंको रूसकी औरसे इतना संदेह होगयाथा कि उन्होंने अमीर दोस्त मुहम्मद का बिलकुल विश्वास न कर उन्हें शत्रु मान लिया। पंजाब केसरी महाराज रणजीतसिंह काबुलके शत्रु और भारत गवर्नमेंटके मित्रथे। अमीरने अंगरेजोंसे कहकर पंजाब नरेशसे मित्रता करना चाहाथा परंतु सरकारने उनकी बातपर ध्यान न देकर अमीरसे युद्ध करने का ठहराव किया। मिस्टर जस्टिस मेकार्थी ने लिखाहैकि इसविषयमें कप्तान बर्नेसने जो सम्मतिदीथी उसे उलटी तरह पार्लियामेंट में उपस्थित कर उसके कथन का यह आशय समझागयाकि कप्तान काबुलसे युद्ध करना चाहत

है। भारत वर्षके गवर्नर जनरल लार्ड आकलैंडने दोस्त मुहम्मद की गादी शाहशुजाको दिलाना निश्चयकिया। शाहशुजा गादीके लिये उम्मेदवार नहीं हुआथा किन्तु सुनाहैकि उसे गादी देनेकी उत्तेजना दी गई। काबुलके साथ प्रथम युद्धहो शाह शुजा अमीर बनायागया। उसे वहांकी प्रजा नही चाहतीथी इसलिये रक्षाकरनेकेलिये सरकारको आठ लाख सेना काबुलमें रखनी पड़ी। अफ़गानिस्तानकी प्रजाने सन् ४१ के नवम्बर में बलवा किया। ब्रिटिशसेना बिलकुल काटडाली। इसपर भारत गवर्नमेंटको फिर सेना भेजकर काबुलियों का दमन करना पड़ा परंतु अंगरेज़ी सेना अधिक कालतक वहां ठहर न सकी। भारत वर्षके नवीन गवर्नर जनरल लार्ड एलनबरोने १०अक्टूबर सन् १८४२ ई०को एक मंतव्यमें यह प्रकाशित किया कि "काबुलके विषयमें पुराने गवर्नरजनरलोंकी युक्ति निष्फल हुई। काबुल जैसी स्वतंत्र प्रजापर उसकी इच्छाके विरुद्ध राजा नियत करना ब्रिटिश नीतिके विरुद्धहै इसलिये अफ़गानिस्तानवाले अपने यहां जिसे अमीर बनाना चाहें वही गवर्नमेंट को स्वीकारहै। और अंगरेज़ी सेना काबुलमें न रक्खी जायगी। और प्रकृतिने भारत वर्षकी जो सीमा निर्द्धारित कीहै उसीपर गवर्नमेंटको संतोष होगा॥"

इस युद्धमें सर एलेक्ज़ेंडर बर्न सर विलियम मेकोनाटन और उनकी समग्र ४००० सेना काटडाली गई। और इस भयंकर दुर्घटनाकी ख़बर देनेके लिये केवल एकही मनुष्य डाक्टर बाइड बचे जो लुढ़कते पुढ़कते नवंबरके चले १३ जनवरीको जलालाबाद पहुंचे। नवीन ठहरावके अनुसार दोस्त मुहम्मदको फिर गादी मिलगई। जनरल पालकने काबुल जाकर मारने काटनेसे जो लोग बचे बचाये थे उनको छुड़ाया और दोस्त मुहम्मद से नवीन ठहराव के अनुसार संधि कर ब्रिटिश गवर्नमेंटका अफ़गानिस्तान में दबदबा स्थिर किया॥

अध्याय ३.

व्यापारकीस्वतंत्रता और वाष्पयंत्र।

श्रीमतीके शासनके द्वितीय वर्ष में वाष्पकी सहायतासे प्रथम वार "ग्रेटवेस्टर्न" नामक धूमपोत इंग्लैंडसे चलकर पंद्रहवें दिन एमेरिका पहुँचा। इससे पहले जहाजें केवल पालके सहारे से चलाई जातीथी और इस कारण उन्हें भारत के आने में छः मासके लगभग लगते थे। इस सफलतासे संसार भर

में व्यापार की बृहत् उन्नतिका आरंभ हुआ । और इसीके द्वारा युरोपियन लोगोंने पृथ्वी भरके समुद्रों की यात्रा कर एक पैंड़ २ धरतीको भी देखनेसे न छोड़ा ॥

सन् १८१५ ई० में इंग्लैंडकी पार्लियामेंटने एक ऐसा आईन बनाया था जिसके अनुसार अन्नका भाव प्रत्येक क्वार्ट पीछे अस्सी शिलिंगका नहो वहां तक बाहरका अन्न इंग्लैंडमें नहीं आने दिया जाताथा । यद्यपि पीछेसे इसमें थोड़ा बहुत संशोधन हुआथा किन्तु इस आईनसे दीन लोगोंको महंगीका बहुतही कष्ट भोगना पड़ताथा । और कई बार भूखोंके मारे प्राणतक न्योछावर कर डालते थे । इस कष्टसे प्रजाको बचानेके लिये श्रीमतीके शासनके द्वितीयवर्षमें एक सभा नियत हुई । इसके सभापति पार्लियामेंटके पिताकी उपमा पाने वाले मिस्टर चार्लेस व्हीलर्स हुए।अनेक वर्षोंतक अविश्रांत परिश्रम करने बाद सन् १८४९ई० के जनवरी मासकी ३१ तारीखको इन लोगोंकी सफलता हुई । और ग्यारह वर्ष के परिश्रमसे उन लोगोंने इंग्लैंडमें बाहरसे आनेवाले अन्नका महसूल उठवा दिया। इस नियमके प्रचारसे पूर्व आयर्लैंडमें वारंवार अकाल पड़ाकरता था । लोंगोको केवल आलूपर निर्वाह करना पड़ताथा । सरकारने दीनोंको काम देने और चन्दे आदिसे सहायता करनेका बहुत कुछ प्रयत्न किया परंतु कुछ लाभ न हुआ और लाखों मनुष्य वहांसे भागकर एमेरिकामें जाबसे । ग्रेटब्रिटेन को उजाड़ करने वाला आईन उठकर जबसे अप्रति बंध व्यापारकी प्रणालीका प्रचार हुआ तबहीसे वहांके लोगोंकी उन्नतिका आरंभ हुआ ॥

सन् १८३९ई०अर्थात् श्रीमतीके शासनके तृतीय वर्षमें भारत वर्षके विषयमें एक बात हुई। दक्षिण एफ्रिकामें बसने वाले अंगरेजों के दबावसे यहां की गवर्नमेंटने एक नियमका प्रचार किया जिसके अनुसार ईस्ट इंडिया कंपनीकी सीमाके बाहर काम करने वाले भारतवासी मज़दूरोंको दक्षिण एफ्रिकामें लेजाना बन्द हुआ । इससे दक्षिण एफ्रिकामें व्यापार करने वाले अंगरेजोंको बहुत चिन्ता हुई और पीछेसे यह नियम उठानापड़ा । फिर उनलोगोंने ऐसे नियमोंका प्रचार करवाया जिनसे आजकलके भारतवासी कुली उपनिवेशोंमें जाकर ब्रिटिश राज्यमें दासत्व भोगरहेहैं । और कुलियोंको भरती करने वाली डिपोमें अनेक प्रकारके कपटकर दीनों को छलाजाताहै ॥

अध्याय ४.

चीनसे लड़ाई, अदनका बंदर और दास व्यापार।

सन् १८३९ ई० में भारतवर्ष से चीन जाने वाली अफ़ीमका वहांके बन्दरोंमें उतरना चीनगवर्नमेंटने बिलकुल बन्द करदिया और उस खेपमें जितनी अफ़ीम गईथी उसे समुद्रमें डलवाकर उसका रुपया अंगरेज व्यापारियोंको देदिया और आगेसे अफ़ीम अनि का कठिन निषेध किया। इससे पूर्व चीन गवर्नमेंटने एक नोटिस देकर भारत गवर्नमेंटको सूचना देदीथी परंतु ईस्ट इंडिया कम्पनी की आयका अफीम एक मुख्य साधनथी इसलिये कंपनीने उक्त नोटिसकी कुछ पर्वाह न कर फिर अफीम चीनको भेजी जिसका परिणाम यह हुआ कि भारत गवर्नमेंटने चीनपर चढ़ाई की। युद्धमें चीनकी हार हुई। हांगकांगका बंदर ब्रिटिश गवर्न मेंटके हाथ आया और अन्य पांच बंदरो पर स्वतंत्रातासे अंगरेजोंका माल उतरने देनेकी बात लाचारीसे चीनको स्वीकार करनी पड़ी। ब्रिटिश गवर्नमेंटने चीनसे ४५ लाख पौंड दंड लिया और १२॥ लाख पौंड व्यापारियोंको हर्जानेके दिलाये। इस युद्धसे चाहे भारतके व्यापार को पूरा लाभ हुआ किन्तु चीनकी इच्छाके विरुद्ध हट्टे कट्टे चीनियोंको अफ़ीमची बनाकर उनकी शारीरिक और आर्थिक दुर्दशाका लड़ाईसे आरंभ होगया और सत्व इंग्लैंडके पंजेमें पड़कर निर्बल चीन अपनी प्रजाको अफ़ीम खानेके दुराचारसे न रोकसका॥

अदनका बंदर ब्रिटिश सेनाने इसी वर्षमें विजय किया। यह बंदर व्यापार तथा जहाज़ोंके आवागमनके लिये बहुत ही आवश्यक है। अंगरेज़ों के विलायत जानेका अदन एक नाका है। इसमें भारतकी सेना रहकर वहांकी रक्षाकरती है और यह बंबईकी गवर्नमेंटके अधिकारमें है। सुएज़की नहर बननेसे विलायत जाने वालोंको मिसरका चक्कर दिये बिना सीधे जानेका मार्ग खुल गया है और जो मार्ग डेढ मासमें समाप्त होताथा उसमें अब केवल १७ दिन लगते हैं। इस नहरकी रक्षा इसी बंदरकी सेनासे होती है। जर्मनी और फ्रांसके बारंबार दबाने पर भी अनेक कौसलसे ब्रिटिश गवर्नमेंट मिसरको इस नहरपर अपना आधिपत्य रखनेके लिये नही छोड़ती क्योंकि नहर हाथमें रहे बिना अंगरेज़ोंसे भारत दूर पड़ता है॥

श्रीमतीका विवाह होने बाद थोड़ेही दिनोंमें आपके पति प्रिंस एलबर्टकी प्रेरणासे संसारसे दास व्यापार बंद करनेके लिये एक सभा स्थापित हुई। इसके

सभापतिका आसन राज्ञीपतिने स्वीकार किया । इनके प्रयत्नसे अंतमें इंग्लैंड ने दास व्यापार बन्द करा संसारमें नाम पाया ॥

इसी वर्षमें इंग्लैंडने डाक विभागमें बहुत कुछ उन्नतिकी । पहले चिट्ठी और पारसलका महसूल, पहुंचनेका स्थान जितना ही दूर होताथा उतना, अधिक लिया जाता था । महसूल लेनेमें पत्रके तौलके सिवाय उसके पृष्ठ की भी गणना की जातीथी । चिट्ठीका महसूल कमसे कम चार आना था । इसके सिवाय डाक आज कलकी तरह नित्य आती जाती नहीं थी । पार्लियामेंटके सभासद सर रोलेंड हिलके प्रस्तावसे सन् १८४०ई० में १० जनवरीको नवीन नियमका प्रचार हुआ । इसके अनुसार आधे आंउस (१। तोला) तोलके पत्रकी एक पेनी लेना निश्चय हुआ । थोड़े कालके अनंतर इस योजनाके अनुसार भारतमें भी थोडा बहुत सुधार हुआ ॥

सन् १८३७ई० में बोर लोगोंने नेटाल प्रान्तमें निवासकर उसको आबाद किया और वहाँका स्वतंत्र शासन आरंभ कियाथा किन्तु सन् १८४५ई० में अंगरेज़ोंने बोरोंसे युद्धकर नेटाल उनसे छीन लिया । तबसे नेटाल ब्रिटिश गवर्नमेंटके अधिकार में है ॥

अध्याय ९.

सोमनाथके मंदिरके किवाँड़ ।

काबुलके अमीरके युद्धका चाहे भारत गवर्नमेंटके लिये परिणाम कैसाँही हुआहो परंतु हिन्दुओंके लिये इससे एक प्रकारके हर्षका कारण हुआ । हिन्दूधर्मसे द्वेष रखनेवाला महमूद ग़ज़नवी सोमनाथके मंदिरको तोड़कर उनकी मूर्त्ति, जवाहरात और सोने चांदीके किवाड़ दक्षिण देशसे ग़ज़नीको लेगयाथा । तबसे वे किंवाड़ ग़ज़नीमें रक्खे हुए थे । काबुलसे विजयकर दोस्त मुहम्मदको दुबारा वहांकी गादीपर नियत करनेके बाद वहांसे जो सेना भारतको लौटी वह गजनीसे किंवाड़ लेती आई। सन् १०२४ई०में महमूद ग़ज़नवीने भारतपर चढ़ाई कर यहांके हज़ारों मंदिरोंको नष्ट करडाला था । काबुलके इस युद्धसे दश बारह वर्ष पूर्व पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह शाह सुजाको इस शर्तेपर काबुल दिलाना चाहतेथे कि वह गादीपर बैठकर सोमनाथके मन्दिरके किंवाड़ भारत वर्षको लौटादे। यह शर्त शाह सुजाने स्वीकार नहीं कीथी। भारतके गवर्नर जनरल लार्ड एलेनबरोने विचार कियाथा कि ये किंवाड़ फ़ीरोजपुरसे सोमनाथ तक बड़ी धूम धामसे पहुँचाये जावें जिससे भारत वर्षकी प्रजाका गवर्नमेंटके साथ

प्रेम बढ़ेगा। इस कार्यके लिये लाट साहबने देशी राजाओं और प्रजाके नाम एक ढिंढोरा प्रकाशित करनेके विचारमें उसकी प्रतिलिपि स्वीकार करनेके लिये इग्लैंड भेजी थी। उसका आशय यह था।

" हमारी विजयिनी सेना सोमनाथके मन्दिरके किवाड़ अफ़गानिस्तानसे लौटा लाईहै। उनके विना ग़ज़नीमें महमूद गजनवीका मकबरा खंडहरसा होगयाहै। आठसौ वर्षके अपमानका बदला अब लिया गयाहै। सोमनाथ के मंदिरके किवाड़ आप लोगोंकी हारकी जो अबतक सूचना देते थे वेही अब तुम्हारी कीर्त्तिका विकाश करतेहैं। उनके लौटा लानेसे निश्चय हुआहै कि सिंधुनदीके उसपार बसनेवाली प्रजासे आपलोग सैनिक बलमें बढ़े चढ़े हैं। सिरहिंद, रजवाडा, मालवा और गुजरातके राजा तथा सर्दारोंको मैं इस युद्धकी सफलता की कीर्त्तिका चिह्न अर्पण करताहूं। आपलोग धूमधामके साथ इन चंदनके किंवाड़ोंको अपने देशसे सोमनाथके नवीन मंदिरतक पहुंचाना। हमारी विजायिनी सेना सतलज नदीके पुलपर किंवाड़ आप लोगों को नियत तिथि पर सिपुर्द करैगी। तिथि नियत कर उसकी सूचना पीछे से दी जायगी॥

ब्रिटिश गवर्नमेंटकेलिये आप लोगोंके प्रेमपर मैं सदासे विश्वास रखता आयाहूं। वह आपके प्यारके लिये कितनी योग्यहै इसे आपलोग अच्छीतरह जानतेहैं क्योंकि वह आपके सम्मानको अपना सम्मान समझतीहै। और अफ़ग़ानलोगोंके आप लोग अधीन थे उस समयको स्मरण दिलाने वाले मन्दिरके किंवाड़ आपको लौटानेमें उसने अपनी सेना काममें लगाईहै। मेरे (निजके) लिये मुझे इतनाही कहनाहै कि मेरे लाभ और विचारोंको आप लोग अपने लाभऔर विचारोंमें मिलाकर ब्रिटिशसेनाकी इस वीरताके काम परजो हर्ष आप प्रकाशित करतेहों उसमें मैं संयुक्त होताहूं। इसकार्यसे मेरे देशको और आपके देशको जिसे मैंने अपना अभी घर बनायाहै कभी न भूलने योग्य सम्मान प्राप्त हुआहै। हमारे दोनोंके देशोंके संयोगका निर्वाह और संशोधन दोनोंही की उन्नतिके लिये आवश्यकहै। मैं इसबातपर सदा ध्यान देताहूं। इसी संयोग से भारतपर पहले जो बारंबार संकट पड़ते थे उनका नाश होगा। इसी संयोगसे ब्रिटिशसेनाने ग़ज़नीके खंडहर और काबुलके बालाहिसार किलेपर अपना झंडा फहरायाथा। परमेश्वरने इससमयतक जैसी मेरी रक्षाकीहै वैसीही वह अबभी करतारहै जिससे मैं अपनी शक्ति और अधिकार का योग्य उपयोग कर आप लोगोंकी उन्नति करने और दोनों देशों के संयोग को सदा स्थिर रखनेके लिये दृढ पाये पर लाने में शक्तिवान् होऊं "॥

इस प्रस्तावसे इंग्लैंडमें बड़ी चर्चा हुई। इस बातके लिये गवर्नर जनरलको डांट बतानेके लिये पार्लियामेंटमे इस आशयका प्रस्ताव हुआ कि यह ढंग मूर्ति पूजाको उत्तेजना देने और मुसलमानोंको भड़काने वाला है। इसका कारण यही थाकि गवर्नर जनरल लार्ड एलनवरोने भूत पूर्व गवर्नर जनरलोंकी योजनाको बिलकुल उलट कर सिंधु नदीको अफ़गानिस्तानकी सीमा नियत करना निश्चय किया था। यह बात भारत की प्रजाको बहुत पसंद हुई थी। वाइसरायने श्रीमतीके नाम दिल्लीसे सन् १८४३ ई० की १९ फरवरीको एक प्रार्थना पत्र लिखाथाः—

"लार्ड एलेनबरो ५ फरवरीको दिल्ली आये। आस पासके समस्त राजा उनसे वहां पर मिले। बीकानेर, अलवर, भरतपुर, कोटा और धौलपुरके राजा तथा टोंकके नव्वाबकी सेनाने दिल्लीके किलेके चारों ओर छावनी डाल रक्खी है और कई ओरसे नगरके भीतर भी जा घुसी है। वे अपने साथ बहुतसी सेना, नौकर चाकर कुटुंब और जागीर दारोंको लाये हैं। उनकी संख्या पचास हज़ारसे कम नहीं है॥

औरंगज़ेबके शासनके बाद आधीन राजाओंका इतना बड़ा जमघटा यहां कभी नहीं हुआ था। वे लोग सर्कार के सत्कारसे बहुत प्रसन्न हुए हैं। कल लार्ड एलेनबरोने उनको ११ रेजिमेंटकी कवाइद और अठारह तोपें देखनेके लिये बुलायाथा। इसे देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए थे॥

सोमनाथके मंदिरके किंवाड़ जो हमारी रक्षामें सिक्ख राज्यके पांचसौ सैनिक दिल्ली लाये हैं उन्हें दिल्लीसे मथुरा और वहांसे आगेरको भरतपुर और अलवर के राज्योंकी सेना ले जायगी॥

युद्धके विजय चिह्न लौटानेके लिये भारत वर्षकी प्रजा चारों ओरसे ब्रिटिश गवर्नमेंटको धन्य वाद देने लगी है वह इस कार्यके लिये सरकारका बड़ा उपकार मानती है। इस बातसे मुसलमानोंको बुरा नहीं लगाहै। वे इस कार्यका धर्मसे संबंध नहीं मानते हैं किन्तु प्रजाकी एकता समझते हैं। पानीपत नगरमें लगभग मुसलमानोंकी ही बस्ती है। हिन्दुओंके मन्दिरोंका नाशकर महमूद गज़नवीने वहां पर जो मसजिद बनाई थी वह अबतक विद्यमान है। वहांके लोगोंने इस कार्यके लिये जैसा हर्ष प्रकाशित किया है उससे बढ़कर प्रसन्नता अन्यत्र न बताई जायगी॥"

लार्ड एलेनवरोकी उचित योजनाको पार्लियामेंटने मिथ्याभ्रममें पड़कर उड़ा दिया और उनके कथनानुसार दिल्लीसे किवाड न हटाये गये । इस वातसे लाट साहवके चित्त को कितना दुःख हुआ होगा इससे वही जानते थे ॥

अध्याय ६.

सिंधके अमीरों और ग्वालियर नरेशसे युद्ध ।

सन् १८४३ई० के आरंभमें सिंधके अमीरोंसे संग्राम हुआ । काबुलके ऊपर जो चढ़ाई की गईथी वह उन्हें पसंद न थी और इस कार्य में उन्होंने वाधाभी डाली थी। उनसे ठहराव यह था कि सिंधु नदी के मार्ग से जो माल लेजाया जावे उसपर अंगरेज कर्मचारियोंकी इच्छासे अधिक वे लोग कर न ले सकैं। उन्होंने इस शर्त को तोड़डाला । कावुलके अमीरकी तरह वे भी अपने यहां अंगरेज़ी एजेंट रखना नही चाहतेथे परंतु उनकी इच्छाके विरुद्ध सरकारने हैदरावादमें एक एजेंट नियत किया । और उसकी रक्षाके लिये सेना रक्खीगई । इसी कारण उन्होंने कावुल की चढ़ाई में क्रुद्धहोकर वाधा डाली । इस वातसे सरकारने उनके साथ नवीन संधि की । इसका आशय यह था कि:—" राजस्व (खिराज) के वदले उनसे कुछ भूमिलीजाय, सिंधु नदीमें जितनी अंगरेजी स्टीमरें फिरें उनके लिये कोयला अमीरोंसे लियाजाय और सिक्काचलानेमें उन्हे स्वतंत्रता रहै। यह बात उनको दवाकर स्वीकार कराई गई और इस संधिपत्र पर हस्ताक्षर करानेके लिये उनको वाधित कियागया । इसका परिणाम यह हुआकि सरकारके जिस सेवकने इन लोगोंको दवाकर हस्ताक्षर करायेथे उसके मकानपर संधिपत्र तैयार होनेके दूसरे ही दिन आक्रमण हुआ । युद्ध आरंभ होगया । इस लडाईमें थोड़ी हार होनेके वाद सरकारका विजयहुआ । अमीरोको देशनिकालका दंड देकर गवर्नमेंटने सिंधप्रदेश वंबईप्रान्तमें मिलालिया ॥

सिंधके अमीरों से युद्ध समाप्त नही होने पायाथा कि इतने ही में गवर्नमेंटका ध्यान दूसरी ओर आकर्षित हुआ । ग्वालियरके महाराज दौलतराव सेंधिया सन् १८२७ ई० में संतति विना मरगयेथे । उनकी गादी एक संवंधीको दीगईथी । वहभी सन्१८४३ई०में वारिस विना मरगया । उसकी विधवा रानीने दूरके संवंधियोंमें से एक पुत्र दत्तक लिया । नवीन महाराजका वय केवल आठ वर्षका था । इसलिये गवर्नमेंटने राज्यप्रवंध के लिये मामा साहव नामक सरदार

को नियतकिया । यह बात राजमाताको पसंद न हुई और इस कारण मामा साहब को तीनही मास बाद ग्वालियरकी सीमा छोड़कर अंगरेज़ी राज्यमें भाग जाना पड़ा । उनकी जगह राजमाताने गवर्नमेंटके शत्रु दादा साहब खासगी वालेको नियत किया । यह बात सरकार और ग्वालियर की संधिके विरुद्धथी इसलिये गवर्नर जनरलने दादा साहब खासगी वालाके ग्वालियर छोड़जानेकी आज्ञादी । परंतु इस बातपर ग्वालियर राज्यने बिलकुल ध्यान न दिया । और साथही राज्यके कई एक अंगरेज़कर्मचारियोंको नौकरीसे अलग करदिया । सरकारने इस चालसे क्रुद्ध होकर ग्वालियर पर सेना भेजी । महाराजपुर और पनीयारकेयुद्धमें ग्वालियरकी सेनाने हारखाई । इसका परिणाम यह हुआ कि ग्वालियरके बालक महाराजको (१) अंगरेज़ रेज़ीडेंटकी सम्मतिपर विना शर्त कार्य करना (२) ग्वालियरकी सेना ४० हजारसे घटाकर ९ हज़ार रखनी और तोपें २०० के बदले ३२ रखनी (३) ग्वालियरमें अंगरेज़ीसेना रखनी और इसका खर्च ग्वालियर राज्यसे लेना और (४) महाराज जबतक योग्य वयके न हों राज्यका प्रबंध एक कौंसिलसे करवाना और अंगरेज़ रेज़ीडेंटकी इस कार्यमें सम्मति लेनी इन शर्तोंसे संधि करनी पड़ी ॥

अध्याय ७.

कंपनी और लाट साहबकी खटपट ।

सिंध और ग्वालियरके युद्धके पश्चात् अधिक कालतक लार्ड एलेनबरो भारतके गवर्नर जनरलके पद पर न रहसके । ईस्टइंडिया कम्पनीके डाइरेक्टरोंको उनकी यह चाल पसंद न हुई । उन्होंने यह अभिशाप लगाया कि शांति पूर्वक काम करनेके बदले लार्ड एलेनबरोको लड़ाई झगड़े बहुत प्रियहैं । डाइरेक्टरोंने ब्रिटिश गवर्नमेंटकी आज्ञा विना लाट साहबको पदच्युतकर विलायत बुला लेनेकी आज्ञादी ।

लार्ड एलेनबरो श्रीमतीके कृपापात्र थे । उनकी सहायतासे ही भारत शासनमें कंपनीको कुछ माल नहीं गिनते थे । उन्होंने अपने बचावमें श्रीमतीके नाम एक पत्र बारकपुरसे १४ जुलाई सन् १८४४ ई० को लिखाः—"मुझको अपने पदसे अलग करनेके विषयमें कंपनीकी आज्ञा मुझे १५ जूनको मिली । मैंने तुरंतही देशी राजाओंके नाम पत्र भेजकर सूचना देदी कि मेरी बदली होनेसे

गवर्नमेंटकी नीतिमें किसी बातकी लौट फेर न होगी । इस कार्यसे पूर्व ग्वालियरमें थोड़े कालसे कुछ गड़बड़ मच रही थी । वहां इस बातकी गप्प उड़ रही थी कि मेरे विलायत चले जानेसे दादा साहब खासगी वाले फिर ग्वालियरको बुलालिये जायँगे । मुझको पदच्युत करनेके विषयमें कंपनीके डाइरेक्टरोंने जो कारण बतलाये हैं उनका खंडन, मैने अर्ले आफ रिपनके नाम एक पत्र लिखकर, उसमें कियाहै । प्रार्थना है कि श्रीमती उनको ध्यानपूर्वक पढ़ें । मुझे भारत वर्षमें बड़ी कठिनतासे काम करना पड़ा है और वह काठिन्य डाइरेक्टरोंकी शत्रुतासे और भी बढ़ गया है । " इस शत्रुताके विषयमें सन् १८४३ ई० की १८ जनवरीको उन्होंने श्रीमतीके नाम एक पत्र लिखाथा जिसका आशय यह है:— "मेरी सम्मति यह है कि भारतवर्षकी स्थानीय गवर्नमेंटकी अनुचित और ऊटपटाँग चालसे देशी राजाओंका इस साम्राज्यमें आदर नहीं है । उनके स्वत्व पर आघात किया जाता है और सदा वे भयभीत रहते हैं कि हमारा राज्य छीन लिया जायगा । यदि श्रीमती भारतका शासन कंपनीसे लेकर अपने हाथमें रक्खेंगी तो यह कठिनता दूर होजायगी और भारतवर्षके राजा महाराजा श्रीमतीके अधीन राजा रहने में अपनी शोभा समझेंगे । और इस कार्यसे इस बृहत् प्रजाकी भावी संतान ब्रिटिश गवर्नमेंटको देशकी उन्नतिमें अंतःकरणसे सहायतादेंगी । भारतवर्षका प्रबंध यहांके लोगोंकी इच्छा और वहमके अनुसार,उनका भलाकरने के निश्चयसे किया जायगा और दूरदेशके जिन निवासियोंको ईश्वरने यह बृहत् राज्य सौंपाहै उनको धनाढ्य बनानेकी इच्छासे न किया जायगा तो आगे जाकर भारतवर्ष की कितनी उन्नति होगी इसबातके कहनेमें मैं अशक्तहूं " ॥

अध्याय ८.

सिक्खयुद्ध और कोहनूर हीरा ।

सन् १८४४ ई० में लार्ड एलेनबरो के विलायत जाने और उनकी जगह लार्ड हार्डिंजके आतेही सिक्खयुद्धका अवसर आया । पंजाबकेसरी महाराजा रणजीत सिंहकी मृत्युके बाद उनकी ६०हजारसेना बेकाबू होगई । उनके बालक पुत्र दलीपसिंह राजाहुए और रानी राज्य प्रबंध करनेलगी । वह सेनाका वेतन समयपर देनेमें असमर्थहुई इसलिये सेनाने लाहोर लूटनेकी तैयारी की परन्तु उनको सिक्ख राज्य छोड़कर अंगरेजी राज्य लूटनेकी सलाह दीगई । इसबातसे सिक्खसेनाकी

अंगरेज़ी सेनासे लड़ाई हुई और सन् १८४६ ई० में सरकारने लाहोर लेलिया। यह बात गवर्नरजनरलको पसंद न आई और पंजाब प्रान्तपर सिक्खोंके शासन स्थिर रहनेका उन्होंने एक बार फिर अवसर दिया। रानी अपने पुत्र दलीपसिंह के नामसे पंजाबका शासन करती रहीं परन्तु सिक्खसेना ६० हजारके बदले घटाकर २० हजार रक्खी गई और वहाँ अंगरेज़ी सेनाभी रखनीपड़ी परन्तु इस बातका अधिक दिनतक निर्वाह न हुआ। उसी वर्षके अंतमें रानीको पदच्युत कर पंजाबराज्यके प्रबंधके लिये आठ सिक्खोंकी एक कौन्सिल नियत हुई और लाहोरके अँगरेज़ रेजीडेंट सर हेनरी लारेन्स उसके अध्यक्ष हुए। इस योजनानेभी बहुत समयतक काम न किया। दोवर्षके अनन्तर गवर्नर जनरल लार्ड डलहौसीके समयमें पंजाबमें फिर बखेड़ा हुआ। यह बखेड़ा यहाँतक बढ़गया कि, काबुलका अमीर दोस्तमूहम्मद चढ़कर पेशावर तक चलाआया। उसने अटकका मोरचा अपने हाथमें लेकर उपद्रवियोंकी सहायता करना आरंभ किया। लाचार होकर ब्रिटिश गवर्नमेंटको पंजाबपर फिर चढ़ाई करनी पड़ी। सन् १८४९ ई० के फ़रवरी मासकी २१ तारीखको गुजरातके निकट युद्धकर विजयपाया। और लार्ड डलहौसीके शासनमें पंजाबका प्रदेश सदाके लिये ब्रिटिश साम्राज्यमें मिलालिया गया। तबहीसे पदच्युत महाराजा दलीपसिंह पेन्शन पाकर विलायतमें रहे ॥

पंजाबके साथ स्वर्गवासी पंजाब केसरी महाराजा रणजीतसिंहका बहुमूल्य आभूषण भी सरकारके हाथ आया। इनमें जगत् प्रसिद्ध 'कोहनूर' हीरा भी सरकारको मिलगया। इससे बढ़कर हीरा संसारमें अभीतक सुननेमें नहीं आया है। सन् १८५८ ई० में ईस्ट इंडिया कंपनीने इसे श्रीमतीको भेटकिया। तबसे यह श्रीमतीके राजमुकुटमें विराजकर अपने प्रकाशसे मुकुटको प्रकाशित कर रहा है। यह हीरा मछली पट्टनके निकट गोदावरी नदीमें किसी मनुष्यको मिलाथा। सन् १३०४ ई० में सुलतान अलाउद्दीनको मालवाके राजाके यहांसे प्राप्तहुआ। उनके कुटुंबके पाससे दिल्लीके प्रथम मुग़ल सम्राट् बाबरके पास पहुँचा। उन्होंने अपने चरित्रमें लिखा था कि "संसारके दैनिक व्ययका आधा द्रव्य इस हीरेके मूल्यके समान है। सन् १७३९ ई० तक मुग़ल बादशाहोंके हाथमें रहकर वह ईरानके बादशाह नादिरशाहके यहाँ पहुँचा। जिस समय नादिरशाहने दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहको परास्तकर वहांका कोष छीना उसमें हीरा न मिला। उसको इस बातसे बड़ी निराशा हुई। उसने मुहम्मदशाहकी एक बेगम द्वारा समाचार पाकर दिल्लीका राज्य मुहम्मदशाहको लौटादेनेका ठहराव किया। इस विचारसे उसने दिल्लीमें एक दर्बार कर उसमें राज्य मुहम्मदशाहको पीछा

सौंपते समय परस्पर पगड़ी वदलौवलकी । मुहम्मदशाहकी पगड़ीके साथही हीरा नादिर शाहके पास चला आया । तवसे वह कुछ कालतक ईरानमें रहा । फिर नादिरशाहके वारिसोंने अफ़गानिस्तानमें ईरानी वादशाहत स्थापन करनेवाले अहमद शाहको देदिया । उसीको काबुलके अमीरशाह शुजासे पंजाब केसरी महाराजा रणजीतसिहने छीनलिया । और उनकी मृत्युके बाद पंजाब राज्यके साथही वह हीरा ब्रिटिश गवर्नमेंटके हाथमें पहुंचा । इंग्लैंड पहुंचने बाद उसको घिसकर स्वच्छ और सुडौल करनेमें आठ हज़ार पौंड व्यय हुआ । इस कार्यसे हीरेके तौलमें अस्सी केरट अर्थात् १॥। तोला २॥ रतीके लगभग न्यूनता होगई ॥

अध्याय ९.

इंग्लैंडमें सूरतके नव्वाब और भारतकी रेल्वे ।

सूरतके नव्वाब सन् १८४४ई० मे इंग्लैंड गये । इससे पहले भारतवर्षका कोई भी राजा महाराजा विलायत नही गया था इस लिये वहां पर इनका वड़ा सत्कार हुआ । इस विषयमें "एन्युएल रेजिस्टर" में लिखाहै कि २१ जुलाई दिनके १२ वजे सूरतके नव्वाव जिस समय चांसरी कोर्ट देखने गये लोगोंकी इतनी भीड़ थी कि खड़े रहनेको जगह नही मिलती थी । यहांके सरदार और उमरावोंको भीड़में जव नव्वाव साहव न देख पड़े तो वे कुरसियों पर खड़े होगये ॥

सन्१८४५ई० तक भारतमें रेल्वेका नाम नथा। यहां वालोंमें यह कोई नहीं जानता था कि रेल्वे किस चिड़ियाको कहते हैं । उस वर्ष भारतमें रेल्वे लाइने बनानेके लिये इंग्लैंडमे कई एक कम्पनियां खड़ी हुई । इनकी प्रार्थनाओंको स्वीकार करने पूर्व ईस्ट इंडिया कंपनीने भारतके लाट साहवको ७ मईको एक पत्र लिखा । जिसका भाषान्तर यह है कि—" रेल्वे लाइने उसी जगह बनाना लाभदायक है जहां वनवानेका खर्च और उनके प्रबंध करनेका व्यय निकल सके । इंग्लैंडको अनुभवसे विदित हुआ है कि रेल्वे कंपनियोंको अधिक आय मालसे होती है । परंतु इस विषयमें भारत वर्षकी स्थिति भिन्न प्रकारकी है । भारत वर्ष धनी और धनाढ्य वस्तीवाला नही है । वहाँके निवासी दीन हैं और दूर २ थोड़ी २ संख्यामें निवास करते हैं । किन्तु वह प्राकृतिक पदार्थोंसे भरपूर है परंतु उन्हें लाने ले जानेके लिये सस्ता और शीघ्र चलनेवाला

साधन न होनेसे लाभदायक बाज़ारका वहां अभाव है। इस लिये यह मानना चाहिये कि इस समय रेल्वेकी मुख्य आयका आधार यात्रियों पर न होकर केवल मालपर रहैगा। इसमें किसी प्रकारका संदेह नही है कि जहां लाइनें खोलनेसे लाभकी संभावना हो वहां प्रचलित करने में सहायता और उत्तेजना देना चाहिये। इस लिये एमेरिकाके दो चतुर और अनुभवी इंजिनियर हमारे दो इंजिनियरोंके साथ भेजे जाते हैं। ये लोग साधारण लंबाईकी एक लाइन तैयार करनेकी जांच करैंगे। उस जांचको आप स्वयं देखैं और उसके लिये जो कंपनी खड़ीहो उससे शर्त करनेके विषयमें रिपोर्ट करैं।" उसी वर्षमें ग्रेट इंडियन पेनन्शुला रेल्वे (जी. आई. पी.) और ईस्ट इंडियन रेल्वे कम्पनी खड़ी हुई। भारतकी प्रबन्धकारिणी ईस्ट इंडिया कम्पनीने व्याजकी गैरेंटी देकर उनको ९९ वर्षका पट्टा करदिया। ईस्ट इंडियन रेल्वे कलकत्तेसे दिल्ली और आगरा तथा जी. आई. पी. रेल्वे बंबई से कल्याण और मेहम तक तैयार हुई। जी. आई. पी. का काम सन् १८५०ई०में आरम्भ होकर सन् ५४ में समाप्त हुआ॥

अध्याय १०.

इंग्लैंडका रूस और फ्रांससे विरोध।

सन् १८२९–३० में रूसने रूमकी ईसाई प्रजाकी ओरसे बखेड़ा उठाकर यूनानको रूमसे स्वतंत्र कर दिया था। इस विषयकी जो सन्धि हुई उसमें इंग्लैंड और फ्रांसका संयोग था। सन् १८४७ई० में एक तुच्छ बातपर इंग्लैंडने यूनानसे लड़ाई ठानना चाहा। यदि पीछेसे मेल न होगया होता तो उस समय यूरोपमें एक भारी संग्राम होनेकी सम्भावना थी। डान पेसिफिको नामक एक पुर्तगाली यहूदीने यूनान पर ३२ हज़ार पौंडका दावा किया। ईसाई धर्मके संस्थापक प्रभु ईसामसीहको फँसाकर रोमन लोगोंके हाथमें देनेवाले और उनका बधकरनेमें अग्रणी यहूदी जुड़ास इस्केरपटका तिरस्कार करनेके लिये यूनानमें प्रतिवर्ष ईस्टरके त्योहारपर उसकी मूर्त्ति बनाकर जलादेने की चालथी। सन् १८४७ई० में यूनानकी गवर्नमेंटने यह चाल बंद करदी। इससे यूनानी लोगोंने समझ लिया कि उस राज्यमें अब यहूदियोंका प्रभाव बढ़गया है। डान पेसिफिको उन दिनों एथेन्समें रहता था। यूनानियोंको मालूम था कि वह यहूदी है। उन्होंने अपना धर्मसम्बन्धी वैर लेनेके लिये उसके घरबारका नाश कर-दिया। इस कारण उसने यूनानकी गवर्नमेंट पर दावा किया। यूनानने उसकी

बात न सुनी। वह था तो पुर्तगाली यहूदी किन्तु अंगरेज़ी प्रजा गिनाजाता था। इस बहानेसे इंग्लैंडमें उपनिवेश विभागके मंत्री लार्ड पामर्स्टनने यूनानसे युद्ध ठान दिया अंगरेज़ी सेनाने यूनानका समुद्र किनारा घेरनेके विचारसे प्रयाण किया। लार्ड पामर्स्टनको भ्रम था कि यूनानमें जो फरांसीसी दूत रहता है वही इस झगड़ेका मूल है। यूनानने बीचमें पड़कर इंग्लैंडसे निपटारा करादेनेके लिये फ्रांस और रूससे प्रार्थना करी। और प्राचीन संधिके अनुसार कार्य करनेके लिये दोनोंने इंग्लैंडको समझाया। आरम्भमें लार्ड पामर्स्टनने इस बातको अस्वीकार किया इस कारण फ्रांसने अपना दूत इंग्लैंडसे लौटा लिया। इस बातसे यूरोपमें भयानक संग्राम होनेका भय हुआ। अंतमें इंग्लैंड संभलगया और डान पेसिफिको का झगड़ा यूरोपियन राज्योंके प्रतिनिधियोंकी पंचायतको सौंपना उसने स्वीकार किया। जांच करनेसे विदित हुआ कि डान पेसिफिकोका दावा स्वीकार न करनेमें यूनानने कोई कार्य अनुचित नही किया है क्योंकि उसने हानिसे तीस गुना दावा कियाथा। वह बड़ा मूर्ख था। उसने इस दावेमें एकही पलंगका मूल्य १५० पौंड लिखवायाथा। लार्ड पामर्स्टनकी इस कुचालपर इंग्लैंडकी लार्ड सभामें एक निन्दा सूचक प्रस्ताव भी हुआ॥

अध्याय ११.

इंग्लैंडकी वृहत् प्रदर्शनी, और ब्रह्मदेशका युद्ध।

श्रीमतीके प्रिय पतिके उद्योग और प्रेरणासे सन् १८५१ ई० में देश विदेशके नाना पदार्थोंकी लंडनमें एक बड़ी भारी प्रदर्शिनी हुईथी उसके विषयमें इस पुस्तकमें लिखा गया है। यह कार्य श्रीमतीके शासनकी मुख्य घटनाओंमेंसे था इस लिये यहां पर भी इस विषयमें कुछ लिखना आवश्यक है। राज्ञीपति प्रिंस एलबर्ट शिल्प कलाको उत्तेजना देनेवाली "सोसाइटी आफ़ आर्टस" सभाके अध्यक्ष थे। सन् १८४९ई० के जूनकी ३० तारीख़को इस बातका ठहराव कर सन् ५० में श्रीमान्की अध्यक्षतामें एक कमीशन नियत हुआ। उसी वर्ष लार्ड मेयरके भोजमें प्रिंस महोदयने अपने ललित व्याख्यानमें इस बातकी आवश्यकता दिखाई। उन्होंने कहाकि—"शिल्प और व्यापारमें मनुष्य जातिने अबतक कितनी उन्नति कीहै इस बातकी ठीक जांच करने और इस कार्यके लिये होनहार उन्नतिके उपाय सोचनेका प्रदर्शनी उत्तम साधन है।" प्रिंसके सीधे और उपयोगी कथन को उस समयके बड़े बड़े लोगोंने उलटा समझा और पार्लिया-

मेंटके अनेक मेंबरोंतकने इस बातमें संदेह किया कि नाना देश और जातिके लोग इस मेलेमें इकट्ठे होनेसे उपद्रव हो जायगा । उस समयके समाचार पत्र भी इसके विरोधी हुए । उन्हों ने लिखाकि मेला देखनेके बहानेसे देश देशके लुच्चे लफंगे इकट्ठे होजायँगे और उनसे प्रजाकी शांतिका भंग होगा । अधिक उद्योग करने और लोगोंको समझाने बुझानेसे भय दूर होगया और इंग्लैंडकी शिल्पोन्नतिके लिये इसका बहुत अच्छा परिणाम हुआ ॥

अंगरेज़ व्यापारियोंने भारत गवर्नमेंटसे आग्रह पूर्वक कहाकि ब्रह्मदेशके राजा हमारे व्यापारमें विघ्न डालतेहैं । सन् १८५२ ई० में भारतके गवर्नर जनरल लार्ड डलहौसीने इस बातकी जांचके लिये एक सैनिक धूम पोत रंगूनको भेजा । मिस्टर कोमोडर लेम्बर्ट ने वहां जाकर आवामें लाटसाहब का पत्र ब्रह्मदेश के राजा को दिया । राजा ने इसबात पर रंगून के गवर्नर (सूबा) को पदच्युत कर दिया क्योंकि अंगरेज व्यापारियोंने उसी पर नालिश की थी । इसकी जगह जो नया सूबा नियत हुआ वह इनलोगों को पहलेवाले की अपेक्षा भी अधिक दुःखदायी जान पड़ा।अंत में कोमोडर लेम्बर्टने राजा का एक जहाज़ खालसे कर लिया । इसपर युद्धआरंभ होगया । कलकत्ते में समाचार पहुँचतेही ८ हज़ार सेना विदा हुई । सेना ने आकर रंगून बेसिन और प्रोम को एक २ करके छीन लिया और ब्रह्मी लोगों को उत्तर ब्रह्मा की ओर भागना पड़ा । पेगू के परगने पर सरकारी अधिकार होने बाद लार्डडलहौसी ने ब्रह्मदेश के राजाके विषय में एक नोटिस लिखा कि आवा (ब्रह्मदेश) का राजा यदि पहले की तरह ब्रिटिश गवर्नमेंट से मित्रता का संबंध प्रचलित न करैगा और पेगूका परगना जो हमने लेलिया है उसे लौटानेका प्रयत्न करैगा तो उसको कठोर दंड दिया जायगा । उसका राज्य छीन लिया जायगा और उसे तथा उसकी संतान को नष्ट भ्रष्टकर देश निकाल देदिया जायगा । इस नोटिस को पानेके अनंतर राजाने किसी प्रकार के संधिपत्र पर हस्ताक्षर तो न किये किन्तु मुखसे यह स्वीकार करलिया कि जो देश वा स्वत्व अंगरेजों को लेना हो लेलें इसमें मैं हस्ताक्षेप नहीं करूंगा । इरावदी नदी में स्वतन्त्रता से अंगरेजों के व्यापार करने को भी उसने स्वीकार कर लिया।गवर्नर जनरल ने दूसरा नोटिस प्रकाशित कर उसमें लिखा कि" राजा ने संधिपत्र परहस्ताक्षर तो नहीं किये हैं किन्तु उसके प्रण और शांति के कामों को देखकर युद्ध बंद कियागया है "॥

अध्याय १२.

ईस्टइंडिया कंपनी का नवीन पट्टा ।

सन् १८५३ ई० में ईस्टइंडिया कम्पनी के पट्टेकी अवधि पूरी होगई । ब्रिटिश गवर्नमेंट ने उसे दूसरी सनद देनेका विचार किया। सर चार्लेस उड़ने इस विषय में ३ जून को पार्लियामेंट में एक बिल उपस्थित किया । मदरास की नेटिघ एसोशियेशनकी ओर से ईस्टइंडिया कंपनी के विषय में पार्लियामेंट में एक प्रार्थना पत्र गया था । उसमें कंपनी के प्रबंध की निन्दाथी । उसमें लिखा था कि कंपनी न्याय का काम ठीक २ नही करती है । इसका उत्तर उक्त साहब ने यह दिया कि—भारत वर्ष में एक २ आने के लिए झूंठे शपथ खानेवाले साक्षियों की बहुतायत है इसलिये न्यायका काम बड़ा कठिन है तथापि यह काम वहां प्रशंसाके योग्य होताहै । प्रजाके काम पर वहां खूब ध्यान दिया जाताहै । १ करोड़ ४० एकड़ भूमि सींचनेके योग्य तैयार की गई है । भारत गवर्नमेंटको विशेष आय भूमिकरसे है । लवण और अफीम परभी करलिया जाताहै । लवणकर जैसा कठोर बतलाया जाताहै वैसा नहीं है । मुसल्मान और देशी राजाओंके शासनके साथ ब्रिटिश राज्यकी तुलना कीजाय तो अंगरेजी राज्यमें दासव्यापार, सतीदाह, बालहत्या, नरबलि, तथा लूट खसोट नहीहोतीहै । किसानबड़े सुखीहैं अब वे जीवनकी आवश्यक वस्तुयें अधिक वर्तने लगेहैं । सन् १८३४—३५ ई० में भारत में ७९ लाख ९३ हजार पौंडका माल बाहरसे आयाथा । पंद्रह वर्षके बाद इस आयमें सौ पीछे १४० की वृद्धिहोकर सन् १८४९—५० ई० में १ करोड ७३ लाख १३ हजार पौंड का माल आया । कंपनी अब अपने प्रबंधमें कुछ लौटफेर करना चाहतीहै । उसने विचार कियाहै कि डाइरेक्टरोंकी संख्या घटाकर ३० की जगह १८ रक्खी जाय और इनमें ६ ऐसे रहै जो दश वर्ष तक भारतमें रहकर ब्रिटिश गवर्नमेंटकी सेवा कर आयेहों । सरकारी नौकरीपर अबसे कंपनी किसीको नियत न करसकैगी किन्तु सिविल सार्विस परीक्षा सब जातिके लिये खुली रक्खी जायगी । नौकरी पानेका स्वत्व गरीब अमीरके लिये समानहोगा । सैनिक पदोंकी व्यवस्था में तो परिवर्त्तन न होगा किन्तु बंगालकी गवर्नरी स्वतंत्र नियत की जायगी । आईन बनाने वाली सभामें गवर्नर जनरल दो सभासद अपनी ओर से और प्रत्येक प्रान्तका व्यापारी समाज अपनी ओर का एक २ सभासद नियत

लरेगा । इसके सिवाय हाईकोर्टका चीफ् जस्टिस और अन्य जज मिलाकर कुल १२ सभासद् होंगे प्रान्तोंके प्रत्येक नगरमें छोटी कोर्टें नियत होंगी और देशी-न्यायाधीशोंका वेतन बढ़ाया जायगा । " इसबिलके विषयमें पार्लियामेंटमें बहुत विवाद हुआ । कामन्स सभामें सर ज्यार्ज क्लार्कनें हिन्दुओंकी नीतिमत्ताको सराहा । और कहाकि सतरहवीं शताब्दिकी चाल ढाल देखकर भारतके अंगरेज जैसे भारत वासियोंकी निन्दाकरतेहै वैसीही निन्दाके योग्य उस समयके अंगरेज भी थे । मिस्टर फिलिमोर ने कहाकि सन् १८३३ ई० के प्रतिज्ञापत्रमें लिखे जातिभेद विना सब लोगोंको समान गिनने के कार्यपर कंपनी ध्यान नहीं देतीहै । देशियोंकी निन्दा करने में मिस्टर (लार्ड) मेकाले प्रसिद्ध गिने जातेहैं । उन्होंने कहाकि—"देशियोंको भारत वर्षके प्रबंधसे अलग रखनेके प्रयत्न में उनकी प्रवृत्तिका भंग कर हम लोग अपने शासन को दृढ वा दीर्घ काल तक चलने योग्य नहीं बना सकैंगे । उन्हें वशमें करनेके लिये अथवा उनपर अधिक काल तक शासन करनेका स्वत्व वा अधिकार प्राप्त रखनेके लिये उन्हें अज्ञान रखना मैं कभी अच्छा नहीं समझताहूं" ॥

अध्याय १३.

नागपुरका खालसा और भारतमें तार ।

तीन आविष्कार ।

सन् १८५३ ई०में गवर्नमेंटनें नागपुर राज्य खालसे करनेका ठहराव किया । वहांके राजा राघोजी भोंसला इस वर्षमें अपुत्र मरगये । लार्ड डलहौसी उससमय भारतवर्षके गवर्नर जनरल थे । वह चाहतेथे कि शनैः २ समस्तदेशी राज्य खालसे कर लिये जाँय और किसी राजाको गोद लेनेकी सनद नदी जाय । उन्होंने नागपुरके राजाके अपुत्र मरनेसे गादी खाली होतेही अपनी नीतिका पालन किया । और उसीके अनुसार एक आज्ञापत्र प्रकाशितकर नागपुर राज्यको सरकारी राज्यमें मिला लिया । सन् १८५७ ई० में भारतवर्ष में जो उपद्रव हुआ उसके अनेक कारणोंमेंसे एक लार्ड डलहौसीकी यह नीति भी मानी जाती है ॥

भारतवर्षमें रेल्वे बनानेका कार्य जिससमय जी. आई. पी. और ईस्ट इंडियनरेल्वे कंपनीने आरंभ किया तबही तारका कार्य आरंभ हुआ था । सन् १८५०–५१ ई० में गवर्नमेंटने प्रथम बंगालमें तारघर स्थापितकिये । दूसरे ही वर्ष ६२१९०) रुपयेके व्ययसे ८३ मील लाइन तैयार हुई । बंबई तथा

मंदरास प्रान्तमें यह कार्य सन् ५४ में हुआ। सन् ६७-६८ में भारतवर्षमें तार विभाग द्वारा २०२१९१ समाचार आयेगयेथे और उस वर्ष भारतभरमें कुल १३४७३॥ मील तारकी लाइन थी॥

सन् १८४६ में परीक्षाके बाद यह निश्चय हुआ कि सल्फ्यूरिक ईथरके प्रयोगसे रोगीके शरीरपर किसी प्रकारकी कठोर चीरफाड करनेपरभी उसे उस का दर्द विदित नही होताहै। और इस दवाको सुंघानेसे रोगी बिलकुल अचेत होजाताहै। इसबातके प्रकाशित होतेही लोगोंके हर्षका ठिकाना नरहा किन्तु इस से भी बढ़कर "क्लोरो फार्म" निकला। इसकी जांच सन् १८४७ ई० में हुई। दोनो पदार्थोकी तुलना करनेसे जानपड़ा कि ईथरकी अपेक्षा क्लोरोफार्मकी थोड़ी मात्रा अचेत अधिक करदेतीहै, उसका प्रमाण अधिक शीघ्र और पूरा २ होता है, आधिक समयतक टिकता है और उससे रोगीको प्रलाप नही होता है। उसमें खर्च कम होता है और केवल रूमाल पर छीटकर सुंघादेनेहीसे मनुष्य अचेत होता है किन्तु ईथरमें यंत्रकी आवश्यकता होतीहै॥

खगोल शास्त्रके विषयमें दो बड़े आविष्कार सन् १८४५ और ४६ ई० में हुएथे। एस्ट्रिया, नेपच्यून और यूरेनस ग्रहकी शोधहोचुकीथी। इन वर्षोमें फ्रेंच और जर्मन विद्वानोंने ही बी, एरिस, और क्लोरा नामक ग्रहोंकी गति का निश्चय किया। इसी वर्षमें पांच धूमकेतु ग्रहोंकी चाल मालूम हुई। और सन् १८४८ई० में 'मेटिस' सन् ४९ में "हाइजिया बारवनिकडा" सन् ५० में 'पार्सेनोपी' 'विक्टोरिया' और 'इगेरिया' ग्रहका शोध हुआ। इनके सिवाय शनिग्रहके अष्टमं उपग्रह और नेपच्यूनके एक उपग्रहका आविष्कार भी इसी वर्षमें हुआ॥

ये साल नवीन शोधोके विषयमें बहुत बढ़कर निकले। सन् ४६ और ४७ में रसायन शास्त्रके विषयमें तीन बड़े २ आविष्कार हुए। प्रथम शोध 'गनकाटन' बारूदकी, दूसरी काचको झुका वा मरोड़ सकनेकी और तीसरी कागज़की बोतलें वा किंवाड बनानेकी। इस शोधके अनुसार पानी भरनेसे कागज़ गलता नहीं है। कागज़से बने हुए पात्र धरतीपर डालनेसे नही टूटते हैं और इसपर तुर्रा यह कि पारदर्शक होते हैं॥

अध्याय १४.

क्रीमियाका युद्ध।

सन् १८५४ ई० का वर्ष यूरोपके लिये बड़ा भयानक था। रूम राज्यके अनेक प्रान्तोंमें रूसीधर्म मानने वाले (रूसवालेके वंशधर) लोग निवास करते थे।

उन लोगोंके साथ रूमका जैसा वर्त्ताव था वह रूसको पसंद न था । रूस समझता था कि रूमके ईसाइयोंकी रक्षा करनेका काम मेरा है । रूसने इस विषयमें रूमकी जो निन्दाकी उसे अन्य यूरोपियन राज्योंने सच्चा समझा परंतु उनको संदेह हुआ कि कहीं ऐसी बातके बहानेसे रूस किसीभारी राजनैतिक लाभके लिये चालतो नहीं चलरहा है । इस भयसे उन्होंने रूसकी बातका समर्थन करनेके बदले उसकी योजनाको भंग करनेका प्रयत्न किया । रूसकी गवर्नमेंट अल्पकालमें छोटेसे राज्यसे एक बृहत् साम्राज्य बनगया था ! यूरोपमें ऐसा जनरव था कि रूस राज्यका संस्थापक पीटर दी ग्रेट आपने वसीयत नामेमें लिखगया है कि मेरे उत्तराधिकारियोंको जहांतक बालटिक समुद्रसे उत्तरकी ओर और काले समुद्रके किनारेपर दक्षिणकी ओर सीमा स्थापित करनेका अवसर न मिलै चुप न रहना चाहिये । इस कारण बड़े राज्योंने अनुमान किया कि रूमके विषयमें बखेडा कर रूस उसका कुस्तुनतुनिया और बासजरस लेना चाहता है इस लिये उन्होंने निश्चय किया कि रुमके अप्रबंधसे रूसको लाभ उठाने देना उचित नहीं है । रूस शनैः २ भारत लेनेकी इच्छासे मध्य एशियामें अपनी सेना बढ़ाता जाता था इस लिये उसकी यह चाल इंग्लैंड को अधिक बुरी लगी । इंग्लैंडने सोचा कि, रूसका विरोध करनेके लिये रूमसे मेल करना चाहिये । और रूस रूमके युद्धमें इंग्लैंडको रूमका साथ देना उचित है । इस विचारमें फ्रांसके नवीन सम्राट् नेपोलियन ने साथ दिया । उसने अपने विचार कौशलसे फ्रांसका राज्य प्राप्त किया था और वह जानता था कि जबतक मैं किसी कार्यसे वहांकी प्रजाको प्रसन्न न करसकूंगा मेरा टिकाव होना कठिन है ॥

ईसाई धर्मके अनेक स्थान रूम राज्यमें थे । इन पर आधिपत्य रखने के विषयमें रूस और फ्रांसका झगड़ा था । इसका निपटारा करानेके लिये फ्रांस इंग्लैंडके संयुक्त हुआ । दोनोंने मिलकर रूमकी ओरसे रूसके साथ युद्ध निश्चय किया । दोनोंनें रूससे कहलाया कि सन् १८२७–२८ में रूसने रूमके साथ जैसा वर्त्ताव किया था वैसा अब न करने दिया जायगा । हमारे जहाज़ काले समुद्रमें जायँगे । वहांपर यदि कोई रूसी जहाज़ मिलेगा तो हम उसे सेवस्टोपलकी ओर लौटादेंगे और रूम राज्यपर किसी प्रकारका बलात्कार रूसको न करने देंगे । इस बात से युद्ध ठनगया । जर्मनी (प्रशिया) और आस्ट्रिया इंग्लैंडके मित्र गिनेजाते थे परंतु इस अवसर पर वे अलग होगये । इंग्लैंडके प्रधानमण्डलमें भी इस विषयमें मतभेद हुआ । लार्ड एबर्डीन और

मिस्टर ग्लैडस्टनने इस युद्धका विरोध किया परंतु इंग्लैंडकी प्रजाका अधिक भाग युद्धमें कीर्त्ति सम्पादन करनेकी तृष्णासे युद्ध करनेकी सम्मतिमें लार्ड पा-मर्स्टनका साथी हुआ । उनकी सम्मतिके अनुसार १४ सितम्बर सन् १८५४ ई० को युद्धका आरम्भ होगया । और भीषण संग्रामके बाद सन् १८५६ ई० के फरवरी मासमें इसका अन्त हुआ । दोनों ओरकी सेनाओंने बहुत वीरता दिखाई किंतु इंग्लैंड, फ्रांस और रूमकी संयुक्त सेनाके सामने रूसी सेना टिक न सकी । परिणाम यह हुआ कि रूसने सन्धिका प्रस्ताव किया । इस बातका ठहराव करनेके लिये फ्रांसकी राजधानी पैरिस नगरमें इंग्लैंड, फ्रांस, रूस, आस्ट्रिया, प्रूशिया और सार्डीनिया (इटाली) राज्यके प्रतिनिधियोंने मिलकर निम्नलिखित शर्तें पक्की की—(१) रूमके प्रबन्धमें हाथ डालनेका रूसको दावा न करना चाहिये (२) काले समुद्र पर किसी राज्यका अधिकार नहीं है और वहां छः से अधिक जहाज़ रूस न रखसकेगा (३) डैन्यूब नदी व्यापारके लिये खुली रखनी होगी (४) रूमके मालडेविया और वेल्केयाना प्रान्त (रोमेनिया) और सर्वियाके प्रान्तोंको प्रजाशासनका अधिकार देना और सर्वियामें रूमको सेना रखने देना और (५) परस्परके जीते हुए राज्य जिसके जिसे देदेना होगा" ॥

अध्याय १९.

क्रीमियाके युद्धके समय इंग्लैंडकी स्थिति ।

यद्यपि इस अध्यायमें प्रायः उन्ही बातोंको समावेशहै जिनका वर्णन इस पुस्तकके प्रथम भागमें होना चाहिये था किन्तु क्रीमिया का विषय एकत्र रहनेसे पाठकोंके चित्तपर बात अच्छी तरह ठसती समझकर यहांपर लिखना उचित समझा गयाहै । जिस समय क्रीमियाके युद्धमें रूससे विजय पानेकी इच्छासे इंग्लैंडकी सेना ड्यूक आफ् केम्ब्रिज्के अधिकारमें विदाहुई श्रीमती उसका सत्कार करनेके लिये स्वयं गई थी । एक ओर युद्धके लिये बड़े २ राज्योंके प्रधान कर्मचारी अपने शिर पचा रहे थे और दूसरी ओर राजाओं में परस्परका मेल मिलाप होता था । इसी बीचमें राज्ञीपति प्रिंसएलबर्ट फ्रांसके नवीन सम्राट् नेपोलियनसे मिलने गये । वहांसे लौटनेपर मालूम हुआ कि अध्यक्षोंकी बेपरवाहीसे ब्रिटिश सेनाके मनुष्य बहुत दुर्दशासे नष्ट होते है । गवर्नमेंटने इस बातपर सेनाध्यक्षोंको बहुत लथाड़ा और महारानीके चित्तमें

इतना दुःख हुआ कि वह इस संवादको सुनकर बीमार होगई । मिस फ्लोरेंस नाइटिंगेलने जिसका कुछ वर्णन इस पुस्तकके पूर्व अध्यायों में हुआहै जाकर साहस और परिश्रमसे घायल सैनिकोंकी सेवा सुश्रूषाकर हज़ारोंके प्राण बचाये ॥

ब्रिटिश और फ्रांसकी संयुक्त सेनाकी बहुत हानि होनेपर भी जब रूसने तोपों की मार सहने उपरांत सेवस्टोपलका किला न छोड़ा तब इंग्लैंडको बहुत निराशा हुई और इस बातका विचार करनेके लिये पार्लियानेंटमें एक बिल उपस्थित हुआ किन्तु उसी समय रूसके सम्राट् दूसरे निकोलसकी अकस्मात् मृत्यु होगई इस लिये क्रीमिया युद्धका शीघ्रही अंत होगया । युद्धसे घायल होकर लौटे हुए सैनिकोंको श्रीमतीने चेथामके अस्पतालमें देखकर उनका समाश्वासन किया ॥

इसी अवसरमें फ्रांसके नवीन सम्राट् लुई नेपोलियन अपनी रानी सहित श्रीमतीसे भेट करनेके लिये इंग्लैंड आये । श्रीमतीने उनका बहुत सत्कार किया और सत्कारकी वृद्धिके लिये नेपोलियनने सम्मानपूर्वक श्रीमतीके होठोंका चुंबन किया । इस बातसे फ्रांसमें प्रजा तंत्रप्रणाली स्थापन करनेकी इच्छा रखने वाले पक्षको बहुत बुरा लगा और उन्होंने नेपोलियनपर गालियोंका मेह बरसाया । नेपोलियनके सन्मानमें वाटर्लू महलमें एक नाच हुआ जिसमें उन्होंने बहुत योग्यता दिखाई । इस विषयमें श्रीमती ने अपनी दिनचर्या में लिखा है कि " मैं तीसरे ज्यार्जकी पौत्री इंग्लैंडके कट्टे शत्रु सम्राट् प्रथम नेपोलियनके भतीजेके साथ, वाटरलू के राजभवन में, उस व्यक्ति के साथ जो छः वर्ष तक देश विदेश भटक कर इंग्लैंड का आश्रय लेचुका है नाचूं; इसे ईश्वर की विचित्र लीलाही समझना चाहिये ।" इस अवसर पर श्रीमती ने सम्राट् को नाइट आफ़ दी गार्टरकी उपाधि प्रदान की ॥

अच्छीतरह दावत चखने बाद जब सम्राट् नेपोलियन फ्रांसको गया श्रीमतीने क्रीमिया के युद्ध में पराक्रम करनेवाले सैनिकों को पदक, पारितोषिक और पदवियाँदीं । इनमें अनेक लूले, लंगड़े, हाथ बिनाके और अंगभंग थे देश और श्रीमती की सेवा में उनकी यह दशा हुई थी इसालिये आपको बहुत दुःख हुआ । आँखों में पानी भरआया । श्रीमती के हाथ से पदक पाकर उन्हें बड़ा संतोष हुआ । थामस टाऊब्रिज नामक शूरको जिसके दोनों पैर इसयुद्ध में कटगये थे आपने अपना शरीर रक्षक (एडी कैंप) बनाया ॥

सितंबर मास में सेबलस्टोपल नामक दृढ दुर्ग घोर संग्राम के पश्चात् इंग्लैंड के हाथ आने की जब ख़बर पहुंची प्रजाके हर्ष का ठिकाना न रहा । बालमोरल

में निवास करनेवाले लोगों ने एक पहाड़ीपर चढ़कर आग जलाई । श्रीमती अपने महलकी खिड़कीमें से खड़ी २ इस अद्भुत दृश्यको देखती रही । वहांके ग्रामीण लोगोंने उस अग्निके पास अद्भुत प्रकारसे नाच किया, गाया, ढोल बजाये और बंदूकों के फेर किये । क्रीमिया से विजय प्राप्त कर लौटीहुई सेना का श्रीमती ने एल्डरशाट में निरीक्षण करते समय कहाः—“ आज यहांपर एक वृहत् सेना इकट्ठी हुई है । उससे मेरा कथन है कि वह पूर्ण आरोग्यताके साथ लौट आई जिसका मुझे हर्ष है । उसने कष्ट और विपत्ति उदारतापूर्वक सहन की है उसके लिये धन्यवाद देनेको मैं बहुत आतुर थी । और जो लोग अपने देश के लिये मृत्यु को प्राप्त हुए है उनके लिये मैं दुःखित हूं । और इसीतरह जिन्हों ने वीरतापूर्वक युद्ध किया है उनके लिये मुझे बड़ा गर्व है । मैं परमेश्वर का उपकार मानती हूं कि अब भयक बादल बिखर गये हैं । आपलोगों के यशस्वी कर्म की कीर्त्ति सदा रहैगी और मुझे आशा है कि फिर जब कभी आवश्यकता पड़ैगी जिसका मुझे भरोसा है क्रीमियाके युद्ध में आत्मसमर्पण करनेकी तरह फिर भी आप लोग प्रेम पूर्वक देश सेवा करनेके लिये तत्पर होंगे ।” इस आज्ञाको सुनकर सेनाने श्रीमतीके लिये एक स्वरसे “ईश्वर श्रीमतीकी रक्षा करै । ” इस वाक्यको कहा ॥

अध्याय १६.

रूमकी रक्षामें तीन राज्योंका मेल ।

इस भागके अध्याय १४ में जिस संधिका वर्णन हुआ है उसके सिवाय सन् १८५६ ई० के अपरेलमें इंग्लैंड, फ्रांस और आस्ट्रियामें रूमके विषयमें एक संधि और हुई थी जिसमे २ शर्तें थी (१) तीनों राज्य रूम राज्यकी रक्षाका बोझा अपने ऊपर लेते हैं और (२) पैरिसमें ३० मार्चको जो संयुक्त राज्योंका इस विषयमें संधिपत्र लिखा गया उसके नियमोंका भंग जो कोई करैगा उससे हमतीनों मिलकर लड़ैंगे। सन् १८७१ ई० तक इस संधिका वर्त्ताव ठीक २ होता रहा । सन् ५६ ई० की ३० मार्चको सब राज्योंने मिलकर पैरिसमें जो संधि की थी उसमें एक शर्त यह भी थी कि “काले समुद्रको स्वतंत्र गिनना और वहां रूसको मेगजीन तथा छःसे अधिक सैनिक जहाज़ न रखने देना चाहिये”। सन् ७१ ई० में इस संधिका भंग होगया । और प्रकाश रूप पर रूसने कह दिया कि“अब हम इस बातके नियम बद्ध नही हैं । इस संधिपत्रकी

अनेक शर्तोंको और २ राज्यों ने भंग कर डाला इस लिये केवल हम पर ही इसके निर्वाह का दबाव डालना न चाहिये' । उन दिनों में फ्रांस और जर्मनीका घोर संग्राम हो रहाथा । इस लिये दोनों राज्य इस काममें न बोलसके । इसी तरह इंग्लैंडने भी इन दोनों राज्योंको युद्धसे आना कानी करते देखकर रूससे एका· की लड़नेका साहस न किया । आस्ट्रिया बिलकुल ही चुप साध गया । परंतु पैरिसके संधिपत्रकी बात हवामें उड़ाकर चुप रह जानेसे निंदा समझ कर मिस विस्मार्कने एक चाल खेली । उनकी सूचनाके अनुसार रूसके अनुचित कार्य पर विचार करनेके लिये लंडनमें एक सभा हुई । इसमें बड़े २ राज्योंके प्रतिनिधि इकट्ठेहुए ।इन्होंने निश्चय किया कि "रूसने जो मार्ग ग्रहण किया है वह अनुचित नहींहै और उसके विरुद्ध कोई काम न करना चाहिये।" इस बातके प्रकाश होतेही रूसने रूमको दबा लिया और रूस रूमकी लड़ाईमें रूमकी हार होनेका इसीसे अवसर आया । केवल इतनाही नहीं किन्तु इस कार्यसे रूस बहुत बढ़गया और यह भी कहा जाता है कि यूनानके विरुद्ध रूमकी ओरसे सब राज्योंने पक्ष किया जिसका कारण भी यही संधिपत्र है ॥

अध्याय १७.

अवधका खालसा ।

सन् १८५६ ई० के फरवरी मासमें अवधके नव्वाबका राज्यखालसे कर वाजिद अलीशाहको गवर्नमेंटने पेन्शन देदी । इस कार्यमें नियम विरुद्ध चाल चलनेके कारण सरकार पर जो आक्षेप होता उससे बचनेके लिये भारत वर्षके गवर्नरजनरलने एक आज्ञापत्र प्रकाशित किया जिसमें लिखाथा कि "अवधके नव्वाबसे जिन बातोंमें संशोधन करनेकी सम्मति दीजातीहै उनपर ध्यान नहीं देतेहैं और उस राज्यमें लूट खसोट बहुत होतीहै । इन कारणोंसे अयोध्याका उपजाऊ प्रदेश नष्ट हुआ जाताहै । " गवर्नरजनरलने आरंभमें नव्वाबसे (१)अवधकी दीवानी फौजदारी तथा सैनिक सत्ता सदाके लिये अंगरेजी सरकारको देनाहोगा (२)नव्वाबका पद सदा स्थिर रखना और यह पद वंशपरंपरा तक चलने देनाहोगा (३) नव्वाबके साथ सम्मानपूर्वक वर्त्तना और लखनऊके महल तथा दिलखुश और बीबीपर बागमें केवल नव्वाबका अधिकार रहेगा किन्तु मृत्युका दंड देनेकाउन्हें अधिकार न होगा (४) नव्वाब वाजिद अलीशाहको उनकी प्रतिष्ठाकी रक्षाके लिये बारह लाख रुपये वार्षिक और महलकी रक्षाके लिये तीनलाख रुपया वार्षिक

गवर्नमेंटसे दिया जायगा और (५) उनके उत्तराधिकारियोंको बारह लाख वार्षिक पेन्शनके अतिरिक्त उनके पुत्र कलत्रादिके वेतनका स्वतंत्र प्रबंधकिया जायगा —इन शर्तोंसे संधि करना चाहाथा । इस संधिपत्रपर हस्ताक्षर करनेके लिये नव्वाबको तीन दिनकी अवधि दीगईथी । अवधि समाप्त होने उपरांत नव्वाबने संधिपत्र पर हस्ताक्षर नहीकिये । बस इसलिये अपनी आज्ञाके अनुसार गवर्नमेंटने अवध प्रदेशमें खालसा करलिया। नव्वाबको बारह लाखकी पेन्शन दी गई जिसे उन्होंने आक्टूबर माससे स्वीकार कर लिया । उससमय सरकारने यहभी प्रकाशित किया कि नव्वाब साहब जब तक जियेंगे उनका नव्वाब पद बनारहैगा किन्तु उनके पीछेसे उनके उत्तराधिकारी इस पदके अधिकारी न होंगे। और न उनके समान वार्षिक पेन्शन उनके उत्तराधिकारियोंको दीजायगी ॥

यह बात अवधकी प्रजाको पसंद न आई। एकवर्षबाद नानासाहबकी प्रेरणासे जो बलवा हुआ उसमें लखनऊकी सेनाका अधिक भाग बलवा करने में था और अयोध्या ही इस उपद्रवका केन्द्रथा । नेपालके जंगबहादुरने ९ हजारसेना भेजकर अवधका उपद्रव शांतकिया । और उनकी सहायतासे सरकारने अवधका राज्य फिर प्राप्तकिया ॥

अध्याय १८.

ईरान और चीनसे गवर्नमेंटके युद्ध ।

इसी वर्षमें भारतगवर्नमेंटको ईरानराज्यसे लड़ाई करनी पड़ी । ईरानराज्यने हिरातपर चढ़ाई कर सन् १८५५ ई० की २५ आक्टूबरको उसपर अपना अधिकार करलियाथा । भारत गवर्नमेंट उसकी इसचालको पसंद न करसकी क्योंकि गवर्नमेंटका कथनहै कि अफ़गानिस्तान और हिरात पर भारत वर्नमेंटके सिवाय दूसरे किसी का आधिपत्य नहीं है। इस युद्धमें ईरान राज्यकी हार हुई । और उसे लाचार होकर भारत गवर्नमेंटसे संधि करनीपड़ी । ईरानके साथ जो संधिपत्र हुआ उसकी शर्तें ये थीं—" हिरात नगर और अफगानिस्तानकी भूमि पर आधिपत्यका दावा ईरान राज्य छोड़ताहै, हिरात और अफ़गानिस्तानके राजाओंसे करलेने अपने नामपर खुतबा पढ़वाने और अपने सिक्के का वहां प्रचार करनेका दावा उसे अब स्वीकार नहीं है । और स्वीकार करताहै कि अबसे पीछे अफ़गानिस्तानके स्थानीय कामकाज में न पडूंगा और हिरात तथा अफ़गानिस्तानको स्वतंत्र गिनूंगा । अबसे अफ़गानिस्तान और हिरात राज्यके झगड़ोंका निपटार करनेके अंगरेजी सरकारको पंचायत

करना चाहिये ।" इस लेखपर हस्ताक्षर करने बाद अंगरेज़ राजदूतके तेहेरानके पीछे पहुंचने पर पहले अपमानोंके लिये ईरानका क्षमा मांगना ठहरा । सुना गयाहै कि ईरान शाहनेके अंगरेज़ दूतके विषयमें अपने प्रधान अमात्यको लिखाथा कि–" मिस्टर मरे मूर्ख और पागलहैं क्योंकि राज्योंका तक का अपमान करना उसने सीख लियाहै । और वह ऐसी मूर्खता करने लगाहै "॥

ईरान युद्धकी समाप्ति होतेही चीनपर चढ़ाई करनेका अवसर आया । चीन गवर्नमेंटपर अभिशाप यह लगायागया था कि उसने अंगरेज़ी झंडेका अपमान कियाहै । 'एरो' नामक जहाज़ में ७ अक्टूबर सन् १८५६ ई० को कितनेही चीनी कर्मचारी आये और उस जहाज़ मेंसे बारह मनुष्योंको पकड़लेगये । जहाज़के मालिकने उसपर अंगरेज़ी झंडा चढ़ाकर यह प्रकाशित किया कि यह जहाज़ अंगरेज़ीहै और चीनने इसका अपमान कियाहै । इसबातको चीनने न सुना और कहदिया कि "यह अंगरेज़ी जहाज नहीं है किन्तु चीनी जहाज़है । और इसे अंगरेज़ी झंडा चढ़ानेका अधिकार नहीहै।"मिस्टर जस्टिस मेकार्थी ने अपने इतिहासमें लिखाहै कि"चीन गवर्नमेंटका कथन सत्यथा। और जहाज़के मालिकने अपने लाभके लिये थोड़े समयके लिये कहींसे झंडा प्राप्तकरलियाथा।"परंतु कंटानके बंदरका अंगरेज़ी दूत बखेड़िया था और इसलिये उसने पेकिन स्थित मुख्यदूतको झूठी खबर देकर बहँका दिया था।जिस समय इस बातकी खबर इंग्लैंडमें पहुँची वहांके कितनेही राजनीतिज्ञोंने इस चालकी बहुत निन्दाकी थी परंतु लार्ड पामर्स्टनने एक ऐसा नियम प्रकाशित किया कि–"हम सच्चेहों वा झूँठे किन्तु अब तो अपनी टेकका निर्वाह करनाही चाहिये । " इस नियमको कितनेही स्वार्थी अंगरेजोंने पसन्द किया इसकारण पार्लियामेण्टमें पामर्स्टनके विरोधी न टिकसके । युद्धके अन्त में ब्रिटिश गवर्नमेंटका विजय हुआ । पांच बंदर फिर यूरोपियन व्यापारके लिये खोलनेका चीनपर दबाव पड़ा । और ईसाई पादरियोंको चीन राज्यमें धर्मोपदेश करनेकी स्वतन्त्रता मिलगई । इसी स्वतन्त्रता ने अनेक बार चीनमें लाखों ईसाइयोंका नाश करार चीन राज्यको मिट्टीमें मिलादिया ॥

अध्याय १९.

भारतवर्षका बलवा ।

क्रीमियांके युद्धमें हजारों मनुष्योंके नष्ट होनेसे खिन्न और विजयसे हर्षित इंग्लैंडकी प्रजाको जो सन् ५७ के बलवेकी एकाएक ख़बर मिली । उस वर्षसे

पहले भारतमें श्रीमतीका स्वतन्त्र शासन न था । किन्तु ईस्टइंण्डिया कम्पनी राज्य करती थी । भारतके प्रबन्धपर विलायतका कुछभी ध्यान न था । पार्लियामेंटको सेक्रेटरी आफस्टेट जिधर चलाते उधर चलती थी । लार्ड डलहौसी की रजवाड़ोंको खालसे करनेकी नीतिने देशमें हलचल मचा रक्खी थी । सन् १८५६ ई० में उनके उत्तराधिकारी लार्ड केनिंगूने शांति स्थापन करनेका बहुत कुछ प्रयत्न किया परंतु उनकी कुछ चली नही । और सन् १८५७ ई० के मई मासमें भारतवर्षमें बलवेकी आग एकदम भड़क उठी । इसके कारण अंगरेज़ ग्रंथकर्त्ताओंने जो दिखलाये हैं । उनमेंसे थोड़े ये हैं उनका कथन है कि भारत गवर्नमेंटने बहुतही अविचार और भूलभरी नीतिका अवलम्बन कियाथा । अफगानिस्तानकी चढ़ाईमें हारखाना, सिंध, पंजाब और नागपुरका खालसा और अवधको सरकारी राज्यमें मिला देना आदि कामोंसे प्रजाके चित्तपर बहुतही बुरा प्रभावपड़ा । बंगालकी सेनामें अधिक लोग अवधके रहनेवाले थे । वे लोग अवधमें सरकारी राज्य स्थापित करनेसे बहुतही दुःखित होगये थे । सेना और प्रजाके मनमें सरकारकी नीतिपर सन्देह होगया।इस अवसरमें गवर्नमेंटने एक नवीन प्रकारकी बंदूक सेनामें प्रचलितकी उसका कार्तूस हाथसे तोड़नेके बदले दांतसेकाटना पड़ताथा।सिपाहियोंको संदेह होगया कि ये कार्तूस गौ और सूअरकी चर्बीसे बनाये गये हैं और इन्हें दांत से कटवाकर सरकार हिन्दू मुसलमान सैनिकों का धर्म भ्रष्ट करना चाहती है । प्रसिद्ध इतिहास कर्त्ता मिस्टर टालवाइज ह्वीलरने लिखा है कि–" प्रमादवश कार्तूसों में गौ और सुअर की चर्बीका उपयोग हुआ था । सिपाहियोंने अज्ञानवश यह समझ लिया कि, अंगरेज़ लोग जान बूझकर हमारा धर्म भ्रष्ट करना चाहते हैं । दुर्भाग्यसे उनका भ्रम दूरकरने का सैनिक अफसरोंने शीघ्र प्रयत्न न किया । इसका परिणाम यह हुआ कि, कलकत्ते के निकट बारकपुर की सेना में हलचल मचगई । वहां के सैनिकों ने मकानों में आग लगादी । इसबात से सेनाध्यक्षकों की आँखें खुलगई और उन्होंने चर्बीवाले कार्तूसोंको बिलकुल बंद करनेकी आज्ञादी । परन्तु आगलग चुकी थी इसलिये सिपाहियोंने किसीभी प्रकार के कार्तूस पर विश्वास न किया "। इसके सिवाय यह भी कहा जाता है कि, रेलवे लाइने और तारको देखकर मूर्ख लोगोंने यह संदेह किया कि, सरकार हमें जादूसे वश करना चाहती है । बस कई एक इसबातको भी बलवे के अन्य कारणों में से एक समझते हैं ॥

बलवेकी आग प्रथम मेरठ में भड़की । वहांके बलवाइयों ने अंगरेज अफ्सरों पर गोलीमार कर कितनेही अंगरेज़ों का बधकरडाला । मेरठकी सेना वहांसे बलवाकर दिल्ली पहुंची । वहां जाकर उसने दिल्ली सम्राट् के एक वंशधरको जो सरकार से पेन्शन पाताथा अपना अफ्सर बनाया और उसीको भारतका सम्राट् निश्चित करलिया । भारतके गवर्नरजनरलने चीन जातीहुई अंगरेज़ी सेनाको उपद्रव की शांतिके लिये रोक लिया। इस सेना के आपहुंचने पूर्व पंजाबके लेफ्टिनेंट गवर्नर सर जान लारेंसने देशी सेनाके शस्त्र छीन लिये और दिल्ली विजयके लिये अपनी विश्वस्तसेना भेजी । सिक्खजैसी वीरजाति जो थोड़ेहो वर्ष पूर्व अंगरेजों से लड़चुकी थी गवर्नमेंट की भक्तरहकर तन और मन से सहायक हुई । सिक्ख और यूरोपियन सेनाने बड़ी कठिनता से दिल्ली में शांति स्थापित की ॥

दिल्लीसे चलकर उपद्रव लखनऊ पहुंचा । यह अवधकी राजधानी थी और गवर्नमेंट ने हालही में इसप्रान्त को लेलिया था इसलिये यहां बड़ी हृदयविदारक घटना हुई । बलवाइयों ने मारकूटकर यूरोपियनोंकी स्त्री बालकों सहित रेजिडेंसीके एक बंद मकान में घेर लिया। इससे भी बढ़कर कानपुर में हुआ । वहां स्त्री बालकों सहित एक सहस्रके लगभग यूरोपियन थे वहांके सरह्यूग व्हीलर सेनापति थे । विठूर के पदच्युत राजा नाना साहब जिनका गवर्नमेंटने गोदलेना स्वीकार नहीं कियाथा उनपर सेनापतिका विश्वास था । उनपर भरोसा कर व्हीलर साहब सब यूरोपियनों को लेकर एक अस्पताल में जिसके गिर्द मट्टीकी दीवालथी घुसबैठे । इनके पास पांचसो से अधिक स्त्री बालक और इनसे कम पुरुष थे । नानासाहबने बलवाइयों में मिलकर अस्पताल को घेर लिया । उनकी गोलियोंसे अस्पतालके भीतर यूरोपियन लोगोंकी लाशें बिछगई।स्त्री बालकोंको खुलीहुई धूपमें मिट्टीकी दीवारकी शरण लेनी पड़ी । बालबच्चों के सूखे मुख हरे करनेके लिये जो लोग अस्पतालके भीतर कुएँसे पानी लेने गयेथे वे बलवाइयोंकी गोलीसे मरकर कुएँकी शरण हुए । अंतमें नानासाहबने कहदिया कि यदि तुम लोग हमारी शरण आकर अस्पताल खाली करदोगे तो हम तुम्हें यहांसे जीवित निकल जाने देंगे । इसबातको यूरोपियनोंने स्वीकार किया और वे एक नौकामें बैठकर गंगाजीके उसपार जानेलगे परन्तु उपद्रवियोंने वहां भी उनका पीछा न छोड़ा और गोलियां मार २ कर नावके लोगोंको डुबोदिया । जो कुछ स्त्रियां वा बालक बच्चे बचाये थे उन्हें पकड़कर एक मकान में उनको बुरी तरहसे मार डाला । व्हीलर साहब के साथ के एक हजार मनुष्यों में से अपना दुखड़ा रोनेके लिये केवल चार मनुष्य बचने पाये ॥

इन बातोंको सुनकर भारत और विलायतके यूरोपियन लोगोंका क्रोध बहुत भड़का और वे उचित अनुचितका कुछ विचार न कर बदला लेनेपर उतारूहुए किन्तु उससमय भारतके गवर्नर जनरल लार्ड केनिंग् बड़े शांतचित्त और बुद्धिमान थे । उन्होंने अपने मनमें ठान लिया कि अपराधियों के साथ निरपराध नहीं मारे जाना चाहिये । और उन्ही के प्रयत्नसे बखेड़ा अधिक न बढ़ने पाया ॥

धीरे २ मामला सुधरनेलगा । भारतके दक्षिण भागमें उससमय शांति थी । अंतमें दिल्लीपर सरकारका फिर झंडा जा फरहराया परन्तु अभीतक लखनऊमें जो अंगरेज घिरे हुएथे उनकी दशा अच्छी न थी । सर जान लारेंसके भाई सर हेनरी लारेंस उपद्रवियोंके गोलेसे मारे जा चुके थे । उन लोगोंके पास खानेको एक दाना न था और ऐसा अवसर आगयाथा कि उन्हें लाचार होकर शत्रुकी शरण लेना पड़े । इस अवसरमें सहायताके लिये सेना आपहुँची । जनरल हेवलाकने ४०० सेनासे ५० हजार शत्रुओंका सामना कर बहुत दृढतासे लड़-कर उनके प्राण बचाये । इस कार्य में जनरल औटरमभी सहायक हुए । और दोनोंने मिलकर रेजिडेंसीमें घिरे हुए लोगोंके प्राण बचाकर लखनऊका विजय किया । परंतु इस युद्धमें जनरल हेवलाक घायल होकर मर गये । और सर को-लिन केम्प बेल भारतके प्रधान सेनाध्यक्ष नियत हुए । इनकी सहायताके लिये विलायतसे बहुत कुछ सेना आपहुँची थी इसलिये शनैः २ उपद्रव शांत हुआ । जिन लोगोंके बलवेमें संयुक्त होनेका थोड़ा भी प्रमाण मिला उनको फाँसीपर लटका दिया गया । सैकड़ों मनुष्योंके लटकने और लार्ड केनिंग्के समाश्वासन देनेसे उपद्रव शांत हुआ । नानासाहब न मालूम किधर भाग गये । उपद्र-वियोंका साथ देकर जिस व्यक्ति (शाह आलम) ने दिल्लीका सम्राट् बनना चाहाथा वह कैद किया गया । भारत वर्षमें ईस्ट इंडिया कंपनीकी जगह श्रीम-तीका शासन हुआ और भारत वर्षके लाट साहब और विलायतमें स्टेटसेक्रेटरी कौंसिलकी सम्मतिसे देशका शासन करने लगे । इस बखेड़ेके समय समस्त देशी राजा सरकारके राजभक्त रहे और नेपालने सहायता की ॥

भारत वर्षके बलवेका विषय इतना बड़ा है कि, उसे मैं इसपुस्तकमें विस्तार पूर्वक नहीं लिख सकताहूं । बंग भाषाके एक प्रसिद्ध लेखकने इस विषयमें पुस्तक लिखी है । उसका अनुवाद हिन्दीमें हो गया है । आशा है कि वह "श्रीवेंकटेश्वर" यंत्रालयमें छपकर शीघ्र प्रकाशित होगी ॥

अध्याय २०.

बलवेके विषयमें राज्ञीपतिकी सम्मति ।

जिस समय बलवेका संवाद इंग्लैंड पहुंचा वहांके लोगोंमें बड़ी हलचल मची। वहांसे भारतकी रक्षाके लिये १० हजार सेना भारतको विदा हुई । दंपतिको इस ससाचारसे बहुत कालतक बेचैनी रही और वे दम २ के समाचार गवर्नमेंटसे लेते रहे । उनको विशेष भय इस बातका था कि, बंगालकी समस्त (अस्सी हजार) सेना उपद्रव न कर उठे परंतु यह बात न हुई और दो लाख उपद्रवियोंपर अंतमें २४०० अंगरेजी सेनाने विजय किया॥

श्रीमतीके पति प्रिंस एलबर्टने भारत वर्षके उपद्रव की गर्मागर्मीके समय २७ जुलाई सन् १८५७ई० को प्रूशियाके राजा (आज कलके जर्मननरेशके दादा) प्रथम विलियमको एक पत्र लिखा था । उससे विदित होता है कि, दंपति इस उपद्रवका क्या कारण समझते थे और वे राजनीतिमें कितने कुशल थे । उसमें लिखाथा किः—

"आपने १७ तिथिके पत्रमें भारतवर्षकी गड़बड़के विषयमें संकेत किया है । इस लिये मैं अपने विचार प्रकट करना उचित समझताहूं । मैं यह मानताहूं कि, हमारे भारतशासन के गांभीर्य और उन कारणोंको जिनसे हम उत्तम कहला रहेहैं यूरोपियन लोग बिलकुल अपरिचित हैं ॥

"भारतवासी अपनी स्वतंत्रता रक्षित नहीं रख सकते हैं और न युद्धकरके उसे प्राप्तकर सकते हैं । कुछ कालसे नई २ जातों ने भारतवर्ष पर चढ़ाई कर जय प्राप्त किया है ऐसीरियन ईरानी और सिकंदर के शासनमें यूनानियों ने भारत पर आक्रमण कर वहां वालोंको जीता है तातारी, अरब और अन्य जातिने उनपर आक्रमण किया है । जेताओं ने वहां वालोंको अपने दबावमें डालकर उनपर अत्याचार किये हैं परंतु उन्हें जड़मेंसे उखाड़ा नहीं है । और न उन्हें अपनेमें मिलाया है । इस कारणसे वहांके लोग परस्पर मिले जुले रहने पर भी उनमें एक सामान्य प्रजाके समान एकत्रता नहीं है ॥

"जिन लोगोंका हृदय देशियोंके जंगली पनसे दुःखके मारे छिद गया है वे यदि देशियों पर चाहे जैसा अत्याचार करैं तो भी वे क्षमाके योग्य हैं । कोई भी मनुष्य उनका बचाव करनेमें समर्थ नहीं हो सकता है किन्तु जो लोग अपने घरोंमें शांतिपूर्वक निवास करते हैं और जिन्हें इस उपद्रवका कुछ भी कष्ट

उठाना नहीं पड़ा है और यदि उन्हें कुछ सहन भी करना पड़ा है तो केवल द्रव्यसंबंधी हानि, वे ही अधिक हलचल मचारहे हैं। इस कारणसे उत्तम प्रबंध करनेके कार्यमें मुख्य अपराधियोंको कठोरतम दंड देने बाद भी उन्हीकी ओरसे आक्षेप होनेका भय है ॥

"हिन्दू मुसलमानोंमें धर्मके विषयमें इतना अंतर है कि उन दोनोंका एक हो जाना असंभव है। स्वयं हिन्दू ही अपने जातिबंधनमें ऐसे जकड़े हुए हैं कि, उनमें भी एका होना कठिन है। भिन्न २ जाति एक दूसरे पर अत्याचार न करने पावे इस बातकी हम संभाल रखते है। न्यायालयोंमें गरीब अमीरको हम समान भावसे देखते हैं और देशके प्रत्येक भागके प्रत्येक व्यक्ति को किसी प्रकार के संदेह विना न्याय मिलनेका हम प्रयत्न करते है। इसके साथही हम प्रजाके भिन्न २ धर्म और सामाजिक नियमों में हस्ताक्षेप नही करते हैं। इनकारणोंसे ही हमारा आधिपत्य वहां स्थिर रहसका है। वहांपर अत्याचार बिलकुल नही है। मालपर बाहर से आते समय कर नही लिया जाता है। भारतवासियों पर केवल लवण करका बोझाथा सोभी उठादिया गया। पुरानी जमीदारियोंसे जकात और व्यापारसे कंपनी अपना रुपया इकट्ठा करती है ॥

" देशके लाभ और उन्नति के लिये अबतक कुछभी नहीं कियागयाहै किन्तु पुराने शासकोंने प्रजाको जो कष्ट दियेथे उन्हें यादकर वह आजकलके राजाको आशीर्वाद देती है अबतक इस बातकी जाँच होना शेष है कि उन लोगों के मुख्य धर्मों और रीतिको देखकर यूरोपियन नीतिके अनुसार उनमें कहांतक संशोधन किया जासकता है अथवा उसका प्रवेश होसकता है ॥

"थोड़े कालसे इन बातोंसे अलग रहनेके नियमका भंग किया गया है। रेल्वे और नहरें बनानेका लग्गा लगाया गया है। पाठशालायें स्थापित हुई हैं, सती होनेकी रीति बंद कीगई है, पुनर्विवाह नियमानुसार मानागया है, जगन्नाथके रथके नीचे मनुष्योंका कुचलना बंद किया गया है। इन कामोंका अर्थ हिन्दुओंने ऐसा किया है कि इंग्लैंड उनके धर्मको दबाकर ईसाई मत फैलाना चाहता है। मिनीआ राइफल नामकी बंदूकोंमें कार्तूस बिना प्रयास घुसजायँ इस अभिप्रायसे चर्बीमें डुबोये जातेहैं। इसीसे मामला बिगड़गया है। सेनाके चित्तमें इस बातसे विचार होगया है कि उन्हें धर्म भ्रष्ट करनेका प्रयत्न कियाजाता है क्योंकि उनके मुखमें चर्बी वा मांस जानेसे वे धर्मभ्रष्ट होते हैं ॥

"भारतवर्षकी सेनामें मदरास और बंबईकी सेनासे बंगालकी सेना बढ़ी चढ़ी है। वे सैनिक उत्तम जातिके हैं। एक २ बैटालियनमें ४०० ब्राह्मण देखे जातेहैं।

मध्य शताब्दियोंमें पोप अथवा जर्मन साम्राज्यकी ओरसे जातिच्युत करनेका विषय जिस अर्थका बोधक था वही अर्थ उनमें है । अर्थात् जो लोग जातिभ्रष्ट होजातेहैं उनका सांसारिक और राजकीय बातोंमें मृत्युतुल्य होना मानाजाता है । इसकारण बंगालसेनाके उपद्रव करने का हमें कुछ आश्चर्य नहीं है । सरकार के लिये बुरे विचार रखनेवाले मनुष्य उपद्रवियोंमें मिलगयेहैं । किन्तु किसीभी जगह की प्रजा उनमें संयुक्त नहीं हुई है । वह कहती है कि ब्रिटिश गवर्नमेंट पर प्रजाका संतोषहै । .... इस भयको दूर करनेमें हम शक्तिमान् होंगे और मुझे दृढ निश्चय है कि हम शक्तिमान् होंगेही........तबही इसका परिणाम कदाचित् अच्छा होगा ।........कंपनी अब स्थिर रहनेमें कदाचित् समर्थ न होसकेगी। इस बातमें संदेहहै । जीते रहैं गे तो देखैं गे" ॥

इसके सिवाय प्रिंस एलबर्टने रानीका ढिंढोरा तैयार करने और उसका संशोधन करनेमें जो भारतका उपकार किया वह अन्यत्र प्रकाशित है । इस पत्रके पहुंचनेसे जर्मनीके सम्राट् भारत वर्षकी सच्ची स्थिति जाननेमे समर्थ हुए और इसीसे भारतवासियों तथा इंग्लैंडपर जो भांति २ के कलंकोंकी यूरोपमें गप्पें उड़तीं थीं वे बन्द होगईं ॥

अध्याय २१.

भारतके नवीन प्रबंधके विषयमें श्रीमतीके विचार ।

अंगरेज़ों का भारतपर क्रोध ।

उपद्रव शांत होगया । भारतवर्ष की प्रजाके सुखसे निवास करने का समय आया । इंग्लैंडमें उपद्रवके विषयकी चिन्ता मिटी तब भारतके भावी प्रबंधके लिये इंग्लैंडके राजनीति कुशल विद्वानोंके शिर पचानेका अवसर आया। श्रीमतीके पतिको भारत प्रबंधकी द्विविधा पसंद न थी । बलवा समाप्त होतेही मिस्टर डिसरायलीने प्रधान अमात्य लार्ड पामर्स्टनसे बलवेका कारण और प्रबंधके विचारोंकी रिपोर्ट मांगी । और उत्तर न पाकर उन्हों ने २७ जुलाईको सम्मति दी कि 'अबसे भारतका प्रबंध रानीको अपने हाथमें लेना चाहिये । आक्टूबर मासमें लार्ड पामर्स्टनने लिखाकि—" गोलार्द्धके दूसरे भागके एक विशाल प्रदेशपर दो मंत्रिदलोंसे राज्य करनेमें झंझट और कठिनता अधिकहै । इनमेंसे एकका आधार पार्लियामेंटपर है और दूसरी केवल व्यापारसेही प्रयोजन रखतीहै । वह वर्षमें केवल दो तीन बार एकत्रित होतीहै उससे वर्ष भरकी घटनाओंको देखते राज्य चलता नहीं दीखताहै । इसलिये मेरी योजना यह है कि, पार्लियामेंटके आगामि अधिवेशन में एक बिल उपस्थित कियाजाय जिससे

वर्त्तमान प्रबंधको उठाकर भारतको रानी और पार्लियामेंटके सीधे अधिकारमें लिया जाय। इस बातसे कंपनीके संबंधी विरोध करैंगे और पार्लियामेंटके मेंवर भी इसवातपर ज़ोरदेंगे इसलिये कार्य स्थिर करने पूर्व अच्छीतरह विचार होना चाहिये"। लार्डपामर्स्टनने इस चर्चापर विशेष रूपपर ध्यानदिया और श्रीमती और उनके पतिसे अनेक वार मिलकर इस विषयमें वादानुवाद किया। ३ दिसंवर सन् १८५७ ई० को पार्लियामेट खुली और १७ को लार्ड पामर्स्टनका विल श्रीमतीकी सेवामें उपस्थित किया गया॥

इस वीचमें भारतके गवर्नर जनरल लार्ड केनिंग्का पत्र २५ सितंबरका लिखाहुआ श्रीमतीकी सेवामें पहुँचा। उसमें लिखा था किः—

"जिन लोगोंको अधिक उत्तम उदारण उत्पन्न करना चाहिये उनमें भी पागल पन और अंधा कपट देखाजाताहै ऐसी स्थिति हमारे स्वदेशियोंकी देखकर मुझे लज्जा आतीहै।एक भी मनुष्य ऐसा विचार करता नही दीखताहै जो मुख्य उपद्रवियों के अतिरिक्तचालीस पचास हज़ार मनुष्योंको फांसी वा गोलीसे मारडालनेका काम युक्तियुक्त वा उत्तम न समझताहो।जो लोग इस विषय में अधिकतर कहासुनी अथवा लिखापढ़ी करतेहैं उन्हें नही सूझताहै कि, भारतवर्षके प्रवंध तथा सेना विभागमें देशियोंको नौकर रखकर कामलिये विना और उनपर अधिकांशमें विश्वास रक्खेविना इंग्लैंडके शासकके लिये भारतपर अधिकार रखने अथवा यहां शासन करनेका काम शक्तिसे वाहरहै। प्रजाको सदाभयभीत रखना हानिकरहै—इस नियमपर जो लोग लंबे २ लेख लिखनेमें लगेहुएहैं वे गत आठ मासमें दुर्घटनाके इतिहास संबंधी पुस्तककी काली पृष्ठोंपर प्रकाश डालनेवाले हिन्दू और मुसलमानों की कृपा और उदारताके असंख्य उदाहरणोंको भूलतेहैं। यह वात उन्हें शोभा देनेवाली नही है"॥

इंग्लैंड और भारत वर्षके अंगरेज़ इस देशके हजारों मनुष्योंको फांसी दिलाना चाहते थे। और इस उपद्रवने उनको इतना उकसा दिया था कि देशका सर्वनाश करनेमें उनका संतोष था। इस कारण लार्ड केनिंग् की सम्मति उनको रुचिकर न हुई। इसलिये वे लोग लाट साहव की निन्दा कर उनकी भारत वर्षसे वदली करादेनेकी पुकार उठाने लगे। ऐसे अवसर में श्रीमतीने इस पत्रको पाकर लार्ड केनिंग्के विचारकी प्रशंसाकी और उनको इसके उत्तरमें एक पत्र लिखाः—

यहाँकी प्रजाके अधिक भागकी ओरसे समस्त भारत वर्षकी प्रजा, तथा समग्र देशी सेनापर भेदविना, जो "ईसाइयोंकी चालका अयोग्य ढंग, वतलाया जाताहै उनके लिये लार्ड केनिंग्ने खेद और क्रोध प्रकाशित किया उसमें मैं सहानुभूति प्रकाशित करतीहूं। परंतु प्रजाका ऐसा ढंग अधिक काल

तक नहीं रहैगा । निर्दोषस्त्रियों और बालकोंपर जैसा कुछ अत्याचार हुआहै उसके लिये किसीका भी रक्त खालेविना नहीं रहसकताहै । इस विषयकी चर्चाने यहांकी प्रजाके क्रोधको उत्पन्न कियाहै । ऐसे घृणित काम करने वालोंके लिये कैसाभी कठोर दंडदिया जाय अधिक नहीं है और चाहै जैसा खेद हमारे चित्त को उत्पन्न हो परंतु इसप्रकारके समस्त अपराधियों को कठिन दंड देनाचाहिये ॥

"परंतु सामान्य प्रजा—शांति पूर्वक निवास करने वालों—और जिन परम कृपालु देशियोंने हमारी सहायता कीहै, भागकर छिपने वालों को जिन्होंने आश्रय दियाहै और जिनका बर्त्ताव विश्वास योग्य और सच्चा रहाहै उन सबपर अत्यंतर कृपा करनी चाहिये । उन्हें जानना चाहिये कि किसी भी जाति का तिरस्कार काले रंगका चमड़ा देखकर किया नहीं जाता है बिलकुल नहीं किया जायगा किन्तु उनकी रानीकी सर्वोत्तम इच्छा उन्हें सुखी, संतुष्ट तथा उन्नति युक्त देखनेकीहै" ॥

भारत वर्षकी प्रजापर केवल इस देशके अंगरेज़ और इंग्लैंडकी प्रजाकाही कोप न था किन्तु इसका प्रभाव वहांके मंत्रिमंडलपर भी पडाथा । प्रजाकी इच्छाके प्रवाहमें पड़कर इंग्लैंडके मंत्रिमंडलने निश्चय कियाथा कि, भारत वर्षकी प्रजाको बलपूर्वक ईसाई बना लेना चाहिये और सन् १८३३ ई० में पार्लियामेंटने चार्टर नामकी जो सनद भारतवर्षको दीथी उसेभी वे लौटा लेना चाहतेथे । इस चार्टरका वही आशयथा जो श्रीमतीके ढिंढोरेका है । इस विषयके ढिंढोरेकी पांडु लिपि तैयार कर हस्ताक्षरके लिये श्रीमतीके पास भेजी गईथी । इसको श्रीमतीने बिलकुल नापसंद किया । इस विषयमें आपने पतिकी सम्मतिसे विशेष काम लिया और मंत्रिमंडलके क्रोधको दबानेके साथही उनको अपना कर्तव्य अच्छीतरह समझा दिया । इस वादानुवादके समय लार्ड पामर्स्टनका दल टूटकर लार्ड डर्बी इंग्लैंडके प्रधान अमात्य हुए थे इसलिये श्रीमतीकी ओरसे उनके प्राइवेटसेक्रेटरी लार्ड माम्सबरीने इस पांडु लिपिके संशोधनके लिये बेबलस बर्गसे १५ अगस्त सन् १८५८ ई० को एक पत्र उन्हींके नाम लिखा जिसका आशय यह है:—

१ "इस [भारत वर्ष] देशका कोईभी निवासी अथवा श्रीमतीकी उस देशमे रहनेवाली असली प्रजा धर्म, जन्म भूमि, कुल, रंग अथवा इनमेंसे कोई रखनेसे किसी स्थान पद वा नौकरी पानेके लिये कंपनीके शासनमे अयोग्य न समझी जायगी" ॥

यह आईन सन् १८३३ ई० मे पार्लियामेंटके लार्ड और कामन्स हाउसोंने पास किया ॥

"भारतवर्षमें प्रकाशित होनेवाले ढिंढोरेकी पांडु लिपिके प्रतिवाद और त्रुटियां आपको समझानेका कार्य श्रीमतीने मुझको सौंपा है । आशा है कि, आप उसे अपनी प्रौढभाषामें लिखेंगे । इस बातसे श्रीमतीको आनन्द होगा । ढिंढोरेको तैयार करते समय आपको ध्यान रखना चाहिये कि, दश करोडसे भी अधिक एशिया निवासियोंपर स्वतंत्र शासनका आरंभ करने बाद तथा भीतरी भयंकर संग्रामके अनंतर एक स्त्री राजकर्त्री उन लोगोंसे संभाषण करती है । भविष्यत्में किन नियमोंपर भारतका प्रबंध किया जायगा उसका स्पष्टीकरण कर उनके साथ आगेको कैसा वर्त्ताव किया जायगा जिसका इकरार करना है। ऐसे पत्रके लिखनेमें उदारता, परमार्थ और धर्मसंबंधी विचारोंको स्वतंत्रता पूर्वक प्रकट करना चाहिये । और भारतवासियोंको अंगरेज़ी मुकुटकी सत्ता नीचे अंगरेजी प्रजाके समान गिनकर उन्हें कैसे स्वत्व दिये जायँगे और इससे उनकी कहांतक उन्नति होगी । यह बात उन्हें समझाना चाहिये" ॥

इससे श्रीमतीके विचार स्पष्ट रूपपर विदितहोगये । संशोधनसे पूर्व जो पांडुलिपि तैयार हुईथी उसमें लिखाथा कि "देशीधर्मों की जड़ काटडालने की सत्ता अंगरेज़ी सरकारको है । लार्ड माम्सबरीने लिखाकि " यह बात श्रीमतीको पसंद नहीहै श्रीमती की इच्छा है कि देशीधर्मके विषयमें यह लिखना चाहिये कि श्रीमती अपने धर्मपर बड़ा प्रेम रखती हैं और धर्मसे वह जैसा सुख और संतोष प्राप्तकरतीहैं उसके कारण वह देशीधर्मपर आघात करनेका यत्न बिलकुल न करेंगी । और यह अपने सेवकोंको सदा इसी तरहका वर्त्ताव करनेकी आज्ञा देंगी" ॥ असल मसौदेमें यह भी बात थी कि—" दीनता दूरकरने का भी सरकार प्रयत्न करेगी । " इसके विषयमें लार्डमाम्सबरीने लिखाकि—" इनशब्दोंसे लेखकका भावार्थ स्पष्ट नहीं होताहै इसलिये इसवाक्यको विस्तारपूर्वक लिखनेके साथही उसमें यह भी उल्लेख होना चाहिये कि रेल्वे, तार और नहर आदिकार्य प्रजाकी उन्नति करने वालेहैं । जिससे वहांके वहमी मनुष्योंके चित्तका संदेह दूरहो " ॥

अंतमें श्रीमती की इच्छाके अनुसार लार्ड डर्बीने पांडुलिपिका संशोधन कर दिया । उसमें इतनी वृद्धि और कीगई कि—" श्रीमती अपनी अन्य प्रजाके लिये जिसतरह कर्तव्य बद्ध हैं उसी प्रकारके कर्तव्य से अपने को वह भारतवर्षके लिये बँधी समझतीहैं । हमारी प्रजाकी भलाईकी इस इच्छाके अनुसार वर्त्ताव करनेकी शक्ति सर्व शक्तिमान् परमात्मा हमें और हमारे अधीन कर्मचारियों को प्रदान करे" ॥

"अमृतबाजारपत्रिका" को विदित हुआहै कि, इंग्लैंड में भारतके प्रबंधके विषयमें जिस समय हलचल मचरही थी और वहांकी प्रजा भांति २ की तर्के कर भारतवासियोंको अधिकतर दवानेकी सम्माति देते थे श्रीमतीको ८नवंबरको सोते समय अचानक महात्मा ज्यार्जके दर्शन हुए । उन्होंने महारानीको अनेक तरहपर समझा बुझाकर भारतवर्षके शासनके विषयमें योग्य सम्मति दी थी। श्रीमतीकी इन महात्माके साथ जो बातचीत हुई उसकी रिपोर्ट मुद्रित होकर मंत्रिमंडलके मेंबरोंको दीगई थी जिसीका फल यह ढिंढोराहै । कुछभी हो इतना अवश्यहै कि महारानीने केवल ढिंढोरेका संशोधन करते समयही दबावनहीं डालाथा वरन इंग्लैंडके मंत्रिमंडलको बलवेके समय भारतमें गोरी सेना बढ़ाने और इंग्लैंडकी सेना दुगुनी करदेनेकी सम्मति भी दी थी और साथमें ही कहदिया था कि जो यहांकी सेना न बढ़ाकर भारतकी रक्षाके लिये भेजदी जायगी तो इंग्लैंड में कोई नया उपद्रव खड़ा हो जायगा । इस आज्ञासे इंग्लैंडको बहुतलाभ हुआ॥

अध्याय २२.

श्रीमतीका ढिंढोरा ।

गत अध्यायमें जिस ढिंढोरेके लिखेजानेके विषयमें इतने वादानुवाद का वर्णन हुआहै वह भारतवासियोंके और विशेषकर हिन्दी पाठकोंके अधिक जानने योग्य है । उसी ढिंढोरेपर भारतवर्षके प्रबंधका आधारहै वही देशियोंके लिये सुशासनका पट्टा है । इस कारण उसका अविकल भाषान्तर यहांपर प्रकाशित करना परमावश्यकहै । यह ढिंढोरा १ नवंबर सन् १८५८ ई० को भारतवर्षके वाइसराय और गवर्नर जनरल लार्ड केनिंगने प्रयागमें प्रजाको सुनाया था और इसका भाषानुवाद भारतवर्ष भरके मुख्य २ नगरोंमें उसीदिन सुनाया गयाथा उसका हिन्दी अनुवाद यहहै:—

भारतवर्षके राजा सर्दार और प्रजाके नाम श्रीमती रानी और उनकी कौंसिलका ढिंढोरा ।

ईश्वरकी कृपासे ग्रेट ब्रिटेन और आयर्लैण्डके संयुक्त राज्य और यूरोप, एशिया एफ्रिका, एमेरिका तथा आस्ट्रेलिया और इनके अधीन अन्य, उपनिवेशोंकी रानी तथा धर्मकी रक्षका विक्टोरिया ॥

अनेक भारी कारणोंसे पार्लियामेंटकी दोनों सभाओंकी सम्मति और स्वीकार प्राप्तकर भारतवर्षके देशका जो प्रबन्ध अबतक हमारी ओरसे ट्रस्टीके तौरपर मान्यवर ईस्ट इंडिया कम्पनी चलाती थी उसे अबसे हमने अपने हाथमें लेना निश्चय किया है ॥

अब इसलिये हम इस लेखद्वारा प्रकट तथा स्वीकार करती और प्रतिज्ञा करती हैं कि, ऊपर लिखी हुई सभाओंकी सम्मति और स्वीकार करनेसे ऊपर लिखा प्रबन्ध हमने अपने हाथ में लिया है । और उक्त देशोंकी हमारी समस्त प्रजाको हम आज्ञा देती हैं कि, उन्हें सदा शुभचिन्तक (वफादार) रहना और हमारी, हमारे वारिसों और प्रतिनिधियोंकी ओर सच्चा भक्तिभाव रखना और अबसे पीछे हमारी ओरसे हमारे उक्त देशोंका प्रबन्ध करनेके लिये जो व्यक्ति नियतहों उनकी सत्ताका आदर करना चाहिये ॥

हम अपने विश्वासपात्र, प्यारे भाई और मंत्री चार्लस जान वाइकौंट केनिंग् की शुभचिन्तकता, चातुर्य और न्यायपर विशेष विश्वास और भरोसा रखकर इस लेखद्वारा हमारे उक्त देशोके लिये हमारा प्रथम वाइसराय और गवर्नर जनरल नियत करती है । और हमारे नामपर उन देशोंका प्रबन्ध करने और हमारी ओरसे एक मंत्रीद्वारा समय २ पर जो आज्ञायें वा सूचनायें मिलै उनके आधीन रहकर हमारे नामपर सामान्यतः काम करनेकी सत्ता देती हैं ॥

और मान्यवर ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेवामें प्रबन्ध तथा सेना विभागके भिन्न २ पदोंपर जो लोग इस समय काम करते हैं उन्हें इस लेखद्वारा अपने २ पदों- पर स्थिर करती हैं परंतु उनके भविष्यत्का आधार हमारी कृपापर रहैगा और अबसे पीछे जो आईन बनाये जावें उनके अधीन रहकर उन्हें चलना पड़ैगा ॥

भारतवर्षके देशी राजाओंको इस लेख द्वारा हम प्रकट करती हैं कि उनके साथ जो कुछ संधियां मान्यवर ईस्ट इंडिया अथवा उसकी आज्ञासे कीगई हैं उन्हें अथवा जो प्रण उनके साथ किये गयेहों उन्हें हम स्वीकार करती हैं । और उन्ही के अनुसार निरंतर वर्त्ताव किया जायगा और उन्हीके अनुसार वेभी संधिपत्र के पाबंद रहैं गे ऐसी हम आशा रखती हैं ॥

इस समय हमारे आधीन जितने देश हैं उनका विस्तार बढ़ाना हम नहीं चाहती हैं । और जैसे हम हमारे अधिकृत देशोंपर अथवा हमारे स्वत्वपर किसीको आक्रमण न करने देंगी वैसेही औरोंके देशपर अथवा स्वत्वपर हस्ताक्षेप करने को हम स्वीकार न करैंगी । देशी राजाओं का स्वत्व प्रतिष्ठा और सम्मानको हम अपने स्वत्व प्रतिष्ठा और सम्मानके बराबर समझैंगी । और

हम चाहती हैं कि, वे भी हमारी प्रजाशांति और सुप्रबंध से उपार्जित उन्नति और सांसारिक सुधार के फल प्राप्त करैं ॥

हमारे भारतीय देशों के निवासियोंके लिये हमारी अन्य प्रजाओं के समान कर्त्तव्यसे हम अपने तई प्रतिबद्ध समझती हैं । और सर्व शक्तिमान् ईश्वरके आशीवार्दसे उन कर्त्तव्योंको सत्यता और शुद्ध अंतःकरणसे हम पालन करैंगी ॥

ईसाई धर्म की सत्यता पर दृढ विश्वास रख और उस धर्म से मिलते हुए संतोष को मानपूर्वक स्वीकार कर हमारा धर्म हमारी किसीभी प्रजा को पालन कराने का दबाव डालनेके हमारे स्वत्व अथवा इच्छाका समान रूप पर हम निषेध करती हैं । हम रानी के पद से हमारी इच्छा और हर्ष प्रकट करती हैं कि, किसी पर भी उसके धर्मसंबंधी मत अथवा क्रियाके लिये किसी प्रकार पर पक्षपात न होगा अथवा कष्ट न दिया जायगा किन्तु सब लोगों को आईन की रक्षा अथवा अपक्षपाततासे भोगने देना होगा और हमारे आधीनस्थ कर्मचारियों को हम दृढ आज्ञा देती हैं कि, उनको हमारी किसी भी प्रजाके धर्मसंबंधी मत वा क्रियामें हस्ताक्षेप न करना चाहिये यदि कोई करैगा तो हमारी कठिन से कठिन अप्रसन्नता का पात्र होगा ॥

और हम ऐसी आज्ञा देती हैं कि जहां तक होसकै किसी भी जाति वा धर्म की हमारी प्रजाओं को उनकी शिक्षा, बुद्धिमता और प्रामाणिकताके कारण वे किसी पदका कार्य योग्य रीतिपर संपादन करने के योग्य हों उनपर उन्हें किसी प्रकारके प्रतिबंध बिना और पक्षपात रहित होकर नियत करना चाहिये ॥

भारत वर्ष के देशी अपने पूर्व पुरुषों से प्राप्त भूमि के लिये जैसा प्रेम रखते हैं उसे हम जानती हैं और उसका आदर करती हैं । और गवर्नमेंटके उचित स्वत्वके आधीन रहकर उन्हें इस विषयके समग्र स्वत्व भोगनेमें रक्षा प्राप्त हो ऐसी हमारी इच्छा है । और हम आज्ञा देती हैं कि आईन बनाने तथा प्रबंध करनेमें भारतवर्षके लोगों के वास्तविक स्वत्व और रीतिका योग्य आदर करना चाहिये" ॥

लोभी मनुष्योंने झूंठी खबरोंसे अपने देशी भाइयोंको ठगकर उनसे खुल्लं-खुल्ला उपद्रव करा जो दुर्दशा और दुष्टता को उत्पन्न किया है उसके लिये हम बहुत ही खिन्न हुई हैं । उस उपद्रवको रणभूमिमें दबाकर हमारी शक्ति प्रकाशित हुई है । जो लोग बहँकानेमें आगये थे वे शुभचिंतकताके मार्ग

पर आनेके इच्छुक हैं । उनके अपराध क्षमाकर उनपर हमारी दया दिखाने की हम इच्छा रखती हैं" ॥

रक्त प्रवाह रोकने और हमारे भारत वर्षके राज्यमें शीघ्रतासे शांति स्थापन करने की इच्छासे एक प्रान्तमें तो इस समयके पूर्वसे ही हमारे वाइसराय और गवर्नर जनरलने उचित शर्तोंसे गत उपद्रवमें संयुक्त होनेवालों और हमारी गवर्नमेंटका अपराध करनेवालोंमें से अनेकोंको क्षमा प्रदान करना प्रकाशित किया है। और प्रकट किया है कि, जिनका अपराध क्षमाके योग्य न होगा उन्हें ही दंड दिया जायगा । हमारे वाइसराय और गवर्नर जनरल के इस कामको हम पसंद और स्वीकार करती हैं और इसके सिवाय नीचे लिखी आज्ञा देती हैं ॥

अंगरेज़ प्रजाके वध करने अथवा वध करनेके कार्यमें साथ देनेके जो अपराधी हैं वा होंगे उनके सिवाय सब लोगों पर हम कृपा दिखलावैंगी । बध करने वालों पर दया करना न्यायके विरुद्ध है ॥

जिन लोगोंने प्रसन्नता पूर्वक खूनियोंको आश्रय दिया है अथवा जिन्हेंने उपद्रवियोंके मुखिया बनने अथवा उन्हें भड़कानेका काम किया है उन्हीके प्राणकी रक्षा नही की जायगी परंतु उनपर दंड करते समय इस बातपर ध्यान दिया जायगा कि वे किन संयोगोंसे राजद्रोही हुए हैं । और स्वार्थियोंकी फैलाई हुई झूंठी खबरोंसे वहँककर जिनका अपराध किया हुआ प्रमाणित होगा उनके साथ बहुत कुछ रिआयत की जायगी ॥

जिन अन्य लोगोंनें सरकारके विरुद्ध शस्त्र उठाये हैं उन्हें किसी तरहकी शर्त बिना क्षमा करनेमें हम उनके लिये आना कानी करती हैं और हमारे मुकुट और प्रतिष्ठाके लिये जिन्होने अपराध किया है उन्हें हम जाने देती हैं शर्त केवल यही है कि वे लोग अपने २ घरोंको लौटकर शांतिकें काम काजोंमें लगैं ॥

रानीके पदसे हम अपनी इच्छा प्रकाशित करती हैं कि, यह कृपा तथा क्षमा आगामि १ जनवरीतक में जो इन शर्तोंके अनुसार काम करैगा उनपर की जायगी ॥

ईश्वरके आशीर्वादसे देशमें सर्वत्र शांति स्थापित हो तब भारत वर्षमें शांतियुक्त उद्योगोंका प्रचार करने प्रजाका उपयोगी मकानादि बनवाना, तथा सुधार करने और देशका प्रबंध उसमें बसती हुई हमारी समस्त प्रजाओंके

लाभके लिये चलाना हम अंतःकरणसे चाहती हैं । उनकी उन्नतिमें हमारा बल है उनके संतोषमें हमारी स्थिरताहै और उनका आनन्दही हमारा उत्तम बदला है । सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर हमारी यह इच्छा पूर्ण करनेमें हमें तथा हमारे अधीन अधिकारियोंको शक्तिप्रदान करै ॥

यह ढिंढोरा पढ़ेजाने बाद उसी मासकी ३ तारीखको कलकत्तेसे श्रीमतीको शुभ चिंतकता पूर्ण अभिनन्दन पत्र भेट करनेके लिये एक सभा इकट्ठी हुई । उसमें उपस्थित लोगोंमेंसे एक देशी व्यापारीने जो कुछ कहा उससे श्रीमतीके ढिंढोरेका प्रजापर उत्तम प्रभाव पड़ना विदित होताहै । उसने कहा कि–"श्रीमतीका ढिंढोरा मैंने बहुतही हर्षपूर्वक पढ़ा । उससे मुझे परम आनन्द हुआ है और उसके अंतिम वाक्यसे मेरी आँखोंमें आसूं भर आये हैं । मैंनेअपने जीवन भरमें ऐसा उत्तम लेख देखनेका सौभाग्य प्राप्त नहीं किया है । इसमें बहुतही न्याय और उदारताके नियम प्रकाशित हुए हैं । उसकी प्रत्येक पंक्तिमे दया और न्याय भराहुआ है । हमें उत्तम आशा और धन्यवाद पूर्वक उसका आदर करना योग्य है । श्रीमती जब यह कहती हैं कि–तुम्हारी उन्नतिमें हमारा बल है......" तब आप लोगोंको विश्वास रखना चाहिये कि भारतवर्षके भविष्यके लिये उसके बालकोंको बहुत कुछ उत्तेजना प्राप्त करनी हैं और बहुत कुछ आशा बांधनी है । इस भाषासे कौन भाषा अधिक उत्तम, अधिक सुंदर और श्रीमतीके वचनोंको शोभा देने वाली होसकती है ? चलो हम सब मिलकर शुभचिन्तनाके साथ उनके पैरों पड़ें और बहुतही बड़े धन्यवादके साथ अतिशय बड़े भक्तिभावसे नवीन राज्यका आदर करैं" ॥

अध्याय २३.

विलायत और भारतके बीचमें तार ।

एफ्रिकाके सिहाखण्डमें सन् १८५८ ई०को दो सरोवरोंकी खोजकीगई थी।इस वर्षके अगस्त मासकी३तारीखको कप्तान स्पीक और ग्राटने विक्टोरिया नियांजा नामक झीलको ढूंढ निकाला। इस झीलका विस्तार सीलोन के टापू से भी अधिक बड़ा है । इसीसे नील नदी को पानी मिलता है । इसी वर्ष में प्रसिद्ध अंगरेज़ यात्री कप्तान बर्टननें 'टेन्गानिका' नामक सरोवर का पता लगाया था । इसमें से कांगो नामक नदी बहती है ॥

सन् १८५८ ई० के अगस्त की १६ तारीख को अटलांटिक महासागर में तार लगाया जाकर उस दिन से इंग्लैंड और एमेरिका में तार संवादका आवागमन आरंभ हुआ था। श्रीमती ने इसबातके हर्ष में एमेरिकाके प्रेसिडेंट को प्रथम संवाद भेजकर उन्हें बधाई दी। उसके उत्तरमें प्रेसिडेंट मिस्टर बकानन ने लिखा कि यह विजय युद्ध में विजय प्राप्त करने से भी बढ़कर है। इसबात से केवल इंग्लैंड और एमेरिका में ही हर्ष नहीं हुआ वरन् यूरोप भरके लोग हर्षित हुए थे क्योंकि दो देशों के बीच में इतने अंतर पर तार लगने का यह पहला अवसर था॥

उस समय तक भारत और विलायत के मध्य में भी तार का संबंध न था। समस्त कामकाज पत्रद्वाराही होता था। सन् १८५९ ई० की २८ मई को विलायत से अदन तक तार तैयार हुआ। प्रथम संवाद श्रीमतीने अदनके पोलिटिकल रेज़िडेंट के नाम भेजा था। इसके अनंतर करांची और मस्कत और मस्कत और अदन के बीच में तार लगाकर विलायत का भारत से सीधा संबंध होगया और जहां विलायत से भारत तक समाचार पहुँचने में कई सप्ताह लगते थे वहां घंटों में काम होने लगा॥

अध्याय २४.

स्टार आफ़ इंडिया की उपाधि और विश्व विद्यालय।

ढिंढोरा प्रकाशित होनेके अनन्तर सन् १८५९ ई० के मई मासकी १८ तारीख़ को श्रीमतीने भारत वर्ष के वाइसराय और गवर्नर जनरलके नाम एक पत्र लिखकर उपद्रव शांत होनेकी बधाई दी थी और वाइसराय तथा अन्य कर्मचारियों के सुकार्यों की प्रशंसा की थी। और देशी राजाओं से मित्रता बढ़ानेके अभीष्ट से इंग्लैंड के "गार्टर" "थिलस और सेंट पेट्रिक" के समान उपाधियाँ नियत करनेके विषयमें वाइसरायकी संमति मांगी थी। इस आज्ञापत्र का उत्तर भारतके वाइसराय लार्ड केनिंगने ४ जुलाई को इसप्रकार दिया था:—

"इस देश में उपाधि के साथ भूमि अथवा रुपया प्रदान करने की चाल है। इसकारण केवल उपाधिका यहां के लोगों में कुछ मूल्य न होगा। ऐसा मुझे भय है इसलिये मेरी सम्मति यह है कि, इसप्रकार की उपाधिको श्रीमती भी धारण करें

और इंग्लैंडके अन्य लोगोंको भी दीजावें। इस कार्यसे देशियोंकी दृष्टिमें इसका आदर होगा" ॥

इसी सूचनाके अनुसार २५ जुलाई सन् १८६१ ई० को "स्टार आफ् इंडिया" की उपाधि स्थापितकर यह आज्ञा दीगई कि, जिस दिनसे श्रीमतीने भारतवर्षका शासन अपने हाथमें लिया है उसी दिन (१ नवम्बर को) प्रतिवर्ष यह उपाधि वितरण करना चाहिये । प्रथम वार श्रीमतीने विंडसर केसलमें एक बृहत् दर्बार एकत्रितकर अपने हाथसे पंजावके पदच्युत राजा दलीपसिंह, लार्ड क्लाइड, सर जान लारेंस, जनरल पौलक और लार्ड हेरिस को यह उपाधि प्रदान की ॥

भारतवर्षमें शिक्षा विभाग और विश्वविद्यालय जो आजकल देखनेमें आते हैं वे सन् १८५४ ई० और ५९ के वर्षमें इंग्लैंडकी गवर्नमेंटके आज्ञापत्रोंपर आधार रखते हैं । सन् १८६६ ई० में भारतवर्षके प्रबंधके विषयमें पार्लियामेंटको परिचित करनेके लिये एक रिपोर्ट प्रकाशित हुईथी उसमें लिखाहै कि सन् १८५४ ई०में ब्रिटिश गवर्नमेंटने निश्चय किया था कि "यूरोपका साहित्य, विज्ञान, विद्या और कलाका प्रसार भारतवर्षके लोगोंके लिये उनके भिन्न २ रोजगारोंमें उपयुक्त होसकै इस प्रकारकी सामान्य शिक्षा देनेके लिये पहले की अपेक्षा उत्तम और दृढ़ उपाय करना चाहिये ।" इसमें यहभी सूचना दीगई थी कि "भारतवर्षकी देशी भाषाकी उन्नति करनेके साथही उच्च कक्षाओंमें अंगरेजी भाषाकी शिक्षादी जाय । " पार्लियामेंटकी इस आज्ञाके अनुसार प्रत्येक स्थानीय गवर्नमेंटके अधीन एक २ शिक्षा विभाग स्थापित किया गया । और साथही परीक्षाके लिये इन्स्पेक्टर नियत हुए । लंडन विश्वविद्यालय के नमूने पर कलकत्ता, मद्रास और बंबईमें विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रान्तीय गवर्नमेंटको अधिकार दिया गया । और यह भी निश्चय हुआ कि, योग्य उम्मेदवारोंको परीक्षाके बाद उपाधियां भी दीजायँ । उस समय यह भी ठहराव हुआ कि, परीक्षाओंमें धर्मसंबंधी विषयोंपर प्रश्न न किये जायँ । और इंग्लैंडकी तरह सब धर्मके लोगोंको इस कार्यमें स्वतंत्रतासे शिक्षा दी जाय । सन् १८५९ ई० में इस आज्ञा का कहांतक और किस तरह वर्त्ताव हुआ है और होता है इस वातकी जांचकी गई थी । जांचके पश्चात् आज्ञा दी गई थी कि, साधारण नियमके अनुसार गवर्नमेंटके प्रबंध तथा सेना विभागसे संबंध न रखने वाले लोगोंको शिक्षाविभागमें नियत किया जाय । विश्व विद्यालयोंके स्थापित करनेसे देशियोंके मनपर किसी तरहका भय उत्पन्न नहीं हुआहै तथापि किसी प्रकारकी अनभिज्ञता दूर करनेके

लिये पेली और बटलर जैसी धर्म संबंधी पुस्तकोंको जो विद्यार्थी प्रसन्नता पूर्वक अध्ययन करना चाहे उसके नंबर सामान्य परीक्षामें न गिनना चाहिये ।" इस नियमके अनुसार सन् १८५८ ई० में प्रथम वार एंट्रेंस परीक्षा ली गई थी । प्रयोजन यह कि श्रीमतीके भारतका शासन अपने हाथमें लेनेके वर्षसे उच्च शिक्षाका आरंभ हुआ है ॥

अध्याय २५.

भारतका भयंकर अकाल ।

सन् १८६०—६१ ई० भारत वर्षके लिये बहुत बुरा निकला । उस वर्ष इस देशमें भयानक अकाल पड़ा । इससे लाखों मनुष्य मर गये । इस दुर्भिक्षकी दारुणताके विषयमें "एन्युएल् रेजिस्टर" में लिखाहै कि भारत वर्षके पश्चिमोत्तर प्रांतमे भयानक अकाल पड़ा । पेशावरसे कानपुरतक आठसो मीलमें एक बूंद भी पानी न वरसा । धरती लोहे जैसी और आकाश पीतलके समान होगया । १करोड़ १०लाख मनुष्योंकी वस्ती वाले २५ हज़ार वर्गमील भूभागमें दीन स्थितिके मनुष्य भूखसे मर रहे हैं । जिनमें भाग जानेकी शक्ति थी वे हजारों ही भाग गये । और जो रहे हैं वे इतने निर्बल होगये हैं कि उदार लोगोंकी ओरसे उन्हें जो दिया जाता है उसे खानेकी भी उनमें शक्ति नही है । मुरदे और मृतप्राय मनुष्य मार्गके इधर उधर पड़े हैं । एक २ ज़िलेमें तीन २ लाख मनुष्य कालका कवर बने हैं । मनुष्यत्व और जातिभेद जाता रहा है । अपने बालकोंको दुःख पाता हुआ देखनेसे दुःखित होकर मातापिता उन्हें मार डालने वा बेचने लगे हैं । मातायें आठ २ आनेमें अपने प्रिय बच्चोंको बेच डालती हैं । और कई जिलोंमें तो ख़रीद दारकी जातिका भी विचार नहीं किया जाता है । बंबई, कलकत्ता, मदरास और पश्चिमोत्तर प्रदेशके बड़े २ नगरोंमें अकाल फंड स्थापित हुए हैं । उनमें उदारताके साथ बहुत कुछ रुपया आया है । और उसको योग्य रीतिपर बांटनेका प्रबंध किया गया है ।" इस बातकी ख़बर मिलतेही इंग्लैंडमें लार्ड मेयरने २८ मार्च को एक सभा इकट्ठी कर फंड नियत किया था । उसमें १०७५८५ पौंड चंदा इकट्ठा हुआ ॥

इस अकालके विषयमें भारत वर्ष विभागके स्टेट सेक्रेटरी सर चार्लेस उडने पार्लियामेंटके समक्ष कहा था कि—"भारतमें भयानक अकाल पड़ा है । वह कितना कठोर है यह बात वहां आज कलके अन्नके भावसे

विदित होगी । सन् १८३७–३८ ई० के सालमें भारत वर्षम बहुतही कठिन अकाल पड़ाथा और मनुष्य तथा चौपायोंकी बहुत संख्याका नाश हुआ था तथापि अन्नका भाव गतवर्ष जैसा महँगा नहीं हुआ था । जिन छः जिलोंमें अकाल पड़ा है वहांके भावका पड़ता फैलानेसे साधारण वर्षोंमें अन्नका अधिकसे अधिक महंगा भाव एक रूपये पीछे साढे चालीस सेर रहताथा किन्तु इस अकालमें एक रूपयेका अन्न नौ सेर मिलता है ” ॥

अध्याय २६.

भारतवर्षका नवीन प्रबंध ।

इसी वर्षमें भारत वर्षके नवीन प्रबंधके विषयमें पार्लियामेंटने तीन नवीन आईन बनाये । प्रथम आईन भारत वर्षमें व्यवस्थापक सभायें (Legislative Council) स्थापित करनेके विषयमें था । इसमें निश्चय किया गया कि गवर्नर जनरल की व्यवस्थापक सभाके लिये इस विषयका एक विद्वान् विलायतसे भेजा जाय और वह तथा वाइसरायकी प्रबंधकारिणी सभा (Executive Council) के समस्त सभासदोंके अतिरिक्त कमसे कम आधे सभासद ऐसे होना चाहिये जो सरकारी सेवक न हों । देशी उमरावों और सरदारोंकी सहायता लेनेके लिये वाइसरायको कभी २ देशके भिन्न २ भागोंमें सभायें भरनी चाहिये । इसी तरह मदरास और बंबईके गवर्नरोंकी व्यवस्थापक सभाकी व्यवस्था की गई । इसके सिवाय वाइसरायको अधिकार दिया गया था कि वह पंजाब और बंगाल प्रान्तके लिये भी यदि उचित समझैं तो सेक्रेटरी आफ् स्टेटके स्वीकार करने पर व्यवस्थापक सभायें स्थापित कर सकैं । पंजाबके लिये सन् १८६१ई० में व्यवस्थापक सभा स्वीकार होजाने पर भी गत वर्षसे वहां इस प्रकारकी व्यवस्था हुई है किन्तु पश्चिमोत्तर प्रान्तको यह स्वत्व बहुत वर्ष हुए मिलगया ॥

दूसरे आईनके अनुसार सुप्रीम कोर्ट और सदर कोर्ट संयुक्त कर दिये गये । इसमें यह ठहराया गया कि इस नवीन कोर्टमें पूरे २ अंगरेज़ बैरिस्टर, इतनेही सिविल सर्विस वाले और देशी जज रक्खे जाँय । इसके अनुसार सन् १८६२ई० में कलकत्ता, मदरास और बंबईकी हाई कोर्टें नियत हुईं और इसी नियमके

आधारपर कलकत्ता हाईकोर्टमें प्रथम बार बाबू शंभुनाथ पण्डित देशी जज नियत किये गये ॥

तीसरा आर्डन सिविल सर्विसके विषयमें था। इसमें यह निश्चय हुआ कि सिविल सर्विस परीक्षामें पासहोनेवालेंके लिये जो पद रक्षित हैं उनके सिवाय बिना परीक्षा वालों से जो लोग योग्य हों उन्हें भी नौकरी देनेका अधिकार भारत गवर्नमेंटके हाथमें रक्खागयाहै" ॥

अध्याय २७.

एमेरिकामें युद्ध और सट्टेका व्यापार ।

एमेरिकाके दक्षिणभागमें लाखों गुलाम अपने मालिकोंके लिये गन्ने और रुईकी खेती किया करते थे। उत्तरभागमें दासव्यापार बन्दहोचुका था और समस्तप्रजाको स्वतंत्रता देनेवाले प्रान्त धन और बस्तीमें बढ़ते जाते थे और साथही दक्षिणके प्रान्तोमें जहां दासव्यापार होता था प्रजा बिलकुल दीनदशा में थी। दासोंके स्वामी इसलिये सोचने लगे कि यदि अपने दासोंके लेकर पश्चिमके प्रान्तोंमें जा बसें और वहांपर नवीन भूमिपर खेती की जाय तो हमारी स्थिति बहुत कुछ सुधरजाय। परंतु स्वतंत्रताके पक्षपाती प्रान्तोंने इनके आनेका अवरोध किया और प्रकाशित करदिया कि अभीतक जिन प्रान्तोंमें दासव्यापार प्रचलित है उनके सिवाय अन्यत्र दासव्यापार प्रचलित न करने दिया जायगा। दक्षिणवाले इसबातको न समझे और चार वर्षतक उत्तरवालों का दक्षिणप्रान्तवालोंसे घोर संग्राम होता रहा। पहले अंगरेज़ उत्तर वालों के समर्थक थे किन्तु युद्ध आरंभ होतेही इंग्लैंडमें कपड़ोंके कारखानेवालों को एमेरिकाकी रुई मिलना बंद हुआ। और इंग्लैंडके व्यापारियोंने दक्षिण वालोंकी नानाप्रकारसे सहायता करना आरंभ किया। यहांतक कि उन्होंने दासव्यापारके पक्षपातियोंको सैनिक जहाज़ तक दिये। इंग्लैंडने युद्धके आरंभ में प्रकाशित करदिया था कि हम दोनोंमेंसे किसी की सहायता न देंगे और इसकारण वहांके व्यापारियोंका यह अनुचित कार्य इंग्लैंडकी प्रतिज्ञाके विरुद्ध था। परंतु उसने अपने नियमोंका भंग करने वालोंको रोकानहीं इस कारण उसे अंतमें तीस लाख पौंड दंडके देनेपड़े। युद्धके अंतमें यूनाइटेड स्टेट्सके उत्तर भागवालोंका जय हुआ और उन्होंने दक्षिणका दासव्यापार बन्दकराया उससमय जितने दास थे उन्हें स्वतंत्रता दी ॥

इसयुद्धमें एमेरिका की रुई इंग्लैंडमें आना बन्दहुआ। वहांके कपासपर इंग्लैंडके कारखानेवालों और जुलाहोंका आधारथा इसलिये वे लाचारहोगये। कारखाने प्रचलित रखनेके लिये उनमें आपुसकी खैंचातान चलने लगी और जिसभावपर जिसे जितनी रुई मिलै उतनीही वह खरीदने लगा। मिसर और बंबईकी कूड़ा-करकट रुई भी इंग्लैंडमें सोनेके मोल बिकने लगी। बहुतसे व्यापारी इस कार्य से निहाल होगये और थोड़ेही दिनोंमें बंबईमें रुपयेकी चकाचक देख पड़नेलगी। परंतु इसके परिणाममें जो अंधा सट्टा प्रचलित हुआ उसने भारतके व्यापारियों को दरिद्री कर दिया। जिस युद्धको बहुत काल तक चलनेकी दुराशाके पागल-पनमें देशके मूर्खही नही किन्तु बुद्धिशाली अंगरेज़कर्मचारी तक भूले थे उनकी बुद्धि ठिकाने आगई। अनेक बैंक और कम्पनियां खड़ी हुई और बंबईकी प्रजाका नाशकर चलती बनी। बंबईकी गवर्नमेंटने भी उस समय एक अंशमें सट्टा करने वाली कम्पनियोंको उत्तेजना दी थी। इस अंधे सट्टेने इतनी हानिके साथ बंबई का कुछ लाभ भी किया। चौपाटीके निकट बंबई बडौदा रेलवेकी सड़क है उस स्थानपर समुद्र था उसमें भरती डालकर धरती बनानेका काम भी इन्ही सट्टे वाली कम्पनियोंके हाथसे हुआ। इसीतरह एलफिन्स्टन सर्कलके निकटके सुंदर और भव्यमहल भी उसी समय बने ॥

अध्याय २८.

बंगालमें तूफान।

५ अक्टूबर सन् १८६४ई०को कलकत्ता और उसके आसपासके ग्रामोंमें भयंकर तूफान आया। भयानक आँधिके साथही हुगलीनदीके दोनों किनारों पर आठ आठ मील तक तीस फुट गहरा पानी भरगया। भारत गवर्नमेंटने इस विषयमें पार्लियामेंटको जो रिपोर्ट की थी उसका सार यह है—"१०२ पक्के और ४०४९८ कच्चे मकान कलकत्तेमें बिलकुल नष्ट होगये। इनके सिवाय अनुमान पांच हजार घरोंको थोड़ी बहुत हानि हुई। अधिक मनुष्योंकी मृत्यु तो सौभाग्य वश न हुई किन्तु २ यूरोपियन और ४७ देशी मारे गये। तीन लाख मन लवण नष्ट होनेसे गवर्नमेंट और व्यापारियोंको बहुत हानि हुई। सरकारी मकानोंके उपरांत अन्य गृहोंके नष्ट होनेमें पांच लाख रुपयेकी अनुमानसे हानि हुई। कलकत्तेके उत्तर हुगली, कृष्णाघर और अन्य ग्रामोंमें बहुत हानि हुई किन्तु दक्षिणके जिलोंमें तो तूफानसे कुछभी न बचसका। हबड़ेमें २ हजार मनुष्य १२ हजार

चौपाये और इतनेही मकानोंका नाश होगया । मेदिनीपुरमें २० हजार मनुष्य और ४० हजार चौपाये मारे गये । गुमगढकी बस्तीका पौन भाग नष्ट होगया और तुमलुकके १४०० घरोंमें से केवल २७ बचे । सागरके टापूकी ६ हजार बस्तीमें १४८८ मनुष्य जीते हैं । चौबीस परगनेके अन्य भागोंमें सात आठ हजार मनुष्य और चार पंचमांश चौपाये डूब गये । जो लोग इस आपत्तिमेंसे बचे उनके खानेका ठिकानाभी न रहा । कलकत्ते के बंदर में १९५ जहाज खड़े थे जिनमें ५० डूबगये । डायमंड हारबरके निकट एक जहाज डूबनेमें ३१९ मजदूर जलमग्नहुए । सेंट हेड्सके निकट एक और जहाज डूबा इसके साथ दो खलासियोंके सिवाय सबके सब डूबगये । भूखे लोगोंकें लिये पानी और अन्न पहुंचाने और मुर्दोंको गाड़नेका प्रबंध होरहा है । पानीके कुए खोदे जा रहेहैं । खारे तालाबोंका पानी निकालकर मीठा भरनेका प्रयत्न कियाजारहाहै । दुःखित लोगोंकी सहायताके लिये जो फंड स्थापित हुआहै उसमें ३ लाख रुपया आयाहै । पारसीजातिने इसमें बहुत रुपया दियाहै " ॥

इस दुर्घटनाके कुछही दिन बाद १ नवंबरको मछलीपट्टनके सामुद्रिक किनारेपरभी आंधीसे बहुत दुर्दशा हुई । पानीकी रेलमें सेना और पुलिसके ७८ और साधारण प्रजाके ३०५२३ मनुष्य डूबगये । इससे जिन लोगोंको कष्ट हुआ उनकी सहायताके लिये मदरास और बंबई में फंड स्थापित हुआ ॥

अध्याय २९.

एबीसीनियाका युद्ध ।

सन् १८६५ ई० में एबीसीनियाके राजा थियोडोरने इंग्लैंडकी प्रजा गिने जानेवाली स्त्री पुरुषोंको कैद कर लिया । इनमें मुख्य मसोवामें रहने वाले श्रीमतीके दूत कप्तान केमेरन उनके सेक्रेटरी, एक सीरियन ईसाई मिस्टर होर्मज़्द रस्म लेफ्टिनेन्ट प्रिडो और डाक्टर ब्लो थे । ये लोग ब्रिटिश गवर्नमेंटकी सेवा करते हुए कैद किये गये थे । इनके सिवाय कई एक जर्मन पादरी यूरोपियन कारीगर और स्त्री बालकभी थे । अंगरेजी राजदूत कप्तान केमेरन पर एबिसीनियाके राजा थियोडोरको संदेह था । वह समझता था कि यह मिसरकी गवर्नमेंटसे मिला हुआ है । थियोडोरने श्रीमतीको एक पत्र लिखकर रूमसे लडने में सहायता मांगीथी परंतु किसी कारणसे उस पत्रका उत्तर नही दियागया । बात यह थी कि थियोडोर श्रीमतीका पति होनाचाहता था और वह कहता था कि, मैं

मिसरकी रानी शेबाका वंशधरहूं इस लिये यह कार्य अनुचित नहीं है । उसकी इस मूर्खतासे इंग्लैंडको उसपर कोप हुआ । पत्रका उत्तर न पाने से उसने अपनी मानहानि समझी और इस लिये इसबात का वैर लेने के लिये जो अंगरेज़ उसके हाथमें आया उसीको उसने कैद कर दिया । और उनके पैरोंमें बेडियां डालकर उन्हें मगडलाके किलेमें बन्द रक्खा । इस बातसे ब्रिटिश गवर्नमेंट पर बड़ी कठिनता आपड़ी । यदि गवर्नमेंट उसपर चढ़ाई करती तो सबके सब कैदी मारेजाते । इसलिये प्रथम राजाको समझा बुझाकर काम लेने का प्रयत्न कियागया । राजदूत तो पहलेसे कैद था ही अब राजाको समझानेके लिये जो लोग भेजगये उनको भी उसने जेल में डाल दिया । अंतमें लार्ड स्टेनलीने उसको लिख भेजा कि, यदि तीनमासके भीतर कैदी न छोड़े जायँगे तो एबिसीनियाके साथ इंग्लैंडको युद्ध करना पड़ेगा । " यह पत्र उसके पास पहुँचा नहीं । अब लड़ाईकी तैयारी कर सरकारने बंबई के प्रधान सेनाध्यक्ष सर राबर्ट नेपियर (लार्डनेपियर आफ मैकडला) के अधिकार में सेना भेजी । सन् १८६८ ई० के अपरेल में बंबई की सेना मैकडलाके किलेके निकट जा पहुंची । १० अपरेल की लड़ाई में ५०० एबिसीनियन मारेगये और इससे तिगुने घायल हुए । इस हानिको देखकर थियोडोर घबराया । उसने अब संधि का प्रस्तावकर कैदियोंको छोड़नेकी प्रतिज्ञा की परन्तु स्वयं शरण आनेका निषेध किया । यह बात ब्रिटिश सेनाको स्वीकार न हुई । लार्ड नेपियरने किला ले लिया । थियोडोरने शत्रुके हाथ पड़नेके बदले आत्मघात कर प्राण गँवाये । किलेको नष्टकर सर राबर्ट नेपियर लौट आये । सरकारने इस विजयके उपलक्षमें उनको बैरन नेपियर आफ मैकडलाकी उपाधि और पेन्शनदी । थियोडोरकी रानी ब्रिटिश सेना में मरगई और उसका सात वर्ष का पुत्र भारत वर्ष में शिक्षाके लिये लायागया । यहांका जल वायु उसके अनुकूल न हुआ इसलिये वह विलायत भेजागया । वहां जाकर थोड़ेकाल में मरगया । युद्धके पश्चात् सरकारने एबीसीनिया का राज्य ब्रिटिश साम्राज्यमें मिलाना उचित न समझा ॥

अध्याय ३०.

ओड़ीसेका अकाल और सुलतानका स्वागत ।

सन् १८६५–६६ ई० में बंगाल प्रान्तके ओड़ीसा भाग में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा । इसकी जांचके लिये गवर्नमेंटने एक कमीशन नियत किया था । इसने

इस अकालके मुख्य दो कारण बतलाये । (१) वृष्टिका अभाव और समयपर न होना और (२) बंगालका अधिकतर चावल एशिया आस्ट्रेलियाको चले जानेसे अन्नका भाव महंगा होजाना—कमीशनकी गणनाके अनुसार इस दुर्भिक्ष से भूख के मारे ८१४४६९ मनुष्य मरगये और ११६०२८ का कुछ पता न चला । कुल ९२९४९७ मनुष्यों को ओड़ीसा विभागने खोदिया । धनाढ्य देशियोंने अकाल पीडितोंकी रक्षाके लियेएक फंड स्थापित किया जिसमें ६लाखरुपया इकट्ठाहुआ । इसद्रव्यमेंसे १ लाखरुपया अनाथ बालकोंकी रक्षाके लिये अलग रक्खागया ॥

इसवर्ष अकालकी इतनी पीडा सहनेपर भी दूसरे वर्ष गवर्नमेंटने रूमके सुलतान अवदुल अज़ीज का इंग्लैंडमें स्वागत कर एक बाल (नाच) का खर्च भारतके कोशपर डाला।सन् १८६७ई०में रूमके सुलतान इंग्लैंड पधारे । इनका स्वागत करनेके लिये १२ जुलाईको श्रीमान् प्रिंस आफ् वेल्स, मिसरके खेदीव और इंग्लैंडके प्रधान सेनाध्यक्ष बंदरपरगये । रूमी चालके अनुसार उनसे किसीने हाथ न मिलाया किन्तु टोपी उतार कर केवल सलाम कर लिया । सुलतानने अपनी टोपीके हाथ लगाकर उनका सत्कारकिया । वहांसे चलकर म्यूनिसिपेलिटीका अभिनंदन पत्र लेने बाद वह बडे ठाठके साथ श्रीमतीके महलमें पहुँचे। श्रीमतीने महलके फाटकतक उनका स्वागत किया ।सुलतानने उनसे देशी चालसे सलामकी और उनके हाथका चुंबन किया । श्रीमतीने सुलतानके युवराजका मुखचूमा । १८ जुलाईको लंडनके कार्पोरेशनने उनको भोजदिया। उसमें सुलतानने अपने आगत स्वागतके लिये धन्यवाद देनेके सिवाय कहा कि यूरोप आनेमें मेरे दोप्रयोजन हैं । एक यह उन्नति का स्थान है इस लिये यहांके सुधार और उन्नतिको देखकर अपने देशकी स्थितिसे तुलना करना और दूसरे यूरोप वालोंसे मित्रता की वृद्धि करना । दूसरे दिन भारतीय विभागके स्टेट सेक्रेटरी सह स्टाफर्ड नार्थ कोट (आजकलके बंबईके गवर्नरके पिता) ने भारतवर्षके खर्च से उन्हें एक बाल दिया । इस जलसें में २६०० मनुष्योंको निमंत्रण दिया गया था । सुलतान बैठे २ नाच देखते रहे और श्रीमान् प्रिंस आफ् वेल्स और उनकी बहने बहुत नाची ॥

इसी वर्षमें रूसगवर्नमेंटने एमेरिकाके पश्चिमोत्तरमें एलास्का उपनिवेश ७२ लाख डालरमें एमेरिकाके संयुक्त राज्योंको बेंचदिया । इससे इंग्लैंड और एमेरिकाके मध्यमें बड़ा झगड़ा खड़ा हुआ । इस स्थानके निकट वर्ती समुद्रमें से सील मछली पकड़नेके विषयमें केनाडा (ब्रिटिशराज्य) और एमेरिकाके संयुक्त

राज्यका घोर संग्राम होनेका अवसर आगयाथा परंतु इसका निपटारा विदेशी राज्योंकी पंचायतको सौंपागया इस कारण युद्ध होनेकी अनी टलगई ॥

अध्याय ३१.

युद्धके विषयमें सम्मतिऔर स्वेज़की नहर ।

सन् १८६८ई० में युद्धके विषयमें नवीन नियम स्थिर करनेका यूरोप वालोंने प्रयत्न किया था । इस वर्षके नवंबर मासमें रूसकी राजधानी सेंट पीटर्स बर्गमें बेवेरिया, बेलजियम, डेनमार्क, इंग्लैंड, फ्रांस, यूनान, हालैंड, इटाली, ईरान, पुर्तगाल, आस्ट्रिया, प्रूशिया, रूस, स्वीडन, स्विठजरलैंड, रूम और बटेम्बर्ग राज्योंके प्रतिनिधियोंने मिलकर निम्न लिखित संधि पत्रपर हस्ताक्षर किये:—" संशोधन और उन्नतिपर ध्यान देकर युद्धमें उत्पन्न दुःखोंकी कठोरता कम करनेके जहांतक होसकै प्रयत्न करना चाहिये । युद्धका मुख्य प्रयोजन शत्रुको निर्बल करनेका है इस कार्यके लिये यही बात बहुत है कि शत्रुके जितने मनुष्य युद्धमें अशक्त किये जायँ उन्हें शक्तिहीन करना परंतु जिन उपायोंसे उनके घाव अनावश्यक बड़े हों अथवा उनकी मृत्युहो ऐसे उपाय इस नियमके प्रतिकूल हैं और मनुष्यत्वके नियमके भी विरुद्ध है । इस कारण नीचे हस्ताक्षर करनेवाले अपने२ राज्योंकी ओरसे अधिकार प्राप्तकर स्वीकार करते हैं कि (१) इस लेख पर हस्ताक्षर करनेवाले स्वीकार करते हैं कि उनके मध्यमें युद्ध होनेपर जल उठनेवाले अथवा जिनसे आग लगउठे ऐसे पदार्थ काममें न लायेंगे । इस नियमका जल और स्थल दोनों सेनाओंमें वर्त्ताव होगा (२) इस कमीशनमें जिन २ राज्योंके प्रतिनिधि इकट्ठे नहीं हुए हैं उनको भी निमन्त्रण दिया जाय (३) जबकभी इस लेख पर हस्ताक्षर करनेवालोंमेंसे परस्पर युद्धका अवसर आवेगा इसका वर्त्ताव होगा किन्तु जो अक्षर नहीं करैगा उसको बाधित नहीं किया जायगा (४) जबकभी विद्याकी वृद्धिके साथ युद्धकी सामग्री सुधारनेकी आवश्यकताहो तब उसका प्रचार करने पूर्व सबको मिलकर विचार करना चाहिये कि यह नवीन पदार्थ मनुष्यत्वके अनुकूल और युद्धकी आवश्यकताके अनुसार है वा नहीं ।" इन शर्तोंका वर्त्ताव कुछभी न हुआ और रूसके ज़ार निकोलस के प्रयत्नसे सन् ९८ में हेग् स्थानमें सब राज्योंके प्रतिनिधियोंकी सभा हुई थी उसमें जो नियम स्थिर हुए थे उनका भी वर्त्ताव नहीं हुआ ॥

स्वेज़की नहर तैयार करनेका काम सन् १८६९ ई० की १७ नवम्बरको फ्रांसकी पदच्युत रानी यूजिनी, आस्ट्रियाके सम्राट् फ्रांसिस जोजेफ और जर्मनी के युवराज (स्वर्गवासी सम्राट्) फ्रेडरिकके समक्ष आरम्भ हुआ था। इस नहर की योजना करनेवाला फरांसीसी इंजिनियर डीलेसेयस था । जिस समय इसने अपने विचार प्रकट किये यूरोपके बड़े २ इंजिनियरोंने उसकी हँसीकी थी । उनका कथन था कि भूमध्यसागर और लालसमुद्रकी सतह बराबर नहीहै इस लिये नहर यदि बनाई जायगी तो उसका टिकाव न होसकैगा। परंतु इसने इनके आक्षेपोंपर कुछ ध्यान न दिया और अन्तमें इसका उद्योग सफल होगया। चार वर्षके कठिन परिश्रमसे यह नहर तैयार हुई थी। इसके बननेसे भारत के व्यापार की बहुत उन्नतिं हुई। इसका लेखा यह है:—

	भारतमें माल आया	भारतसे माल गया.
	रुपयां	रुपया
नहर तैयार होने से पहले सन् १७८२	९०९४६१६४	५४५४७७१५
,, के प्रथम वर्षमें सन् १८७३	१०५५११११३८	६०३९९९९६
सन् १८७७	१४५६७६४८१	९२००९८८१
सन् १८८७	२१४९९५८३३	१७२८६९५५६
सन् १८९७	२८४४८१५१६	३०६९५७५७०

अध्याय ३२.

काबुलके अमीरका अंबालेमें सत्कार ।

सन् १८६८-६९ ई० में भारतके इतिहासमें एक विशेष घटना हुई। अमीर दोस्त मुहम्मदकी मृत्युसे अफगानिस्थानमें जो बखेड़े खड़े हुएथे उन्हें अमीर शेर अलीने दबा दिया। इस समय अमीरसे भारत गवर्नमेंटकी मित्रता बढ़नेका अवसर आया। इस वर्षके अगस्तमें अमीर शेर अलीने पंज शहरमें अजीमखांको विजय कर भारत गवर्नमेंटसे मित्रता बढ़ानेके लिये वाइसराय सर जान लारेंस के नाम पत्र लिख भेंट करनेकी इच्छा प्रकाशितकी। और लिखाकि "यदि आवश्यकता होगी तो मैं ठेठ कलकत्ते तक आनेको तैयार हूं। और मुझे रुपये तथा शस्त्र संबंधी सहायता देनेसे मैं सरकारका बड़ा उपकार मानूंगा।" यह बात

वाइसरायने स्वीकार करी परंतु अज़ीमखां और अब्दुल रहमानखां के काबुलके उत्तर भाग पर चढ़ाई करनेसे उस समय भेंट न होसकी। वाइसरायने प्रसन्न होकर अमीरके पास छः लाख रुपये भेज दिये। इस द्रव्यसे उसने सेना का चढ़ा हुआ वेतन चुका दिया। ४ जनवरी सन् १८६९ई० को अजीमखां और अब्दुल रहमानखां की हारहुई। दोनों भागकर भारत वर्षमें आये परंतु यहां उनको शरण न मिली इस लिये दोनों ईरान चलेगये। वहां जाकर अज़ी मखां मरगया ॥

इस अवसरमें गवर्नर जनरल सर जान लारेंसने अमीर शेर अलीको एक पत्र लिखकर मित्रताकी वृद्धिके लिये उनसे मिलनेकी इच्छा प्रकटकी और लिखा कि पहले छः लाख रुपये भारत गवर्नमेंटने भेजेथे उनके सिवाय छः लाख और भेजेजायँगे। और इसके बदले में उनसे केवल सत्य मित्रता चाही। उन्होंने श्रीमतीकी आज्ञा लेकर काबुलके साथ नवीन नीति स्थिर करनेके लिये शस्त्र और रुपया देनेका निश्चय किया था। इसबातसे प्रसन्न होकर अमीरने वाइसराय से मिलनेकी इच्छा प्रकटकी। वाइसरायने इसबातको सहर्ष स्वीकार किया और ३ मार्च सन्१८६९ ई० को अमीर शेरअली अपने पुत्र अब्दुल्ला सहित ब्रिटिश सीमामें प्रविष्ट हुए। और अपने साथियोंको पेशावर छोड़कर वह स्वयं लाहोरमें लेफ्टिनेंट गवर्नरसे जा मिले। वहां पांचदिनतक लेफिनेंटगवर्नरने उनका आतिथ्य सत्कार किया फिर वह २६ मार्चको अंबालेमें पहुँचे। दूसरे दिन भारतके वाइस-राय लार्डलारेंससे भेंट हुई। उन्होंने एक बहुतबड़े दबदबेवाले दरबारमें अमीरकी भेंटकी और आठदिन तक अपने यहां उन्हें मेहमान रखकर उनको सेनाकी क-वाइद् और तरह २ के तमाशे दिखलाये। जो २ उन्नतियां प्रथम बार उनकी भारतमें दृष्टिपड़ी थी उनसे बहुत चकित हुए। २१ अपरेलको ब्रिटिश राज्यसे निकलकर काबुलगये और वहां जाकर उन्होंने अनेक प्रकारके संशोधन किए ॥

अध्याय ३३.

भारतमें ड्यूकआफएडिनबरा और नवीन संशोधन ।

सन् १८६९–७० ई० में भारत वर्ष में दूसरी आवश्यक बात श्रीमतीके द्वि-तीय पुत्र श्रीमान् ड्यूक आफ एडिनबराके पधारने में हुई। भारत गवर्नमेंटकी ओरसे इनके शुभागमनके विषयमें जो पार्लियामेंटको रिपोर्ट कीगई उसमें लिखा

है कि–" श्रीमान् ड्यूक आफ एडिनबराकी भारत यात्रासे दो लाभ हुएहैं। प्रथम यह कि इंग्लैंडके राजकुटुम्बके एक रत्नने भारत साम्राज्यमें प्रथमहीबार आगमन किया था और दूसरे यह कि श्रीमतीके पुत्रका आतिथ्य करनेके लिये भारतकी प्रजाने और देशी राजाओंने बहुतही हर्ष पूर्वक उनका सत्कार किया था। कितने ही राजाओंने अपनी हार्दिक भक्ति के प्रमाणमें इनके आगमनका स्मारक चिरस्मरणीय रखनेके लिये पाठशालायें स्थापितकी और शिक्षाकी उन्नतिके लिये छात्रवृत्तियां नियतकी थीं" ॥

भारत वर्ष के वाइसराय लार्डमेओंने सन् १८७२ई०में सरकारी भूमि करके विषयमें नियमोंका परिवर्तन कर पार्लियामेंट को लिखाथा कि–" प्रान्तीय गवर्नमेंटको उनके अधिकृत विभागोंपर स्वतंत्रतासे शासन करने दियाजाय। और उनके निर्वाहके लिये साम्राज्यके भूमिकरमेंसे अमुक द्रव्य प्रतिवर्ष दियाजाया करै और उनको जेल, रजिस्टरी, शिक्षा विभाग, चिकित्सा, छापाखाना, सड़क, पबलिक् वर्क्स और फुटकर विभागोंका अधिकार दियाजाय। इन विभागोंके निर्वाहके लिये अवधको २०६९४८०) मध्यप्रान्तको २६१२६३०) ब्रह्मदेशको २७५३३२०)बंगालको ११६८५९२०) पश्चिमोत्तर प्रदेशको ६४०७९२०) पंजाबको ५१६२२१०)मदरासको ७३९४८८०) और बंबईको८८०००७५०) कुल ४६८८७११०) रुपया वार्षिक दियाजाय। सन ७०–७१ ई० में इन विभागोंके लिये जितना व्यय गिना गया था उसके प्रमाणसे यह द्रव्य कम है और घटाये हुए द्रव्यका जोड ३५०००००) को पंहुचता है। इस घटीको पूर्ण करनेके लिये उनको स्वतंत्रता दी जाती है। इसके लिये वे प्रान्तीयकर डालना चाहै तो डाल सकती है "॥

सन् १८७०–७१ ई०में भारत गवर्नमेंटने कितनेही नवीन आईन बनाये थे। उनमे दो मुख्यहैं। एक यह कि सिविल सर्विसके बड़े २ पदोंपर विनापरीक्षाके देशियोंको भरती करलेनेकी भारत गवर्नमेंटको स्वतंत्रताहै। दूसरा यहथा कि आवश्यकता पड़नेपर गंभीर विषयोंमें गवर्नरजनरल अपनी कौंसिलके बहुमतका कुछ विचार न कर अपनी इच्छासे काम करसकैगा। इनमेंसे प्रथम नियम बहुत वर्षोंके बाद प्रचलित हुआ। और इसके अनुसार जिन लोगोंको नियत किया गया उनकी योग्यताकी अच्छीतरह जाँच नही कीगई और प्रजाने इस बातको पसंद किया तो बहुत वर्षोंसे यह नियम बिलकुल बंद कर दिया गया॥

अध्याय ३४.

फ्रांस और जर्मनीका संग्राम ।

इसी वर्षमें फ्रांससे जर्मनीका लोमहर्षण संग्राम हुआ । स्पेनकी प्रजाने प्रूशिया (जर्मनी)के राजा प्रथम विलियमके एक संबंधीको अपना राजा बनाना पसंद किया। इसपर फ्रांसके सम्राट्ने प्रतिवाद किया । जर्मन नरेशने उनको प्रसन्न करनेके लिये अपने संबंधीको समझा बुझाकर उससे स्पेनकी गादी की उम्मेद वारी छुड़वादी। इस प्रयत्नसे फ्रांस नरेशका प्रजामें पूर्ण आदर होना चाहिये था परंतु उन्होंने मैक्सिको पर सेना भेजकर हार खाईथी इस लिये प्रजा उनसे अप्रसन्न थी और इसी कारणसे वह चाहतेथे कि किसी भारी युद्धमें विजय पाकर प्रजाका मनोरंजन किया जाय । इस विचारसे उन्होंने जर्मन नरेशसे कहलवाया कि आप सदाके लिये इस बातको स्वीकार करलें कि हमारा कोई भी संबंधी स्पेनकी गादीकी उम्मेदवारी न करैगा । यह बात अपमान सूचक थी । प्रूशियाके प्रधान अमात्य प्रिंस बिस्मार्कको यह बात अपनी इच्छाके अनुसार मिलगई । फ्रांसके सम्राट्का स्वास्थ्य कुछ कालसे बिगड़ गया था । राज्य प्रबंधकी बातोंमें वह पूरा २ ध्यान नहीं दे सकते थे । उनकी सेना और युद्धविभाग अभिमान और अपनी उत्तमताके मिथ्या विचारमें चूर हो रहे थे । इस कारणसे सेनाका प्रबंध बिगड़ रहा था और युद्धकी कोई सामग्री तैयार न थी । फ्रांसके युद्धकी घोषणा देनेके अनंतर उसकी सेना धीरे २ चलकर युद्ध क्षेत्रमें पहुंची । सीमाका उल्लंघन करतेही फ्रेंच सेना अकस्मात् रुक गई । जर्मनीकी युद्धपटु सेना पानीके बाढ़की तरह एक दमसे फरांसीसी सेनापर आ टूटी । एकही दिनके युद्धमें परिणाम मालूम होगया। फरांसीसी सेना एकके बाद दूसरी दूसरीके अनंतर तीसरी इसी तरह लड़ाई हारती गई । फ्रांसके सम्राट्का राजधानीको लौटनेका साहस न हुआ । जर्मनी वालोंके आक्रमणसे देशकी रक्षा करनेके बदले सम्राट्के बचावपर फरांसीसी सेनाने विशेष ध्यान दिया और इस कारण सैदनके मैदानमें फ्रांसवालोंने जर्मनीसे अंतिम हार खाई । फरांसीसी गवर्नमेंट टूटगई । सम्राट्ने शस्त्र डालकर शत्रुकी शरण ली । जर्मन सेनाने फरांसीसी सम्राट्को कैदकर लिया । रानी भागकर इंग्लैंड चली गई । फ्रांसकी प्रजाने राज्यमें प्रजातंत्र प्रणाली स्थापितकर अमुक वर्षके लिये प्रजा वर्गमेंसे राजा (सभापति) चुननेका अधिकार ग्रहण किया । और उसी वर्षकी १८ जनवरीको प्रूशियाके राजा विलियमने पैरिसके

निकट ब्रुसेलसके महलमें जर्मनीके सम्राट्का पद ग्रहण किया। युद्धके बदलेमें आलसस और लारेंसके दो परगने और २० करोड़ पौंड जर्मनीने फ्रांससे दंड लिया। युद्धके आरंभमें अंगरेज़ प्रजा जर्मनवालोंके पक्षमें थी परंतु जब जर्मन वालोंने फ्रांससे दंडमें बड़ी कठोरताकी तो उसके विचार विरुद्ध होगये। फ्रांस और जर्मनीके विषयमें जिस समय खबरोंके घोड़े दौड़ रहे थे एकाएक ऐसी बात सुननेमें आई कि कितनी ही शर्तोंके साथ जर्मनी बेलजियम राज्यको फ्रांसमें मिला देनाचाहती है। इस बातसे इंग्लैंडको बहुत क्रोध आया और उसनें दोनोंको दबाकर एक ऐसी संधिपर हस्ताक्षर करालिये जिसके अनुसार बेलजियम राज्यकी स्वतंत्रताकी रक्षाके लिये तीनों राज्योंको अपने ऊपर बोझा उठाना पड़ा। फ्रांस जैसे बलाढ्य राज्यको परास्त करनेमें जर्मनीका हौसला बढ़ता देखकर इंग्लैंडके कितनेही लोग कहने लगे थे कि अपने सम्मानकी रक्षाके लिये हमें किसी बड़े राज्यसे युद्ध करना चाहिये। इंगलैंडने बुद्धिकौशलसे दो राज्योंको दबाकर विना लड़े भिड़े अपना दबदबा बढ़ा लिया॥

अध्याय ३९.

लार्ड मेओका खून और मध्यएशियामें रूस।

सन् १८७२ ई० की फरवरी को भारतवर्षके लिये एक बहुतही शोकजनक घटना हुई। यहांके वाइसराय और गवर्नर जनरल लार्ड मेओ अंडमन टापूके पोर्ट ब्लेर स्थानके कैदियोंको देखनेके लिये गयेथे। वहांपर एक अफ़गानने ८ फरवरीको उनपर आक्रमणकिया। अपराधी श्रीमान्को एक प्रार्थना पत्रदेना चाहता था परंतु नियमके अनुसार उस अर्जीको सुपरिंटेंडेंट द्वाराभेजनेकी आज्ञादेकर श्रीमान्ने उसे ग्रहण न किया। इसबातसे उसदुष्टको क्रोध भरआया और अवसर पाकर उसनें श्रीमान्के प्राण लेडाले। इस घटनासे भारतभरमें शोक हुआ। यद्यपि यह कंसर्वेटिव पक्षके गिने जाते थे परंतु इनके विचार बहुत उदार और प्रजापर विश्वास उत्पन्न करनेवाले थे। इनकी मृत्युसे भारतवर्षने एक योग्य वाइसरायको खोदिया॥

इसीवर्षमें रूसकी शनैः २ मध्यएशियोंमें वृद्धि देखकर इंग्लैंडमें चिन्ताका आरंभ हुआ। पूर्व तुर्किस्तानमें एक मुसलमान राजासे मेल बढ़ाकर उसने व्यापार के विषयकी एक संधिद्वारा २० हज़ार वर्ग मील भूमिका कुलजा नामक जिला उससे लेलिया। इसीतरह रूस और पूर्वकी ओरके उपनिवेशके मध्यमें

रेल्वेकी दोहरी लाइन बनवानेका भी रूसने प्रबंध किया। इतने पर ही उसे संतोष न हुआ । उसने खीवा राज्यपर भी दृष्टि डालना आरंभ करदिया । वहांके खानने कितने ही रूसी व्यापारियोंको मारडाला था। और रूसके थोड़े से प्रदेशपर आक्रमण भी कियाथा । इस कारणसे रूसने खीवाको धर दबाया। खीवाके खानको दबकर २० लाख रुबल दंड देना स्वीकार करनापड़ा। जबतक दंडका द्रव्य न चुकजाय खीवाराज्यके शुराहान और कुनग्राड दो जिलोमें रूसी सेनाका खीवाके खर्चसे रहना निश्चय हुआ। इसके सिवाय खीवाकी सीमा आमू दर्या (आक्सस) तक स्थिर हुई और नदीके दहने किनारेका भूभाग रूसने बुखाराके अमीरको दिलवादिया क्योंकि इस युद्धमें अमीरने उसकी बहुत कुछ सहायताकी थी। रूसकी इच्छासे खीवाराज्यने दास व्यापार बिलकुल उठादिया । इसके बाद खीवाके पड़ोसमें लुटेरे तुर्कोंपर रूसकी दृष्टि पड़ी।खीवाका बल बढाने के नामपर उसने तुर्कोंको दमन करने का निश्चय किया । इसविचारमें शीघ्रही सफलता प्राप्तकर रूसने खीवाके साथ दूसरा संधिपत्र किया । आमू और सीर नदीका मध्यभाग रूसी राज्यमें मिलादेने और सीरके दहने किनारेपर किलोंकी माला बनाने का उसने स्वत्व प्राप्तकिया । इसके सिवाय उसने खानसे स्वीकार करा लिया कि मैं रूसके अधीन रहूंगा और बिना उसकी आज्ञाके किसीसे संधि विग्रह न करूंगा । इस घटनासे इंग्लैंडमें कुछ २ घबराहट मचगई । इंग्लैड और रूसमें इस विषयकी बहुत समयतक लिखा पढ़ी होती रही । उसका परिणाम यह हुआ कि काबुल और रूसकी सीमा इसतरह निर्द्धारित कीगई । (१) बदखशा और उसके अधीन वा खान प्रदेश जो पूर्वमें सटीकल (उडूसलेक) से आक्सस और कोकचा नदीके संगमतक चलागयाहै उसे अफगानिस्तानकी सीमा समझनी(२) अफगान तुर्किस्तान जिसमें कुंजह और बलखतक आगये हैं उसकी उत्तर सीमा आक्सस और कोकचा नदीके संगमसे खोजा सालेहतक गिनना और खोजा सालेहके नीचे आक्सस नदीके बाँये किनारे वाले प्रदेशपर काबुलके अमीरको दावा न करना और (३) अक्सा, सेरीपुल, माइमें जान, शिबर जान और अंडकोईके जिले अफगानिस्तानकी पश्चिमोत्तर सीमा गिने जाना चाहिये इनसे उत्तरके जंगल तुर्क मानों क हैं ॥

अध्याय २६.

बंगालका दुर्भिक्ष और लार्ड नार्थब्रूककी कीर्त्ति ।

सन् १८७३–७४ ई० में बंगाल प्रान्तमें घोर अकाल पड़ा । इस समय वहांके लेफ्टिनेंट गवर्नर सर ज्यार्ज केम्पवेल थे । उन्होंने सम्मतिदी कि भारतसे बाहर अन्नका जाना बंद करना, अकालपीडित भागोंमें बाहरसे अन्न लाना, होसकै जहां २ अन्नका संग्रहकरना सशक्तोंको काम कराकर और अशक्तोंको बिना काम भोजनदेना चाहिये।वाइसराय लार्ड नार्थब्रूक अकालकी खबर पातेहीं दौड़े हुए शिमलेसे कलकत्ते पहुंचे। अन्नका निकासबंद करनेके विषयमें सर ज्यार्ज केम्पवेलने जो सम्मतिदी थी उसका देशी समाचार पत्रोंने समर्थन किया परंतु यह बात लार्ड नार्थ ब्रूकको पसंद न हुई । उन्हों ने कहाकि हमारे साधारण ग्राहकोंको मनमानते भावपर अन्नदेनेकी यदि हमइस समय नाहीकरैंगे तो वे अपने लाभके लिये और कोई मार्ग लेंगे और इससे भविष्यत्‌में हमारे व्यापारको हानिपहुंचैगी। इस सम्मतिपर भारतके प्रसिद्ध संवादपत्रऔर लंडन टाइम्सने विरोध किया। परंतु उससमय भारतके स्टेटसेक्रेटरी लार्डसालिस्बरी थे। उन्होंने लार्डनार्थ ब्रूकके कथनका समर्थन किया और इसीके अनुसार कार्य किया गया। सर ज्यार्ज केम्पबेलकी दूसरी सूचनाको वाइसरायने पसंद किया और इसके लिये अकाल पीडितोंकी सहायताके हेतुसे भारत गवर्नमेंटने ५ लाख टन चाँवल खरीद किये । इन चावलोंको अकाल पीडित भागोंमें ले जानेके लिये १ लाख छकड़े, २ लाख बैल, २ हज़ार ऊंट, २३०० नावें और ९ स्टीमरोंसे काम लिया गया । अकाल पीडितोंकी रक्षाके लिये जो काम खोले गये उनमें काम वा बिना काम भोजन पाने वालोंकी संख्या फरवरी मासमें २८७००० थी किन्तु जूनमें वही बढ़कर १७ लाख ७० हज़ारको पहुंची । इस अकालके लिये गवर्नमेंटका अनुमानसे ६॥ करोड़ रुपया व्यय हुआ । अकाल पीडितोंको अन्न पहुंचानेमें गवर्नमेंटने किसी तरहकी त्रुटि न रक्खी । इस बातका प्रमाण यही है कि सरकारके मँगाये हुए अन्नमेंसे अकालके अंतमें १ लाख टन चाँवल बच रहे । इग्लैंडकी प्रजाने भारतवर्षके अकाल फंडमें उस समय अनुमान २० लाख रुपया दिया ॥

अध्याय ३७.

बड़ौदेके गायकवाड़का पदच्युत होना ।

सन् १८७४ ई० में बड़ौदाके गायकवाड़ महाराजा मलहार राव गादीसे उतार दिये गये । उनपर मुख्य अपराध यही लगाया गया था कि उन्होंने बड़ौदेके रेज़िडेंट कर्नल फेरको मरवा डालनेका प्रयत्न किया । इस प्रयत्नका कारण यह बतलाया गया कि लक्ष्मी बाई नामकी एक रूपवती स्त्री को उन्होंने उसके पतिसे छीन कर अपनी रानी बना लिया । उस स्त्रीके जो पुत्र हुआ उसे अपना उत्तराधिकारी बनानेका मलहार रावने निश्चय किया । परंतु "लक्ष्मी बाईका पहला पति जीवित था इसलिये उस बालकका गादीपर स्वत्व नहीं है " यह बात कहकर कर्नल फेरने उनकी योजना स्वीकार न की । कर्नल फेर नित्य प्रातःकाल वायुसेवनसे लौटकर एक प्याला शरबत पिया करतेथे । एक दिन साहबके बटलरने किसीके सिखानेसे उस प्यालेमें संखिया और हीरेका चूर्ण डाल दिया । इसमें महाराजाका संबंध मानकर एक कमीशन द्वारा उनके अपराधकी जांच की गई । इस कमीशनमें सर रिचर्ड काउच सर रिचर्ड मीड मिस्टर फिलिप मेलविल, ग्वालियर और जयपुरके नरेश तथा ग्वालियरके दीवान राजा सर दिनकर राव नियत हुए । महाराजने अपनी रक्षाके लिये विलायतके सुप्रसिद्ध बेरिस्टर सार्जंट बेलंटाइनको बुलाया । २३ फरवरीसे १८ मार्च तक जाँच हुई । कमीशनके तीनों अंगरेज़ सभासदोंने महाराजा को दोषी और देशी सभासदोंने निर्दोष सिद्ध किया । लार्ड नार्थब्रूकने अंगरेजोंके कथनको विश्वासनीय मानकर महाराज मलहार रावको पदच्युत किया । इसके साथही उन्होंने एक आज्ञापत्र प्रकाशित कर उसमें लिखा कि " महाराज मलहार रावके वारिसोंका गादीपर कुछ स्वत्व नहीं रहैगा किन्तु प्राचीन सन्धिके अनुसार बड़ौदा राज्य स्थिर रक्खा जायगा । " गत महाराज खंडेरावकी विधवा रानी उस समय विद्यमान थीं । उन्हीको सरकारने दत्तक लेनेका अधिकार दिया । उस आज्ञापत्रमें यहभी लिखा था कि "महाराज कर्नल फेरको वध करनेके अपराध में पदच्युत नहीं किये गये हैं किन्तु उनके प्रसिद्ध दुराचार और राज्यकी उन्नति न करनेका उन्हें यह दंड दिया गया है । " आजकलके महाराज श्रीमान् सयाजीराव को श्रीमती जमनाबाईने दत्तक लिया और उनका यह कार्य गवर्नमेंटने स्वीकार किया ॥

अध्याय ३८.

भारतवर्षकी मनुष्य गणनायें।

श्रीमतीके शासनमें भारतवर्षकी तीनवार और उनकी मृत्युके वर्षमें एक बार इस तरह सन् १८७१,सन् १८८१,सन् १८९१सन् १९०१ई०कुल चारवार मनुष्यगणना हुई। सन् १८७१ई० में जो गणना हुई उसकी रिपोर्ट सन् ७५ ई० में प्रकाशित हुई थी। इससे पूर्व अवध, पंजाब और वराड़ प्रान्तकी गणना तीन चार वर्ष पहले होचुकी थी इस लिये उस समय ये प्रान्त न गिनेगये। दोनोंबार की गणनाको जोड़कर सरकारने प्रकाशित किया कि भारतवर्षकी गवर्नमेंटके अधिकारमें ९लाख ४ हजार ४९ वर्गमील धरतीपर १९ करोड़ ५ लाख ६३ हजार ४८ मनुष्य बसते हैं। देशीरजवाड़ोंकी गणनाको इसे संयुक्त करनेसे भारतवर्षमें कुल भूमि १४ लाख ५० हजार ७४४ वर्गमील और २६ करोड़ ८८ लाख ३० हजार ९५८ मनुष्य हुए। इनमेंसे सरकारी राज्यमें हिन्दू १४ करोड़ ५ लाख और मुसल्मान ४ करोड़ ७॥ लाख। परंतु इसवारकी मनुष्यगणना ठकि नहीं थी इस लिये सरकारने दशवर्ष बाद सन् १८८१ई० में फिर गिनतीकी और तबहीसे यह नियम करदिया कि प्रतिदश वर्षमें इस देशकी गणना हुआ करै॥

सन् १८८१ ई० के वर्षमें जो गणना हुई उसमें काश्मीर और नेपाल सिवाय भारतके समस्त देशीराज्य भी संयुक्त कियेगये इस गणनाके अनुसार भारतवर्ष भरमें २५ करोड़ ४० लाख मनुष्य हुए। इस संख्यामें से२०करोड़ ४० लाख ब्रिटिश राज्यके और ५ करोड़ देशी रजवाड़ोंके। इस गिनतीके समय मेवाड़ और बंबई प्रान्तके भीलोंने शिर उठाकर मनुष्य गणना बिभागके कर्मचारियों पर आक्रमण किया था। इसका कारण यह बतलायागया था कि गिनती करनेसे भीलोंके चित्तपर कुछ भ्रम हुआ है किन्तु पछिसे बिदित हुआ कि शराबके नवीन आईन ने उन्हें असंतुष्ट कर दिया था॥

इससे ठीक दशवर्ष बाद सन् १८९१ई० की १६ फरवरी को भारत वासियों की फिर गणना हुई। उसके साथ सन् १९०१ की तुलना करने के लिये दोनों वर्षों का लेखा साथ २ लिखा गया है—

ब्रिटिशराज्य ।

	सन् १८९१	सन् १९०१	–घटे+बढ़े
अजमेर मेरवाड़ा	५४२०००	४७६०००	–१२.१७
आसाम	५४३३०००	६१२२०००	+१२.६७
बंगाल	७१३४६०००	७४७१३०००	+४.७२
बराड़	२८९७०००	१४९१०००	–४९.९
बंबई	१५९५७०००	१५३३००००	–३ ९३
सिंध	२८७१०००	३२१२०००	+११.८८
अदन	४४०००	४१०००	–६.४८
अपर ब्रह्मा	३३६२०००	३८४९०००	+१४.४९
लोअर ब्रह्मा	४४०८०००	५३७१०००	+२१.८४
मध्यप्रान्त	१०७८४०००	९८४५०००	–८.७१
कुर्ग	१७३०००	१८००००	+४.२८
मदरास	३५६३००००	३८२०८०००	+७.२४
पश्चिमोत्तर प्रदेश	३४२५३०००	३४८१२०००	+१.६३
अवध	१२६५००००	१२८८४०००	+२.४०
पंजाब	२०८६६०००	१२४४९०००	+७.५८
बलूचिस्तान	०	८१००००	०
अंडमन	१५०००	२४०००	+५६.९५
ब्रिटिशराज्यका जोड़	२२१२६६०००	२३१०८५०००	+४.४४

देशी रजवाड़े ।

	सन् १८९१	सन् १९०१	–घटे+बढ़े.
हैदराबाद	११५३७०००	१११७४०००	–३.१४
बड़ौदा	२४१५०००	१९५००००	–१९.२३
मैसूर	४९४३०००	५५३८०००	+१२.०
काश्मीर	२५४३०००	२९०६०००	+१४.२४
राजपूताना	१२०१६०००	९८४१०००	–१८.१
मध्यभारत	१०३१८०००	८५०१०००	–१७.५
बंबई	८०५९०००	६८९१०००	–१४.४९

मद्रास	३७००००००	४१९०००००	+१३·२३
मध्यप्रान्त	२१६०००००	१९३८००००	-८·१९
बंगाल	३२९६०००	३७३५०००	+१३·३३
पश्चिमोत्तर प्रदेश	७९२०००	७९९०००	+·९१
पंजाब	४२६३०००	४४३८०००	+४·१२
ब्रह्मदेश	०	१२२८०००	०
रजवाडोंका जोड	६६०५००००	६३१८१०००	-४·३४
भारतवर्षका जोड	२८७३१७०००	२९४२६६०००	+२·४२

यद्यपि सन् १९०१ की मनुष्य गणना श्रीमतीके स्वर्गवास के अनन्तर हुईहै। परंतु उससे आपके शासनके अंतिम दश वर्षमें भारतवर्षकी कैसी स्थिति रही, इसका दिग्दर्शन होता है इसकारण यहां लिखी गई है । चारों गणनाओंकी परस्पर तुलना करनेमें पुस्तक बढ़जानेका भय है । आशा है कि, पाठक स्वयं इस कार्यका बोझा अपने ऊपर लेंगे ॥

अध्याय ३९.

श्रीमान् प्रिंस आफ् वेल्सका भारतवर्षमें स्वागत।

विलायती कपड़ेपर कर।

सन् १८७५ ई० में भारतके इतिहासमें सबसे आवश्यक कार्य श्रीमान् युवराज के भारत पधारनेका हुआ। यह वही महोदय हैं जो अब श्रीमान् सप्तम एडवर्डके नामसे राज्य करते हैं इनके भारतआनेका संकल्प इंग्लैंडके प्रधान अमात्य मिस्टर डिसरायली (लार्ड बीकान्सफील्ड) ने ८ जुलाईको प्रकाशित किया। और इस यात्राके लिये ३ लाख रुपया भारत गवर्नमेंटके खर्च करनेका निश्चय किया और इसके साथही ६लाख रुपये उन्होंने विलायती कोषसे देनेका पार्लियामेंटमें प्रस्ताव किया । भारतवर्षपर इसप्रकारके खर्चका बोझा डालनेके विषयमें प्रोफेसर फासेट और मिस्टर हेन्की विरोधीहुए किन्तु उनकी बात चलीनहीं। ११ अक्टूबर को श्रीमान् 'सेरापीस' धूमपोत द्वारा विलायतसे विदाहोकर पैरिस, इटाली, एथेंस, पोर्टसैद, केरो और अदन होतेहुए ३०नवंबर को बंबईमें पहुँचे । मार्गमें श्रीमान्ने माताकी आज्ञानुसार केरोमें मिसरके खेदीव को जी. सी. एस. आई.की पदवीदी। आपका स्वागत करनेके लिये श्रीमान् गायकवाड नरेशके सिवाय और २ कई एक राजाभी बंबई आये थे। भारतवर्ष भरमें

एक छोरसे दूसरे छोर तक श्रीमान्‌ने भ्रमण किया। और बड़े २ रजवाडोंमें पधारकर राजाओंसे भेंटकी। श्रीमान्‌के सम्मानमें आगरे में एक बडा दर्बार हुआ जिसमें भारतवर्षके प्रायः सबही छोटे बड़े राजा इकट्ठे हुए। भारतवर्षकी प्रजाको युवराजके मुखकमलके दर्शनसे अत्यानन्द हुआ। और युवराजने इस देशसे विदाहोनेके अनन्तर भारतवर्षके वाइसराय लार्ड नार्थब्रूकको पत्र लिख कर भारतवासियोंको धन्यवाद दिया। इस विषयमें अधिक बातें इस पुस्तकके अंतमें श्रीमान् सप्तम एडवर्डके चरित्रमें लिखी गई हैं ॥

जिस समय प्रिंस आफ् वेल्सके आतिथ्यमें भारतवर्ष आनन्द सागरमें हिलोरे ले रहाथा उसी समय भारतीय विभागके स्टेट सेक्रेटरी लार्ड सालिस्बरी और भारत के वाइसराय लार्ड नार्थब्रूककी आपसमें खटपट खड़ी होगई। और इसका परिणाम यह हुआ कि लार्ड नार्थब्रूकको अपना पदत्यागनापड़ा। सन् १८७४ ई० की १५ जुलाईको शिमलेकी व्यवस्थापक सभाने व्यापारके पदार्थों पर करडालनेकी इच्छासे लार्ड सालिस्बरीके पास कुछ लिखापढ़ी की थी और उसीके अनुसार ५ अगस्तको कर डालदियाथा। लार्ड सालिस्बरी ने लिखाथा कि, भारत वर्षकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं है इसलिये विलायती कपड़े और सूतके भारत आनेका कर निकालदेना चाहिये। यह पत्र भारतमें पहुँचने पूर्वही वाइस-रायने ५ अगस्तको लार्ड सालिस्बरी के नाम एक तारदिया जिसमें लिखा कि महसूल संबंधी वर्तमान नियमोंका संशोधन कर भारतसे बाहर जानेवाले मालका महसूल बिलकुल उठादियागयाहै और साथही बाहरसे आने वाले मालका महसूल साढ़े सात रुपया सैकड़ा की जगह घटाकर पांचरुपया रक्खा गयाहै। और कपड़े तथा सूतका महसूल ज्योंका त्यों स्थिर रखकर लंबे धागे के तारकी रुईपर महसूल डालागयाहै। इस तारको पातेही लार्ड सालिस्बरी क्रुद्ध होगये और तारद्वारा वाइसरायसे पूंछा कि अधिक आवश्यक और गंभीर विषयों पर आईन बनानेसे पूर्व उनके विषयमें स्टेट सेक्रेटरीसे आज्ञा मांगनेका जो नियम है उसपर अमल क्यों नहीं किया गया। इसके उत्तरमें वाइसरायने १६ अगस्तको लिखा कि, व्यापारियोंकी ओरसे इस संशोधनकी बहुत राह देखी जातीथी, कलकेत्तकी चेम्बर आफ् कमर्सने दो प्रार्थना पत्र देकर इस विषयमें त्वराकी थी, निकास व्यापारके लिये अनुकूल ऋतु आपहुँची थी और विलायतसे स्वीकार कराकर आईन बनानेमें बहुत विलंब लगनेकी संभावना थी और इससे बहुत कुछ हानि होती। इसपर लार्ड सालिस्बरीने उनको दबाकर इस बात पर फिर विचार करनेका अनुरोध किया इसी बातसे असंतुष्ट होकर उन्होंने अपना पद त्याग दिया ॥

अध्याय ४०.

श्रीमतीको 'महारानी' की पदवी ।

भारतवर्षका शासन रानीके हाथमें आनेके बाद यूरोपमें श्रीमतीकी पदवी के विषयमें बहुत कुछ चर्चा हुई । रूसने कहा कि, रानीका पद भारतके साधारण राजाओंसे बढ़कर नहीं है । अन्य राज्योंसे पत्र व्यवहारमें श्रीमतीके भारतका शासन हाथमें आने बाद केवल रानीके अतिरिक्त कुछ उपाधि नहीं लिखी जाती थी । इन कारणोंसे इंग्लैडमें श्रीमतीके पदके विषयमें बहुत चर्चा होने लगी । ऐसे अवसरमें सन् १८६८ई० में ईरानके शाहने एक पत्र लिखा था उस पर बहुत झगड़ा उठा । उस समय यह निश्चय हुआ कि,' किसी प्रकारसे पदवी के विषयका निपटारा करना चाहिये । परंतु इस कार्यको प्रकाशित करने पूर्व यह संदेह था कि, कहीं भारतके राजा इससे अप्रसन्न न हो बैठें इसलिये गुप्त परामर्शके बाद श्रीमान् प्रिंस आफ् वेल्स भारतके राजाओंकी भक्ति और इच्छा जांचनेके लिये भेजे गये । सन् १८७५. ई० में युवराजका भारतमें परम सत्कार हुआ और यहां की प्रजा और राजाओंने शुद्ध अंतःकरणसे उनको भावी सम्राट् मानों । इससे निश्चय होगया कि श्रीमतीको भारतवर्षकी साम्राज्ञी बनाना उचित है । इसी अवसरमें रूसके द्वितीय ज़ार निकोलसने मध्य एशियाके सम्राटका पद धारण किया बस इसीपर रानी विक्टोरिया को साम्राज्ञी विक्टोरिया वा महारानी विक्टोरियाका पद देना निश्चय होगया ॥

१७ फरवरी सन् १८७६ ई० को इंग्लैंड के प्रधान अमात्य मिस्टर डिसरयलीने श्रीमतीको "एम्प्रेस आफइंडिया" की उपाधि दिलानेके लिये पार्लियामेंट में एक बिल उपस्थित करते समय कहा कि, "श्रीमतीके पदवी धारण करनेसे भारत की प्रजा और राजा बहुत प्रसन्न होंगे । यह बात भलीप्रकार प्रमाणित होचुकी है । " इसबातपर पार्लियामेंटमें बहुत वादानुवाद हुआ और कितनेही लोग कहने लगे कि, इंग्लैंडके राजनियमानुसार रानी ऐसा पद धारण नही कर सकती हैं । इसपर मिस्टर डिसरायलीने उनको यह समझाकर संतुष्ट किया कि "श्रीमती इंग्लैंडकी रानीही रहैंगी । यहांकी महारानी नही बनना चाहतीहैं । " इस उत्तर को पाकर पार्लियामेंटने इस विषय का आईन पास कर दिया । इसके पश्चात् १ मई को लंडन मिडल सेक्स और एडिनबरोके शेरिफों द्वारा इंग्लैंडमें इसका ढिंढोरा पिटवाया गया । इसमें स्पष्टरूपपर यह नहीं लिखाथा कि, श्रीमती केवल

भारतवर्षकी महारानी और इंग्लैंडकी रानी रहना चाहती हैं इसलिये प्रजामें हलचल मचगई । और पार्लियामेंटमें मंत्रि मंडल के विरुद्ध अविश्वासकी प्रार्थना उपस्थित कीगई । इसपर प्रधान अमात्यने उपाधिका प्रयोजन समझाकर प्रजा को प्रसन्न करदिया ॥

श्रीमतीको जो उपाधि देना निश्चयहुआ उसे अंगरेजीमें "एम्प्रेस आफ् इंडिया" कहते हैं । इसका अर्थ यह होता है कि, भारतवर्ष के सम्राट्की स्त्री परन्तु इनके विषय में यह बात नहीं थी । इसलिये भारत वर्ष की देश भाषाओंमें इसका ठीक अर्थ क्या किया जायगा ? यह प्रश्न प्रोफेसर मैक्सम्यूलर और सर विलियमम्यूर से पूँछागया । प्रोफेसरने कहा कि "महारानी" ठीकहै और म्यूरसाहबने "कैसर हिन्द" ठीक बतलाया । 'महारानी' की अपेक्षा गवर्नमेंटकी दृष्टिमें 'कैसरहिन्द अधिक प्रभावशाली देखपड़ा इसलिये सर्कारी काग़जों में यही लिखापढ़ा जाता रहा किन्तु साधारण प्रजा अपने प्रियतमको किसी सरल शब्दसे संबोधन करती है और सरल शब्द ही से लेगोंके हृदय पर अधिक प्रभाव उत्पन्न करता है इसलिये भारत वर्ष की प्रायः सबही भाषाओं में "महारानी" शब्द का अनायास प्रचार होगया । "कैसरहिन्द" के दो अर्थ हैं एक भारतवर्ष का सिंह और दूसरा "भारतवर्षका सीजर" । इनमेंसे प्रथम का अर्थ प्रकटहै और सीजर रोमन राज्य में सर्वोत्कृष्ट शासक था बस उसीके नाम पर कदाचित् सर विलियम म्यूरने इस पदकी योजनाकी होगी ऐसा अनुमान है ॥

अध्याय ४१.

दिल्लीका राजसी दर्बार ।

श्रीमतीके 'महारानी' पद धारण करनेकी सूचनाके लिये एक ढिंढोरा १ जनवरी सन् १८७७ ई० को प्रकाशित किया गया था । इस बातका हर्ष प्रकाशित करनेके लिये उसदिन दिल्लीमें एक वृहत् और प्रभावशाली दर्बार इकट्ठा हुआ । सौभाग्यमें दुर्भाग्य का चिह्न इतनाही था कि, उस समय देशभरमें भयंकर अकाल पड़नेका पक्का निश्चय होचुका था इसलिये भारतवर्षके वाइसराय लार्ड लिटनने राजाओंको सूचित करदिया था कि, जिनके राज्यमें अकालका भय अधिकहो उनके उपस्थित होनेकी आवश्यकता नहीं है परंतु देशभरके प्रायः सबही राजा महाराजाओंने इस भयंकर आपत्तिको तिनके समान गिनकर इस राजवैभव और महोत्सवमें संयुक्त होना अपनी शोभा और

कर्तव्य समझा और अपनी २ सेना, हाथी, घोड़े, राजकुटुम्ब, सर्दार, जागीरदार और उमरावों समेत दिल्लीमें इकट्ठे हुए। उस समय दिल्लीकी शोभा राजा युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञका स्मरण दिलातीथी । २३ दिसम्बरको वाइसराय स्पेशल ट्रेनद्वारा दिल्ली पहुँचे । हैदराबाद के निजाम, ग्वालियर, इंदोर, मैसूर, उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, बूंदी और कोटा आदि के राजा महाराजाओंने स्टेशनपर आप का स्वागत किया। इसके वाद तीन दिन तक वाइसरायने भिन्न २ राजाओंसे भेंटकी। इसके अनंतर १ जनवरीको शाही दर्वार हुआ । दर्वारमें एक उच्च सिंहासनपर लार्ड लिटन आसीन हुए। उनके आसपास अपने २ पदके अनुसार अर्द्धचन्द्राकार में राजालोगों को वैठनेका स्थान मिला । इस प्रभावशाली दर्वारमें भिन्न २ वस्त्रालंकारों से सुसज्जित राजालोगों के विराजनेके अनंतर लाट साहवने खड़े होकर अंगरेजीमें महारानीका ढिंढोरा सुनाया।अँगरेजीका व्याख्यान समाप्त होनेवाद वही ढिंढोरा उर्दू में पढ़ा गया । इतना होतेही १०१ तोपों की सलामी हुई। वाइसरायने अपने व्याख्यान में भारत वर्ष में ब्रिटिशराज्य का संस्थापन, उसकी उन्नति, स्थिर रहनेके कारण, देशी राजाओं और प्रजाकी राजभक्ति और सर्कारी कर्मचारी और सेनाकी प्रशंसा की । और कहा कि इन्हीं कारणों से हम लोगोंको आजका दिन देखना नसीव हुआ है । और श्रीमतीको अपने शासन में देशकी नानाप्रकारसे उन्नति करनाही अभीष्ट है । वाइसरायका व्याख्यान समाप्त होतेही सव लोगोंने खड़े होकर हर्षनाद किया। दिल्लीकी जीनतुल मसजिद और फतेपुरकी मसजिद इस हर्षमें गवर्नमेंट ने मुसल्मानोंको लौटादी। राजा महाराजाओंके लिये 'इंडियन इम्पाइर' के नाइट्की उपाधियां उसी समयसे निकाली गई और यथायोग्य रीति पर इस दर्वारमें सव राजाओंको उस प्रकारकी पदवीसे भूषित किया गया। इस उत्सवके हर्षमें १६००० कैदी वंधमुक्त किये गये ॥

दिल्ली हिन्दू और मुसल्मान राजाओंकी वहुत कालसे राजधानी चली आती है इस लिये यह स्थान इस कार्यके लिये अधिक उत्तम समझा गया। इस उत्सव पर अपने २ ठाठ समेत अनुमान ४०० राजा महाराजा इकट्ठे हुएथे। केवल दिल्ली ही में क्यों वरन भारत भरमें उस समय अपार हर्ष था। जो लोग इस दर्वार के समय उपस्थित थे उन्होंने आतिशबाज़ी और रोशनी की वड़ी प्रशंसा की ॥

पुराने समयके राजसूय यज्ञों में जब राजालोग इकट्ठे होते थे परस्पर स्पर्द्धा और ईर्षाका जन्म होताथा किन्तु इस दर्बारने राजाओंके मध्य प्रेम उत्पन्न किया और वे आपसमें भाई२की तरह मिले । बहुत वर्षोंमें इसतरह राजाओंके इकट्ठे होनेका यह अवसर आया था और आपसमें खिंचाखिंची होनेकी संभावना थी किन्तु, आजकल देशीराजाओं में आपसका जो मेल देखा जाताहै उसका जन्म इसी स्थानसे हुआ था । सत्य पूंछो तो ब्रिटिश शासनमें बाघ बकरी एक घाट पानी पीनेका यह दर्बार एक नमूनाथा । यह दर्बार रंग विरंगे वस्त्र, तरह २ की सजावट और नई २ सूरतोंके लिये एक प्रदर्शन था । आश्चर्य-कारक पदार्थोंके लिये अजायबखाना था और पुराने ढंगके राजसी ठाठका संग्रहस्थान था । इस उत्सवपर राजामहाराजाओंकी सेना और सरकारी कर्म-चारियों तथा सेनाके अतिरिक्त टीडीदलकी तरह लाखों मनुष्य दर्शक बनकर आये थे। इतनी अभूतपूर्व भीड़को स्थान देकर दिल्लीने यह दिखला दियाथा कि, मैं अनादिकालसे भारतवर्षकी राजधानीहूं और अनेक बार ऐसे मेले मेरे घरमें इकट्ठे होचुकेहैं ॥

लाट साहबने उपाधि और पदकके साथ एक २ झंडाभी प्रत्येक महाराजाको दियाथा । इसको प्रदान करतेसमय आप कहते जाते थे कि– "श्रीमती महारानीके भारत वर्षकी साम्राज्ञीकी उपाधि धारण करनेके स्मरण निमित्त यह आपके घरानेके राजचिह्न युक्त झंडा महारानीकी ओरसे आपकी भेंट करताहूं । श्रीमती महारानीको विश्वासहै कि, इस झंडेको उड़ाते समय इंग्लैंडके मुकुटके साथ आपके शुभाचिंतक राजवंशका जो दृढ़ सम्बन्ध है उसे और इसीतरह आपका शासन दृढ़ उन्नतिशाली और स्थिर रखनेकी इच्छा जो सरकारी अधिकारी रखते हैं उसे आप स्मरण रक्खें गे । श्रीमती महारानीकी आज्ञासे इस पदकसे मैं आपका शृंगारवर्द्धन करताहूं । आप इसे वर्षोंतक पहने और आपके कुटुम्ब में इस उत्सवके स्मरणार्थ यह दीर्घ कालतक रक्षित रहै यह मेरा आशीर्वाद है" ॥

अध्याय ४२.

भारतमें आँधी और दुर्भिक्ष ।

सन् ७६–७७ के सालमें जैसे श्रीमतीके महारानीकी उपाधि धारण करने का महोत्सव हुआ उसी तरह देशको दो भयंकर आपदाओंने भी धर दबाया था।

इस वर्षके अक्टूबर मासमें बंगालेकी खाड़ीमें भयानक आँधी आई। इस आँधी से बाकरगंज और नोआखालीके जिले तहश नहश होकर २ लाख १५ हज़ार मनुष्योंके प्राणगये। उस समय बंगालमें सर रिचार्ड टेम्पल लेफ्टिनेंट गवर्नर थे। उन्होंने अपनी रिपोर्टमें लिखाथा कि "३१ अक्टूबरकी रात्रिमें बंगालकी खाड़ी में बहुत भयानक आँधी आई। पवनके वेगसे बीस २ फुटकी लहरें उठने लगी। कितनीही जगहकी तरंगें इससे भी बढ़कर थी। रात्रिको सोनेके समय आँधीके बिलकुल चिह्न दिखाई नही देते थे किन्तु ११ बजेके लगभग एकाएक तूफान ने बलपकड़ा और तुरंत चारोंओरसे रोना पीटना मचगया। इसी समय दोनों जिले जलमग्न होगये। बाढ़की शीघ्रतामें लोग अपने छप्परोंपर भी न चढ़ने पाये। पानीके दबावसे मकान बैठगये। मनुष्यों और चौपायोंकी लाशोंके ढेर लगगये। तीन हज़ार वर्गमील भूमिमें यह तूफान था। यहां १० लाख ६२ हज़ार मनुष्य बसते थे जिनमें चौथाईके लगभग मरगये"॥

'दूखते चोट और कनौडे भेट' की कहावतके अनुसार आपत्तिपर आपत्ति आया करती है। इस वर्षमें बंगाल प्रान्तको आँधीसे दुःख सहना पड़ा तब अन्य प्रान्तोंको अकालने आ दबाया। दक्षिण भारतके कईएक जिलोंमें वृष्टि बिलकुल न हुई। और मदरास बंबई तथा हैदराबाद राज्यमें असमय और आवश्यकतासे कम मेह बरसा। इस कारण खेतोंमें एक दानाभी उत्पन्न न हुआ। दिसम्बर मासमें दक्षिण देशका अन्न तिगुना महँगा होगया। ऐसे समयमें बंगाल, ब्रह्मदेश, पश्चिमोत्तरप्रान्त और मध्यदेशमें अन्नकी न्यूनता न थी और अकालपीड़ित भागोंको यथावश्यक अन्न वहांसे मिलसकता था। परन्तु उससमय आजकलकी तरह रेल्वे और सड़कोंका उत्तम साधन न था। इस कारण अन्न पहुँचने में बड़ी कठिनता पड़ी परन्तु सरकारने इसका यथाशक्ति अच्छा बंदोबस्त करदिया। अकालके आरंभ में भूखों मरनेपर भी दीन लोगोंने अकाल मोचनके कामोंमें परिश्रम करना और सेंत में अन्न लेना स्वीकार न किया किन्तु नवंबर दिसंबरमें एकदमसे लाखों ही सहायता के लिये टूटपड़े। अकालकी स्थिति जाननेके लिये गवर्नमेंट ने सर रिचार्ड टेम्पल को नियत किया तो उन्हों ने जांचके पश्चात् रिपोर्टकी कि जिन लोगों में पेट भरलेनेकी शक्ति है वे भी सरकारी सहायतामें आपड़े हैं। इसपर गवर्नमेंट ने छोटे २ काम बन्दकर अकाल पीड़ितों का दैनिक वेतन कम कर दिया। इसप्रकार का उद्योग करने पर भी अपरैलके अंतमें मदरास में ७ लाख १६ हज़ार, मैसूर में ६२ हज़ार और बंबई प्रान्त में २ लाख ८७ हज़ार अकाल

पीड़ित थे। यह गणना काम करनेवालोंकी थी किन्तु अशक्तोंकी दशा बिलकुल बुरी थी। जुलाई के अंतमें मदरासमें ८ लाख ३९ हजार बंबई में १ लाख ६० हजार और मैसूर में १ लाख १ हजार अशक्त थे। अकाल मोचनके काम देरसे आरंभ हुए थे। मदरास बंगलोर आदि नगरों में सड़कके दोनों ओर मुरदों के ढेर लगे थे हैज़ा, अतिसार और भूखसंबंधी रोगोंने लोगोंका सर्वनाश करदिया। सरकारी रिपोर्ट से मालूम होता है कि, इस अकाल में १३॥ लाख मनुष्य कालके कवर बनगये। मृत्यु संख्याकी वृद्धि के साथ जन्म संख्याभी घटगई थी। लंडन के लार्ड मेयरने जो फंड इस कार्यके लिये इकट्ठा किया उसमें लगभग पचास लाख रुपया इकट्ठा हुआ। गवर्नमेंटने इस कार्य में ९॥। करोड़ रुपया खर्च किया॥

इस अकालसे गवर्नमेंटको एक आवश्यक शिक्षा मिली। उसने प्रतिवर्षअकाल की रक्षाके लिये १॥ करोड़ रुपया अथवा प्रति दशवर्ष में १५ करोड़ रुपया सरकारी कोष में से अलग करने का ठहराव किया। खर्चमें घटा बढ़ीकर इतना रुपया इकट्ठा नहीं किया जासकता था इसलिये सरकारको विशेषकर डालनेकी आवश्यकता हुई। इस कार्य को संपादन करने के लिये भारत गवर्नमेंटने मान्तीय गवर्नमेंटोंको अपने २ कामों में स्वतंत्रता देकर ४० लाख रुपया तो उनसे लिया और शेष में भूमिकर बढाने के सिवाय लाइसेंस टैक्स डालकर रुपया इकट्ठा करालिया। यह फंड लार्ड लिटन के समयमें नियत हुआ था। लार्ड रिपन और लार्ड डफरिनने इसमें कुछ हाथ न डाला किन्तु रुपये की भीड़ आ पड़ने पर लार्ड लैंसडौन ने प्रजापर अकाल के लिये कर डालकर इकट्ठा किये हुए द्रव्यसे काबुल और पश्चिमोत्तर सीमाकी लड़ाईमें जो गवर्नमेंटका व्यय हुआ था उसकी क्षतिकी पूर्ति करली और अकाल फंड नामको भी न रहा॥

अध्याय ४३.

रूस और रूमका अंतिम संग्राम।

सन् ७७–७८ ई०में रूसका रूमसे अंतिमवार भयंकर युद्ध हुआ। क्रीमियाके युद्धमें रूमकी इंग्लैंड और फ्रांसने मिलकर सहायतादी थी इसका रूमपर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। वह इस बातसे बिलकुल निश्चिन्त होगया। उसने राज्यको दृढ करने और प्रजाकी उन्नति करनेका कुछ भी प्रयत्न न किया

किन्तु क्रीमियामें हार खानेके दिनसे रूसने धीरे २ अपनी शक्ति बढ़ाना आरंभ किया। और बातकी बातमें उसने इतनी शक्ति उत्पन्न करली कि सन् १८७०-७१ ई० का संधिपत्र होते समय उसने निर्भय होकर कह दिया कि मैं अबइस बातके लिये बँधा हुआ नहीं हूं। उसकी शक्ति बढ़ती देखकर कोई भी राज्य उसकी ओर शिर उठाकर न देखसकी। इसके साथही रूम राज्यमें अनेक घटनायें ऐसी हुई जिनसे दिन २ वह निर्बल पड़ता गया। और उसके सहायक राज्योंने भी रूमके लिये उदासीनता ग्रहणकी। सन् १८७५ ई० के जुलाई मासमें बोसनिया और हर्जे गोविना नामक दो रूमी प्रदेशोंमे बलवा होगया। सर्वियाने रूमकी अधीनता छोडकर स्वतंत्र मार्ग लिया। डैन्यूब नदीके निकटवर्त्ती वालेकिया और मोलडेविया प्रान्त मिलकर रोमेनियाके नामसे अलग राज्य बन बैठा। इस तरह क्रीमियाके युद्धके पश्चात् पैरिसमें जो संधिपत्र परस्परकी सहायताके लिये तैयार हुआ था वह धूलमें मिलगया। बोसनिया और हरज़ेगोविनाके उपद्रवको शांत करनेका प्रयत्न निष्फल गया। रूमके राजनीतिज्ञ कहने लगे कि उपद्रवियोंको केवल रूसही क्यों बरन आस्ट्रिया, सर्विया और मोंटनिग्रोकी प्रजा सहायता दे रही है। उन्होंने इंग्लेंडसे प्रार्थनाकी कि आस्ट्रियाको दबाकर उपद्रवियोंकी सहायता बंद कराओ। यही बात सर्विया और मोटनिग्रोकी गवर्नमेंटोंसे कहीगई। परंतु उपद्रवका बल किसी तरह घटा नहीं। अंतमें यूरोपके पश्चिमी राज्योंने इस बखेड़ेमें पड़कर निपटारा करानेका निश्चय किया। आस्ट्रियाने एक पत्र रूमके नाम लिखनेकी सम्मतिदी जिसमें उससे कहाजावे कि आपने अपने राज्यको प्रबंध सुधारनेका जो वचन दिया था उसका अभीतक पालन होना तो एक ओर रहा किन्तु दिन २ प्रबंध बिगड़ता जाता है इस लिये हम रूमके प्रबंधमें हस्ताक्षेप करते है। ३० दिसंबर सन् १८७५ ई० को इसके अनुसार पत्र तैयार हुआ। इसमें आस्ट्रियाके साथ रूस, और जर्मनीने हस्ताक्षर किये, फ्रांस और इटाली भी इस बातसे प्रसन्न हुए किन्तु इंग्लैंडके मनमें न आई। इंग्लैंडने इसकार्यमें इतनी देरीकी कि अंतमें इस पत्रपर हस्ताक्षर करनेका स्वयं रूमराज्यने अनुरोध किया। इंग्लैडके संयुक्त होनेबाद वह पत्र रूमको भेजा गया। रूमने उसके अनुसार चलनेका प्रण किया परंतु सप्ताहपर सप्ताह बीतने परभी इसकी कुछ कार्यवाही न हुई। अवसर साधकर रूसने, आस्ट्रिया और जर्मनीको प्रेरणाकी। उसकी सम्मतिसे तीनों राज्योंके प्रतिनिधियोंने बर्लिनमें इकट्ठे होकर उस सूचनाके अनुसार रूमको दबाकर काम कराना निश्चय किया। इस सम्मतिमें इंग्लैंडने साथ न दिया। इससे इस पत्रका रूमपर पूरा प्रभावन पड़ा और परिणाम यह हुआ

कि सेलोनिकामें उपद्रव खड़ा होगया । वहांके फरांसीसी और जर्मन राजदूत-मारे गये । इसी तरहका उपद्रव कुस्तुनतुनियामें भी हुआ और उपद्रवियोंने रूमके सुलतान अबदुल अजीज़को पदच्युत कर दिया। सुलतान पदच्युत होनेके बाद दो एक दिनमें आत्मघात करके मर गये उनके भतीजे मुरादने केवल तीनही मासराज्य किया। लोगोंने उनको उतारकर हमीदको गादी दी । इसके बाद भी उपद्रव बढ़ता ही गया । बलगेरियाके उपद्रवियोंने स्त्री बालकोंको काटडाला अंगरेजी दूतमिस्टर बेरिंगकी रिपोर्टसे जानागया कि १२ हज़ार मनुष्य फिलिपो पुलिसके हाथसे मारे गये हैं । रूम गवर्नमेंटने उपद्रव करनेवाली सेनाको दंड देनेके बदले पदवियां दी । सन् ७६ मे मोंटनिग्रो और सर्वियाने रूमसे खूब युद्ध किया । लड़ाईमें दोनोंकी हार देखकर रूसने बीचमें पड़कर युद्ध बंद कराया । इससमय इंग्लैंडने सम्मति दी कि सबराज्योंके रूमस्थित दूतोंको रूमराज्यकी रक्षा और वहांके प्रबंधको सुधारनेकी योजना करना चाहिये । इसबातको सबने स्वीकार कर रूमको पत्र लिखा किन्तु वह जानते थे कि कैसाभी दबाव हमारे ऊपर पड़े समयपर हमारी सहायता किये विना इंग्लैंडकी हानि है इस लिये उसने इस पत्रको सुना अनसुना करदिया।अंतमें रूसने सन् १८७७ई० के अपरेलकी २४ तारीखको रूमपर चढ़ाई की, रूसने कुछ सेना रूमको और कुछ रूमके एशिया राज्यको भेजी दोनों।राज्योंमें भयंकर संग्राम हुआ। रूस समझता था कि रूम आजकल शिथिल पड़गया है परंतु शिथिल रूमने मरते २ भी पराक्रम दिखाकर रूसके दांत खट्टे कर दिये। यह बात यहां तक पहुंची कि एकबार रूसको हारखाकर लौटनेका भयहुआ। परंतु अंतमें कार्स और प्लेवनाके क़िलेंको रूसने ले लिया। और सन् १८७८ ई० के आरंभमें रूसी सेना इस्तंबोलके निकट जापहुंची। अंतमें सैनस्टिकानो स्थानमें रूमको लाचार होकर एक प्रतिज्ञा पत्रपर हस्ताक्षर करने पड़े। उसका आशय यह था कि रूम राज्यकी ईसाई प्रजा जिन प्रांतोंमें निवास करती है वे स्वतंत्र किये जावे, बलगेरियाके नामसे राज्य अलग स्थापित हो और ईजियन समुद्रका एक बंदर उसे दिया जावै। इन शर्तोंको इंग्लैंडने स्वीकार न किया और रूससे रूमकी सहायतामें लड़नेके लिये कुस्तुंतुनियाकी ओर सेना भेज दी। इसके सिवाय भारत वर्षकी कितनी ही सेना मंगवाकर माल्टामें तैयार रक्खी। रूस और इंग्लैंडकी मुठभेड़ होने पूर्व जर्मनीके प्रधान अमात्यने बीच बिचाव किया। उन्होंने कहा कि सैनस्टिकानोके प्रतिज्ञा पत्र पर विचार करनेके लिये बड़े २ राज्योंके

प्रतिनिधियोंकी बरलिनमें एक सभा होनी चाहिये । थोड़ी आनाकानीके पश्चात् रूस और इंग्लैंडने इस बातको स्वीकार किया। बर्लिनके कान्फरेंसमें लार्ड सालिस्बरीको लेकर मिस्टर डिसरायली इंग्लैंडकी ओरसे गये । शर्तें ये हुईः— "(१) रोमेनिया, सर्विया और मोंटानिग्रो स्वतंत्र राज्य गिने जायँ (२) बालकन्सके उत्तर बलगेरिया अधीन राज्य स्थापित हो (३) बालकन्सके दक्षिणमें पूर्व रुमीलिया नामक नया राज्य नियत किया जाय (४) यूनान की सीमाके संशोधन किया जाय और रूम तथा यूनानका इस विषयमें परस्पर निपटारा न हो सकै तो सब राज्य मिलकर फैसलाकरैं (५) बास्तीया का शासन आस्ट्रियाको मिलै और वही वहांका प्रबंध करै (६) क्रीमिया युद्धके बाद पैरिसमें जो संधि हुई उसके अनुसार रूससे बिसाटेबिया लेकर रोमेनियाको देदिया गया था वह अब रूसको मिलै और इसके बदलेमें रूस उसे डैन्यूब नदीके टापू और डोबरुड्सका कुछ भाग देदै (७) रूम राज्यके अंतर्गत एशिया देशमेंसे आर्डाहान, कारस और बाटूथ रूसको मिलै और काले समुद्रका एक बंदर भी उसे दिया जाय और (८) रूम राज्यकी रक्षाके लिये इंग्लैंड और रूमकी जो गुप्त संधि हुई है उसके अनुसार साइप्रसका टापू इंग्लैंडके पास रहै ।— इस संधिपत्रके विषयमें पीछेसे एक आश्चर्यजनक रहस्य खुला । इस बातसे इंग्लैंडकी निन्दा हुई । रूमकी ओर सेना भेजने और भारतसे सेना मगानेका कार्य मिस्टर डिसरायलीने केवल दिखावटके लिये किया था किन्तु उन्होंने रूम और रूससे पहले ही गुप्त संधिकर साइप्रसका टापू ले लिया था । और बर्लिनकी कान्फरैंसमें रूसने जो कुछ पाया उसके विषयमें पहलेहीसे इंग्लैंडका रूससे ठहराव होगया था । इसी कारण रूसने बर्लिनके कान्फरैंसमें संयुक्त होना स्वीकार किया था ॥

अध्याय ४४.

भारत के समाचारपत्रोंकी स्वतंत्रता ।

सन् १८३५ ई० में भारतवर्षके गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बेनटिकने भारतवर्षके समाचारपत्रोंको स्वतंत्रता प्रदानकी थी । सन् १८५८ ई० में लार्ड केनिगने एक वर्षके लिये यह स्वत्वछीन लिया था । सन् ५७ ई० के बलवेके समय भारत वर्षके देशी अंगरेजोंने बहुतही स्वतंत्र और उत्तेजक लेखलिखे थे ।

लार्ड केनिंगको भय था कि ऐसे उत्तेजक लेखोंके होते हुए भारतवर्षमें शांतिस्थापन नहो सकैगी इसलिये उन्होंने एक वर्षतक समाचारपत्रोंका मुख बंदरखकर अवधि समाप्त होनेपर फिर उन्हें स्वतंत्रता प्रदान कर दी थी ॥

सन् १८७८ ई० में लार्ड लिटनने फिर इस आईनको प्रचलित करदिया। इसमें दोबुराइयां थी । एक जिससमय देशीपत्रोंकी स्वतंत्रता छीनी गई देशमें किसीप्रकार का उपद्रव न था और दूसरे इस नवीन आईनके अनुसार अंगरेजी पत्रोंकी स्वतंत्रता ज्योंकी त्यों स्थिर रखकर देशीपत्रोंका मुख बन्दकिया गयाथा। इसके विषयमें कार्यवाहीभी प्रायः अनुचित हुई थी। आईन बनानेसे पूर्व लोगोंको अपने २ मत प्रकाश करनेका समय देनेके बदले १४ मार्च सन् १८७८ ई० को व्यवस्थापक सभामें इसका चिट्ठा उपस्थित कर गवर्नमेंटने थोड़े ही घंटोमें इसे पास कर दिया। इंग्लैंडके लिबरल दल ने इस आईन की बहुत निन्दाकी और जब मिस्टर ग्लैडस्टन इंग्लैंडके प्रधान अमात्य हुए लार्ड रिपनके शासनमें सन् १८८० ई० में यह आईन फिर उठा दिया गया ॥

सन १८९७ ई० में बंबई गवर्नमेंटको देशीसमाचार पत्रोंपरसंदेह हुआ। कई एकपत्र संपादकोंको प्रजाको उत्तेजना देने और असंतोष फैलानेके अपराधमें दंड हुआ और सन् १८९८ ई० में लार्ड एलगिनने भारतीय दंड संग्रह में '१२४ अ' कीधारा बढ़ाकर समाचार पत्रोंका मुख आधा बन्दकर दिया । इसका परिणाम यह हुआकि कईएक पत्रोंने राजनैतिक विषयोंमें लिखना कमकर दिया और कितनेही नरमपड़गये किन्तु ऐंग्लोइंडियन पत्रोंका जैसा ढंग पहले था वैसाही बना रहा। कुछभीहो परंतु इसमें किसी प्रकारका संदेह नहीं है कि ब्रिटिशगवर्नमेंटने भारतवासियोंको बोलने लिखनेमें जो स्वतंत्रता दी है वह उसकी उत्तमताका एक चिह्न है और वर्तमान स्वतंत्रतासे भी यदि कोई इसका दुरुपयोग नकरै तो सरकार और प्रजाका बहुत कुछ कल्याण होसकता है ॥

अध्याय ४९.

काबुलका अंतिम युद्ध और रूसीचाल ।

अंबालेमें अमीरशेरअलीकी लार्ड सर जान लारेंससे भेंटहोने बाद काबुल के साथ कुछ कालतक कोई विशेष बात नही हुई थी। सन् १८७८ ई० में लार्ड लिटनको संदेह हुआ कि काबुलके दर्बार में गुप्त प्रपंच प्रवेश होगयाहै।

इस लिये उन्होंने अमीर शेरअलीको लिखा कि आपके यहां हमारा रेज़िडेंट सदा रखनेकी आज्ञादीजिये। इस बातको अमीरने स्वीकार न किया तब लार्ड लिटनने बहुतसी सेना साथ देकर एकदूतको काबुलभेजा। इसके साथ इतनीसेना भेजी गई जिससे अमीरको निश्चय होगया कि यह दूत नहीं किन्तु चढ़ाई की गईहै। २१ सितंबरको पेशावरसे बिदा होकर सेनाके काबुलकी सीमापर पहुंचतेही काबुलके एक कर्मचारीने उसे रोक दिया और कहा कि अमीरकी आज्ञा विना मैं न बढ़नेदूंगा। लार्ड लिटनने इस बातसे गवर्नमेंटका अपमान समझकर युद्ध ठानदिया। लड़ाईमें अफगानी सेना ब्रिटिश सेनाके सामने न ठहरसकी और थोड़े ही समयमें अंगरेजीसेना काबुल पहुंचगई। शेरअली भागगया। उसका पुत्र याकूब अली अमीरहुआ। काबुलमें ब्रिटिश गवर्नमेंटका अधिकार होगया। ५ मई सन् १८७९ ई० को काबुलके साथ भारतगवर्नमेंटकी नवीन संधि हुई। इसमें यह निश्चय हुआ कि सरकार छः लाख रुपया प्रतिवर्ष काबुलको दे और इसके बदले मे अमीर अपने राज्यका कुछ भाग सरकारको देदें। ब्रिटिशदूत सदा काबुलमें रहै। अंगरेज लोग अमीरको समय २ पर रुपया, शस्त्र और सेना देकर शत्रुसे उसकी रक्षाकरैं। इससंधिसे अंगरेज प्रजाको बहुत हर्ष हुआ। परंतु यह हर्ष अधिक काल तक नठहरसका। अफ़गानलोगोंने सन् १८४१ ई० की तरह इस समय भी अंगरेज़ोंके साथ कपट किया। ब्रिटिश दूत सर लुईकेवेनही और उनके साथके सब मनुष्य काबुलमें मारेगये। समाचार पातेही ब्रिटिश सेना दौड़ा दौड़से काबुल भेजी गई और २५ दिसंबरको वह बे रोकटोक काबुलनगरमें जा घुसी। इसखूनमें संयुक्त होनेका संदेह में अमीर याकूबखां पकड़कर भारत वर्षमें रक्खे गये। वर्तमान अमीर अबदुल रहमान खां इस अवसरमें रूसका आश्रय छोड़कर अफगान तुर्किस्तानमें आगये थे। उनको वहांसे बुलवाकर कहागया कि ब्रिटिश गवर्नमेंट आपको काबुल देकर भारतको लौट जाना चाहती है। यह बात अमीरको स्वीकार हुई और अंतमें सर लिपिल ग्रिफिनने काबुलमें एक दर्बार इकट्ठा कर अबदुल रहमानखांको काबुलका अमीर बनाया। उनसे सर लिपिल ग्रिफिनने स्वीकार कियाकि गवर्नमेंट काबुलमें रेजिडेंट रखनेका आपपर दबाब न डालैगी और न वह भीतरी प्रबंधोंमें हाथ डालैगी। केवल क्वेटा तकके भूभागको अपने अधीन रखकर शेष भाग काबुलको दे दिया गया। इस युद्धमें रुपयेका १ शिलिंग आठ पेन्सके हिसाबसे १ करोड़ ७४ लाख ९८ हजार पोंड व्यय हुआ जिसमेंसे ५ लाख पौंड इंग्लैंडने दिया॥

रूम और रूसके संग्रामके समय इंग्लैंडने रूमकी सहायताकी थी इस लिये इंग्लैंडपर रूसका अधिक कोप था । काबुलके अमीरके दर्बारमें अंगरेजोंका प्रभाव घटानेकी इच्छासे रूसने प्रपंच करना आरम्भ किया । इस प्रपंचका भेद प्रकाश करदेनेके लिये अमीर शेरअलीका रूससे जो पत्रव्यवहार रोरहा था उसे छपवादेनेका प्रस्ताव लार्ड लिटनने किया । गवर्नमेंट इस भेदको खोलनेमें रूससे अधिक शत्रुता होनेका भयकर इस बातमें आनाकानी करती थी इसलिये इस रहस्यकी केवल तेरह प्रतियांही छपवाई गईं । इनमेंसे छः भारतवर्ष आई और शेष मंत्रिमण्डलमें रक्खी गईं । परंतु न मालूम किस तरह विलायतके " स्टैंडर्ड " पत्रने इस रहस्यको खोल दिया । इस कार्यसे एक कठिनता उपस्थित हुई । वह यह कि रूसी कर्मचारियोंने अपने ऊपर जोखिम उठाकर ऐसी लिखापढ़ीकी थी कि "यूरोपमें बखेड़ा मच जानेका भय है इस लिये रूमकी सहायताके लिये भारतसे गई हुई सेना माल्टामें रोकदीजावै । इस बातका रूसवालोंको अधिकार मिलै" इसके साथही काबुल और इंग्लैंडके बीचमें विग्रह करादेनाभी इसमें लिखाहुआ था । इस संधिपत्रमें १० शर्त थीं (१) रूस और काबुलकी सदा मित्रता रहै (२) शेरअलीका उत्तराधिकारी अबदुल्लाजान मरगया इस लिये वह जिसे गोदले उसे रूस स्वीकार करै (३) परदेशी शत्रुओंसें काबुलको बचा कर उन्हें निकाल देनेमें रूस काबुलका सहायकहो (४) इन शर्त्तोंके बदलेमें अमीर रूसकी सम्मति बिना किसीसे युद्ध न करै (५) काबुलमें जो घटनाहो उसकी दम २ पर रूसको सूचना देती रहै (६) रूसी जनरल काफमैन काबुलमें रहै और उनकी इच्छाके अनुसार अमीरको वर्त्तना पड़े (७) रूसमें जो कांबुलका व्यापार होता है उसकी रूस रक्षा करै और (८) अफ़ग़ानिस्तानके जिन लोगोंको विद्योपार्जनके लिये अमीर रूसको भेजे उन्हें शिक्षादीजाय—इनके सिवाय दो शर्तोंका विषय विदित नहीं हुआ परंतु इतना निश्चय हुआ कि उनमें काबुल में शांति रखने और पंजाब काबुल को दिलादेनेका रूसने प्रण किया था । भेद खुल जानेसे रूसकी चाल न चली और लार्ड लिटनके इसी प्रकारके संदेहोंमें काबुलका युद्धकरनेसे जैसी वहांकी स्थिति और भारतको क्षतिहुई वह ऊपर प्रकाशित हुई है । इसके बाद काबुलसे कोई युद्ध न हुआ । अमीर अबदुल रहमानने शनैः ६ काबुलियोंपर अपना आतंक जमाकर रूस और इंग्लैंडसे मेल कर लिया ॥

अध्याय ४६.

अनेक नवीन आविष्कार ।

सन् १८७८ ई० में संसारको चकित करने और प्रजाका उपकार करनेवाले अनेक नवीन आविष्कार हुए । प्रथम आविष्कार इस वर्ष में टेलीफोन का था । प्रोफेसरवेलेने इस कार्य में सफलता पाकर श्रीमतीको आस्वर्नके राजमहल में इसका तमाशा दिखला दिया । श्रीमतीने प्रथमही वार सर टाम्स और लेडी वाडेल्फ से इसप्रकारके तारद्वारा बातचीतकी और अपने महलमें बैठकर आपने दूरसे मिसकेटफील्डका पायनो वाजेपर गानासुना । इस कार्य में सफलता देखकर श्रीमतीने प्रोफेसरको धन्यवाद दिया । और उसी समयसे शनैः २ टेलीफोन दुनियामें फैलगया ॥

दूसरा आविष्कार एमेरिकाके प्रसिद्ध विद्वान मिस्टर एडीसनने किया । यह शोध विजलीके प्रकाशकी थी । इससे लोगोंका बड़ालाभ हुआ । गैस और तेल के विना औषधियोंके योगसे ही विजली उत्पन्नकर उससे प्रकाश करना इसशोध का उद्देश्य है । इसकार्य में उनको सफलता हुई और अब धीरे २ यूरोप और एमेरिका में मिस्टर एडीसनकी योजनाके अनुसार प्रकाश करनेका काम प्रायः विजली से लिया जाता है । इन्हीं महाशयने तीसरी युक्ति ऐसी निकाली जिसके अनुसार सूर्यका प्रकाश रात्रिके समयभी देख पड़े । इस युक्ति में एक काग़ज़का टुकड़ा कितनीही औषधियोंके योगमें डुबोकर उसे सूर्यके प्रकाशमें रक्खा जाताहै धूपमें रखनेसे वह टुकड़ा सूर्य की किरणों को चुरालेता है और जब उसे रात्रिके समय अंधकारमें रक्खाजावे तब उसमेंसे थोड़े समयतक स्वतः प्रकाश होता है॥

चौथा आविष्कार मिस्टर ह्यूज़ने किया । इन्होंने माइक्रो फ़ोन नामक यंत्र तैयार किया । इसमें यह गुण है कि चाहे जैसा मंद स्वर क्यों न हो इसके द्वारा वह चिल्लाकर बोलनेके समान सुना जाता है । जैसे सूक्ष्म दर्शक यंत्रसे परमाणु भी बड़े दिखाई देते हैं वैसे ही इसमें परम मंदस्वर भारी सुन पड़ता है । उदाहरणके लिये मेज़पर एक आलपीन रखनेमें जो शब्द होता है वह ऐसा मंद है कि उसे कोई भी सुन नही सकता है परंतु इस यंत्रके बलसे वही शब्द भारी खटकेके समान सुना जा सकता है ॥

पंचम आविष्कार फोनोग्राफ का हुआ । इसे निकालने वाले भी वही प्रोफे-सर एडीसन थे । इस यंत्रके निकट जो कुछ बात चीतकी जाती है वा राग

गाया जाता है वह यंत्रमें भरा रहता है और उसे जब और जहां ले जाकर सुनना चाहें सुन सकते हैं । मनुष्यका स्वर भी इसमें अच्छी तरह पहचाना जा सकता है ॥

अध्याय ४७.

पंजाबके गोवध पर बखेड़ा ।

पंजाबके हिन्दू मुसलमानोंमें कुछ कालसे वैमनस्यथा । सन् १८७८ ई० में इसने विशेष गंभीर रूप पकड़ा । हिन्दुओंके चित्तको दुःखित नकर गोवध करनेकी सरकारने मुसलमानोंको स्वतंत्रता दी । इस वातसे दश वर्ष पूर्वसेही वहावल पुरके मुसलमानी राज्यमे हिन्दू मुसलमानोंका इस विषयमें वखेड़ा चल रहा था उसीने इस वर्ष उत्तेजना पाई । राज्यके कर्मचारियोंका कथन था कि इस कार्यमें हिन्दू अग्रणी थे परंतु इस वातकी सत्यताका कोई प्रमाण नहीं है इतना अवश्य हुआ कि नव्वाव साहवको राजधानीमें न पाकर मुसलमानोंने हिन्दुओंपर आक्रमण किया किन्तु नव्वावने आकर उनको शांत करनेके साथही हिन्दुओंकी रक्षा की । उसी वर्ष मुलतानमें भी हिन्दू मुसलमानोंके गोमांसके विषयमें लड़ाई होउठी । वहांके हिन्दू मंदिरोंके मीनारके विषयमें दोनों जातोंकी वहुत कालसे खटपटथी । दोनोंही उसपर अपना २ दावा वतलाते थे । इस अवसरमें एक कसाईने सरकारी नियमोंका भंगकर हिन्दुओंका चित्त दुखाने के लिये सरे वाजार गोमांस वेचना आरंभ किया । इसपर हिन्दुओंने न्यायकी भिक्षा मांगकर हड़ताल डालदी । और एक सभा इकट्ठी कर इस वातके लिये डिपुटी कमिश्नर से प्रार्थनाकी परंतु उन्होंने उनकी कुछभी न सुनी । फिर उन्होंने वाइसराय की सेवामें निवेदन पत्रभेजा परंतु वहांसे उत्तर आने पूर्वही हुल्लड होगया । हिन्दुओंने मसजिदों पर और मुसलमानोंने वाजार पर आक्रमण किया । नगरमें आग लगादीगई और जिस मंदिरके विषयमें झगड़ाथा उसे मुसलमानोंनें नष्ट करडाला । दोनों पक्षोंकी खूब लड़ाई हुई । अंतमें सरकारीसेनाने आकर शांतिकी । गवर्नरने मंदिरके अभियोगमें हिन्दुओंको झूठा वतलाकर स्थानीय अफसरोंका फैसला वहाले रक्खा और झगड़ेका दोष हिन्दुओंपर डालागया ॥

व्रिटिशराज्यमें हिन्दू मुसलमानोंका परस्पर विरोध होकर लड़ाई होनेका यह पहलाही अवसर था।इसके वाद गोवध आदिके विषयमें अनेक जगह अनेक वार

लड़ाइयां हुईं और उनमें प्रायः मुसलमानोंही का पक्ष कियागया किन्तु ये बातें छोटी मोटी हैं । इसविषयमें यहां लिखनेका स्थान नहीं है। हिन्दू लोगभी वास्तवमें गोरक्षा किस प्रकारसे करनाचाहिये इस बातको नहीं जानतेहैं और समयका विचार न कर लड़पडतेहैं और मुसलमानभी अपने हिन्दूभाइयोंके दुःखकी कदर नही करतेहैं । बसदोनों हाथों से ताली बजतीहै किन्तु हर्षहै कि गवर्नमेंटकी सुनीति और दोनो जातिके मुखियाओंकी बुद्धिमानीसे, अब इसप्रकारके बखेड़े नही उठते हैं और दोनोंमें प्रेम बढ़ता जाता है ॥

अध्याय ४८.

मिसरमें अंगरेजी राज्य ।

सन् १८८२ई० में मिसरके साथ इंग्लैंडका दृढ संबंध होगया। अरबी पाशा नामक उमराव मिसरराज्यके युद्धविभागका मंत्री हुआ। उसके नियत होतेही विलायतके " टाइम्स " संवाद पत्रमें मिसरकी स्थितिके विषयमें अरबी पाशाका एक लेख प्रकाशित हुआ। प्रथम यह पत्र कल्पित समझागया था किन्तु पीछेसे इसकी सत्यता सिद्ध होगई । इसमें लिखाथा कि " मैं मिसरका वास्तविक प्रतिनिधिहूं । मेरी सेनापर प्रजाका विश्वास है। बड़े २ वेतन पानेवाले अल्प योग्यताके यूरोपियन कर्मचारियोंसे मिसर बहुत पीडितहै । धनसंबंधी प्रबंधके विषय में यूरोपियन राजनीति कैसी भी क्यों नहो किन्तु मिसर राज्यके बड़े २ पद मिसरियोंको देना चाहिये । क्योंकि मिसर मिसर वालोंके लियेहै, यूरोपियन लोगोंके लिये नहींहै. । " इस बातको उसने खेदीवके प्रतिनिधि बनकर प्रकाशित किया इसलिये यूरोपियन राजनीतिज्ञ लोगों में इसपर बड़ा आन्दोलन हुआ । इस प्रश्नके निराकरणके लिये इंग्लैंड और फ्रांसने मिलकर अन्य बड़े २ राज्योंकी सम्मतिसे मिसरके खेदीवके नाम एक पत्रभेजा। इसमें लिखागयाकि "हमारे संयुक्त अधिकार रखनेसे मिसरका लाभ, यूरोपमें शांति और मिसरकी ऋणदेने वालोंसे रक्षा होगी ।" इस बातको खेदीवने स्वीकार किया और मिसरकी प्रजाकी सम्मति नहोनेपरभी रूमके सुलतानने इसका अनुमोदन किया । सुलताननने मिसरको अपने राज्यका एक भाग मानकर यूरोपियन राज्योंके उसपर हस्ताक्षेप करनेको नापसंद किया। वहांके प्रधान अमात्य शेरिफ पाशा ने सेना और उसका वेतन बढ़ाकर शांति करनेका प्रयत्न किया किन्तु राजसभाने स्पष्ट कह दिया कि जबतक फ्रांस और इंग्लैंडका संयुक्त अधिकार रहेगा हमसे काम

न चल सकेगा । इतना कहकर मिसरकी मंत्रिसभाने अपना पद त्याग दिया और महमूद पाशा अमात्य हुए । इस अवसरमें फ्रांसका प्रधान मंडल टूटगया और इस कारण संयुक्त राज्योंका बल घटा हुआ देखकर मिसरने बल पकड़ा । अरबीपाशाका सुलतानसे मेल था इसलिये खेदीव उसका कुछ कर नहीं सकते थे। राज्यका बाजट फ्रांस और इंग्लैंडकी सम्मतिसे तैयार किया जाता था । अरबी पाशाकी प्रेरणासे वहांकी राजसभाने इस बार दोनों राज्योंसे इस विषयमें कुछ पूंछपांछ नकी। दोनोंने इस बातका खेदीवसे कारण पूंछा परंतु इस बातपर भी कुछ ध्यान न दिया गया । इसी अवसरमें अरबी पाशाके बध करनेके प्रयत्नके विषयमें (नमालूम सच्ची वा झूंठी) चर्चा हुई । अपराधियोंको दंड देनेके विषयमें खेदीव और राजसभा का मत भेद होगया । सर एडवर्ड मेलेटकी सम्मतिसे खेदीवने अपराधियोंको दंड देनेका निषेध किया । उसी समयसे खेदीवका राज सभासे विरोध होगया । खेदीवके अधिकारकी रक्षाके लिये इंग्लैंड और फ्रांसने सेना भेजी जो एलेक्जेंड्रिया आपहुंची । संयुक्त सेनाके आनेसे मिसरमें और भी हलचल मचगई । यूरोपियन लोगोंको प्राण रक्षाका भय हुआ । अरबीपाशा और सेनाका बल बढ़गया । उसने एलेक्जेंड्रियाका क़िला दृढ़कर सामुद्रिक किनारेपर सेना रखदी परंतु इस अवसरमें उसके पक्षवालोंमें फूट पड़गई । वे अरबी पाशाके अधिकारसे निकलकर यूरोपियन लोगों और ब्रिटिश दूत मिस्टर कुकूशनको गाड़ीमें से नीचे डालकर मारनेमें तत्पर हुए । इसी तरह उन्होंने यूनानके दूत और कई एक अंगरेज़ तथा फ़रांसीसियोंको मारडाला । यूरोपियन लोग अपने २ प्राण लेकर भागे और व्यापार बंद होगया । अंतमें एडमिरल सीमोरने अरबीको नोटिस दिया कि "युद्धकी तैयारी बंदकर तीन दिनमें समस्त क़िले हमें सौंपदो " परंतु इसपर उसने कुछ भी ध्यान न दिया तब सीमोर साहबने किले पर तोपें दागना आरंभ किया । और फ्रांसने ऐन समयमें सेनासे कुछ सहायता न की । इसका परिणाम यह हुआ कि अकेली अंगरेज़ी सेनाको मिसरी अरबी पाशासे लड़ना पड़ा ॥

अरबी पाशा थोड़ी देर लड़नेके अनंतर सेना सहित भागा । इसके बाद इंग्लैंड और भारत वर्षसे बहुतसी सेना भेजी गई । कई एक लड़ाइयोंके बाद अरबी की हार हुई । और खेदीवने उपद्रवियोंको पकड़ २ कर दंडदेनेका प्रयत्न किया । इस पर गवर्नमेंट प्रसन्न होगई । उसने अरबीको पकड़कर आजीवन सीलोनमें कैद किया । और मिसरमें अंगरेज़ीकी रक्षामें खेदीवका राज्य स्थापित हुआ । इस बातका लार्ड डफ़रिनने मिसर जाकर निर्णय किया ॥

एडमिरल सीमोरकी सहायताके लिये इंग्लैंडसे जो सेनागई उसके मुख्य अध्यक्ष जनरल उलजली और उनके सहकारी महारानीके पुत्र श्रीमान् ड्यूक आफ केनाट थे । युद्धमें ड्यूकने अनेक बार अच्छी वीरता दिखाई और एकबार जिससमय शत्रुकी सेनाने अंगरेजोंकी रेल्वेट्रेन जलानेके लिये आग लगादी तब आपने सेना और युद्धकी सामग्री बचाने के लिये गाड़ीके अपना कंधालगा-कर उसे जलनेसे बचाया । इस बातके लिये उनकी बहुत कुछ प्रशंसा हुई और जबतक वह समर भूमिमें रहे श्रीमती उनकी प्रसन्नताके नित्य तार मंगवाकर बड़े उत्साहके साथ सुनती रही और जब २ उनको अपने पुत्रकी वीरताके समाचार सुनपड़े तबही तब आपने विशेष प्रकारका हर्ष किया । और जिस समय मिसरका विजयकर सेना इंग्लैंडको गई महारानीने उसके अफसरोंको अपने हाथसे तमगे पहनाने । तमगे पहनाते समय जब ड्यूक आफ केनाटकी पारी आई तब आपने पुत्रस्नेहमें विह्वलहोकर ड्यूकका चुंबन करलिया । इधर मिसर विजयहोनेसे वहांके निवासियोंको बहुत हर्षहुआ और उन्होंने मसजिदोंमें नमाज पढ़ते समय कहा कि इंग्लैंडकी रानी न्यायका आदर्श है ॥

अध्याय ४९.

भारतवासियोंको स्थानीयप्रबंधमें अधिकार ।

शिक्षा कमीशन ।

सन् १८८२ ई० में लार्ड रिपनने भारतवासियोंको स्थानीय प्रबंध स्वयं करनेका स्वत्वप्रदानकिया । भारत गवर्नमेंटके ऊपरसे द्रव्य का बोझा कम करनेके लिये प्रान्तीय गवर्नमेंटोंको अपना प्रबंध स्वयं करनेका जो अधिकार पहले मिलचुकाथा उसीका यह परिणाम है । इसनीतिका प्रयोजन केवल यही न था कि प्रबंधका सुधार होजाय किन्तु गवर्नमेंटकी इच्छाथी कि भारतवासी अपना प्रबंध आप (Local Self Govrnment) करना सीखैं । इस कार्यमें सफलता प्राप्त करनेके लिये सरकारने प्रत्येक स्थानकी म्यूनिसिपेलिटियोंको नियत कर प्रान्तीय गवर्नमेंटके नियत किये फंडोंका प्रबंध उसको सौंपागया । इसके साथही बड़ी २ कार्पोरेशनोंको शिक्षा, स्थानादिका निर्माण और इसी प्रकारके अन्य छोटे मोटे कामोंकी जांच और प्रबंध भी दिया गया । इन सभाओंमें मेंबरोंके वर करनेकी प्रणाली स्थापित हुई । किन्तु मेंबर चुननेका अधिकार सर्वत्रकी म्यूनिसिपेलिटियोंमें

प्रचलित न कियागया बरन जो इस कार्यके अयोग्य जिले थे उन्हें इस तरहका स्वत्व प्रदान करनेका स्थानीय गवर्नमेंटोंको अधिकार मिला । बंबईके गवर्नर सर जेम्स फर्ग्युसन ने भारत गवर्नमेंटकी इस योजनाका विरोध किया । और कहाकि प्रजा वर्गमेंसे सरकारके, विना नौकरोंको चुननेका अधिकार देना अनुचित है परंतु पीछेसे उन्होंने अपना विरोध बंदकर भारत गवर्नमेंटकी योजनाको स्वीकार करलिया ॥

इसी आईनके अनुसार लोकल बोर्डों और म्यूनिसिपेलिटियोंमें प्रजाको प्रतिनिधि चुननेका अधिकार मिला है किन्तु इनका सभापति सरकारी हाकिम होता है इस लिये उसकी सम्मति और दबावमें पड़कर देशी मेंबर प्रजाका वास्तविक लाभ नहीं कर सकते और उपकारके बदले प्रायः इन सभाओंसे अपकार होताहै।

इसी वर्षमें भारत गवर्नमेंटकी शिक्षा संबंधी नीतिकी जांच करनेके लिये कमीशन नियत हुआ । सन् १८५४ ई० में ईस्ट इंडिया कंपनीने भारतकी प्रजाके लिये जिस प्रकारकी शिक्षा प्रणाली स्थापित की थी उसका वर्त्ताव कहांतक होताहै इसी बातकी जाँच की गई । कमीशनने भिन्न २ प्रान्तोंके देशी और यूरोपियन मिलाकर २० सभासद और सर डबल्यू डबल्यू हंटर सभापति नियत हुए। इस कमीशनने देशका दौराकर रिपोर्टकी किन्तु इससे प्रजाको कुछ भी लाभ न हुआ । इसी वर्षमें पंजाबका विश्वविद्यालय स्थापित हुआ ॥

अध्याय ५०.

इलबर्ट बिलपर आन्दोलन ।

लार्ड रिपनका सत्कार ।

सन् १८८३ ई० में " इलबर्ट बिल " के विषयमें बहुत बड़ा आन्दोलन हुआ इससे केवल भारतवर्षमें ही क्यों बरन् यूरोपमें भी बहुत वादानुवाद हुआ । इस बिलका मुख्य उद्देश्य उन फौजदारी अभियोगोंके नियम परिवर्तन करनेका था जिनमें वादी और प्रतिवादी अथवा दोनोंमें से एक यूरोपियन हो।इस पांडुलिपिको वाइसराय लार्ड रिपनकी व्यवस्थापक सभामें उपस्थित करनेवाले मिसर इलबर्टथे इसलिये उन्हींके नामसे यह प्रसिद्ध है।उन्होंने ३० जनवरीको इस आईनका चिट्ठा व्यवस्थापक सभामें उपस्थित किया । जिसका आशय यहहै कि प्रान्तीय गवर्नमेंटोंके साथ परामर्शकर भारत गवर्नमेंटने निश्चय किया है कि यूरोपियन

प्रजाकी जाँच का देशी मैजिस्ट्रेटोंको अधिकार न होनेकी जो कलमहै उसे निकाल देनेका अब समय आपहुंचा है इस लिये जाति भेद के कारण देशियोंको न्यायसे अलग रखनेका कार्य उठा दिया जावे और केवल यूरोपियन लोगोंको इसकार्यका चार्ज देनेके बदले भिन्न २ जाति के लोगोंको अधिकार दिया जावे और देशी वा यूरोपियन जज और मैजिस्ट्रेट जाति भेद बिना अभियोग सुनसकैं तथा किसी ज़िलेका सेशन जज देशी हो और वहां यूरोपियन अपराधी का अभियोग उपस्थित होनेका अवसर आवे तो वह अभियोग दूसरे ज़िलेको न बदला जावे किन्तु देशी जजही उसकी जांचकरै। सन् १८६० ई० तक बेरोकटोक जिले के न्यायालयोंमें यूरोपियन अपराधियों के अभियोग सुनेजाते थे और नियमानुसार उनपर दंड भी होताथा किन्तु दंडमें उनके साथ कुछ रियाअत अवश्यथी। सन् १८७२ ई० में जब फौजदारी न्यायालयोंके नियमोंका संशोधन कियागया तो प्रत्येक ज़िले में यूरोपियन लोगोंकी संख्या बढ़गई थी । इस कारण यूरोपियन जजों और मैजिस्ट्रेटों के समक्ष उपस्थित होनेवाले घटिया अभियोगोंमें ज्यूरीकी प्रणाली उठादी गई थी। सन् १८८२ ई० में जातिभेद निकाल देनेका नियम उठा देनेकी सूचना हुई । यह प्रस्ताव एक देशी सभासदकी ओरसे हुआ था किन्तु बात बहुत आवश्यक थी इसलिये गवर्नमेंट ने इसपर ध्यान दिया । इसी वर्ष में विलायत की सिविल सर्विस परीक्षा में उत्तीर्ण होनेवाले बाबू बी.एल गुप्त ने बंगालके लेफ्टिनेंट गवर्नरको पत्र लिखा कि जब मैं कलकत्तेकी पुलिसकोर्ट का चीफ प्रेसीडेंसी मैजिस्ट्रेट था तब यूरोपियन अपराधियोंके अभियोग सुनसकता था किन्तु मेरी बाहर बदली होतेही मेरा यह अधिकार क्यों जातारहा । इस अर्ज़ीको उचित समझ कर लेफ्टिनेंट गवर्नर सर ऐशली ईडनने भारतगवर्नमेंटसे जातिभेद उठा देनेका अनुरोध किया । और लार्ड रिपनने प्रान्तीय गवर्नमेंटोंकी सम्मति से इसप्रकारका आईन बनाना चाहा किन्तु यावत् यूरोपियन कर्मचारी इसके विरोधी होगये । इधर देशी इसनियमका संशोधन करनेके पक्षमें हुए। यूरोपियन लोगोंकी वाईसरायपर इतनी अप्रसन्नता हुई कि उन्होंने लार्ड रिपनके साथ सब प्रकार का व्यवहार बंद कर दिया । और जब वह नवंबरमें शिमलेसे कलकत्ते गये तो उन्हों ने प्रकटमें लाटसाहबका अपमान किया। अंगरेज़ वालंटियरोंने उनके महलपर आक्रमण करनेकी धमकी दी किन्तु उन्होंने किसीप्रकार के विरोधकी परवाह न कर उस बिलको आईन बनादिया । परन्तु उनको इसमें थोड़ा संशोधन अवश्य करना पड़ा ॥

म्यूनिसिपेलिटियों और लोकलबोर्डोंमें देशियोंको मेम्बर चुननेका अधिकार देने और इलबर्ट बिलमें प्रजाका पक्ष करने आदि अनेक सुकार्योंसे भारतकी देशी प्रजाकी लार्डरिपनपर भक्ति बढ़गई और उसने श्रीमान्के भारतसे विदाहोते समय आपका असाधारण सम्मान किया। यह सम्मान किसीके दबाव वा अफसरोंकी प्रेरणासे नथा। क्योंकि सरकारी यूरोपियन कर्मचारी "इलबर्ट बिल" के कारण श्रीमान्से अप्रसन्न होगयेथे। इस सम्मानसे यह स्पष्ट प्रमाणित होताहै कि, भारतवर्षकी प्रजा अपने उपकारका सत्कार करना जानती है। लार्ड रिपनने प्रजाका जैसा उपकार कियाथा उसे देखते हुए देशकीप्रजाने कुछभी अधिक नहीं किया। भारतकी शिल्पोन्नति के लिये उन्होंने देशमें एक प्रदर्शिनी खोलीथी। इनके शासनमें इलबर्ट बिल और म्यूनिसिपेलिटियों तथा लोकलबोर्डोंमें प्रजाको मेंबर चुननेका अधिकार मिलनेके सिवाय लवणकर घटायागया था। यह भारतवर्षके वेतनमेंसे एक पाईभी अपने कामोंमें खर्च नहीं करतेथे किन्तु जो कुछ इन्हें मिलता वह धर्मकार्योंमें चलाजाता और इनका निजखर्च विलायत की जागीरसे होताथा॥

अध्याय ५१.

रूस का भारतपर दांत और अमीरसे भेट।

लेडीडफरिन् फंड।

रूस भारतवर्षपर बहुत वर्षोंसे दांत गाड़े हुएहै। वह इसीलिये शनैः २ मध्य-एशियामें अपना पैर फैलाता जाता है। सन्१८८४ ई०में उसने मर्व और उस-के आस पासका उपजाऊ प्रदेश लेकर गवर्नमेंटके चित्तमें चिन्ता उत्पन्न की थी। वहांके तुर्कोंने रूससे यह प्रार्थना की थी कि, यह प्रदेश हमें दिलवा दो, परंतु यह प्रकट नहीं हुआ कि, परस्पर की लड़ाईसे तुर्क लोग निर्बल पड़कर अपना प्रबंध स्वयं करनेमें अशक्त थे इस लिये उन्होंने इस कार्यमें रूससे सहायता मांगी थी अथवा और कोई कारण था। कुछ भी हो परंतु इतना निश्चय है कि, प्रचलित संधिपर कुछ ध्यान न देकर उसने भारत की ओर पैर बढ़ाया। इस विष-यमें पार्लियामेंटमें बहुत वादानुवाद हुआ परंतु रूसकी नीतिके विषयमें कुछ भी निर्णय न हो सका॥

इसी वर्षमें काबुलके अमीर अब्दुल रहमान खांसे भारतके वाइसराय लार्ड डफरिनने रावलपिंडीमें बहुत ठाठके साथ भेंट की। इस भेंटके समय जो

दर्बार हुआ उसमें कवाइदके लिये १० हजार सैनिक इकट्ठे हुए थे । जिस समय अमीर लाट साहबसे मिलने भारतवर्षमें आये रूसने अफगान सीमाके पंज देहपर आक्रमण किया था । अंगरेज़ लोग पंजदेहको काबुल राज्यका एक भाग गिनतेथे। रूसवालोंका कथन था कि, अमीर शेरअलीके शासनमें काबुल की जो सीमाथी वही अब भी मानना चाहिये । अफ़गानिस्तान की रूसके साथ सीमा निर्द्धारित करनेके लिये जो कमीशन नियत हुआ था वह इस बातका कुछ भी निपटारा न करसका । रूसकी चालसे इंग्लैंडकी प्रजा में बहुत हलचल मचगई । और लोगोंनें इसबातके फैसलेके लिये यूरोपके बड़े २ राज्योंकी पंचायत नियत करनेका प्रस्ताव किया । रूसने इसबातको बहुत कुछ आनाकानीके पश्चात् स्वीकार किया । परंतु इसकार्यके सफलहोनेमें अनेक विघ्न डाले । अंगरेज़ोंने कहा कि, यदि रूस, ज़ुलफ़िक़ारको छोड़दे तो काबुल पंजदेह देदेगा । रूसने इसबातको स्वीकार तो किया परंतु ज़ुलफ़िक़ारके उत्तर ओरके मार्गको अपने अधिकारमें रक्खा । रूसकी चालसे नोटोंके भाव बहुत उतरगये । और अंगरेज़ी व्यापारको बड़ा धक्का पहुँचा ॥

सन् १८८५ ई० में लार्ड डफरिनकी लेडीसाहिबाने भारतवर्षकी स्त्रियोंकी चिकित्सा और उन्हें डाक्टरी सिखानेके लिये लेडी डफरिन फण्ड स्थापितकर देशीस्त्रियोंका बहुत उपकार किया। इस फण्ड में अर्द्ध सरकारी प्रेरणासे देशके राजा महाराजाओंने बहुत रुपया दिया। और फण्ड में रुपया देनेवालोंने सरकारसे उपाधियां भी बहुतही पाई ॥

अध्याय ५२.

आयर्लैण्डमें हलचल ।

जिस समय इंग्लैंड और विशेषकर लण्डनमें महारानीकी दुलारी राजकुमारी बीट्रिसके विवाहका उत्सव होरहाथा एकाएक आयर्लैण्डमें राजद्रोहियोंके मंडल ने तेज़ी पकड़ी । वहांके उपद्रवियोंको शान्तकरनेके लिये मिस्टर ग्लैडस्टनने 'नेशनल लीग' नामकी प्रभावशालिनी सभाके कईएक मुखियाओंको क़ैदकर रक्खा था और इनके छुटकारेके विषयमें मिस्टर पार्नेलसे सन्धिकी चर्चा होरही थी । इतनेहीमें ६ मई सन् १८८२ ई० को मिस्टर ग्लैडस्टनने आयर्लैण्डके जो नवीन लार्ड लेफ्टिनेंट अर्लस्पेन्सरको नियत किया था उनके डबलिनमें प्रवेशकरने

का अवसर आया । सरकारको आशा थी कि, पार्नेल आदिके छुटकारे के लिये आयर्लैण्डवालोंसे जो ठहराव हुआ है उससे और वहांके भूमि सम्बन्धी आईनसे आयर्लैण्डमें शांति होजायगी, परंतु उक्त तिथिको डबलिनमें घुसते समय सरकारी बागमें अर्ले स्पेन्सर और उनके साथहो लार्ड फ्रेडरिक पर किसी दुष्टने आक्रमण किया । लार्ड फ्रेडरिकने उस दुष्टपर छाता मारा । इतनेही में भीड़मेंसे दो तीन मनुष्य और आटूटे और इन दोनोंको मारकर उसी समय एक गाड़ीमें जो इनके लिये पहलेसे तैयार खड़ी थी बैठकर भागगये। इस समाचारको पातेही इंग्लैंडमें बड़ी हलचल मची । आयर्लैण्ड वालोंका दमनकरनेके लियें पार्लियामेंटके एकही अधिवेशनमें एक कठोर आईन पास हुआ। बहुत दिनोंतक पुलिस खोज करती २ हारगई परन्तु अपराधियों का कुछ पता नचला। अंतमें आगामि वर्ष की जनवरी में बीस घातक पकड़े गये । उनमें से अधिकांश मजदूर थे किन्तु उनका मुखि-या जिसका नाम जेम्सकेरीथा ठेकेदारी का काम करता था । यह डबलिन म्यू-निसिपेलिटीका मेंबरभी था । यह दुष्ट वहांसे भागकर कहीं चला न गया था किन्तु भलाआदमी बनकर वहांका वहां ही बनारहा और उस सभाकी ओरसे इसीने लेडीफ्रेडारिक प्रभृतिके साथ सहानुभूति प्रकाशित करनेका प्रस्ताव किया और जब इसने पुलीसके हाथसे अपना किसी तरहसे बचाव न देखा तब इसीने सरकारको अपराधियोंका पता बतला दिया । अनुसंधानके बाद बीसमेंसे पांचपर अपराध प्रमाणित होगया । इनमेंसे तीनको फाँसीहुई और यह दक्षिण एफ्रिकामें आमरण निवास करनेके लिये भेज दिया गया । अपराधकर उसका भंडाफोर करने में यही अग्रणी था इसलिये आयर्लैंड वाले इससे अप्रसन्न थे। इसीकारण ओडोनल नामक मनुष्य इसके पीछे होलिया और मार्गमें जिससमय उसे अवसर मिला इसे मारकर यमसदनको पहुँचा दिया । इस अपराधमें ओ-डोनलको भी फाँसी हुई । न्यायाधीशने उसे फांसीदेने पूर्व अनेक तरहकी उखाड़ पछाड़ से उससे पूँछना चाहा कि तेरा " नेशललीग' से संबंध है वा नहीं परन्तु उसने मरते दमतक इसबातका रहस्य प्रकट न किया ॥

इसीतरहकी दूसरी घटना सन् १८८३ ई० में हुई । एमेरिकाकी राजद्रोही मंडली मेंसे ओडोवन रोसा नामक मनुष्यने आयर्लैंडवालोंको सम्मतिदी कि " इंग्लैंडसे युद्धकर अपनी स्वतंत्रता ग्रहण करो। और इसकार्यके लिये लंडनके बड़े २ मकानों को जड़से उड़ाडालो और जैसेबने तैसे राजधानी निवासियों को कष्ट पहुँचाकर गवर्नमेंट को आयर्लैंडवालोंको स्वतंत्रता देनेपर बाधित करो ।" इसकी सम्मति

के अनुसार १५ मार्च सन् ८३ को लंडनके गवर्नमेंट बोर्ड और 'टाइम्स' समाचार पत्र के मकानोंको डायना माइटसे उडादेनेका प्रयत्न हुआ। इसप्रयत्नमें गवर्नमेंट बोर्ड के चूरमूर होगये किन्तु संयोगवश टाइम्सका आफिस बचगया। इसीलिये सरकारको १९ अप्रैलको केवल २ घंटेके वादानुवाद के अनंतर एक आईन पास करना पड़ा। परन्तु इस आईनसे उपद्रवियोंपर कुछभी प्रभाव नपड़ा। और सन् ८३ के अंतमें उन्होंने लंडनकी रेल्वे उडादी। इसघटनामें बिचारे बहुतसे मजदूर मारेगये। और बहुतसे घायल होगये। इसतरह लंडनके घंटाघर और हाउस आफकामन्सके विशाल भवनका कुछ भागभी नष्ट होगया। उपद्रवियोंको केवल इतनाही करनेसे संतोष न हुआ बरन उन्होंने लंडनके बडे पुल और दूसरे अनेक मकानोंको तोड़नेका यत्न किया और इस यत्नमें उनको तनिकभी विचार न आया कि गेहूंके साथ बिचारे घुन पिसे जाते हैं। इन लोगोंके इस दुष्कर्मसे अनेक निरपराध स्त्रीपुरुष और बालकोंको कष्ट भोगना पड़ा। उस समय लंडन में ऐसाकोई मनुष्य न था जिसे मरनेका भयनहो। इंग्लैंडके प्रधान अमात्य मिस्टर ग्लैडस्टन जैसे प्रजाप्रिय मनुष्यकी प्राणरक्षाके लिये भी कईएक कान्स्टेबल साथ रखने पड़ते थे। अंतमें बरमिंघाममें डाइना माइट बारूद बननेका एक कारख़ाना और कितनेही अपराधी पकड़े गये। अनुसंधान के पश्चात् कारख़ाना बंद किया गया और अपराधियोंको जीवनपर्यंत काले पानीका दंड मिला॥

इसके अनन्तर सन् १८९९ ई० के ट्रांसवाल युद्धके समय आयर्लैंड वालोंका फिर क्रोध भड़काथा। परंतु वहांकी सेनाने सर्कारकी सेवा करनेमें किसीप्रकार की न्यूनता न की और अंतमें महारानीके आयर्लैंडकी अंतिम यात्रा करनेसे उनके मुखकमलको देखतेही वहांवाले शांत होगये नहींतो उनमेंसे अनेक मनुष्य ट्रांसवालको सहायता देनेके लिये तैयार थे और इसबातके लिये डबलिनमें बहुतसी सभायेंभी हुईंथी॥

अध्याय ५३.

सौडानका युद्ध।

सौडान मिसरके राज्यका एक प्रदेश है। वहांका शासक मुहम्मदअली पाशा था। बरबर डंगोला, खार्तूम, सिनकट और रोहकटमें मिसरकी सेनाकी छावनीथी। एकाएक मिसरके युद्धके थोडेही दिनके अनंतर अर्थात् सन् ८५ ई० के लगभग महदी नामक मनुष्यने शिर उठाया और मुसलमानोंके पैगंबर होनेका दावा

किया । मिसरकी गवर्नमेंटने कर्नलहिक्सके अधिकारमें महदीका दमन करनेके लिये सेना भेजी । यह सेना काशगेटके निकट विना खाये पीये लड़ती रही । इस सेनामें जनरल गार्डनभी थे । यह वही गार्डनहैं जो पहले चीन राज्यकी सेवा करचुके थे और अब मिसर गवर्नमेंटके यहां नौकर थे । मिसरी सेनाने महदी का दमन किया और गार्डन् वहांके गवर्नर बनायेगये । इन्होंने इसपदको पाकर महदीके हाथपैरढीले करनेका बहुत कुछ प्रयत्नकिया परंतु इंग्लैंडने इनकी यथेच्छसहायतानकी इसलियेमहदीने फिर बलपकड़लिया। उससमय उनकेपास५०० सिपाहीभी न थे और न रुपया था। परंतु वहअपनी बुद्धि और बलसे अपना जैसे तैसे निर्वाहकरते रहे । अंतमें इंग्लैंडकी आंखें खुलगई । गार्डनकी रक्षाके लिये वहांकी प्रजाने भरपूर चंदा दिया परंतु फिरभी सरकारने उसका विश्वास न किया । इसका परिणाम यह हुआ कि बरबर स्थानमें महदीका अधिकार होगया और ३५०० मनुष्य बालक और स्त्रियां बुरी तरहसे मारी गई । शत्रुने खार्तूमको घेरकर नगर में भोजनकी सामग्री पहुँचना बन्द कर दिया । इस अवसरमें इंग्लैंडमें मछलियों का प्रदर्शन हुआ । उस समय प्रजाने प्रधानअमात्यको सुना२कर गार्डनकी प्रशंसा और उनकी निन्दाकी। अन्तको खार्तूमकी रक्षाके लिये इंग्लैंडसे सेना बिदाहुई । इस सेनाको लेकर लार्ड उलजली सौडानको गये । इनके पहुँचने पूर्वही जनरल गार्डनेन महदीसे बरबरका किला ख़ाली करवा लिया । गार्डनके मित्र कर्नल स्टुआर्ट जो इनकी सहायताको बुलाये गये थे उनकी नौका धरतीसे भिड़ गई । उस समय वहांके निवासियोंने उन्हें विश्वास देकर सेनाको मिस्टर पावर सहित मार डाला । इससे महदीका साहस बढ़ गया । उसने गार्डनको घेरकर अन्न बिना मारडालनेका प्रयत्न किया । और सहायताकी सेना पहुँचते २ अपना बल खूब पक्का कर लिया । और खुब वीरता करनेके बाद गार्डन मारा गया । वह यदि चाहता तो भागकर बच सकता था परंतु उसने अपने प्राण बचाकर अपनी जातिवालोंको अग्निमें होमना न चाहा । उसने इंग्लैंडकी ढिलाई और उपेक्षासे एक वर्ष तक कष्ट पाकर ब्रिटिशके यशकी रक्षाकी परंतु अन्तमें अकेला गार्डन क्या करसकता था । उसके मारेजानेका इंग्लैंडकी प्रजाको बहुत पश्चात्ताप हुआ । और उसी समय महारानीने उसकी बहन और भाईको पत्र लिखकर अपना हार्दिक शोक प्रकाशित किया । उन्होंने उस पत्रमें लिखा कि " मुझे इस बातका अधिक खेद है कि मेरे वारम्वार आग्रह करने और ब्रिटिश राज्यके प्रण करने परभी गार्डनकी सहायताके लिये सेना न भेजीगई । मैं अच्छीतरह जानती

हूं कि यह इंग्लैंडपर भारी कलंक है "। गार्डन बड़ा वीरथा। इसके बादभी खार्तूम विजय करनेके लिये जो सेना गई थी उसके जब २ विजयकी अनीआई इंग्लैंडके मंत्रिमण्डलने टालबाज़ीमें अवसर खोदिया। अन्तमें महँदीके जनरल ओस्मान डिगमासे एलटेब और जमानीवमें अंगरेजी सेनाका युद्धहुआ। परंतु इससमय भी वही दशा हुई। इस अवसरमें कनाडा और आस्ट्रेलियासे सेना आपहुँची और भारतकी सेनाने इन सबके साथ महँदीका विजय किया। इसके उपलक्षमें महारानीने भारतीय सेनाके देशी अफसरोंको बुलाकर उनका सत्कार किया।यद्यपि सरकारीसेनाने उससमय मेहँदीका विजय कर लिया परंतु सन्९७ई० में फसैाडामें फरांसीसियोंको नीचा दिखाकर जब लार्ड किचनरने खार्तूममें प्रवेश किया तब गार्डनके मारे जानेका कलंक दूर हुआ। खार्तूममें मिसर का राज्य स्थापित कर इन्होंने इस वर्षमें गार्डनकी वहाँपर कबर बनवाई और मेहंदीकी लाशको क़बरमेंसे निकलवा कर उसे जलवा डाला॥

अध्याय ५४.

ब्रह्मदेशमें सर्कारी राज्य।

सन् १८५२ ई० में लार्ड डेलहौसी गवर्नर जनरलने ब्रह्मदेशके राजा थी-वाका कुछ देश जीतनेके अनन्तर उनसे जो संधिकी थी उसका निर्वाह लार्ड डफरिनके शासन तक जैसे तैसे होता रहा। उनके समयमें राजा थीवाके लिये सरकारको विदित हुआ कि वह फरांसीसी और इटाली वालोंसे मेल बढ़ानेका यत्न कर रहे हैं। इसबातका यद्यपि कोई प्रमाण जाननेमें न आया परंतु बंबई ब्रह्मा ट्रेडिंगकंपनीने सरकारसे निवेदन किया कि थीवा हमारे व्यापारके कामोंमें विघ्न डालकर लकड़ी और चावल आदि पदार्थ हमें वहासे लानेमें बाधाडालतेहैं और न खानोंका अन्वेषण करने देते है। यह कंपनी विलायतियों की थी। लार्ड ड-फरिन ने राजाको समझानेके लिये सेनाभेजी। राजाने इसपरभी कुछ ध्यान नदिया। इसपर सेनाने चढ़ाई कर वहांकी राजधानी मंडाले और आवा छीन लिया और राजाको पकड़कर भारतमें कैदकर दिया। तबहींसे ब्रह्माका राज्य सरकारी राज्यमें मिलाकर पुराने और नये राज्यका एक प्रान्त बनायागया और वहांका शासन एक चीफ़ कमिश्नर को सौंपागया जो अब ब्रह्मदेशके स्वतंत्र लेफ्टिनेंट गवर्नरहैं। यद्यपि ब्रह्मदेशका विजय सन् १८८६ ई० में ही होगया और लार्डडफरिनने उसे सरकारी राज्यमें मिला देनेका ढिंढोरा भी

उसी सन्में पिटवा दिया परंतु वहां चार पांच वर्षतक शांति नहुई । उसराज्य के चोर डाकू लुटेरे और दुष्ट लोगों ने खूब लूटमार मचाई और जैसे बना तैसे सरकारी सेनाको सताकर प्रबंधमें विघ्नडालना चाहा परंतु ब्रिटिश नीति और कौशलके सामने उनकी कुछ न चली और अंतको वह प्रदेश भारत के साथ ऐसा सटगया जैसे यह सदासे ही इसका एक अंगहो । शांति करनेके लिये और होनेके अनन्तर गवर्नमेंटने ब्रह्मदेशमें भारतकी प्रजाके समान वहां वालोंको स्वत्व प्रदान किये । चीफकोर्ट, स्कूल, कालेज अस्पताल स्थापित किये और रेल्वे बनवाकर उसे भारतके साथ एकमेक करडाला। थीबाके राज्यकी अव्यवस्थासे ब्रिटिश व्यवस्थाको अच्छी समझ प्रजाने सुखमाना । जिस समय ब्रह्मदेशके युद्धका व्यय भारतके राजकोषसे लेनेका सरकारने निश्चय किया इस देशकी शिक्षित प्रजाने इसका घोर प्रतिवादकर इस कार्यके लिये एक पाई देना न चाहा और कहा कि अकारण ब्रह्मदेशको ले लेनेमें अन्याय हुआहै और उस देशसे भारतको प्रकटमें कुछ लाभ भी नहीं है इसलिये हमसे इसका व्यय लेना योग्य नहीं है परंतु सरकारने उस प्रदेशको भारतमें मिलानाही योग्य समझा इसलिये सारा खर्चा इस देशसे लिया गया ॥

अध्याय ५५.

ट्रांसवालसे इंग्लैंडके युद्ध ।

सन् १८९६ई० का आरंभ होतेही ट्रांसवालमें नया बखेड़ा खड़ा हुआ । जनवरीको मशोनालैंडके प्रबंधक डाक्टर जेम्सन शस्त्रधारी सेना लेकर ट्रांसवाल राज्यमें घुसपड़े । जोहोनिसबर्ग नगरके परदेशी मुखियाओंने डाक्टरको मैफार्किंगमें लिखकर भेजा कि ट्रांसवाल राज्यके प्रबंधमें गड़बड़ है इसलिये शीघ्रही परदेशियोंसे ट्रांसवालकी गवर्नमेंटका संग्राम होनेवाला है । उस पत्रमें यह भी लिखा था कि युद्धके समय हम लोगोंको बाल बच्चों सहित बोर राज्यकी शरण लेनी पड़ैगी । और हमारा माल असबाब नष्ट होजायगा । इस पत्रपर हस्ताक्षर करनेवालोंकी इच्छा यह थी कि, डाक्टर साहब यहां आकर हमारे स्वत्वोंकी रक्षाकरैं और इस तरह देशको रक्तकी नदी बहनेसे बचावैं । इस कार्यके लिये उन्होंने खर्चेका बोझा अपने ऊपर लिया । इस पत्रको पातेही डाक्टर जेम्सन सातसौ सैनिकों सहित ट्रांसवालको गये । इसपर वहांके प्रेसीडेंट क्रुगरने केप

टौनके लार्ड कमिश्नरको पत्र लिखकर उनसे पूंछा कि डाक्टर जेम्सन आपकी आज्ञासे हमारे राज्यमें आये हैं अथवा मनमानी करते हैं। इसके उत्तरमें उन्होंने लिखा कि मुझे अबतक इस बातकी कुछ खबर नही है । यदि सत्यहै तो इस बातके उत्तरदाता डाक्टर जेम्सनही हैं क्योंकि उन्होंने यह कार्य अपनी इच्छासे किया है। उन्होंने साथही डाक्टरको भी तार दिया परंतु जब इसका उत्तर न आया तब उनको निश्चय होगया कि मार्गके तार काट डाले गये हैं। इस पर उन्होंने प्रेसीडेंट क्रूगरको फिर लिखा कि आप डाक्टरको लौटादें और किसी तरहकी लड़ाई न होने पावै। लोग कहते हैं कि लार्ड कमिश्नरका तार डाक्टर जेम्सनके पास पहुंच गया था परंतु उन्होंने उसपर कुछ ध्यान न दिया और लड़नेको उतारू होगये। बोर सेनाने डाक्टरका सामना कर उसे मार भगाया और क्रूगर्स डार्पमें जाकर घेरलिया। जेम्सन पहले तो बहुत दृढतासे लड़ता रहा परंतु जोहोनिस्वर्गके परदेशियोंकी ओरसे ठहरावके अनुसार जब सहायता न मिलती दीखी तब उसे लाचार होकर अपनी सेना सहित बोरोंकी शरण जानापड़ा। इंग्लैंडमें उपनिवेश विभागके मंत्री मिस्टर चेम्बरलेनने सर हरक्यूलस रोबिन्सनको पत्र लिखकर जेम्सन साहबकी अनीति पर बड़ा खेद प्रकट किया और लिखा कि कैदियोंके साथ वर्त्ताव अच्छा होना चाहिये। प्रेसीडेंट क्रूगरने आग्रहपूर्वक डाक्टर जेम्सन और उनके साथियोंको कैद कर इंग्लैड भेजदिया। इस बातके समाचार पातेही मिस्टर चेम्बरलेनने फिर सर हरक्यूलस रोबिन्स को तारदिया कि आपने कैदियों को हमें देदेनेका जो फैसला किया है उससे महारानीको बड़ा संतोष है। इससे आपकी बड़ी प्रशंसा है। यह कार्य ट्रांसवालमें शांति स्थापन करनेकाहै । ब्रिटिश और डच जातिमें परस्पर स्नेह रहना दोनोंके लिये अच्छा है । इसी विषयमें प्रेसीडेंट क्रूगर और उपनिवेश विभागके मंत्रीके परस्पर बहुत कालतक पत्र व्यवहार होता रहा और इसका परिणाम यह हुआ कि ट्रांसवालमें व्यापार करने वाले यूटलैंडर लोगों के स्वत्वोंके विषयमें प्रेसीडेंट क्रूगरने योग्य निपटारा करदिया। इस छोटीसी लड़ाईमें डाक्टरकी सेनाके अनुमान सत्तर मनुष्य मारेगये वा घायल हुए। डाक्टर साहबके कैदी बनकर इंग्लैड पहुंचनेके अनन्तर सैनिक न्यायालयने उनके अपराधकी जांचकर उन्हें दोवर्षका कारागार वास दिया। और उनके साथियों को भी अपराधके अनुसार कैद रक्खा गया परंतु डाक्टर का स्वास्थ्य बिगड़ गया था इस लिये उनका अवधि बीतने पूर्वही छुटकारा होगया ॥

परंतु ट्रांसवालका इंग्लैंडसे इसप्रकारका मेल अधिक कालतक न रहने पाया। दो वर्षके बादही दोनों में परस्परका फिर झगड़ा खड़ा होगया । ट्रांसवालने ब्रिटिश आधिपत्यको अस्वीकार कर वहां व्यापार करने वाले परदेशियोंको वहांकी पार्लियामेंटमें मेंबर् चुननेका इच्छित स्वत्व न देना चाहा और न खानें खोदनेके लिये डाइना माइट बारूदका लाइसैंस दिया । इसीप्रकारके अनेक कारणोंसे इंग्लैंडको ट्रांसवालपर फिर चढ़ाई करनी पड़ी । इंग्लैंडके उपनिवेश विभागके मंत्री मिस्टर चेम्बरलेन इधरतो प्रेसीडेंट क्रूगरसे संधिका प्रस्ताव कर उन्हें दवानेके लिये युद्धसंबंधी अंतिम पत्र (अल्टीमेटम) देते और उधर शनैः २ सरकारी सीमापर सेना बढ़ाने लगे। इस कार्यसे ट्रांसवाल राज्यको निश्चय होगया कि अपना बल दृढ कर हमारा देश छीनलेनेके लिये मिस्टर चेम्बरलेन चाल चल रहेहैं । इसलिये प्रेसीडेंट क्रूगरने एकाएक सरकारी सेनाके प्रधान अध्यक्षको २४ घंटेकी अवधिका अल्टीमेटम दे दिया। बोरोंसे लड़नेके लिये अंगरेजी सेना थोड़ी थी । इंग्लैंडसे सहायता पहुंचने में अभी बहुत देरी थी इसलिये लाचार होकर अंगरेजी सेनाको ११ अक्टूबर सन् १८९९ ई०को भागकर लेडीस्मिथ, किम्बर्ली और मैंफकिंगके किलेमें शरण लेनी पड़ी । बस उसी दिनसे लड़ाई ठनगई । भारतवर्ष, इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया और केनाडासे सेनाके भरे जहाजपर जहाज जाने लगे। चाहे अंगरेज लोग उस देशमें बहुत वर्षोंसे आते जाते थे परंतु फिर भी वहां की भूमि इनकी परिचित न थी, बोरोंको अंगुल २ धरती मालूम थी, बोर लड़नेमें बड़े कुशल थे और अंगरेजी सेना युद्धशिक्षामें प्रवीण होनेपर भी बहुत अच्छी न थी। इन कारणोंसे बोरोंने अंगरेजी सेनाके दांत खट्टे कर दिये । क़िलेके भीतर जो लोग घिरे हुएथे उन्हें अन्नके अभावसे घोड़े काट २ कर खाने पड़े और जो सेना उनके छुटकारे के लिये गई थी उसे अनेक जगह और अनेक बार बोरोंसे हार खाकर अपने हज़ारों मनुष्य खोने पड़े । अंतमें सरकारने भारतके भूतपूर्व प्रधान सेनापति लार्ड रावर्ट्स और जनरल किचनरको बहुतसी सेना सहित भेजा । इनकी योग्य व्यवस्था और थोड़े बोरोंको पराजय करनेके लिये असंख्य अंगरेजी सेना पहुंच जाने बाद तीनों किलोंका छुटकारा हुआ। पैंड२पर लड़ २ कर हारनेके अनन्तर बोरोंने अपने मित्र राज्य ओरेंजफ्रीस्टेट और ट्रांसवालकी राजधानी प्रिटोरियाको छोड़ दिया। लार्ड रावर्ट्सने उनका राज्य छीनकर वहां विजयी ब्रिटिशका झंडा जा खड़ा किया । घरबार, राज्य और बालबच्चे छूट जानेपर भी बोरोंने अबतक लड़ना नहीं छोड़ा है और अनुमान है कि ट्रांसवाल तथा ओरंज फ्रीस्टेटका राज्य अंगरेजोंके हाथ आजानेपर भी वहां अनेक वर्षों-

तक शांति होना कठिन है। बोर लोग वास्तवमें वीर हैं। तबही उन्होंने एक ऐसी जातिका सामना किया है जिसकी बुद्धि और बलको देखकर आज कल बड़े २ राज्योंके छक्के छूटते हैं। परंतु बोरोंकी दृढता और वीरताकी संसारमें प्रशंसा है। वे स्वतंत्र हैं और अपनी स्वतंत्रताकी रक्षाके लिये मरते दमतक लड़नेको तैयार हैं। उनके अगुआ मिस्टर क्रूगर देश छोड़कर विदेश चले गये हैं, वीर जूवर्ट जैसा प्रसिद्ध सेनापति मरगया है, जनरल क्रोंजी अपने चार हजार सैनिको सहित सेंट हेलेनाके टापूमें कैद हैं और हजारों बोर सैनिक मारे गये, घायल हुए वा अंगरेजोंकी कैद तथा शरणमें आचुके हैं परंतु वे लोग अभीतक लड़रहे हैं और फिर भी लड़ेंगे। दोनों राज्य सरकारके हाथमें आजाने पर भी वहांका युद्ध अभी समाप्त नही हुआ है। पौने दो वर्षकी लड़ाई का संक्षिप्त २ वृत्तान्त लिखना भी इस पुस्तकमें नही बन सकता है। और यह विषय अभीतक पाठकोंकी दृष्टिमें नया बना हुआ है इस लिये मै इसका विस्तार करना नही चाहताहूं॥

यद्यपि भारत वर्षमें देशव्यापी अकाल विद्यमान था यहां की भूखी प्रजाके साठ पैंसठ लाख मनुष्य सरकार की दी हुई रोटियोंसे अपना पेट पालतेथे परंतु अपने स्वामीका संकट देखकर भारतवर्ष अपनादुःख भूलगया। इसने जी खोलकर सेना, द्रव्य और सामग्री देकर सरकारकी सहायताकी। सरकारने इसबातके लिये भारत वर्षकी प्रजा और राजाओंका उपकार माना और लार्ड कर्जन (वाइसराय) और लार्ड ज्यार्ज हैमिल्टन (भारतके स्टेट सेक्रेटरी) ने इस पर अंतःकरण से धन्यवाद दिया और महारानीने राजा प्रजाकी वहुत प्रशंसाकी॥

अध्याय ९६.

अशांति का उपद्रव।

जिससमय ट्रांसवालमें डाक्टर जेम्सनका बखेड़ा उठरहाथा अशांतिमें एका एक उपद्रवकी आग भडकी। सन् ९४ई०में कुमासीका राजा अशांति का राजा बन बैठा था। अवसर पाकर फरांसीसी एजेंटने कुमासी और अशांतिमें फ्रांसका आधिपत्य स्थिर करनेके लिये राजाको बहका दिया। इसपर अंगरेजी दूतने राजासे कहा कि जो कुछ युद्धव्ययका रुपया आपपर हमारा लेना है उसे शीघ्र देडालो। राजाको अंगरेजोंकी परराज्योंको दबाकर छीनलेनेकी नीति पसंद न

आई।अंतमें बखेड़ा यहांतक बढ़ा कि ३१ दिसंबर सन् १८९५ई०को राजाके नाम इंग्लैंडने एक अल्टीमेटम भेजकर उसमें लिखाकि हम कुमासीमें अपना कमिश्नर नियतकर अशांतिको सरकारी आधिपत्यमें लेना चाहते हैं । उसमें यह भी लिखा गया कि सरकार दासव्यापारको बंद करदेगी और इस राज्यके आस पास बसने वाली जातियोंका दमनभी करैगी । इसपत्रका राजाने कुछभी उत्तर न दिया । इसका परिणाम यह हुआ कि सरकारको सर फ्रांसिस स्काटके अधिकारमें राजासे लड़ने के लिये सेना भेजनी पड़ी । इसयुद्धमें महारानीकी दुलारी पुत्री राजकुमारी विया-ट्रिसके पति राजकुमार हेनरी आफ बेटनवर्गका कुमासी पहुंचनेसे पूर्व ही ज्वरसे मार्गमें देहान्तहोगया । इस दुर्घटनासे महारानीको जो शोक हुआ उसका उल्लेख प्रथमभागमें किया गया है । सर फ्रांसिस स्काटको राजासे बिलकुल युद्ध न करना पड़ा । महारानीकी विजयिनी ध्वजा देखकर राजाके औसान बिगड़गये । राजा प्रेम्पेहने सरकारी समस्त शर्तोंको स्वीकार करलिया । इसबातसे गोल्ड कोस्टके निवासियोंको हर्षहुआ । सर फ्रांसिस स्काट बेधड़क कुमासीमें जा घुसे॥

इसके अनंतर महारानीके शासनके अन्तिम वर्षमें भी अशांति उत्पन्न हुई थी परंतु इसका परिणाम वही हुआ जो उक्तयुद्धका हुआ था । सरकारी सेनाने वहां जाकर उपद्रवियोंका दमन कर दिया । इस युद्धका विषय अभीतक पाठकोंके चित्तसे हटा नहीं है । वे लोग ' श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार ' में इस विष-यके साप्ताहिक समाचारोंको पढ़ते जाते हैं इसलिये यहांपर उनका विस्तार नहीं किया गया है ॥

अध्याय ५७.

भारतवर्षके देशी रजवाड़े ।

विदेशकी विशेष २ घटनाओंको लिखते २ मैं सन् ९९—१९०१ई०तक चला आया परंतु सन् १८९१ ई० की एक आवश्यक घटना लिखनेका मुझे समय न मिला । वह यही है कि सन् १८९१ ई० में आसामके निकट मनीपुर नामक सरकारके आश्रित राज्यमें वहांके अमात्य और सेनापति टिकेन्द्रजित् सिंहकी आज्ञासे वहांके रेज़िडेंट और कमिश्नर मिस्टर कैंटिनका पांच अंगरेज़ोंसहित वध हुआ । समाचार पातेही भारतके वाइसराय लार्ड लैंसडाउनने लेफ्टि-नेट ग्रेंटके अधिकारमें मनीपुरियोंका दमन करनेके लिये थोड़ी सी सेना भेजी ।

सेना पहुंचने पूर्वही रेज़िडेंट ग्रिमउड साहबकी मेम बड़े साहसके साथ मनी-पुरसे प्राण बचाकर भाग गई और सेनाने नाम मात्रकी लड़ाईके पश्चात् मनी-पुर लेलिया । सरकारने वहांके राजाको आजन्म कालापानी और सेनापतिको प्राणदंड दिया । और मनीपुरके वर्तमान राजाको जो गत राजाके कुटुंबियोंमें से थे गादी देकर वहां पर सरकारी एजेंसी नियत करदी । तबहींसे मनीपुरके वर्तमान नरेश अजमेरके मेओकालेजमें अंगरेज़ी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं ॥

राजपूतानाके अंतर्गत झालावाड़के राजा महाराज राना जालिम सिंहजी बड़े सच्चे, दृढ और न्यायी थे । वहांकी प्रजा उनसे प्रसन्न रहती थी । परंतु उनका स्वभाव स्वतंत्र था । वह पोलिटिकेल एजेंटोंसे दबते न थे और प्रजाके साथ सच्चा न्याय करनेसे उनके कितनेही स्वार्थी कर्मचारी भी अप्रसन्न थे । महारा-नीकी सुवर्ण ज्यूबिलीके समय उत्सव न करने आदिका उनपर अपराध लगा-कर सरकारने उन्हें एकबार पदच्युत कर दिया था परंतु उनका ढंग सुधरता देखकर उन्हें फिरभी शासन करनेका अवसर दिया गया।दूसरी बारके शासनमें भी उन्होंने उसी नीतिका वर्त्ताव किया जिसका पहले किया था । इसका फल यह हुआकि झालावाड़के पोलिटिकेल एजेंट कर्नेल गार्डनकी उनसे खटपट होगई । गार्डन साहबके कथनानुसार राजपूतानाके एजेंट गवर्नर जनरल मिस्टर क्रास्थवेट साहबने भारत वर्षके वाइसराय लार्ड एलगिनको उन्हें गादीसे उतार देनेकी सम्मति दी । कार्य इसीके अनुसार हुआ और झालावाड़की प्रजाकी इच्छाके विरुद्ध उसकी प्रार्थनाओंपर कुछ ध्यान न देकर सरकारने जालिमसिंहजीकी स्वल्प पेंशनकर उन्हें काशी भेजदिया । वह वहींपर शांति-पूर्वक अपने दिनकाट रहेहै । झालावाड़ राज्यके दो हिस्सेकर सरकारने एक तृतीयांश राज्यका स्वामी कुँवर भवानी सिंहजीको जो अब वहांके महाराज रानाहैं करदिया और दो तृतीयांश कोटा राज्यमें मिला दिया । यह वही भाग था जो झालावाड़को कोटेसे मिलाथा । इस फैसलेसे सरकारकी कोटा राज्यपर उत्कृष्ट दया और सुनीतिका उदाहरण मिला । राजराना जालिम सिंहजीको गादीसे उतारकर पेन्शनदेनेकी घटना सन् ९६-९७ ई० की है ॥

महारानीके शासनके अंतिम वर्षमें भरतपुरके महाराज श्रीरामसिंहजी गादीसे उतारे गये। उनका प्रबंध ठीक न देखकर सरकारने उनसे अधिकार तो पहलेही छीनरक्खा था परंतु विगत वर्ष आबू पहाड़पर उन्होंने विना अप-

राध अपने नौकरको गोलीसे मार डाला । बस इसी निमित्तको लेकर सरकारने उन्हें सदाके लिये भरतपुरकी गादीसे वंचित किया और उनके बालक पुत्रको राजा बनाया ॥

जिस समय भारत वर्षके वाइसराय लार्ड डफरिन थे काश्मीरके महाराज श्रीमान् प्रतापसिंहजी पर यह कलंक लगा था कि वह रूससे सीधा पत्र व्यवहार करतेहैं और राज्यका प्रबंध करने में अयोग्यहैं । इनदोनों बातोंका आश्रयलेकर सरकारने उनको भी उसी समय पदच्युत किया परंतु देशी समाचार पत्रों और परमपद प्राप्त मिस्टर ब्रेडलाके घोर प्रतिवाद करनेसे उनपरका कलंक दूर हुआ और वह सच्चे सिद्ध होकर सरकारने कौसिंलकी सहायतासे काश्मीरका शासन करनेकी उनको आज्ञादी और उससमयके वाइसराय लार्ड लैंसडाउनने स्वयं काश्मीर जाकर उनको संतुष्ट किया ॥

अध्याय ५८.

भारतवर्षकी पश्चिमोत्तर सीमाका युद्ध ।

अमीर अबदुल रहमानखांके काबुलका स्वामी बननेके अनंतर सरकारकी अफ़गानिस्तानके साथ कोई लड़ाई न हुई । यह राज्य इंग्लैंड और रूसके दो बलाढ्यराज्योंके बीचमें है इसलिये अमीर अपना कर्तव्य समझतेहैं कि दोनों राज्योंको प्रसन्न रखकर अपना मतलब सीधा करना चाहिये । इसी नीतिके अनुसार अमीर साहब चलकर अपनी स्वतंत्रताकी रक्षा कररहेहैं । और इसपर तुर्रा यह कि सरौतेके दोनों भागोंके बीचमें पड़करभी सुपारीरूपी काबुल अभी तक कटनेसे बचाहुआहै वह उनकी बुद्धि और गौरवका परिणामहै । सीमाप्रान्त पर बखेड़ा न होने देनेके लिये ब्रिटिश गवर्नमेंट उन्हें १२ लाखके बदले १८ लाख रुपये देनेलगीहै । केवल इतनाही नही बरन वह शनैः २ अपने राज्यमें शस्त्र और कपड़े आदिके कारखाने खोलकर काबुलकी बहुत कुछ उन्नति कररहे हैं । सन् ९४ ई० में ब्रिटिश गवर्नमेंटका काबुल राज्यसे अधिक मेल बढ़ानेकी इच्छासे अमीर इंग्लैंड बुलाये गये थे । उन्होंने सन् ९५ ई० के आरंभमें अपने छोटेपुत्र नसरुल्लाखांको भारत वर्ष होकर इंग्लैंडको भेजा वहाँ उनका बहुत सम्मान हुआ । महारानीने स्वयं उनसे मिलकर उनका सत्कार

किया। वह इंग्लैंड जाकर वहांके चाकचक्यसे बहुत चकित हुए परंतु इस वातसे कावुलकी राजनीतिमें किसी तरहका परिवर्त्तन न हुआ और सरकारका संवंध पूर्ववत् वना रहा ॥

सन् १८९५ ई० के अपरेलमें चित्रालमें लड़ाईकी गर्मागर्मी हुई। वहाँके राजा जो मेहतरके नामसे प्रसिद्धहैं दो भाई थे। भाई२आपसमें लड़मरे। एकको मारकर दूसरा गादीपर वैठा। इस घटनाको देखकर वहांपर अगरेज़ी गवर्नमेंट की ओरसे जो रेज़िडेंट रहताथा घवराउठा। उसके प्राणकी रक्षाके लिये सरकार को सेना भेजनी पड़ी। नवीन मेहतरने अपने वहनोई उमराखांकी सहायतासे चित्रालके किलेमें रेज़िडेंट मिसर राविन्सनको घेरलिया।रेजिडेंट साहब इने गिने सिक्खों सहित मेहतरकी सेनासे खूवलड़े। इस अवसरमें कर्नल केली सेना लेकर वहां जापहुंचे और थोडेही समय में मेजर जनरल सर रावर्ट लोन वहांजाकर मेह-तर को परास्त किया। तवसे उमराखां मेहतर नियत हुआ और देशमें सव तरहकी शांति होगई ॥

इस युद्धको पूरे दो वर्षभी न होने पाये। इतनेही में सीमाप्रान्तमें फिर युद्ध की आग भड़क उठी। इस वारकी आग साधारण न थी। पश्चिमोत्तर सीमाकी प्रायः सवही जातियां अंगरेज़ोंके विरुद्धथीं। उन्हें गोरे चमड़ेसे धर्मद्वेष होगया। उस ओर रहनेवाले अंगरेज़ोंके प्राण जोखिममें आपड़े। परिणाम यह हुआ कि सरकारको चारोंओरसेना भेजनापड़ा। सेनापर सेना और लामपर लामलगनेसेभी अफरीदी चुपनहुए। उन्होंने सामने पड़कर कोईयुद्ध न किया परंतु तक२कर एक२ यूरोपियनको मारा। इस चढ़ाईमें अंगरेजोंकी इतनी सेना गई जितनी भारतवर्षके किसी युद्धमें इकट्ठी न हुईथी। सैनिकोंकी कुलसंख्या ८० हज़ारसे ऊपरथी। इसयुद्धमें अधिकभाग देशी रजवाड़ोंकी सेनाका था। श्रीमान् जोधपुर महाराज के चचा महाराज कर्नल सर प्रतापसिंहजी और श्रीमान् धौलपुरनरेश स्वयंगये और वहांपर वीरोचित कार्य किये। श्रीमान् जयपुर नरेश और श्रीमान् महाराज सेंधियाने रसद और वार वरदारीकी सेना देकर सहायताकी। अनेक अंगरेज़ोंके मारे जानेके अनन्तर सरकार का विजय हुआ। अफ़रीदियोंके गांव जला देने और उनको इसी तरह तंग करनेके अनन्तर शांति हुई। इस युद्धमें जनरल लाकहार्टका वहुत यश रहा। इस सेवासे प्रसन्न होकर गवर्नमेंटने उनको भारत वर्षका प्रधान सेनाध्यक्ष वनाया और सहायता करनेवाले देशी राजाओंको उपाधियां प्रदान कीं। इस युद्धम अमीर कावुलके लिये संदेह था कि, वह

शत्रुको सहायता देते हैं परंतु यह बात किसी तरह प्रमाणित न हुई। इस युद्धके अनंतर पश्चिमोत्तर सीमापर बिलकुल शांति हुई। उस ओरके रहनेवाले जंगली कट्टर मुसलमान यद्यपि अबतक लूट खसोट और मार काटसे उदासीन नहीं हुए हैं परंतु अब सरकारके साथ उनका कोई बखेड़ा नहीं है। यह गवर्नमेंटके प्रतापका कारण है। श्रीमतीके शासनके एक वर्ष पूर्व भारतवर्षके वाइसराय लार्ड कर्जनने गवर्नमेंटकी प्रचलित नीतिका कई अंशोंमें परिवर्त्तन कर सीमाप्रान्तकी प्रजाको सेनामें भरती करना आरंभ कर दिया। इसका यह फल हुआ कि जो पेट न भरनेसे लूट खसोट करतेथे वे शांत होगये। मेरी समझमें सीमाप्रान्तकी अशांति गवर्नमेंटके शरीरमें दादकी बीमारी है। दाद ही की तरह जब अवसर पाती है भड़क उठती है और जैसे दवा लगानेसे दाद दबतो जाता है परंतु मिटता नहीं है और चाहे जब उभर उठता है उसी तरह वह भी है परंतु लार्ड कर्जनकी दवाने अच्छा काम कर दिया। अब बुद्धिमानोंको आशा नहीं है कि फिर भी वहांपर उपद्रव खड़ा होगा॥

अध्याय ५९.

भारत वर्षमें प्लेग और अकाल।

श्रीमती महारानी विक्टोरियाकी हीरकज्यूबिलीके प्रथम वर्षमें बंबई नगर पर एक नवीन आपदा आई। ज्वर और गांठसे गोली की तरह चटाचट मनुष्य मरने लगे। आरंभमें कोई डाक्टर वैद्य और हकीम इस रोगका निदान न कर सका। डाक्टरोंकी सम्मतिसे गवर्नमेंटने प्रजाकी रक्षाके लिये जो प्रयत्न किया वह इस देशकी रीति और प्रजाके स्वभावके अनुकूल न हुआ। रोगीको पकड़कर अस्पताल में और घरवालों वा अडौसी पडौसी को कारंटाइनमें लेजानेकी प्रणालीने दहलका मचा दिया। ज्यों२ नगरमें लाशों पर लाशें गिरने लगी त्यों ही त्यों लोगोंकी भागड़ मच गई। दूसरे वर्ष बंबईके जुलाहोंने मुरदेकी जांच और स्त्रियोंकी परीक्षासे अप्रसन्न होकर हुल्लड किया परंतु सेनाकी सहायतासे अधिक बखेड़ा न होने पाया। सरकारको जैसे२ प्रजाकी इच्छा और दुःखमालूम होतागया वह इसविषयके आईनको सरल करती गई। और कालके अतिक्रमणके साथ ही देशभरकी प्रजाने सरकारकी शुभेच्छा का आशय समझकर आज्ञा स्वीकारकी परंतु प्लेगने अभीतक शांति ग्रहण नकी। दिन २ भारतवर्षके सब भागमें फैलता जाताहै। मदरास, पंजाब और बिहारमें भी अब जापहुंचाहै। बंबई प्रान्तमें बंबई, पूना और करांचीको तो इसने अपना घरही

बनालियाहै । छःवर्षके आक्रमणने इसरोगसे भारतवर्षके कई लाख मनुष्यमर-चुके, अनेक घर ऊजड़ होगये और अनेक कुटुंबोंमें पानी देनेवाला तक नरहा । जिसको रोग होताहै उसके लिये यमराजने मानो बुलौवा भेजदियाहै । सैकड़े पीछे बीसमनुष्यसे अधिक नही बचतेहैं । डाक्टरहाफकिनने इसरोगके आक्रमणसे बचानेके लिये जो टीकेकी रीति निकालीहै उसका प्रचार दिन २ बढता जाताहै । अब किसीको प्लेग विषयके सरकारी नियमोंकी बिलकुल शिकायत नही है । अबभी जहां कही छोटा मोटा उपद्रव होताहै वहां प्रजाका अविचार और कर्मचारियोंका अत्याचारही कारणहै । सरकारने प्रजाकी भलाईके लिये प्लेगका प्रबंधकियाहै । डाक्टरोंके मतसे यह रोग संक्रामकहै और संक्रामक रोगोंमें रोगीको चंगे भलोंसे अलग रखना आवश्यकहै परंतु यह रीति भारतवर्षमें नईहै इसीलिये प्रजाने सरकारका तात्पर्य नसमझकर इसका आरंभमें विरोध कियाथा ॥

संवत् १९३४ ई० के अनन्तर भारतवर्षमें कोई भारी अकाल नहीं पड़ाथा । एकप्रकारसे प्रजा अकाल का दुःख भूलगईथी परंतु संवत् १९५४ (१८९७) ने फिर अकालकी याद दिलादी । बंबईप्रान्त, पश्चिमोत्तर प्रदेश और राजपूतानामें दारुणदुर्भिक्षने प्रजाको भयभीत करदिया । विलायतके लार्ड मेयरने कई वार सहायता देने का उस समयके वाइसराय लार्ड एलगिनसे अनुरोध किया परंतु वह आरंभमें इसको अधिक भयंकर नसमझकर कर्मचारियोंकी रिपोर्टोंके भरोसेरहे । इस शिथिलतामें बहुत मनुष्य भूखके मारे मरगये । परंतु जब उन्हें अकालका ठीक स्वरूप विदित होगया तब उन्होंने अच्छा प्रबंध किया । इस प्रबंधमें पश्चिमोत्तर प्रदेशके लेफ्टिनेंट गवर्नर सर ऐंटोनी मैकडानेलकी अधिक प्रशंसारही।अंतमें सरकारने कामसे तथा विनापरिश्रम अन्नदेकर प्रजाके प्राण बचाये और अनेक देशहितैषियोंने मुक्तहस्तसे इसकार्यके लिये चन्दा दिया । विलायतमें भी चंदा होकर बहुतसा रुपया भारतवर्षमें आया और एमेरिकासे मकई प्रथम वार इसी वर्षमें आई ॥

इसके अनन्तर सन् १८९८ ई० का वर्ष सुकालका बीता किन्तु दूसरेही वर्ष सातों ग्रहोंने एक राशिपर इकट्ठे होकर भारतवर्षका नाशकरडाला।संवत् १९५६के अकालको वास्तवमें दुर्भिक्ष कहना चाहिये । इस अकालमें सरकार प्रजा और देशी राजाओंने प्रजाकी रक्षाके लिये जो काम खोले उनपर अधिकसे अधिक ६५ लाख मनुष्योंने भोजन पाया । इनमें जो लोग काम करने योग्य थे उन्होंने तालाब, सडक और रेलके कामोंमें मिट्टी खोदकर अपना पेट पालन किया।

और जो इस कार्यमें अयोग्य थे उन्हें सेंतमें भोजन दिया गया। इस अकालके प्रबंधके लिये इस देशके वाइसराय लार्ड कर्जन पहलेसे तैयार होगयेथे। उन्होंने प्रजा रक्षाका अच्छा प्रबंध किया। और इसके लिये प्रजाने उनको और सरकारको अंतःकरणसे आशीर्वाद दिया। दोनों अकालों और प्लेगसे इस देशके कितने मनुष्य मरगये इसका कोई लेखा अभीतक प्रकाशित नहीं हुआ है परंतु इसका अनुमान मनुष्यगणनाकी रिपोर्टसे होता है जिनका सार इसी भागके अध्याय ३७ में है। वारंवारके अकालोंके पड़ने और प्लेगके कष्टसे प्रजा बिलकुल दरिद्री होगई थी और उसे ट्रांसवाल युद्धमें सरकारकी सहायता कर राज भक्तिका पूरा परिचयदेना था इस लिये अकालके कामोंमें भारतके नामधारी धनाढ्य अधिक द्रव्य न लगासके और विलायतकी प्रजा भी ट्रांसवाल युद्धमें लगी हुई थी इस लिये चन्देसे अधिक द्रव्य इकट्ठा न होसका परंतु फिरभी सरकार को बहुत कुछ सहायता मिलगई। इस अकालमें गवर्नमेंट और भारत की प्रजाके साथ सहानुभूति प्रकाशितकर जर्मनी, एमेरिका आदि देशोंने बहुत सहायताकी। इसमें एमेरिकाकी सहायता बहुत बढ़कर रही वहांकी प्रजाने अन्न वस्त्र और रुपया देनेमें बहुत कुछ श्रम किया और चाहे ईसाई मतका देशमें फैलानाही अभीष्ट हो परंतु पादरियोंने भी बहुतसे बालकोंके प्राण बचाये। यद्यपि इस अकालमें देशके अनेक धनाढ्य रुपया लगानेमें कुछ उदासीन रहे परंतु ऐसे लोगोंकी भी न्यूनता न रही जिन्होंने तन मन धनसे प्रजाकी रक्षा की॥

अकाल और प्लेगसे मनुष्योंके मरनेका अनुमान दो बारकी मनुष्य गणनासे हो सकता है परंतु इस अकालमें अकाल पीड़ित भागोंके कई लाख चौपाये नष्ट होगये इनमें अधिक संख्यातो भूखसे मरने वालोंहीकी है परंतु कसाइयोंकी छूरीसे भी कम न मरे। चौपायोंकी मृत्युसे चमड़ेका व्यापार खूब चमका और इस कार्यके करनेवालोंके वारे न्यारे होगये। और इसका फल यह हुआ कि मारवाड़ और गुजरातके किसानोंको बैलोंके अभावसे अपने हाथसे हल खैंचकर बैलोंका काम करना पड़ा॥

सरकारकी रक्षामें जिन ६५ लाख मनुष्योंके नित्य भोजन पानेकी इस अध्यायमें चर्चा है उसमें देशके भिखारियोंकी संख्या नहीं है। उस समय नगरोंमें वे लोग इतने बढ़ निकले थे कि मार्ग चलना कठिनथा। उनकी चिल्लाहट और दयाजनक स्थिति भले आदमियों के हृदयको विदीर्ण किये डालती थी। सरकारी राज्यमें भूखसे कितने मनुष्य मरगये इसका तो किसीने लेखा प्रकाशित न किया परंतु अकाल पीडित भागोंमें हैज़ेने हज़ारों मनुष्योंका स्वाहा करडाला।

सरकार और पादरियोंकी रिपोर्टोंसे इतना निश्चय अवश्य होता है कि कई एक रजवाडोंमें अकालसे प्रजा बहुत मरगई । इससमय लार्ड कर्जनने रुपया उधार देने, योग्य सम्मति देने और अनुभवी कर्मचारी देनेसे देशी रजवाड़ोंकी बहुत सहायता की परंतु फिरभी कई एक रजवाड़ों के प्रबंधकोंकी उपेक्षा और स्वार्थसे गाँवके गाँव ऊजड होगये ॥

अध्याय ६०.

पश्चिमोत्तर प्रदेश और अवधमें हिन्दी ।

भारतवर्षके भिन्न २ प्रान्तों में जुदी २ प्रान्तीय भाषाओंको सरकारने बहुत कालसे न्यायालयोंमें स्थान दे रक्खा था परंतु इस देशकी राष्ट्रीय भाषा (हिंदी) की किसी जगह पूंछ गछ न थी । पश्चिमोत्तर प्रदेश और अवधमें हिन्दीका मुख्यस्थान होनेपरभी इस लिपि में लिखी हुई अर्जियाँ वहां के न्यायालयों में नही ली जाती थी । उन प्रान्तोंकी प्रजा बहुत कालसे सरकारसे इसविषयमें प्रार्थना करतीरही परंतु सर ऐंटोनी मैकडानल लेफ्टिनेंटगवर्नरसे पहले किसी शासकने उनकी गुहार पर ध्यान न दिया । हिन्दी हितैषिणी "नागरी प्रचारिणी सभा, काशी" के शान्तभावसे प्रयत्न करनेसे हिन्दीकी गुहार श्रीमान्के ध्यानमें आई । आपने १८ अप्रेल सन् १९००ई को एक आज्ञापत्र प्रकाशित कर उनप्रान्तोंके न्यायालयों में हिन्दीका प्रवेश करदिया।इस आज्ञाके अनुसार प्रजाको अधिकार मिलगया कि, वह हिन्दी और उर्दू दोनों लिपियों में से जिसमें चाहे अर्जी, अर्जीदावा आदि कागज पेशकरसकै और सम्मन वारंट आदि प्रजासे संबंध रखने वाले जितने कागजहैं वे सरकारकी ओरसे दोनों ही लिपियों में दिये जायाकरैं । बुद्धिमान् हिन्दू मुसलमानोंने इस आज्ञाको लोकोपकारी समझकर सरकारको धन्यवाद दिया, परंतु जो मुसलमान हठपूर्वक उर्दूका प्रचार रखना चाहतेथे उन्होंनें धर्मकी आड़लेकर इसे रोकनाचाहा । बात यहां तक बढ़ी कि, लखनऊमें मुसलमानोंकी एक महती सभा होकर वाइसरायसे निवेदन कियागया । उन्होंने इनकी अयुक्त प्रार्थना पर ध्यान न देकर लेफ्टिनेंट गवर्नरकी रायको बहाल रक्खा । और साथही सरकारी कर्मचारियोंको हिन्दीलिपिके साथ हिन्दी भाषा सीखनेकी उत्तेजनादी । इसका फल यह हुआ कि अब उन प्रान्तों में जो नवीन कर्मचारी भरती होताहै उसे दोनों भाषाओंकी परीक्षा देनी पड़तीहै ।

ऐसे नियम का प्रचार होगया । इस आज्ञाके अनुसार अब न्यायालयों में तो काम उर्दूमें होताहीहै क्योंकि यह उन प्रांतोकी राजभाषाहै परन्तु प्रजाकी ओरके यावत् कागज दोनोंमेंसे किसी लिपिमें लिये जाते हैं परन्तु हिन्दी पत्रोंकी भी भाषा उर्दू ही होती है । यह बात हिन्दी के इतिहास में सोनेके अक्षरों से लिखी जाने योग्य है ॥

इसके सिवाय पश्चिमोत्तर प्रदेश और अवधके लेफ्टिनेंट गवर्नर सर ऐंटोंनी मैकडानेल ने हिन्दी भाषा की प्राचीन पुस्तकों की खोजके लिये उक्त सभाको प्रतिवर्ष आर्थिक सहायता देना आरंभ किया ॥

अध्याय ६१.

द्वितीयभागका परिशिष्ट ।

गतअध्यायों में श्रीमती महारानी के शासनकालकी मुख्य २ घटनाओं का उल्लेख किया गया है । इनके अतिरिक्त सन् १८८५ ई० से उनके शासन के अंततककी अनेक घटनायें ऐसी हैं जो समाचारपत्रों के पाठकों के चित्त से अभीतक हटी नहीं हैं । उनके विषयमें यहां विस्तार करनेकी आवश्यकता नहीं है । तथापि मैं जहांतक जानताहूं इस अध्याय में उनका यथाशक्ति दिग्दर्शनकर-देना इस भाग को पूर्ण करनेके लिये उचित है । इसी विचार से मैं थोड़ेसेमें उन्हें लिखकर इस भागको समाप्त करता हूं ॥

सन् १८८५ ई० से सन्१९०१ई. तककी मुख्य२घटनाओंमेंसे भारत षर्ष के संबंधकी जिन बातोंका उल्लेख गत अध्यायों में नहीं हुआ उनमें से आवश्यक ये हैं । एक काबुलके अमीर से संधिकर सीमाप्रान्त का निपटारा करना, दूसरी वाइसराय और प्रान्तीय गवर्नमेंटों वा लेफ्टिनेंट गवर्नरोंकी व्यवस्थापक सभाओं में प्रजाको मेंबर चुनने का स्वत्व प्रदान करना तीसरे उन मेंबरों को बजट और देशके प्रबंध संबंधी अन्य विषयोंपर सम्मति देने और वादानुवाद करनेका स्वत्व मिलना,चौथे देशकी राजभक्त प्रजामेंके कुछ भागपर अराजभक्तिका संदेह उत्पन्न होकर देशी समाचारपत्रोंकी स्वतंत्रता को सीमाबद्ध करना, पांचवें असंतोष फैलाने के संदेह में कईएक समाचार पत्रों के संपादकों को दंड मिलना और छठे देशके पोलिटिकल विषयों में सरकार से स्वत्व मांगने वाले नेशनल कांग्रेस की राजभक्ति और उत्तमताको स्वीकार कर उसके कथनपर सरकार का ध्यान आकर्षित होना इत्यादि इत्यादि ॥

इसके सिवाय जिन घटनाओं का श्रीमती के राज्यसे किसी न किसी प्रकार का संबंध है और भारतवर्ष में नहीं हुई हैं उनमें सौडानके खलीफा का राज्य नष्ट कर उसे मिसरके साथ मिलादेना, उस प्रदेशपर इंग्लैंड और फ्रांसका संयुक्त अधिकार, एफ्रिका के पश्चिम भाग पर फ्रांसके अधिकार को स्वीकार करना, चीन और जापान के युद्ध में चीन का हारकर परिणाम में जापानको फार्मोसा का टापू, रूसको लिया तुंगका द्वीप, बंदर आर्थर, जर्मनीको किआओ चाऊका बंदर इंग्लैंड को वी–हाई–वी का बंदर और काओलिनका भूभाग, फ्रांसको कांग चाऊ वानका बंदर और हेनान का टापू दे देना एमेरिका और स्पेन की लड़ाई, रूम और यूनान का युद्ध, जर्मनीका ईरानकी खाड़ीतक रेल बनाना, रूसका ईरानको रुपया उधार दिलवाना और उससे दूसरे राज्यों से ऋण न लेने का करार करवाना, चीनपर यूरोप और एमेरिका के समस्त राज्यों का मिलकर चढ़ाई करना· रूसका चीनसे मंचूरिया लेलेना और चीन में रेल्वे बनाने का स्वत्व प्राप्त करना तिब्बतके लामागुरुका रूससे मेल इत्यादि बातें इस जगह लिखे जाने योग्य है ॥

इति ।

दूसराभाग समाप्त ।

श्रीमतीके शासनमें ब्रिटिश साम्राज्यकी उन्नति।
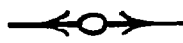
तीसरा भाग।

अध्याय १.

राज्यवृद्धि।

मनुष्यसंख्या और व्यापार।

श्रीमतीके शासनके दीर्घकालमें ब्रिटिश राज्यका कायापलट होगया। जो राज्य छोटासा 'राज्य' कहलाताथा और जिसकी गणना साधारण राज्यों में थी वह अब साम्राज्य है। अब वह यूरोपके पांच मुख्य राज्योंमें गिना जाता है। यद्यपि इस शासनमें देशान्तरोंमें शांति नही रही है किन्तु ग्रेट ब्रिटेनमें पुराने राज्योंकी तरह एकभी बखेड़ा नही बढ़ने पाया। इस कारण वहांकी मनुष्यगणनामें असाधारण वृद्धि हुई है। बाहर युद्ध और घरकी शांतिही राज्य वृद्धि का कारण है। विना युद्धके पर राज्योंसे जय नहीं होसकता है और विना विजय पाये राज्य नही बढ़ सकता है। इसीलिये किसी कविने कहा है—'असंतुष्टाद्विजानष्टा संतुष्टाश्चमहीपतेः" । इस वचनका पालन होना राजाओंको इष्ट होता है। यहां संतोष शब्दकी व्याख्या अप्रयोजनीय है। " हाथपर हाथ धरे बैठे रहकर प्रयत्न न करना " संतोष नहीं है किन्तु संतोष का अर्थ है—प्रयत्नके अन्तमें जो फल मिले उसपर प्रसन्न होना॥

घरकी शांतिसे ब्रिटिश प्रजा बहुत बढ़गई। ग्रेट ब्रिटेनमें उसे रहने तकका स्थान नहींमिला तब लाचार होकर उसको बाहरका मार्ग लेना पड़ा। देश छोड़कर भारत वर्षमें कोई अंगरेज़ अपना घर नही बनाता है, यहां जो कोई रहता है वह केवल परदेशीबनकर रहताहै और रुपया कमाकर विलायत चलाजाताहै इसलिये भारत वर्षमें विक्टोरियाके शासनारम्भसे अब तकमें यूरोपियन लोगोंकी बस्ती बहुत बढ़नेपरभी वे घर छोड़ने वालोंकी गणनामें नही है किन्तु घर छोड़ने वाले वे है जो उपजीविकाके लिये केनाड़ा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैड और एफ्रिकामें जा बसे हैं। विक्टोरियाके राज्यमें हजारों लाखों क्या वरन करोड़ों अंगरेजोंके अनेक

उपनिवेशोंको अपना निवासस्थान बनानेपरभी ग्रेट ब्रिटेनकी मनुष्य गणना बहुत बढ़ीहै । श्रीमतीके शासनारम्भके तीनही वर्षबाद अर्थात् सन् १८४१ई० में इन देशोंकी जिनको अंगरेज़ लोग मातृभूमि (Mother Country) कहतेहैं मनुष्यगणना १ करोड ८६ लाख ५६ हजार ४१४ थी किन्तु पचास वर्ष बाद सन् १८९१ ई० में वही संख्या ३ करोड़ ७८ लाख ८० हजार ७६४ को पहुँची । यह संख्या श्रीमतीके शासन समाप्तिके दश वर्ष पूर्वकी है । अंतिम दश वर्षभी बहुत कुछ शांतिपूर्वक व्यतीत हुए हैं यदि इस समयका लेखा उपलब्ध होसकै तो उसकी संख्या पाठकों को अधिक चकित करैगी । यद्यपि यह नहीं बतलाया जासकताहै कि ग्रेटब्रिटेन और आयर्लैंडके कितने मनुष्य श्रीमतीके शासनके ६३ वर्षोंमें विदेश जाकर बसेहैं परंतु इसमें संदेह नहीं है कि उनकी संख्या एक करोड़से किसी अंशमें कम नहीं है ॥

महारानीके शासन में ब्रिटिश राज्यकी असाधारण उन्नति हुई । यद्यपि भारत वर्षपर ब्रिटिश जाति का आधिपत्य पहलेही से स्थापित होचुका था परन्तु कंपनी से इसका अधिकार लेकर इसी समयमें भारत वर्ष ब्रिटिश राज्यमें जोड़ागया। सन् १८५९ई० के युद्ध में रेडसीका मार्ग और अदन सरकार के हाथ आया । सन् ४२ मे हांग कांगका टापू और सन् ६० ई० में उसके दूसरे ओर कारीवानका प्रायः द्वीप सरकारको मिला।हांगकांग आजकल दुनिया भरके बंदरोंमें सर्वोत्तम मानाजाता है। श्रीमतीके जहाज ठहरने के लिये बंदर हैमिल्टन है जहां से यलोसी जापानके समुद्र और कोरिया जाने आने का मार्ग है । एफ्रिकामें श्रीमती का राज्य बहुत कुछ बढ़ा है । मटाबलीलैंड, मशोनालैंड, बेचुआनालैंड, पोंडोलैंड, यूगंडा और जंजीबारके निकट किलियांजरो ब्रिटिश राज्य का एक भाग है । भारतवर्ष में जो २ भाग बढ़ाये गयेहैं उनका वर्णन अन्यत्र हुआहै । केनाडा भी इन्हींके समय में ब्रिटिश राज्य में मिलायागया । और इसी तरह अनेक छोटे मोटे टापुओं पर ब्रिटिश झंडा इन्हींके शासन में फहराया । एक विद्वानने गणनाकर निश्चय किया है कि श्रीमती के राज्य में १० हजार टापू ५०० अंतरीप और २००० नदियां हैं । इनका राज्य यूरोप में ३, एशिया में १० से अधिक, एफ्रिका में १९ से अधिक, आस्ट्रेलिया में ६०से ऊपर और एमेरिकामें २५से ऊपर प्रति सैकड़ा वर्गमीलपर है । १०० वर्ष पूर्व ब्रिटिशराज्य का क्षेत्रफल ग्रेटब्रिटेन से १६ गुना अधिक था किन्तु अब ९६ गुना अधिक है । इस राज्य का विस्तार पहले २ करोड़ मीलथा अब बढ़कर १२ करो। मील होगया ॥

प्रजाकी वृद्धिके साथही इनदेशोंका व्यापारभी बढ़नाही चाहिये। इसका अनुमान करने के दोमार्ग हैं। एक जहाजोंकी वृद्धि और दूसरी रेल्वे। सन् १८३७ई० में ग्रेटब्रिटेन में २२ लाख ३३ हजार ३०० टन (२८ मनका एक टन होताहै) बोझा ढोनेवाले २० हजार ५०० जहाज थे। इनमेंसे ६२४ ही धूमपोत थे शेष सब पालसे चलाये जाने वाले थे। किन्तु अब इसमें असाधारण उन्नतिहुई है। इस समय इस राज्यके पास व्यापारके कामके ३६ हजार जहाजहैं। इनमें धूमपोतोंकी संख्या अधिकहै। इन जहाजों में १ करोड़ ५ लाख टन बोझा लेजाया जासकताहै। केवल जहाजोंकी उन्नतिसे ही व्यापारकी उन्नतिका पूरा निश्चय नही हो सकता है। किन्तु सुइजकी नहर खुलजानेसे बंबईको माल चार मासकी जगह पचीस दिनमें आजाताहै। मेलबोर्न जाने में अब चालीस दिन लगतेहैं और न्यूयार्क (एमेरिका) का माल इंग्लैंड ५ वा ६ दिनमें पहुँचजाताहै। जहाजों के मार्गमें सुविधा होकर उनकी वृद्धि होने पूर्व इंग्लैंड आदि टापुओंका माल बाहरको १४ करोड़ जाता आता था किन्तु श्रीमतीके शासनकी समाप्तिके पांच वर्ष पूर्व अर्थात् सन् ९५ ई० में यही व्यापार ७० करोड़ टनका हुआ॥

१०० वर्ष पूर्व ग्रेट ब्रिटेनमें२ करोड२०लाख पौंडका सूत और कपड़ा तैयार होता था। किन्तु अब १७ करोड़का कपड़ा बनता है। इन वस्तुओंके बननेके कारखानोंमें२००करोड़ पौंडकी पूंजी लगी हुई है और कमसे कम२करोड़ मनुष्य काम करते हैं। श्रीमतीके शासनारंभसे पूर्व सन् १८३५ ई० में विलायत में जितने यंत्र चलाये जाते थे उनमें सब मिलाकर ४१ हजार घोड़ोकी शक्ति थी किन्तु अब (१८९०) में १ करोड़ घोडोंकी शक्तिके यंत्र चल रहे हैं। एक घोड़ेमें १६ मनुष्योंके बराबर शक्ति मानी जाती है। नेपोलियनके युद्धके समय इंग्लैंड का परदेशोंके साथ व्यापार ७ करोड़ पौड का था किन्तु अब (१८९०) ई० में ८१ करोड़ ५० लाख पौंडको पहुंचा। अठारहवी शताब्दिके अंतमें अंगरेजोका सामुद्रिक व्यापार १८ लाख ५६ हजार टन का था किन्तु अब बढ़ते बढ़ते जितना बढ़गया है उसकी संख्या ऊपरके वाक्यमें लिखी गई है॥

महारानीके शासनारम्भमें ग्रेट ब्रिटेनमें केवल छः रेल्वे लाइने थी। इनमेंसे पांच केवल लण्डन नगरमें आवागमन करती थी।एकही लाइन ऐसी थी जो लण्डनसे ग्रीन विच तक जाती आतीथी। सन् १८५४ ई०में रेल्वेकी वृद्धिहोकर ८ हजार ५३ मील रेल्वे लाइन तैयार हुई किन्तु वही संख्या बढ़ते२ सन् १८९५ई०मे२१ हजार १७४ मीलको पहुँची। सन् ५४ ई० में ११ करोड़ ११ लाख ८० हजा

१६५ मनुष्योंने और सन् ९५ ई० में ९२ करोड़ ९७ लाख ७० हजार ९०९ मनुष्योंने रेल्वेमें यात्राकी ॥

इसके साथ ही खानोंसे भी माल बहुत निकलने लगा है। खानोंके मालमें कोयला मुख्य है। कोयले और लोहेसेही शिल्पकला की उन्नति है। लेखा लगानेसे विदित हुआ है कि अंगरेजोंके हाथमें जितनी कोयले और लोहेकी खानें सन् ५४ में थीं उनसे उस समय ६॥ करोड़ टन कोयला और ३० लाख टन लोहा निकला था। उस संख्याकी सन् ९५ई० के साथ तुलना करनेसे आंखें खुलजाती हैं। व्यापारकी वृद्धिका मुख्यमार्ग जानकर इन्होंने दोनों पदार्थोंकी अधिक खोजकी और पचासवर्षके अनन्तर इनको प्रतिवर्ष २० करोड़ टन कोयला और ७५ लाख टन लोहा मिलने लगा। किन्तु इस अवसरमें अन्य २राज्योंमें भी लोहा और कोयला बहुत निकलने लगा है इसलिये अब इन लोगोंका व्यापार इस विषयमें मंदा हो चलाहै। यदि दो पदार्थोंका व्यापार मंदा होतो क्या चिन्ताहै परंतु सोना, चांदी और अन्य २ धातुओंने ग्रेटब्रिटेनके गहरे कर दिये हैं ॥

इंग्लैंडका धन केवल व्यापारकी वृद्धिसेही नहीं बढ़ताहै किन्तु सोना,चांदी और हीरे की खानेभी श्रीमतीके शासनमें उसके हाथ आई हैं।सोनेकी खाने सन् १८४७ई० में केलिफोर्निया, सन् ५१ ई० में आस्ट्रेलिया और सन् १८६८ ई० में दक्षिण एफ्रिकामें प्राप्त हुई हैं। सबही खानोंसे बहुत कुछ सोना निकलनेपर भी सोनेके सिक्केका प्रचार होनेसे उसका मूल्य घटा नहीं है किन्तु श्रीमतीके शासनके आरंभ में चांदीका जितना मूल्य था इससमय उसका आधाहै। इसके कारण येही हैं कि चांदी बहुतायतसे निकलने लगीहै और दिन २ चांदीके सिक्केका प्रचार घटता जाताहै। दक्षिण एफ्रिका में पहले पहल हीरा सन् १८६७ ई० में निकलाथा। तबसे इसका व्यापार दिन २ उन्नति करता जाता है। दक्षिण एफ्रिकामें कई वार अंगरेजोंसे युद्ध होनेका एक कारण सोना चांदी और हीरेकी खानेभीहैं॥

अध्याय २.

वैज्ञानिक उन्नति और आविष्कार ।

जिस समय श्रीमती सिंहासनासीन हुई इंग्लैंडने साइंस की बहुत कुछ पूंजी इकट्ठी कररक्खी थी परंतु उस समय वह पूंजी केवल वैज्ञानिकोंके हृदयमें निवास करती थी।विक्टोरियाके राज्यमें उस पूंजीका व्याज और व्याज काभी व्याज उत्पन्न

होगया। इस विद्याने असाधारण उन्नति की। उस समय और इससे पूर्व विज्ञानपर विचार करनेवाले थे किन्तु अब इंग्लैंडमें हजारों मनुष्य साइंसके अनुसार कामकरनेवाले उपस्थित हैं। यह इस विज्ञानकाही प्रतापहै कि लोग सृष्टि की बनावट जानने लगे हैं, समुद्रमें धूमपोत फिर रहे हैं, उसकी गहराई माप ली गई है आकाशका मानचित्र तैयार है, मनुष्य पशु पक्षी और वनस्पतिकी जांच होचुकी है ॥

साइंसके बलसे सर विलियम कूक और सर चार्लेस व्हीटस्टोनने चुंबककी सुई जिससे तार चलाया जाता है निकाली। इसका आविष्कार सन् ३७ में हुआ था। विजलीके तारका सन् ३८ में प्रचार हुआ। तबहीसे धीरे२ संसारभर में तारका जाल छागया। तारके भाई टेलीफोनके द्वारा अब लण्डन और पैरिस में वातचीत होसकती है इससे व्यापारियोंको बहुतही लाभ पहुंचा है यद्यपि फोटोग्राफीका आविष्कार विक्टोरियाके शासनसे पहलेही होचुका था किन्तु वर्त्तमान ढंगकी चित्रविद्या जिससे वातकी वातमें फोटो तैयार होजाता है श्री-मतीके शासनमेंही प्रकट हुई है। इसका आरम्भ इंग्लैंडमें प्रथमवार सन्१८३९ ई०के सितम्बरमें हुआ था। फोटोग्राफीसे बढकर भी 'एक्स रेज्' का आश्चर्य है। यह सूर्यकी किरने हैं जिन्हें यंत्र द्वारा एकत्रितकर उनसे मनुष्यके शरीरके भीतर की हड्डियां और मांस मज्जा रोग इत्यादिका चित्र उतारा जाता है। इस शासन में विजली और वाष्पने असाधारण उन्नति की है ॥

हैजा, क्षय और प्लेगके रोगोंकी औषधियां इसीसमयमें निकली, जंतुविद्या, विजलीकी शक्तिसे कलें चलाना, कोयलेके बदले केरोसिन तेलका जहाजोंमें ईंधन, आक्सीजन वायुको द्रवीभूत करना, विना घोड़ेकी वाइसिकिल गाड़ियां तैयार करना आदि इससिमय प्रचालित हुआ ॥

महारानीके शासनकालमें लिविंग्स्टन, स्टैनली और बेकरने एफ्रिकाकी बड़ी२ नदियां और झीलोंका पता लगाया। एशिया माइनरमें और मिसरमें भूमिमेंसे एसीरिया और वेबीलियन नगरका पता लगा और टेल एम्रानमें इब्राहीमके समयका शिलालेख मिला। पहले जिन २ वस्तुओंका आविष्कार होचुका था उनका नये ढंगसे संस्कार हुआ और रेल्वेकी गति पहलेसे दुगुनीसे अधिक होगई ॥

विना धुऐंका बारूद और विना तारका तार श्रीमतीके शासनके अन्तिमकाल के आविष्कार है। साइंसने श्रीमतीके शासनमें कितनी उन्नातिकर प्रजाका क्या२ उपकार किया है उसका दिग्दर्शन मात्रभी इस अध्यायमें नहीं होसकताहै।

इस विषयमें स्वतंत्र पुस्तक बननेकी आवश्यकता है और वही साधारणके उपयोगी होसकती है। श्रीमतीके शासनमें जो मुख्य२ आविष्कार हुए उनके विषय में अन्यत्र लिखा गया है । उसे पढनेसे इसका कुछ २ हाल पाठकोंको विदित होगा ॥

अध्याय ३.

प्रजाकी दुर्दशासे सुदशा।

श्रीमतीके शासनमें इंग्लैंडके आईनका बहुत कुछ सुधार और जातीय कष्ट में न्यूनता हुई है। राज्यके आरम्भमें किसानोंकी बहुत दुर्दशा थी । हज़ारों खेतिहर भूखके मारे मर जाते थे। उनके मुखमलिन और आपत्तिग्रस्त थे। हर जगह असंतोष फैला हुआ था। राजद्रोही लोग राज्यतंत्र प्रणालीको उठाकर प्रजातंत्र राज्य स्थापन करना चाहते थे। वे सब नष्ट होगये। देशमें शांति स्थापित हुई और प्रजाके हृदयमें राजभक्ति दृढ होगई ॥

इस परिवर्त्तनसे देशका धन बढ़ा और दुःखदायी नियमोंका संशोधन हुआ ! पहले मिलवाले पांच २ छः २ वर्षके बालकोंसे दिन रात परिश्रम करवाते थे और उन्हें वेतन बहुत थोड़ा देते थे। श्रीमतीके शासनमें यह प्रथा उठगई और पार्लियामेंटने काम करने वालोंके घंटे नियत कर दिये। श्रीमतीका जिस समय शासन आरम्भ हुआ उधार देनेवाला साहूकार अपने रुपयेके लिये असामी को अपने घरमें कैद कर रखता था और उसे मनमाना कष्ट देकर अपना रुपया लिया करता था। विक्टोरियाके शासनने दीन प्रजाको इस निर्दयताके चंगुलसे बचा लिया। अब कोई भी मनुष्य एक सेकंडके लिये किसीको नही रोक सकता है और इग्लैंडमें अपराध बताये बिना स्वयं गवर्नमेंट तक किसीको नही पकड़ सकती है। सन् १८३७ ई० तक यह नियम था कि यदि कोई मल्लाह ठीक २ काम न करता तो जहाज़का कप्तान उसकी कोड़ोंसे खबर लिया करता था। इनका डर इतना भारी था कि भूखोंके सिवाय और कोई मल्लाही करना पसंद नहीं करता था। श्रीमतीके शासनमें यह नियम उठगया और अब इस कारण अंगरेज़ मल्लाहोंका मुख हर्षित और शरीर दृढ़ दिखाई देता है। इंग्लैंडकी यावत् करद प्रजाको पार्लियामेंटमें मेम्बर चुननेके लिये 'वोट' देनेका अधिकारहै परन्तु इस कार्यकी योग्यता विद्याके विना नही होसकती इसलिये शिक्षा संबंधी आईनने पास होकर घर २ पढ़े लिखे करडाले । समाचार पत्रोंपर से कर उठा

लिया, उन्हें अधिक स्वतंत्रता मिली और इससे पुस्तकें और प्रेस सस्ते होगये। जहां तहां पुस्तकालय देख पड़ने लगे । 'कार्नला' के उठजाने और 'पुअरला' के संशोधनसे बाहरका अन्न स्वतंत्रतापूर्वक ग्रेटब्रिटेनमें आनेलगा और इसकेद्वारा लोगोंको भरपेट रोटी मिलना नसीब हुआ । डाकमहसूल घटगया । कपड़े सस्ते मिलने लगे । लोगोंको रहनेके स्थान बढ़ियासे बढ़िया मिले और भाड़ा सस्ता होगया पुराने ढंगके व्याज की कड़ाई घटगई और संगीत विद्या और साहित्यकी उन्नति हुई । इन्ही कारणोंसे देशका दरिद्र दूर होगया ॥

अध्याय ४.

विद्या और साहित्यकी उन्नति ।

जिन लोगोंको इंग्लैंडके प्राचीन साहित्यके अवलोकनका काम पड़ाहै और जो विक्टोरियाके शासन पूर्वके साहित्य और विद्याओंकी आज कलके साथ तुलना करते हैं वे जानते हैं कि अंगरेज़ोंने असाधारण उन्नति की है। जबतक इंग्लैंडके निवासी देश छोड़कर अधिक तर उपनिवेशों और एशिया, एफ्रिका तथा एमेरिका के भिन्न २ स्थानोंमें निवास नही करने लगे थे यूरोपकी राजकीय और जातीय भाषा फरांसीसी मानीजाती थी । फरांसीसी भाषा अब भी मधुर और आदरणीय समझी जाती है परन्तु इससमय अंगरेजी साहित्य उन्नतिके शिखरपर पहुंचा हुआ है । बिजलीकी तरह मनुष्यके हृदयमें प्रविष्ट होकर उसनें भूमंडल भरको व्याप्त करलिया है । आजदिन अंगरेज़ी ही भूमंडलकी एक भाषा जिसे अंगरेज़ीमें (Uniuvrsal language) कहते हैं कहलाने योग्य है ॥

विक्टोरियाके राज्यारंभके समय इंगलिश भाषाका भंडार सब विषयोंसे भरपूर नही था । अंगरेज़ोंको साहित्य, कला, और विज्ञानके लिये अन्य भाषाओंका आश्रयलेना पड़ता था । इस समय संसारमें ऐसी कोई विद्या नही है जिसके विषयमें अंगरेज़ीमें पुस्तक विद्यमान न हो । और वह पुस्तक भी ऐसी वैसी नही किन्तु उस विषयके सब अंगोंसे भरपूर । अंगरेज़ोंने इस शासनमें नवीन पुस्तकोंकी रचनामे जितनी उन्नति की है उतनी ही संस्कृत फारसी अरबी हेब्रू आदि भाषाओंके उत्तमोत्तम ग्रंथोंका भाषान्तर किया है, उनपर अपने विचार प्रकट किये है, और उनसे सिद्धान्त निकालकर हिन्दीकी चिन्दी बनाई है । संस्कृतके वेद और पुराणोंसे लेकर साधारण किस्से कहानी तकका अंगरेज़ी

भाषान्तर हो चुका है । अंगरेज़ी भाषान्तरोंको देख २ करही आज कलके नव-शिक्षित भारत वासी अनुमानके घोड़े दौड़ाते हैं॥

इंगलैंडमें प्रजामतका कैसा भी प्राबल्य हो किन्तु वहांके विषयमें "राजाकालस्य कारणम्" यह लोकोक्ति चरितार्थहोती है । श्रीमतीको विद्वानोंकी सहायता, शिक्षाके प्रचार और उत्तेजनाके अतिरिक्त स्वयं पुस्तकोंकी रचना करनेमें अनुराग था । उन्होंने 'स्काटलैंडका प्रवास' और ऐसीही अनेक पुस्तकें बनाई थीं और पतिका चरित्र बनानेमें सर थियोडोर मार्टिनको लेख संबंधी सहायता दी थी । उन्हींके समयमें इलिज़ा बेथ, ब्रौनिंगू,ज्यार्ज इलियट और चार्लोट ब्रोंटी जैसे लेखक, कार्लाइल और स्टुअर्ट मिल जैसे साहित्याचार्य, हर्बर्टस्पेंसर जैसे फिलोसोफ़र, सौथी, वर्डसवर्थ, टेनीसन, आस्टिन ब्रौनिंगू, स्विनबर्न और लार्ड लिटन जैसे कवि, रुडयार्ड किपूलिंगू जैसे विद्वान, अर्नोल्ड और रस्किनके समान समालोचक, लार्डमेकाले जैसे इतिहास वेत्ता मेकपीस, थेकरी, डिकन्स, किंगूसली, स्टिविन्सन और मेरेडिथ जैसे उपन्यास लेखक हुए हैं ॥

अध्याय ९.

ब्रिटिश राज्यका विजय ।

महारानीके शासनमें अंगरेज़ी राज्यने किस २ राज्यसे युद्धकर विजय पाया है इस बातका निश्चय अन्यत्रके लेखसे होगा । किन्तु उन सब घटनाओंको इकट्ठी करके यहां दिखलानेसे विदित होता है कि श्रीमतीके शासनमें ब्रिटिश राज्यने कितने युद्धजीते हैं । श्रीमतीके शासनमें जल सेनामें असाधारण वृद्धि हुई।इससे पूर्व इंग्लैंडने जल युद्धमें कहीं विजय नहीं पाया था । इनके शासनमें निरंतर विजयहुआ । नील और ट्राफ़लगरके सिवाय कहींपर भी विदेशी जलसेना ब्रिटिश सेनाके सामने टिक न सकी । समोआकी प्रचंड आंधी अनेक जर्मन और एमेरिकन धूमपोतोंको नष्ट कर चुकीथी उसीमेंसे "केलियपू" नामक ब्रिटिश जहाज बचआया ॥

विक्टोरियाके शासनारंभमें इंग्लैंडके सैनिक जहाजोंमेंसे अधिकतर पाल वाले जहाज थे । इनमें उन पोतोंकी संख्या अधिक थी जिनको अंगरेज़ोंने फ्रांस, स्पेन, डेनमार्क, और होलेंड वालोंसे छीने थे । किन्तु दिन२ धूमपोतोंकी संख्या बढकर डायमंडज्यूबिलीके समय जो क़वाइद हुई उसमें १६६ सैनिक जहाज़ोंकी

संख्या गिनीगई थी। इनके खड़े होनेमें सातमील समुद्र रुंधगयाथा। ब्रिटिश जल सेनाने केवल अपने मान और देशकी रक्षाही नकी वरन अल्मा, वलकलावा इंकमैंन, सेवस्टापूल (क्रीमिया) दिल्ली, लखनऊ और कानपुरमें विजयपाया॥

श्रीमतीके शासनके दूसरे वर्षसे लेकर अबतकमें अंगरेज़ी सेनाको तीन युद्ध काबुलमें करनेपड़े जिनमेंसे अंतिम युद्धमें लार्ड रावर्ट्सने असाधारण विजयपाकर काबुलकी प्रजाके हृदयमें वीरोचित स्थानपाया। अंगरेज़ीसेना सिक्खोंसे,चीनियोंसे,भुटानियोंसे काफ़िरों, मावरियों, जुलूलोगों बाज़ोरियों, लुशाइयों,और अनेक पहाड़ी जातोंसे लड़ी और चित्राल और सीमाप्रान्तके अफरीदियोंसे विजयपाया। ब्रिटिशसेनाके बलसे केनेडाका विजयहुआ और ब्रह्मदेश अंगरेजोंके हाथआया अंगरेजी सेनाने दो बार कुमासीको जीतकर मगदलामें अपना झंडा जाजमाया। उसने नाइगर जैसी जंगली जातिको अपने वशमें किया, मिसरके उपद्रवियोंका दमनकर और सोडानके खलीफाको परास्त कर एकवार फ्रांसको फसौड़ामें नीचा दिखाया। और आमेरडममें अपना झंडा जा उडाया॥

अंतमें ट्रांसवालके युद्धमें जो सन् १८९९-१९००ई० में हुआ बहुत कुछ कष्टसहने और हज़ारों मनुष्योंको खोने उपरांत लेडीस्मिथ मेफकिंग् और किम्बर्लीको बोरोंसे छुडाया, वीरबोरोंकोक़ैद किया और अंतमे ट्रांसवालसें विजय पाया। और आशाहोतीहै कि वहांका रहासहा बखेड़ा मिटकर कुछ वर्षोंमें शान्ति होजायगी॥

अध्याय ६.

वाष्प और बिजली।

श्रीमतीके शासनमें प्रजा और राज्यकी उन्नति करनेके काममें बाफ और विजलीने बहुत सहायता दी। पूर्व छः सौ वर्षकी अपेक्षा श्रीमतीके शासनके तरेसठ वर्षमें इन दोनों पदार्थोंने अंगरेज़ोंकी बहुतही सेवाकी। इन दोनोंके द्वारा समय और द्रव्यका बहुत बचावहुआ। जिस कार्यके करनेमें बरसों लगते थे वह अब दिनोंमें हो जाता है। इनसे मार्ग ओछा होगया और अब प्रजा ऐसी स्थितिपर जा पहुंची कि एक मनुष्य देशांतरोंमे भ्रमण कर पीढियोंमें जितना अनुभव प्राप्त नहीं करसकता था वह दिनोंमें संपादन हो जाता है। यद्यपि धूमपोत चलानेम पहले-भी कुछ २ सफलता प्राप्त हो चुकी थी किन्तु सबसे प्रथम जहाज़

श्रीमतीके राज्यारंभके वर्षमें ही यूरोपसे एमेरिकाको भेजा गया था। वह जहाज़ बहुत छोटासा था। उसकी लंबाई केवल २१३ फुट और बोझा २३०० टन था किन्तु अब उससे चौगुने पचगुने जहाज़ अटलांटिक जैसे महासागरको पारकर जाते हैं। नौका वाहनकी उन्नतिसे एटलांटिक महासागर साधारण तलैयाके समान होगया। इसके लिये सन् १८४०ई० में इंग्लैंडमें केवल ६०० धूम नौकायें थीं किन्तु आज दिन ८५०० से अधिक हैं। जहाजों और रेल्वेकी उन्नतिके विषयमें इस भागके प्रथम अध्यायमें कुछ लिखा गया है। सन् १८४२ ई० तक श्रीमती एक पैंड भी रेल्वे यात्रा करनेमें असमर्थ थीं और अवर्डीनसे बाल मोरल जानेमें पैंतालीस घंटे लगते थे किन्तु अब५४० मीलकी यात्रा केवल १२ घंटेमें हो जाती है ॥

यही दशा बिजलीकी है। बिजलीसे तार टेलीफोन, फोनोग्राफ़, रोशनी और इसी प्रकारके अनेक आविष्कारोंका अधिक भाग श्रीमतीके शासनसे संबंध रखता है। उन्हींके राज्यमें बिजलीने यूरोपियन लोगोंकी नौकरनी की तरह सेवा की है ॥

जहाज रेल्वे और तारसे यह भूमंडल यूरोपियन लोगोंके लिये विक्टोरियाके ही शासनमें हस्तामलक हुआ है। विक्टोरिया ही के राज्यमें इस भूगोलको विद्यार्थियोंके 'भूगोल' की तरह अंगरेज़ोंने अंगुल २ देख डाला है। और श्रीमतीके समयमेंही इस पृथ्वीपर अंगरेज़ोंका इतना राज्य फैला है जिसमें सूर्यके अस्त-न होनेकी उपमा दी जाने लगी है ॥

अध्याय ७.

भारत वर्षकी उन्नति और परिवर्त्तन ।

श्रीमतीके शासनके तरेसठ वर्षमें भारत वर्षकी कितनी उन्नति अवनति हुई और क्या२ परिवर्त्तन हुआ-इस बातका पूरा विवेचन इस एक ही अध्यायमें नही हो सकताहै। यह कार्य उसी समय सांगोपांग होसकताहै जब कि इस विषयमें एक स्वतंत्र पुस्तक लिखीजाय। मुझे इसपुस्तकमें श्रीमतीके शासनकी सब बातोंका दिग्दर्शन करनाहै इसलिये इस विषयको यहांपर मैं विस्तारपूर्वक नहीं लिखसकताहूं। भारत वर्षमें अंगरेजोंका साम्राज्य स्थापित होनेसे पूर्व लूट खसोटका बड़ा ज़ोर था। देशी राजाओंमें परस्पर युद्धका बाज़ार गर्मथा।दिल्लीके सिंहासनपर एकको मारकर दूसरा बादशाह बननेकी काममासे लड़ता झगड़ताथा। जगह२ मारकाट होकर प्रजाके

सुखका कुछ प्रयत्न नहीं किया जाताथा। डाकू लुटेरे और बाहरी आक्रमणसे प्रजा थर थर कांपती रहती थी। किसीको अपने प्राण, धर्म और धनकी रक्षाका कहींसे सहारा न था। ब्रिटिश शासनसे धीरे २ यह भय जातारहा। जिस शांतिका बीज महारानीके शासनारंभसे पूर्व डाला गया वा डालाजाने वाला था उससे वृक्ष उत्पन्न होकर पल्लवित और फलित होगया। जहां एक समय एक शस्त्रधारी समुदायभी शांति पूर्वक यात्रा कर लुटेरों और डाकुओंसे बचनेकी आशा नहीं रखता था वहां अब एक बुढियाभी सोना उछालती चली जानेमें हिचकती नहीं है। सीमाप्रान्तकी जंगली जातोंसे इस देशकी साधारण प्रजाको जो रात दिन भय बना रहता था वह दूर होगया। पश्चिमोत्तर सीमा प्रदेशकी प्रजा चाहे जैसी कट्टर क्यों नहो और उसे दमन करने में सरकारको कैसा भी कष्ट क्यों न उठाना पड़े परंतु अब किसीकी सामर्थ्य नही है कि प्रजाकी ओर आंख उठाकर देखसके॥

रेल और तार तो एक ओर रहा किन्तु उससमय सड़कका नामभी कोई नही जानता था और न यात्रियोंकी सुविधाका कोई उचित प्रबंध था। भारत वर्ष जैसे एकही देशमें बसकर, और एकही धर्मकी अनुयायी होनेपर भी इस देशके एक प्रान्तकी प्रजा दूसरे प्रान्तके रहन सहन और स्थितिसे बिलकुल अन-भिज्ञ थी। उत्तरसे दक्षिण और पश्चिमसे पूर्व भागको जाने में असंख्य रुपया खर्च होने उपरांत कई महीनोंमें अनेक कष्ट सहकर जैसे तैसे यात्रा हो सकती थी। और जो मनुष्य चारों धामोंमें से एकभी यात्राकर आता था वह धन्य समझा जाता था। केवल इतनाही नहीं बरन घरसे निकलते समय मनुष्य अपने घरवालोंको और घरवाले उसे मराहुआ समझ लेते थे। वहाही अब इने गिने दिनों में भारतके एक छोरसे दूसरे छोरतककी यात्रा निश्चिन्ततासे कर सकता है। उस समय मनुष्यको घरसे बाहर जाना जितना कठिन था उतनाही अब हँसी खेल होगया है। उस समय एक प्रान्तकी उपज और कारीगरीके पदार्थके लिये दूसरे प्रान्तवाले तरसते थे। उसेही अब वे लोग रेल और डाकके द्वारा घर बैठे पासकते हैं॥

अंगरेज़ों के राज्यसे पहले इस देशमें डाकका कोई योग्य प्रबंध न था। ब्रिटिश शासनका आरंभ होकर शांति स्थापन होनेके अनन्तर डाक विभाग स्थापित होनेपर भी देशियोंके लिये किसीप्रकारका सुविधा न था। आरंभमें डाककी

चिट्ठियोंपर महसूल मीलके हिसाबसे लगता था और प्रत्येक चिट्ठीका महसूल आ आनेसे कम न था। महारानीके शासनमें डाक विभागका बिलकुल काया पलट होगया। अब पत्र, पारसल, रजिस्टरी, बीमा, मनीआर्डर और वेल्यूपेबिलके प्रचारसे प्रजाका दुःखदूर होकर सरकार और प्रजाका बहुत लाभ हुआ और दिन २ इसकी उन्नति करनेका प्रयत्न किया जा रहा है। इसी तरह तार विभागकी उन्नतिसे भी देशका बहुत उपकार हुआ॥

हिन्दुओंके आयुर्वेदमें स्वास्थ्य रक्षाके जो नियम लिखे हैं वे इस देशवासियोंकी प्रकृति और जल वायुके अनुकूल हैं परंतु सैकड़ों वर्षोंतक अशांति रहने और शिक्षा कम होजानेसे इस देशकी अधिकांश प्रजाने उनपर ध्यान देना छोड़ दिया था। प्रजाकी धर्मार्थ चिकित्सा करनेका कोई उचित प्रबंध न था। महारानीके शासनमें सरकारने इन बातोंपर बहुत ध्यान दिया। संक्रामक और दूसरे रोगोंसे बचानेका प्रयत्न कर स्थान २ पर अस्पताल स्थापित किये। और चाहे इस देशकी प्रजाकी प्रकृति और जल वायु तथा धर्मके डाक्टरी चिकित्सा अनेक अंशोंमें प्रतिकूल हो परंतु दीनसे लेकर धनवान् तकके लिये स्वतंत्रतासे चिकित्सा करवानेका मार्ग खुल गया। प्रजाको अनायास अस्पतालोंमें दवा मिलनेसे लोगोंने देशी वैद्यकसे उपेक्षा की और इसका यह फल हुआ कि एक योग्य और उपयोगी शास्त्र धीरे २ लोप होता जाता है। और दीनता तथा योग्य भोजन न मिलने और असंयमकी वृद्धिसे लोगोंकी शक्ति घटती जातीहै। इसीका यह कारण है कि पहलेकी अपेक्षा अब भारतवासी दृढ कम होते हैं, रोगी होते हैं और जीते कम हैं॥

ब्रिटिश राज्यके भारतमें स्थापित होनेसे पूर्व यहांपर कपड़ा आदि सब पदार्थ हाथसे बनाये जाते थे। उस समयके कारीगर इस कार्यमें बड़े निपुण थे। इनकी बनाई वस्तुओंसे उस समय केवल देशका कामही नहीं चलता था बरन यहांका बना माल परदेशोंमें जाकर बहुत आदर पाता था। अब हाथके कामका स्थान कलोंने लिया। दस्ती कारीगरी धीरे २ नष्टप्राय होगई। देशमें विलायती ढंगपर माल तैयार करनेके लिये कल कारखानोंकी योजना हुई। इस कार्यने भी बहुत शीघ्र उन्नति की और थोड़ेही समयमें विलायतके ढंगपर कपड़ा आदि अनेक तरहका सामान भारत वर्षमें बनने लगा। इस कार्यकी यद्यपि वृद्धि होती है परंतु प्रजाकी ओरसे आश्रय न मिलने और कारखानोंपर टैक्स लगजानेसे अब शिथिल हो गया है। और इसी कारणसे देशीकारीगरी धीरे २ रसातलको चली जा रही है॥

साठ वर्ष पहले इस देशमें भूमि बहुत कम जोती बोई जाती थी परंतु उसमें उपजाऊ शक्ति बहुत थी। इस कारण थोड़ी भूमि जोतनेपर भी अन्न इतना अधिक उत्पन्न होता था कि जिससे केवल भारतवर्षका निर्वाह होने उपरान्त व्यापारियों की खत्तियां भरी रहा करती थीं और अकालके समय वही अन्न सहायता देता था। अब उतना अन्न चप्पा २ जमीन जोतनेपर उत्पन्न होता है । उपजका अधिक भाग विदेशको चला जाता है। इसके साथही अफ़ीम रुई और नीलकी खेतीभी बहुत होती है। प्रायः ये तीनोंही पदार्थ परदेशको जाते हैं। और यहांकी रुईसे विलायतमें जो कपड़ा बनता है वह इस देशवालोंके शरीरको ढांकता है। इसके अतिरिक्त देशी कारीगरीके नष्ट होजाने और परदेशी मालके चाकचक्य-पर प्रजाकी रुचि बढ़नेसे दिन २ बाहरका माल यहां आकर अधिक २ बिकता है और सौ वर्ष पहले भारतवर्षका बना पदार्थ परदेशके बाज़ारोंमें जितना आदर पाता था उससे कहीं बढ़कर विलायती मालका भारतवर्षमें इस समय आदरहै। भारतवर्षके व्यापारी आढ़त और सट्टेमें लगे हुए हैं और देशका व्यापार धीरे २ परदेशियोंके हाथमें चला जाता है। नील और ईखकी खेतीका काम अब यूरो-पियन लोग भारतवर्षमें करने लगे हैं और चायकी खेती भी बहुत होनेलगीहै॥

यद्यपि श्रीमतीके सिंहासनपर विराजने पूर्व इस देशमें शिक्षाविभागका जन्म होगया था और कही २ पाठशालायें भी स्थापित हुई थी परंतु श्रीमतीके शासन में गाँव २ पाठशाला होगई। अंगरेज़ी भाषाने इस देशमें बहुत उन्नतिपाई । देशी भाषाओंने भी थोड़ेही कालमें बहुत कुछ उन्नति कर दिखाई और जहां अंगरेज़ी वा देशभाषामें पत्र लिखनेके लिये ढूंढनेपर कठिनता से मनुष्य मिलता था वहां हज़ारों लाखों विद्वान् देख पड़ने लगे। विद्वानोंकी वृद्धिसे देशकी दशा सुधरनेकी आशा करना चाहिये था परंतु प्रचलित शिक्षाप्रणाली उच्च कक्षामें पहुं-चने परभी विद्यार्थीको पाठशालाओंमें मास्टरी और दफ्तरोंमें क्लर्की करनेके सि-वाय और किसी प्रकारकी शिक्षा नहीं देती है इस लिये देशको इसप्रकारके विद्वानोंसे ऊब होगई और नानाप्रकारके पेशेवालोंके अपना पेशा छोड़कर अंगरेज़ी पढनेके कारण पढ़े लिखे मनुष्योंकी बहुतायत होकर विद्वान् सस्ते होगये। किन्तु साथहीमें ब्रिटिश गवर्नमेंटकी कृपासे देशभाषाओंकी भी बहुत उन्नति हुई और दिन २ होती जाती है। श्रीमतीके शासनमें कई एक विश्व विद्यालय स्थापित होकर विद्योपार्जनकी शृंखला बँधगई॥

पाठशालाओंके स्थापित होने पूर्व संस्कृतका प्रचार देशमें घट गया था। बहुतही थोड़े मनुष्य संस्कृतको पढ़ते थे। परंतु उस समयके पढ़ने वालोंमें विद्वान् अधिक

होते थे। सरकारने अंगरेज़ी और देश भाषाओंके साथही संस्कृत शिक्षा का भी प्रचार किया परन्तु पाठशालाओंमे इसकी पढ़ाई कमहोनेसे पूर्ण विद्वान् होनेके बदले "पल्लवग्राह पाण्डित्य"को चरितार्थ करनेवाले संस्कृतज्ञ बहुत बढ़गये। और हिन्दी पद्यका यद्यपि बहुत कालसे प्रचारथा परन्तु वर्तमान स्थितिके पद्यने महारानीके राज्यमे जन्मलेकर ठीक २ उन्नति की और चाहे इसकी अन्यभाषाओंके समान वृद्धि न हुई हो परन्तु दिन २ हिन्दीका झुकाव उन्नतिकी ओर बढ़ता जाता है ॥

देशभाषा, अंगरेज़ी और संस्कृतकी उन्नतिमें मुद्रालय बहुत सहायक हुए। महारानीके शासनके अंतिम भागमें इसदेशकी प्रजाने पुस्तकें मुद्रित करानेके लाभोंको अच्छीतरह जानलिया और भिन्न २ भाषा और विषयके अनेक अच्छे और बुरे ग्रंथ मुद्रित होकर देशियोंकी इस ओर रुचिबढ़ी और साथही सर्व साधारणको पुस्तकें सस्ती मिलने लगीं। और इसके द्वारा अनेक अलभ्यग्रंथ सुलभ होगये। श्रीमतीके शासनमेंही अंगरेज़ीके सिवाय देशभाषाओंके सैकड़ों समाचार पत्रोंका जन्म हुआ। और उन्होंने अपनी उन्नति कर राजाकी और प्रजाकी बहुत सेवा की। और अबभी कररहे हैं ॥

मुसलमानों के राज्यमें हिन्दू स्वतंत्रता पूर्वक अपने धर्म संबंधी कार्य नहींकर सकतेथे। और उन्हें करोंसे और दबावसे इसकार्यसे रोका जाता था। ब्रिटिशराज्य और विशेष कर महारानीके शासनने इसदेशकी भिन्न २ जातों को अपने धर्म और समाज संबंधी कार्यों में स्वतंत्र कर दिया। और किसीके धर्ममें हस्ताक्षेप न करनेकी नीतिका दृढ़ प्रचारकर सबको अपने २ धर्मकी उन्नति करनेका अवसर दिया। श्रीमतीके राज्यमें हिन्दुओं और मुसलमानों में कई एक नवीनमत स्थापित हुए और प्राचीन मतवालोंने अपनी २ उन्नतिका प्रयत्न किया। परन्तु पाश्चिमीशिक्षा और नीतिके प्रभाव तथा योग्यशिक्षाके अभावसे प्रजाकी रुचिका अनेक अंशोंमें धर्म तथा सामाजिक विषयोंमें परिवर्त्तन होगया और शिक्षित लोग अपनी प्राचीन प्रणालीको अनुचित बतलाकर पश्चिम वालोंका अनुकरण करनेपर उतारू हुए। परन्तु साथही में प्राचीन धर्म और रीति से प्रेमरखने वाले लोगों ने और विचार शील यूरोपियनों ने हिन्दू धर्म का महत्व समझाकर उन्हें पश्चिमकी ओर बढ़ने से रोक दिया और इसका फल यह हुआ कि, उनकी दृष्टि में शनैः २ हिन्दुओंके धर्म तथा नीति का महत्व सत्यप्रतीत होनेलगा ॥

हिन्दुओंके घरमें धर्म और नीति शिक्षाका अभाव होनेसे और पाठशालाओं में इसप्रकारकी शिक्षा न पाकर देशियोंके आचरणमें प्रायः अंतर आगया और जो लोग

देशोन्नतिका भार अपनेऊपर लेनेके योग्यथे उनमें और उनकी देखा देखी अशि-क्षितों वा अर्द्ध शिक्षितोंमें अंग्रेजोंके उद्यम, स्वदेशप्रेम आदि गुणग्रहण करनेके साथही मद्यादि दुर्गुणोंने भी प्रवेश करदिया और धर्मकी कुछ पर्वाह न कर जो लोग विदेश पढ़नेके लिये गयेथे उनमेंसे कईएकने पश्चिमी चाकचक्यसे मोहित होकर मेमों से विवाह किया। इसशासनमें भारतवासियोंके विलायत जानेका फाटक खुलताजाताहै और सैंकड़ों ही मनुष्य वहांसे विद्योपार्जन कर देशके अनेक अंशोंमें कामआये परंतु भेड़िया धसानने यहांभी भारतका पीछा न छोड़ा। इनलोगों में वैरिस्टरीकी ओर रुचिवढ़कर इनका बाज़ार सस्ताहोगया । परंतु साथही विलायत न जाकर, भारतमें आईन पढ़नेके लिये कालेज खुलनेसे देशी वकीलभी बहुत होगये और कही २ इनके बाहुल्यसे ऊबभी देखनेमें आई ॥

पाठशालाओमें उच्चशिक्षा प्राप्तकरनेसे देशियोंने जानलिया कि ब्रिटिश नीति के अनुसार और महारानी के ढिंढोरे और प्राचीन आईनसे राज्यप्रबंधके कामोंमें हमारा कितना स्वत्वहै, प्रबंध सुधरवानेके लिये हमें किसप्रकारका आन्दोलन करना चाहिये और देशोन्नति क्योंकर होसकती है । अनेक वर्षों के आन्दोलनके पश्चात् इसी उद्योगसे भारतवासियोंने नेशनल कांग्रेसकी सृष्टिकी । इससे यद्यपि प्रकृत लाभ न हुआ परंतु सब प्रान्तोंके लोगोंमें एकता बढ़ी और अनेक अंशोंमें किसी न किसी प्रकारपर सरकारने उनकी प्रार्थनापर ध्यानदिया । इस देशमें 'लोकल सेल्फ गवर्नमेंट' अर्थात् आत्मशासन प्रणालीका आरंभ हुआ और देशियोंको प्रबंध और न्याय विभागमें उच्चपद मिलनेलगे । इसके सिवाय एक बहुत बड़ा कार्य यह हुआ कि गवर्नमेंटने आईन बनानेवाली सभाओंमें देशी मेंबरोंके चुननेका प्रजाको स्वत्वदिया और समय २ पर देशीलोग प्रबंधकी त्रुटिपर सरकारका ध्यान आकर्षित करनेलगे । यह महारानीके शांतिमय शासनका परिणाम है । इससमय इतना भी लिखना आवश्यकहै कि पश्चिमी शिक्षासे देशि-योंने जितना आंदोलन करना सीखा उतना वास्तविक उद्योगपर ध्यान नदिया और देशोन्नतिके लिये सरकारसे प्रार्थना करनेके साथही देशी कारीगरीकी उन्नति और व्यापारकी वृद्धिके लिये जिन कामोंको वेलोग स्वयं कर सकतेहैं उनपर उपेक्षा करने और सरकारके उत्तेजना वा सहायता न देनेसे देशकी कारीगरी दिन २ नाशहोती जातीहै । और इसके साथही सरकारी लगानकी अधिकता, करोंकी वृद्धि, फसलोंके बिगड़ने और देशियोंका खर्च बढ़जानेसे दिन २ भारतवर्ष दरिद्री होत जाताहै । इसका प्रत्यक्ष प्रमाण गतवर्षोंके अकालहैं इन बातोंसे निश्चय होगया है कि भारतवर्षमें अन्नका अकाल नही किन्तु रुपये

का अकाल है और यही सुकालके समय महँगी रहनेका कारण है। श्रीमतीके शासनारंभमें अकालके समय अन्नका जो भाव रहताथा वह भी अब सुकालके समय नही रहता है ॥

इन सब वातोंपर ध्यान देनेसे निश्चय होता है कि श्रीमतीके शासनमें देशकी जितनी उन्नति हुई है उतनी अवनति भी हुई है परंतु इसमें अधिक तर दोष देशियोंका है। सरकारकी नीति और प्रबंध उन्हें अपने धन, धर्मकी उन्नति करनेमें किसी प्रकारकी बाधा नहीं डालते है और अनेक वर्षोंकी शांति उन्हें उत्तेजना देती है कि वे अपनी उन्नतिके लिये सरकारके आईनकी सीमामें रहकर उद्योग करें। यथावश्यक न्यायालयोंके स्थापित होनेसे प्रजाको अन्याय और अत्याचारियोंसे बचनेका अच्छा अवसर मिलता है और एक दीन मनुष्य बड़ेसे बड़े अधिकारी और धनाढ्यपर नालिशकर न्याय पा सकता है परंतु इसके साथ ही लोगोंमें मुकद्दमे बाज़ीका चसका बढ़ता जाता है। इस समय यह भी लिखना आवश्यक है कि सरकारी सेना और पुलिससे देशकी शांतिकी जैसे रक्षा होती है और यूरोपियन तथा देशी कर्मचारी जिस तरह सुप्रबंध कर प्रजाका उपकार करते हैं उसी तरह इनके हाथसे अत्याचार भी बहुत होते हैं परंतु जहां तक बन पड़ता है सरकार प्रजाकी पुकार सुनकर न्याय करनेकी चेष्टा करती है। और समय २ पर इनके अधिकारोंके संशोधनका विचार भी किया जाता है॥

अध्याय ८.

अन्य राज्योंसे ब्रिटिश शासनकी तुलना।

बालवयमें महारानी नहीं जानती थीं कि मेरे समयमें ब्रिटिश राज्य यूरोप भरके राज्योंसे अनेक बातोंमें बढ़ जायगा किन्तु ईश्वरको इनके शासनमें ब्रिटिश प्रजाका अपूर्व उपकार और उन्नति करनी स्वीकृत थी। इस अध्यायके विषय पढ़नेसे मालूम होता है कि यह राज्य यूरोपके साम्राज्योंमें किस दबदबे और कैसी स्थितिका है। यूरोपके अन्य राज्योंमें एक, दो, तीनसे बढ़कर धर्म और जातिके लोग नहीं वसते हैं किन्तु महारानीके राज्यमें श्वेत, कृष्ण, पीले भूरे, और लाल रंगके मनुष्य वसते हैं और उनका धर्म ईसाइयोंमें प्रोटेस्टेंट, रोमनकेथोलिक, ग्रीक चर्चके सिवाय मुसलमान बौद्ध और मूर्ति पूजक हैं॥

आज कल ऐसी जन श्रुति होगई है कि महारानीके राज्यमें कभी सूर्य अस्त नहीं होता है। इसका प्रयोजन यही है कि उनका राज्य इस भूमंडलके प्रत्येक अंशमें थोडा और

बहुत विद्यमान है। इसकारण जब एक भागमें रात्रि होतीहै तो दूसरेमें अवश्य दिन होता है। ब्रिटिश राज्यकी अन्य राज्योंसे तुलना इस भांति है:–

राज्य	क्षेत्रफल	लोकसंख्या	प्रति मनुष्य व्यापार	सामुद्रिक व्यापार टन
इंग्लैंड	१२००००००	३९०००००००	३९० शि०	१४००००००
रूस	६४४४०००	१३०००००००	२७ "	०
एमेरिकाके स्वतंत्ररा०	३६५००००	८७०००.००	१०० "	४८०००००
फ्रांस	२८४००००	९६००००००	१६२ "	१२४२०००
जर्मनी	१२३५०००	७००००००००	१५६ "	२५०००००
इटाली	०	०	०	८७६०००
स्विटजरलैंड	०	०	०	०
स्वीडन, नार्वे	०	०	०	२३०००००

ऊपरके लेखे में जहांकी संख्या उपलब्ध नहोसकी वहां बिन्दी देदी गईहै। सन् १८५० ई० में इंग्लैंड में प्रति सैकडा ५·१३ भिखारी थे किन्तु सन् १८९९ ई० में ५·११ प्रति सैंकड़ा रहगये। जिसतरह वहां दीनता कमहुईहै उसी तरह अपराधियोंकी संख्याभी घटीहै। सन् १८५० ई० में सब मिलकर ४० हजार मनुष्योंको जेल हुआथा किन्तु सन् १८९० ई० में १८८७० को लंडन नगरकी बस्ती महारानीके राज्यमें २० लाखसे बढ़कर ४० लाख होगईहै। ब्रिटिश राज्यके पास इस समय सब मिलाकर ७॥ लाख सैनिकहैं। इनमें भारत वर्षके देशी रजवाड़ोंकी वह सेना जो सरकारकी सहायताके लिये दीगईहै और उसकी संख्या ३० हजारके भीतरहै सम्मिलित नही की गईहै। भारतवर्ष में कुल गोरी सेना ८० हजार और काली २॥ लाखके लगभगहै। यूरोपके सबराज्योंमें अंगरेजोंसे सेना अधिक है। इस बातका दिग्दर्शन नीचे के लेखेसे होताहै॥

राज्य	शांतिके समय	युद्धकेसमय	सेनामें भरती करनेकी बलात् आज्ञा होनेसे प्रति वर्ष वृद्धि
रूस	९ लाख	२५लाख	
फ्रांस	५ लाल ९० हजार	२५लाख	०
जर्मनी	४७९२२९	०	३लाख ६० हजार

आस्ट्रिया	३ लाख ६० हज़ार	१८ लाख ६० हज़ार आवश्यकता पडनेपर ४० लाख
रूम	७ लाख	समय पडनेपर २० वर्षके ऊपर ४० के भीतरका प्रत्येक मनुष्य सेनामें भरती किया जासकताहै ।
यूनान	२६ हज़ार	८२ हज़ार

यद्यपि अंगरेज़ी सेना थोड़ी है परंतु इनका चातुर्य अधिकहै इसलिये किसी राज्यको गवर्नमेंटसे लड़नेका साहस नहीं होताहै । अब इंग्लैंडमें सेना वृद्धिका विचार होरहाहै । संभवहै कि थोड़े कालमें वहांकी सेना बढ़जाय ॥

श्रीमतीमहारानी एलेक्ज़ेंड्रा ।
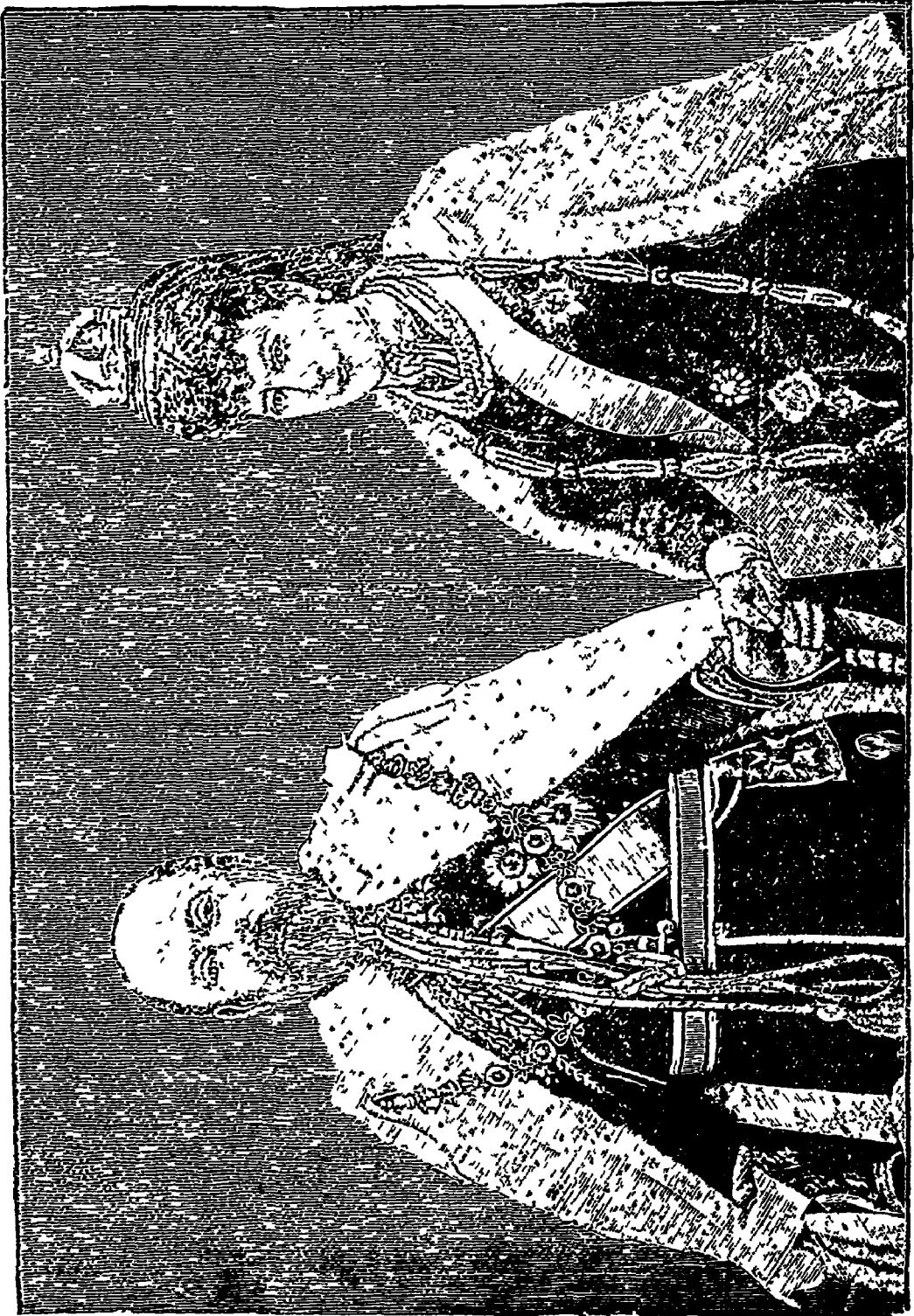
श्रीमान् सम्राट् सप्तम एडवर्ड ।

श्रीगणेशायनमः ।

श्रीमान् सम्राट् सप्तम एडवर्ड का चरित्र ।

चौथा भाग ।

अध्याय १.

जन्म, विवाह और शिक्षा ।

सन् १८४१ ई० के नवंबर मासकी ९ तारीखको इंग्लैंडके बकिंगहाम राज महलमें श्रीमती महारानी विक्टोरियाके दूसरे गर्भसे पुत्रका जन्म हुआ। श्रीमतीके उत्तराधिकारी उत्पन्न होनेके हर्षमें ब्रिटिश और भारतीय प्रजामें आनन्दकी बधाइयां बजने लगीं । देश देशांतरके राजा, प्रजा, अमीर, गरीबने बधाईके तार और पत्र भेजकर राजमहलको भर दिया । ब्रिटिश साम्राज्यके बडे २ नगरोंमें हर्षसूचक सभायें हुई और राज्य भरमें इस बातके निमित्त उत्सव कियागया। संसारमें पुत्र मुखके सदृश कोई दर्शनीय सुखनहीं है। महलों में सुख भोग करनेवाले राजा और झोंपड़ेमें निवास करने वाले भिखारीको पुत्रके जन्मसे बराबर सुख होताहै। राजा उसका राजसी ठाठसे लालन पालनकर मनको प्रफुल्लित करता है और दीनपुरुष अपनी शक्तिके अनुसार खर्च करके। किन्तु दीनका सुख राजाके सुखसे किसी अंशमें कम नहीं होताहै ।। ऐसीदशामें यदि श्रीमती और उनके पतिको पुत्रके जन्मसे सुख हुआ होतो आश्चर्यही क्याहै। परंतु इनका सुख असाधारण था। यह दंपति पुत्र पुत्रीका मुख देखकर हर्षविव्हल होजातेथे। इनके जन्मके पश्चात् दोनों बालकोंके मुख कमल निहारकर ऐसे मग्न होगये थे कि कोई भी इष्ट मित्र और संबंधी के नाम का ऐसा पत्र रीता नहीं जाता था जिसमें इन्होंने अपने इस सुखकी चर्चा न कीहो । इनके जन्मके एक मासबाद श्रीमतीने अपने चाचा बेलजियमके राजा लियोपोल्डके नामलिखाथा कि "मेरा प्यारा पुत्र कैसा निकलैगा इसबातके जाननेकी मेरे मनमें सदा उत्कंठा रहती है परन्तु मैं आशा करती हूं कि यह अपने पिताके तुल्य होगा" ॥

२५ जनवरी सन् १८४२ ई० को ईसाई धर्मके अनुसार इन्हें राजसीठाटसे बपतिस्मा दियागया । उस समय राजकुमारके धर्म पिता प्रूशियाके राजा बनाये गये । नाम करण संस्कारमें इनका नाम श्रीमतीकी ओरसे एलबर्ट और पिताके नामपर एडवर्ड रक्खागया । इसतरह दोनों नामोंको मिलाकर 'एलबर्ट एडवर्ड' संयुक्त नाम हुआ । इनके और इनकी भगिनी (वर्त्तमान जर्मन सम्राट्की माता) के लालन पालनका कार्य मिसब्रोम नामकी एक विदुषीको देकर इसका वेतन दश हजार पौंड वार्षिक नियत किया गया। इंग्लैंडकी राजरीतिके अनुसार युवराजका जन्म होतेही वह ड्यूक आफ् कार्नवाल कहलाने लगताहै इसलिये यह इस पदवी को तो जन्मके साथ प्राप्त करही चुके थे किन्तु इसदिन इन्हें विंडसरके राजमहलमें बहुत धूमधामके पश्चात् "प्रिंस आफ् वेलस" की पदवी दीगई । इस उत्सव में २० लाख रुपया व्यय हुआ । जबसे ब्रिटिशलोगोंने वेल्सके राजाको परास्त कर वेल्स राज्य इंग्लैंडमें मिलाया वहांका युवराज "प्रिंस आफ् वेल्स" कहलाताहै । इसी नियमके अनुसार इनको यह पद दियागया । इसके सिवाय सेक्सकोबग गोथाके ड्यूकका पदभी इसीसमय इनको मिलगया और साठ हज़ार पौंड इनके वार्षिक व्ययकेलिये ब्रिटिशराज्यकी ओरसे नियतहुआ । इनके माता पिता इनसे 'बर्टी' अथवा 'प्यारे बर्टी' कहा करते थे ॥

जब राजकुमार सात वर्ष के हुए इंग्लैंड में इनकी शिक्षाके विषयकी चर्चा होने लगी । इनके पिताने इस बात पर विशेष ध्यान दिया और इनकी शिक्षाके लिये मास्टर नियत करते समय कहा कि– "यह बहुत आवश्यक बातहै । ईश्वर इस पर कृपा करै क्योंकि आजकल संसार की उन्नति का आधार राजाकी शिक्षा पर है।" आपके मित्र बैरन स्टाकमोरकी सम्मतिके अनुसार इनको इस प्रकारकी शिक्षा देना स्थिर हुआ जो इंग्लैंड की भविष्यत् स्थिति के अनुकूल हो । इंग्लैंड की प्रजा इनकी शिक्षा के लिये बहुत उत्कंठित थी । इस सम्मति को उसने पसंद किया और मिस्टर गिब्स, मिस्टर फिशर और मिस्टर टार्वर इनके शिक्षक नियत हुए । इन तीनोंसे विद्याभ्यास करने के सिवाय इन्होंने जर्मनीके कोनिंगुस विंटर में और एडिनबरा, आक्सफोर्ड तथा केम्ब्रिज में रहकर शिक्षापाई । शिक्षा पाते समय इनके साथ साधारण व्यक्तिके समान वर्त्ताव किया जाताथा । इसबात को महारानीने स्वयं देखकर बहुत हर्ष प्रकट किया । सन् ६१ ई० में यह केम्ब्रिज विश्वविद्यालयकी अंडर ग्रेड्युण्ट परीक्षा में उत्तीर्ण हुए और सन् ६८ ई० में

आक्सफ़ोर्ड विश्व विद्यालय ने डी. सी. एल्., ट्रिनिटी कालेज एडिनबरा और डबलिन की यूनिवर्सिटियोंने एल्. एल्. डी की और सन् १८७४ ई० में कलकत्ता विश्व विद्यालयने इनको सम्मानार्थ यही पदवी प्रदान की ॥

सन् १८४८ ई० में यह अपने माता पिताके साथ आयलैंड गये। वहांकी प्रजाने इनका बहुत सम्मान किया। वहांसे लौटने पर ३० अक्टूबर सन् १८४९ ई० को यह प्रथम वार अपनी माताकी आज्ञासे एक्सचैंजकी सभामें विराजे। राजसी तौर पर इनकी सवारी निकलनेका यह प्रथमही अवसर था इसलिये लंडनका बाजार इनके दर्शनके लिये भीड़से खचाखच भरगया ॥

सन् १८५१ई०में आपको प्रथम वार लार्ड सभामें स्थानमिला। और इनकी बैठक महारानीके पास नियत हुई। सन् ५५ ई० में यह माता पिताके साथ, क्रीमिया युद्धमें घायल होने वालोंको, देखनेके लिये चेथेरके अस्पतालमें गये। सैनिकों की रक्षाके लिये जो फंड खोलागया उसमें इन्होंने अपना चित्र भेजकर पचपन गिनीका उपहारपाया औ वह उपहार इस कार्यमें लगादिया ॥

राज्यप्रबंधकी झंझटोंमें लगे रहने पर भी महारानीका इनकी शिक्षापर बहुत ध्यानथा। वह इनको उत्तम शिक्षा दिलाकर धार्मिक राजा बनाना अपना प्रधान कर्तव्य समझतीथीं। इस विषयमें श्रीमतीके चरित्रके अध्याय२५में लिखागयाहै। यहां पुनरुक्ति करनेकी आवश्यकता नही है तथापि इतना कहना चाहिये कि एक बार कोई विद्वान् युवराजकी परीक्षाके लिये राजमहलमें गयाथा। उसने इनको धार्मिक विषयोंमें निपुण पाकर इनके शिक्षकोंकी प्रशंसाकी। यह बात इन्हें असह्य हुई। यह तुरंत बोला उठे कि–" हमें धार्मिक शिक्षा मास्टरोंने नहीं दीहै किन्तु यह कार्य माताने कियाहै।" माताके उपदेशानुसार यह नित्य गिरजेमें जाया करतेथे। क्रीमियाके युद्धके पश्चात् जब यह फ्रांस गये तो वहांभी इन्होंने गिरजेमें प्रार्थनाके लिये जाना न छोड़ा ॥

चौदह वर्षके वयमें इन्होंने इंग्लैंडके पश्चिम भागकी यात्राकी। इसके बाद जर्मनी की यात्रासे लौटकर जब यह आयलैंडगये तब इनकी उमरका अठारहवां वर्ष पूराहोचुकाथा। माताने इनको उन्नीसवीं वर्षग्रंथिपर एक पत्रलिखा जिसका आशय यह थाकि–" अबसे तुम युवा होगये। अब माता पिताकी रक्षासे अलग हुए। अब तुम अपने कार्य संपादन करनेमें स्वतंत्रहो। आजसेही तुम्हारी पढ़ाई बंदकी गईहै। इसका कारण यही है पढ़नेसे कहीं तुम्हारा मस्तिष्क निर्बल न पड़जावै। निर्बल मस्तिष्क वाले पर चाटु कारों (खुशामदियों) का बड़ा प्रभाव पड़ताहै। यह बात राजाओंके लिये बहुत हानिकरहै। अब तुम

स्वतंत्रहो । इससमयसे तुम्हारे ऊपर शिक्षाका दबाव नहीं डाला जायगा । परंतु यथावश्यक मैं और मेरे पति तुम्हें अच्छी और उचित सम्मतिदेनेमें तैयार रहेंगे।" इसीदिन श्रीमतीने इनको सेनाका अवैतनिक कर्नल नियत किया। महारानीका पत्र पाकर इनकी आंखोंमेंसे आंसू भर आये और उसी पत्रको इन्होंने भविष्यत्के लिये अपना पथदर्शक बनाया । एडिनबरोमें निवासकर इन्होंने सर लायन प्लेफे-रसे इतिहास, शिल्प तथा इटाली, जर्मन और फरांसीसी भाषामें शिक्षा पाई और इसी वर्ष इन्होंने गार्टरके नाइट्की उपाधि धारण कर कर्नल ब्रूससे युद्ध शिक्षा आरंभ की ॥

अपनी उन्नीसवीं वर्ष गांठका उत्सव हो जानेके एक मास बाद यह भेष बदल कर बैरन रेंफ्रूके नामसे गुप्त रीतिपर फ्रांस देशकी यात्रा करने गये । इस यात्रा-में यह रोमके पोपसे मिले और स्पेन तथा पुर्तगाल होकर इंग्लैंडको लौट आये। यहाँ आने बाद इन्होंने पढ़ने और सेनाकी कवाइद सीखनेमें इतना परिश्रम किया कि इंग्लैंडके समाचार पत्र इनके लिये "अधिक बोझेसे दबा हुआ राज-कुमार" कहने लगे । ऊपर लिखे विषयोंके सिवाय इन्होंने आईन पढ़नेमें और रसायन शास्त्रका अभ्यास करने पर विशेष ध्यान दिया । पढ़नेके साथ ही साथ सप्ताहमें तीनवार इन्हें सेनामें कवाइद सीखने भी जाना पड़ता था ॥

जब आपका वय विवाह योग्य हुआ, अनेक राज कुमारियां आपसे विवाह करनेकी अभिलाषा करने लगीं परंतु इससे पूर्वही यह डेनमार्क की राजकुमारी एलेक्जेंड्रा का चित्र देखकर उसपर मोहित हो चुकेथे इस लिये इन्होंने किसी और को पसंद न किया । सन् ६१ में जर्मनीकी यात्राके समय आपकी प्राण-प्यारीसे प्रथम बार भेंट हुई । वहांसे हालैंड जेरूसलेम और कुस्तुनतुनियाकी यात्रा कर जब आप बेलजियम गये तो वहां फिर राजकुमारीसे भेंट हुई । इसी भेंटमें दोनोंने विवाह करना निश्चय किया । उस अवसरमें इनके पिता (श्रीमतीके पति) का देहान्त हो चुकाथा इस लिये कुछ कालतक यह बात गुप्त रक्खी गई किन्तु महारानीका शोक छुड़ानेके लिये १० मार्च सन् १८६३ई०को विवाह होगया । इनकी प्रियपत्नीका जन्म १ दिसंबर सन् १८४४ई० का है । सन् ८८ई० में आपके विवाहको पूरे पच्चीस वर्ष होने पर रुपहरी विवाहका उत्सव किया गया । और ईश्वर कृपासे सन् १९१३ई० में सुनहरी विवाह होगा । विवाहके पश्चात् पार्लियामेंटने इनको ४० हज़ार पौंड अधिक और इनकी पत्नीको १० हज़ार पौंड वार्षिक देनेका ठहराव किया ॥

सन्६४ ई० में आपके प्रथम पुत्र परलोक वासी ड्यूक आफ् क्लारेंस (प्रिंस एलवर्ट विक्टर) का और दूसरे ही वर्ष ड्यूक आफ यार्क (प्रिंस ज्यार्ज) का जन्म हुआ इनके सिवाय आपके जितने पुत्र और पुत्रियां हुई उनके नाम वंश वृक्षमें लिखे गये हैं ॥

श्रीमान्के बड़े पुत्र ड्यूक आफ क्लारेंसकी मृत्युसे जो शोक हुआ उसका वर्णन महारानीके चरित्रके अध्याय ४५ में किया गया है। और अध्याय ४७ में आपके द्वितीय पुत्र ड्यूक आफ यार्क (वर्तमान प्रिंस आफ वेल्स) के विवाह संततिका वर्णन है ॥

अध्याय २.

सालीसे विवाह करनेका बिल और एमेरिकाकी यात्रा।

५ फरवरी सन् १८६७ ई० को श्रीमान् पार्लियामेंटकी लार्ड सभामें भरती हुए। इन्होंने लिवरल और कंसर्वेटिव दलोंके परस्पर झगड़ोंमें पड़ना उचित न समझकर कभी राज्यप्रबंधके कामोंमें सम्मति न दी। और जिस समय जिस दलका मंत्रि मंडल होता उससे उदासीन रहना और उसके विरुद्ध पक्षके साथ मेल रखना यही अपने भविष्यत्के शासनके लिये उपयोगी समझा किन्तु स्वर्गवासी मिस्टर ग्लैडस्टन पर इनकी बहुतही पूज्य बुद्धि थी। प्रायः उनके मकानपर जाकर उनसे मिला करते थे ॥

यूरोपियन लोगोंमें अपने ही कुटुंबकी कन्यासे विवाह करलेनेकी चालतो है परंतु ईसाई धर्मके अनुसार सालीसे विवाह होना दूषित समझा जाता है। इस चालको तोड़कर सालीको विवाहनेकी स्वतंत्रता मिलनेके लिये इंग्लैंडकी प्रजामें आन्दोलन हुआ इसका परिणाम यह हुआ कि इस विषयका एक बिल पार्लियामेंटकी लार्ड सभामें उपस्थित किया गया। उस समय आपने अपने सदाके नियमका भंगकर इस बिलके अनुकूल सम्मतिदी ॥

विवाहके पांच वर्ष बाद आप सपत्नीक आयर्लैंड गये। वहांकी प्रजाका प्रेम और विश्वास संपादन करनेके लिये आपने डबलिनके मुहल्लोंमें फिरते समय अपने साथ शरीर रक्षक न रक्खे और दंपति अकेलेही इधर उधर घूमते रहे किन्तु आयर्लैंडकी प्रजाने इंग्लैंडके साथका द्वेष भाव छोड़कर इनके लिये बहुत राजभक्ति दिखाई और इनका बड़ा सम्मान किया ॥

क्रीमियाके संग्राममें केनाडाने एक पैदल रेजिमेंट भरतीकर इंग्लैंडकी सहायताके लिये भेजी थी । इस सेवाके बदले वहां वाले चाहते थे कि एक वार महारानी एमेरिका जाकर उन लोगोंके देशको सम्मानित करैं । दूर देशकी यात्रा और मार्गके कष्टका विचारकर जव श्रीमतीने जानेका निषेध किया तो वे लोग प्रार्थी हुए कि हमारे देशका शासन करने के लिये श्रीमतीका कोई पुत्र गवर्नर जनरल नियत किया जावै । यह वातभी अस्वीकृत हुई और उनका संतोष करने के लिये युवराज का भेजना निश्चय हुआ । इन्होंने वहां जाकर सेंट लारेंस नदी का पुल अपने हाथसे खोला और ओटावाकी पार्लैयामेंट का भवन बनाने के लिये नींवका पत्थर डाला । केनाडामें इनका आशासे अधिक सत्कार हुआ । यह यात्रा सन् ६० ई० में हुई थी । इनके सत्कार का अनुमान सेंट जानके पादरी की मेमके एक पत्रसे होताहै जो उसने लेडी हार्डविक को लिखाथा । उस पत्रका आशय यह था कि– " यदि न्यूफौंड लैंडकी तरह सवही उपनिवेशों में इनका सत्कार होगा तो इस दौरे से देशको वहुत कुछ राजनैतिक लाभ होगा । इनके दर्शन से सब ही स्त्री पुरुषों के हृदयमें बहुत आनन्द हुआहै । यहां ऐसा कोई मनुष्य नहींहै जो राजकुमार के वियोग पर आंसू न वहाताहो । गवांर मछुए उनको देख२ कर हर्षसे विह्वल होगयेहैं।वे पुकार२कर यही कहतेहैं कि ईश्वर राजकुमारके मुख कमलको सदा प्रफुल्लित रक्खै " जैसा सत्कार न्यूफौंड लैंडमें हुआ वैसाही सर्वत्र हुआ और एमेरिकाके संयुक्त राज्योंके प्रेसीडेंट मिस्टर बुकेनके अनुरोधसे२४जूलाई सन् १८६०ई०को आप वहांकीराजधानी वाशिंगटन् गये।वहांके नाचोंमें यह वडे२रईसों और मछुओंकी स्त्रियोंके साथ नाचे। जिन दिनों यह वाशिंगटन्में प्रेसीडेंटके यहां मेहमानथे उस नगरमें एक भयंकर खेल होता था।इसखेलमें एक नट नाइगरानदी के आरपार रस्सा बांधकर पैरोंमें बांस बांध उनके सहारेसे चलकर नदीके दूसरे किनारे पर चला जाताथा।श्रीमान्ने इस भयंकर खेलसे किसीदिन उसके प्राणजानेकी संभावना समझकर उसे इसकार्य से रोका परंतु उसने इनकी सम्मति न मानी और कहाकि यदि आप मेरी पीठ पर चढजावैं तो मैं आपको भी ले जासकताहूं । एमेरिकाके प्रेसीडेंटने इनकी यात्राके विषयमें महारानीको जो पत्र लिखा उसमें लिखाथा कि" राजकुमारने हम सब लोगोंके मनको जीत लियाहै " । फिलेडेलफिया और न्यूयार्क होकर जब आप इंग्लैंडको रवाना हुए तो मार्गमें इनके जहाज़ पर एक दुर्घटना हुई । इनके लंडन पहुंचने में विलंब देखकर महारानी और प्रजा घवड़ाउठी । और

इनको ढूंढनेके लिये लंडनसे कई एक जहाज़भेजेगये । दुर्घटनासे मार्गमें दिन अधिक लगे इसकारण जहाज़मेंका भोजन चुकगया और कुछदिन तक आपको सूखी रोटीपर निर्वाह करनापड़ा । कष्ट उठानेके बाद जब यह इंग्लैंड पहुंचे तब वहां बहुत उत्सव कियागया ॥

इस यात्रासे आपने बहुत अनुभव प्राप्त किया । न्यूके सलके ड्यूकने इस यात्राके विषयमें कहा था कि—" केनाडाकी यात्रासे राजकुमारको बहुत लाभ हुआहै । इनका मन और विचार नये सांचेमें ढल गये हैं । इन्होंने इस अनुभवकी पाठशालासे अपने स्वभावमें जो परिवर्त्तन किया है वह माता पिताके लिये सुखद है और इसीसे इनको भविष्यत्के कर्तव्य सूझने लगे हैं । यद्यपि एमेरिका आनेमें दो राज्योंके बीच कोई नवीन प्रकारकी संधि नहीं हुई है परंतु इनका आगमन और सत्कारही इंग्लैड और एमेरिकाकी दोनों जातोंमें विना लिखा हुआ संधिपत्र है जो मित्रताको सूचित करता है "॥

अध्याय ३.

श्रीमान्की बीमारी और भारतकी यात्रा।

सन् १८७१ ई० में श्रीमान्को भयंकर ज्वर पीडा हुई। रोग इतना बढ़ गया कि आपके जीनेकी आशा न रही । और ब्रिटिस राज्यमें उस समय ऐसा कोई नगर न रहा जिसमें आपकी आरोग्यताके लिये ईश्वरसे प्रार्थना नकी गई हो। जब आपके आरोग्य होनेकी खबर प्रकाशित हुई देश भरमें आनन्द छागया। प्रजाने अंतःकरणसे महारानीको इस हर्षकी बधाई दी। इस विषयमें श्रीमतीके चरित्रके अध्याय४३में लिखा गया है। बीमारीसे आरोग्य होने पर जब आपको प्रजाका असीम प्रेम विदित हुआ तब आपने अधिक प्रजाप्रियता ग्रहणकी और उसी दिनसे आपके चित्तपर ऐसा प्रभाव पड़ा कि कभी किसीको आपके विरुद्ध लिखने वा कहनेका अवसर न आनेदिया और उन्नीसवी शताब्दिका आप एक नमूना समझे जाने लगे ॥

श्रीमान्की भारतयात्राके संवादका कुछ अंश श्रीमतीके शासनकी मुख्य घटनाओं में अध्याय ३८ में प्रकाशित हुआ है । आप ११ अक्टूबर सन् १८७५ई० को लंडनसे विदा होकर पैरिस, एथेन्स, इटाली होते हुए ३० नवंबर को बंबई आये। भारत वर्षके मुख्य २ नगरोंमें आपने भ्रमण किया और अनेक राजाओंकी राजधानियोंमें जाकर उनसे भेट की । आपके स्वागतमें आगरेमें

एक बृहत् दर्बार हुआ। इसमें देश भरके राजा महाराजा इकट्ठे हुए। आगरेका ताजमहल देखनेके लिये जिस समय आप पधारे एक यूरोपियनने एक भारत वासीको धक्के देकर निकाल दिया। इस घटनाको देखकर श्रीमान्‌को उस यूरोपियन कर्मचारी पर क्रोध आया और आपने उसे निकट बुलाकर कुछ डांटा। भारत वर्षकी प्रजासे प्रेम बढानेके लिये दो भारतवासी रईसोंको जिनमें एक जोधपुर नरेशके चाचा महाराजा सर प्रतापसिंहजीहैं, अपना एडीकैंप (शरीररक्षक) नियत किया। श्रीमान्‌के स्मारक में बंबईकी गोदी, आगरेमें एक बाज़ार, चनाब नदीका पुल, बनारसमें अस्पताल और अनेक नगरोंमें भिन्न २ प्रकारके मकान बनाये गये। लखनऊकी म्यूनिसिपेलिटीने आपको दश हज़ार रुपयेके मूल्यका एक ताज भेंट किया। काश्मीर नरेशने पांच हजार पौंड दिये। इनको भारत वर्षके राजाओंकी ओरसे भेंटमें जो सामान मिला उसका अनुमान इससे हो सकता है कि, उस वर्ष इस कार्यके लिये सब राजाओंने मिलकर २॥ लाख पौंडका माल विलायतसे मंगवाया था। जिस समय आप विलायत गये इन्होंने भारत वर्षसे जो २ सामान मिलाथा उसकी एक छोटीसी प्रदर्शिनी कर इंग्लैं-डकी प्रजाको दिखलाया। लेखा लगानेसे विदित हुआ है कि, देशी राजाओंकी ओरसे पांच लाख पौंड़का माल आपकी भेंट हुआ। यात्राके समय आपने जय-पुर और मैसूरमें शिकार खेली। जयपुरके जेलका निरीक्षण करते समय एक कैदीने आपसे कहा कि, मैंने अबतक तरेसठ मनुष्योंका वध किया है॥

भारतवर्षकी प्रजा और देशी राजाओंने आपका जैसा सत्कार किया था वैसा ही आपने उस समयके वाइसराय लार्ड नार्थ ब्रूक को एक पत्र लिखकर स्वीकार किया। उस पत्रमें लिखाथा कि, "महारानीका प्रतिनिधि बनकर मैंने एक विचित्र देशको देखा। श्रीमतीकी प्रजासे गाढ़ा संबंध और प्रेम संपादन करने तथा इस अद्भुत देशको देखनेकी मेरी बहुत कालसे इच्छा थी। मेरी आशा विचारसे अधिक फलवती हुई। मैंने जो कुछ यहां देखा वा सुना है उसे अपने चित्तपर दृढतासे अंकित कर मैं यहांसे लौटताहूं। मैंने जो यहां अनुभव प्राप्त किया है वह आगे बहुत उपयोगी होगा। देशी राजा और प्रजाका अत्यंत सत्कार पाकर मुझे परम संतोष हुआ है। यह उनकी राजभक्तिका सच्चा चिह्न है। ब्रिटिश शासनके लाभोंके विषयमें भारतकी करोड़ों प्रजाका जैसे २ अधिक वि-श्वास होगा वे जानते जायँगे कि अंगरेज़ लोग भारत की वास्तवमें उन्नति चाहते हैं। भारत वर्षकी देशी सेना देखकर मुझे हर्ष हुआ है। यह सेना हमारे लिये गर्वका स्थल है। सिविल सर्विसवालोंके विषयमें मेरे अच्छे विचारहैं।

ये लोग अपने कर्तव्यका खूब पालन करते हैं। और इनसे प्रजाकी उन्नति होनेके साथ ही संतोष बढ़ता जाता है। आपने अन्य कर्मचारियों सहित मेरी जो सेवा की है उसे मैं सदा स्मरण रक्खूंगा।" कलकत्तेसे विदा होते समय आपने भारतवर्षकी सेनाके लिये कहा कि—"मुझे इस बातका गर्व करना चाहिये कि, भारतकी देशी सेना दृढ, साहसी और योग्य है"॥

श्रीमान् सत्रह सप्ताहकी यात्राके पश्चात् १३ मार्चको बंबईसे विदा होकर कुशलपूर्वक लंडन पहुंच गये॥

अध्याय ४.

यहूदियोंपर दया और गुप्त यात्रा।

यूरोपके अन्य राज्योंकी तरह इंग्लैंड भी महारानीके राज्यारंभके कुछ कालपर्यंत यहूदियोंसे द्वेष रखता था। ईसाइयोंका यहूदियोंसे धर्मद्वेष है। इसी कारण उस समय इंग्लैंडमें उन्हे बड़े २ पद नहीं दिये जाते थे। श्रीमतीने इस प्रथाको उठाकर दोनोंको समान कर दिया। श्रीमान्नेभी इस विषयमें माताका अनुकरण किया। और नगरके बड़े २ धनाढ्य यहूदियोंके यहां निमंत्रण पानेपर विवाहके समय पधारकर अनेक बार इस सहानुभूतिका परिचय दिया। और जब २ दोनों दलोंमें द्वेष बढ़ता देखा तबही निर्बल यहूदियोंके साथ सहानुभूति कर निपटारा करवाया॥

भूमंडलमें ऐसा कोई भी देश नहीं है जहां आपके दो चार मित्र विद्यमान न हों। यात्राके समय नवीन मित्रोंको ढूंढना भी आपका एक उद्देश्य रहता है। आप फरांसीसी जर्मन और इटालीकी भाषा खूब बोल सकते हैं और रूसी भाषा भी जानते हैं। इनका फ्रांसकी राजधानी पैरिस पर अधिक प्रेमहै। जब२ अवसर पाते हैं वहां अवश्य जाया करते हैं। सन् १९०० ई० की महाप्रदर्शिनीमें आपने पैरिस जाना निश्चय कर लिया था परंतु ट्रांसवालके युद्धसे फ़रांसीसियोंका अंगरेज़ों पर उनदिनोंमें क्रोध भड़क रहा था और वे लोग श्रीमती और युवराजके चित्रोंका अपमान कर अपना ओछापन बतला रहे थे इस लिये फ्रांसके प्रेसीडेंट मिस्टर लोबेने आपको पत्र लिखकर ऐसे समयमें पैरिस आनेसे रोकनेके साथही लिखा कि "यद्यपि फ्रांसकी गवर्नमेंट आपकी रक्षाका अच्छा प्रबंध कर सकती है परंतु इस अवसर पर आपको आना उचित नहीं है।" बस इस पत्रको पाकर आपने इस यात्राको

बंद् कर दिया । इनका पैरिससे अधिक प्रेम देखकर फ्रांसकी गवर्नमेंटने इनके लिये एक अलगही सेलून (रेलकी गाड़ी) बनवाई है जिसमें सात हज़ार पौंड व्यय हुआ है ॥

फ्रांस और जर्मनीका लोमहर्षण संग्राम समाप्त होनेके बाद इनकी यह इच्छा हुई कि वहां जाकर समरभूमिका अवलोकन करें। इस युद्धमें फ़रांसीसियोंकी हार हुई थी इसलिये प्रकाश्य रूपपर जाने में उनलोगोंके जीव दुखनेकी संभावना थी और इनका फ़्रांसपर इतना बढ़कर प्रेम था कि, यह उनको दुःखी करना नहीं चाहते थे इसलिये इन्होंने वेष बदलकर सन् ७० ई० में सीडेन का मैदान देखा । रणभूमिको देखकर आप लौटे तो मार्गमें इनके पासका खर्च चुकगया । यद्यपि तार देकर यह इंग्लैंडसे रुपया मँगवा सकते थे परंतु इन्होंने सोचा कि, तारसे हमारा भेद खुल जायगा इसलिये होटलवालेको घड़ी बेंचकर उस द्रव्यसे यह लंडन पहुँचे । ऊपर आपकी बीमारीका जो उल्लेख है वह इसी यात्रासे लौटने पर हुई थी । इस बीमारीमें इनकी प्रियपत्नीने बहुत कुछ सेवा सुश्रूषा की ॥

अध्याय ९.

श्रीमान्पर प्राणसंकट और न्यायालयमें साक्षी ।

यूरोपमें राज्यका चाहे जैसा उत्तम प्रबंध हो किन्तु वहांकी प्रजा भारतकी तरह राजाको ईश्वरका अवतार माननेवाली नहीं है । वहांके लोग बड़े बुद्धिमान् होनेपर भी थोड़ीसी बातमें आत्मघात करने और मनुष्यवध करनेसे नहीं हिचकतेहैं । उनलोगोंमें असहिष्णुता इतनी बढ़कर है कि, राजाके प्राण लेनेपर भी वे लोग उतारू होतेहैं । प्रचलित राजनियमोंसे अप्रसन्न होकर वे न मालूम क्या २ कर डालतेहै । इन राजद्रोहियोंके दल भिन्न २ राज्योंमें भिन्न २ नामसे प्रसिद्धहै। श्रीमान्पर भी अब तक दोतीन बार आक्रमण होचुकेहैं । पिछली बार सन् १९०० ई० में बेलजियम की ओर जाते समय आपपर सिपेडो नामक मनुष्यने गोली चलाई थी । ईश्वरकृपासे गोलीका निशाना चूक गया और अपराधी पकड़ा गया ॥

सन् ७६ ई० में भारत से लौटने बाद इंग्लैंड के मद्य बनानेवाले एक बड़े कार्यालयकी ज्यूबिलीका उत्सव था । वह कार्यालय श्रीमान्के पिताकी प्रेरणासे

स्थापित हुआ था इस लिये इन्होंने उसके प्रबंधकोंकी प्रार्थनापर इस उत्सवका अध्यक्ष वनना स्वीकार किया । यह बात इंग्लैंडकी उस प्रजाको जो मद्यपान करना बुरीसमझतीहै अनुचित जानपड़ी । वहांकी दो सौ मद्यपान निवारिणी सभाओंने श्रीमान्से विनय किया कि "मद्य देशकी बहुत हानि कर रहाहै,किसी प्रकारसे इसका प्रचार कम करना चाहिये परंतु आपके अध्यक्ष वननेसे मद्यको उत्तेजना मिलैगी इसलिये आप यदि इस पदको स्वीकार न करैं तो देशका कल्याणहोगा ।" उनकी अर्जियोंके उत्तरमें आपने कहाकि "मैं मद्यको उत्तेजना देनेके अभिप्रायसे इसकार्य में संयुक्त नहीं हुआहूं किन्तु यह कार्यालय मेरे पिताका स्थापित किया हुआहै इसलिये उसकी सहायता करना मेरा कर्तव्यहै" ॥

सन् १८९० ई० में आपको एक बार न्यायालयमें साक्षीदेनेके लिये जाना-पड़ा । इस अभियोगमें वादी श्रीमान्के मित्र सर विलियम गार्डन कचंगथे।इनपर एक खेलमें ट्राइनवी क्राफ्टमें पांच मनुष्योंने जाल करनेका अभिशाप लगाया था। साक्षीके समय श्रीमान्को लार्ड चीफजस्टिसके पास वैठनेके लिये कुर्सी मिली । हाईकोर्टमें उसदिन दर्शकोंकी इतनी भीड़ थी कि पैर रखनेको जगह नहीं मिलती थी । आपसे ज्यूररने पूंछा कि "क्या आपने वादीको कभी जाल करते हुए देखा है?" श्रीमान् हँसकर बोलेः—"वादी मेरा मित्र है । एक मित्र दूसरे मित्रका जाल कभी नहीं देखसकता है । वह मित्रही क्या जो मित्रके कामोंमें दोष देखै ।" तव ज्यूररने दूसरा प्रश्न किया" आपकी दृष्टिमें वादी अपराधी है वा नहीं?" इसके उत्तरमें आपने कहा कि" अधिक लोगोंकी सम्मतिमें वादी अपराधी है इसलिये उसे दोषीमाने विना छुटकारा न होगा" वस इस साक्षीपर न्यायालयने प्रतिवादियोंके लाभमें फैसला करदिया ॥

अध्याय ६.

राजप्रबंधमें रुचि ।

सन् ९३ ई० में प्रियपुत्रके वियोगका दुःख भुलानेके लिये गवर्नमेंटने इनको एक कमीशनका सभासद नियत किया । इंग्लैंडमें मकानोंका किराया वहुत वढ़ा चढ़ाहै। इसकारण वहांके दीन लोग वहुत कष्ट पाते हैं । यह कमीशन उनको सस्ते भाड़ेपर मकान वनादेनेके विचारके लिये नियत हुआथा। इसका कोईभी अधिवेशन ऐसा न गया जिसमें आप उपस्थित न हुएहों ।

केवल इतनाही क्यों बरन आप दीन लोगों की सच्ची स्थिति जानकर कमीशनमें पेश करनेके लिये रात्रिके समय वेष बदल कर घूमते थे। इसीके लगभग लंडनमें एक प्रदर्शिनी खोलीगई थी । लोगों ने उसके लिये इतनी उदासीनता ग्रहणकी कि अंतमें उसकी सफलतामें संदेह होगया। ऐसे समयमें आपने उसका बहुतसा माल खरीद कर लोगोंको उत्तेजित किया । परिणाम यह हुआ कि प्रदर्शिनी गिरते २ संभलगई । लंडनमें इम्पीरियल इन्स्टीटयूट नामक विशाल भवन जो भारत के द्रव्यसे बना है उसके संस्थापक भी आपहीहैं। इसके विषयमें श्रीमतीके चरित्रके अध्याय ४३ में लिखागया है ॥

अफ़गानिस्तानकी सीमापर जिस समय रूससे भारत गवर्नमेंटके प्रथमवार मुठभेड़ होनेका अवसर आया और दोनों ओरसे युद्धकी तैयारियां होने लगी थीं पल २ में भयानक संग्राम होनेका भय किया जाने लगा था । इसयुद्धका परिणाम भारतवर्षके लिये बहुतही बुरा था। उससमय माताकी आज्ञा और प्रजाकी प्रार्थनासे आप अपनी पत्नी सहित रूसकी राजधानी सेंट पीटर्सबर्ग दौड़े गये और वहां जाकर आपने रूसके सम्राट्को और आपकी पत्नीने साम्राज्ञी (अपनी बहन) को दबाकर बखेड़ा न बढ़ने दिया । दूसरी घटना जिसमें श्रीमान्के प्रभावसे दो देशोंमें युद्ध होते २ बच गया एमेरिकाकी है । कुछ वर्ष पूर्व एमेरिकाके प्रजातंत्र राज्य और अंगरेजोंके ब्रिटिश ग्वायना नामक प्रदेश की सीमापर द्वेषाग्नि भड़ककर युद्ध होनेका समय आ पहुंचा था। और एमेरिकाके संयुक्त राज्यकी यह इच्छा थी कि किसी यूरोपियन राज्यको एमेरिकाके छोटेसे छोटे राज्यपर भी चढ़ाई न करने दिया जावै । ऐसे अवसरपर घोर संग्राम होनेकी सम्भावना थी परंतु आपने न्यूयार्कके एक समाचारपत्रको एक तार भेजकर उसे प्रकाशित करवादिया। उस तारको पढ़कर एमेरिकाकी प्रजा ठंढी पड़ गई और उस समय इनकी एमेरिकाकी यात्राने बहुत काम दिया क्योंकि तबहीसे वहां वालोंकी इनपर पूज्यबुद्धि बहुत है ॥

इनको अपने पिताकी तरह आखेट और घुड़दौड़में बड़ा अनुराग है। पंद्रह वर्षकी उमर में यह राजकुटुम्बके लोगोंमें बढ़कर शिकारी गिने जाते थे। और घुड़दौड़में तो इनका इतना प्रेम है कि जिसका कुछ ठिकाना नहीं। इनके घोड़े घुड़दौड़की शर्तोंमें अबतक अनेक बार प्याले जीत चुके हैं । इनको घोड़ेकी परीक्षाका अच्छा अभ्यास है और उनकी नसल सुधारनेपर यह अधिक

ध्यान देते हैं। पशु और पक्षीके पालनकी भी आपको रुचि अधिक है। सैंडरिंग्हाममें इनका जानवर खाना है। इनके पश्वालयकी गौवें कईवार इंग्लैंडकी प्रदर्शिनियोंमें पारितोषिक पाचुकी हैं॥

अध्याय ७.

श्रीमान्‌के गुण और स्वभाव।

फुटकर बातें।

इनको शारीरिक परिश्रमके सवही खेलोंपर अनुराग है। सभाओंमें व्याख्यान देनेका इन्होंने अच्छा अभ्यास कर लिया है। धर्म सम्बन्धी कामोंके लिये जव कभी भोज वा सभा हो यह अपने हज़ार आवश्यक काम छोड़कर उसमें उपस्थित होते हैं और ऐसी जगह जानेमें कभी अपने सुख दुःखका विचार नहीं करते हैं। मित्रोंके साथ इनका वर्त्ताव बड़ा स्वच्छ है और छोटेसे लेकर बड़े दर्जेतक सवही तरहके इनके मित्र हैं। सैकड़ों क्या हज़ारोंही दीनोंको इनकी दानशीलताका परिचय है। जिस विषयमें इनकी सम्मतिका मित्रकी सम्मतिसे मेल नही होता है वहां मित्रोंपर दवाव डालना इन्हें पसंद नही है। विवादके समय यह सदा अपनीही सम्मतिपर दृढ़ रहकर उसपर अच्छीतरह वहसकरते हैं। अनेक वर्ष बीतजानेपर भी इनके विचारोंका परिवर्तन नही होताहै। इन्होंने पूर्वके देशों की यात्रा बहुत की है। यह अनेक कमीशनों के अध्यक्ष बनचुके हैं इसलिये इनको प्रजाकी स्थिति विदित करनेका बहुत काम पड़ा है। बड़े पुत्रकी मृत्युके सिवाय इनको औरभी बहुत आपदायें सहनी पड़ीं हैं। और सिंहासनपर विराजनेके अनन्तर इन्होंने जो व्याख्यान दिया उसमें इनका अनुभव टपकता है॥

श्रीमतीके पतिकी मृत्युके वाद उनकी ओरसे प्रायः सर्वसाधारण उत्सवोंमें यही प्रतिनिधि बनकर जाया करते थे। लेवी दर्वारों और अन्य उत्सवोंपर अनेकवार यह महारानीके बदले उपस्थित हुआ करते थे। और इस कार्यमें इन्हें नाना अवसरोंपर अनेकवार व्याख्यान भी देने पड़े थे। फ्रीमेसन नामक गुप्त धर्मके यह इंग्लैंडमें ग्रैंडमास्टर (मुखिया) हैं। यह पद इन्हें लार्ड रिपन के भारतमें आनेवाद सन् १८७५ ई०में मिला था। इन्हें नाटक देखनेका बहुत अनुराग है और इस लिये नाटकों और अजायबघरोंको इनके द्वारा बहुत उत्तेजना मिलतीरही है। यह गायन और फ़ेशनके बड़े अनुरागी हैं। इसकारण

लंडनका रायल म्यूज़िक कालेज इनकी ओरसे बहुत सहायता पाचुका है । इनके फ़ेशनके अनुरागसे इंग्लैंडके दूकानदारोंको बहुत लाभ पहुँचता है और इनकी प्रियपत्नी जिन नवीन २ प्रकारके वस्त्रों और आभूषणोंको बनवाती हैं उनकी स्त्रियोंमें नक़ल अधिक होती है ॥

यह काम करने में बड़े दृढ़ और सादे हैं । ब्रिटिश म्यूज़ियम (अजाइबघर) के यह ट्रस्टी थे इसलिये यह उसका काम काज देखने नित्य जाते और राजसी सत्कार सम्मानकी अपेक्षा न कर निरंतर उसका प्रबन्ध करते और जबतक काम समाप्त न होता वहांसे नहीं हटते थे इनको सरकारी पदको (तमगों) की प्रतिष्ठाका बहुत विचार रहता है । एक दिन एक नाचमें एक षोडशी युवती अपनी छातीपर कुछ चमकीला आभूषण पहनकर आई । नाचते २ श्रीमान् की उसपर दृष्टि जापड़ी। आपने उससे पूंछा कि "यह तमगा किसकाहै ।" वह रमणी डरते २ बोली—" लार्ड—का है । उनकी मुझपर बड़ी प्रीति है इस लिये वह मुझे देदिया करते हैं " । आपने उससे कहा कि—" आप इसे खोलकर मुझे देदें । मैं लार्ड—से कहूंगा कि यह केवल सोनेका टुकड़ा और हीरे का आभूषण ही नहीं है जो सुंदरियों की शोभामें काम आवै" ॥

जिनदिनोंमें आप विश्वविद्यालयमें पढ़ते थे, किसी मित्रके साथ आप केम्ब्रिज नगरमें वायुसेवनके लिये निकले । अकस्मात् मेह बरसने लगा । इन्होंने फल बेंचने वाली एक बुढ़ियासे छाता उधार मांगा । उसने इनको न पहचानकर कहा कि तुम चाहो तो मैं अपना पुराना छाता तुम्हे देसकतीहूं परंतु मैं अपना नया छाता तुमतो क्या बरन राजकुमार (प्रिन्सआफ वेल्स) तकको नहीं दूंगा । " दूसरे दिन बुढिया अपना टूटा छाता पीछापाकरभौंचकसी रहगई क्योंकि उसपर जो फीता लगा था उसमें 'युवराजकी सलाम' लिखा हुआ था ॥

श्रीमान्की एमेरिका, भारत और फ्रान्सयात्राका वर्णन पहले हुआहै । यूरोपके वर्त्तमान राजपुरुषोंमें इनके समान यात्राके प्रेमी और नहीं हैं । यद्यपि जर्मनीके सम्राट् और रूसके ज़ारने भी बहुत समय यात्रामें बिताया है परंतु इनकी यात्रानें अनेक जाति और धर्मके लोगोंमें परस्पर एकताका बीज बोया है इन्होंने उन्नीस वर्षकी उमरसे यात्रा करना आरम्भ किया था ॥

यूरोप और एमेरिका आदि सभ्य देशोंमें इनके समान प्राणका बीमा करानेवाला दूसरा नहीं है । न्यूयार्ककी एक बीमा कम्पनीका कथन है कि जिस दिन यह न होंगे सभ्य देशोंकी समस्त बीमा कम्पनियोंको इनके उत्तराधिकारीको १ करोड़ पौंड देना पड़ैगा । यह संख्या कुछ वर्ष पहले की है । अब बहुत

बढ़गया। आश्चर्यकी बात्त यह है कि अनुमान २० लाख पौंडसे भी अधिक द्रव्य इन्हें ऐसे लोगोंकी ओरसे विरासतमें मिला है जिनका नाम धाम इनको अब तक अविदित है। इनकी प्रजाप्रियताका यह अच्छा उदाहरण है॥

इनको अतिथि सेवा बड़ी प्रिय है। जो व्यक्ति इनसे मिलने जाता है वह प्रसन्न होकर लौटता है। उसके सत्कारमें दम्पति अपना काम काज छोड़कर लगे रहते हैं और सब प्रकारके प्रयत्नसे उसे प्रसन्न करते हैं। इनको खेती विद्या पर बड़ा अनुराग है। सैंड्रिगूहाममें ६०० एकड़ भूमिपर यह खेती करवाते थे और कभी २ किसानोंकेसे वस्त्र पहनकर उसे देखने जाया करते थे॥

जब पांच वर्षके थे आपने एक दिन एक कबरपर गीली मिट्टी डालदी। यह बात माताके पास पहुँचतेही उन्होंने फटकारा। दूसरे दिन आपने उस कबरके पास जाकर कहा कि—"मिस्टर बर्नार्ड (वह इसी व्यक्तिकी कबर थी) मुझसे हाथ मिलाओ और क्षमाकरो। माता कहती है कि तू बड़ा गधा है"॥

एक दिन आप इंग्लैंडके कुवेर लार्ड राथ्सचाइल्डसे बातें करते २ बोले कि आप लोगोंकी स्थिति मुझसे अच्छी है। यदि मैं लोगोंको हँसता हुआ न देखपडूं तो तुरंत समाचारपत्र पुकारने लगेंगे कि युवराज दुःखित है, थकगया है और जो लोग मुझे हँसता देखैं तो कहैंगे कि युवराज प्रसन्न है। इसका स्वास्थ्य अच्छा है। मैं किसी तरहके वस्त्र पहनूं उसकी भी पेपरोंमें रिपोर्ट प्रकाशित होगी। प्रयोजन यह कि मेरी हालचाल, मेरा किसीसे संभाषण, सलाम और बातचीतपर समाचार पत्र आँखें गाड़े रहते हैं। यहबात मुझे अच्छी नहीं लगती है इसलिये मैं साधारणस्थितिको पसंद करताहूं॥

सन् १८९६ ई० में ओक्सकी घुडदौडमें इनका घोड़ा दूसरे नंबरपर था। इसके लिये इन्होंने बहुतेरी शर्तोंमें प्रथम नंबर पायाहै। केवल दो बारकी शर्तोंमें इन्होंने ६४ हजारपौंड जीतेथे॥

इंग्लैंडके राज्यमें अवतक जितने प्रिंस आफ वेल्स हुए हैं उन सबकी अपेक्षा इन्होंने इस पदका अधिक उपभोग किया है। राज्य पातेही इन्होंने अपना स्वभाव बदला है। जिन इष्ट मित्रोंके साथ दिन रात उठन बैठन रहतीथी अब वे आवश्यकता विना नही आने जाने पाते हैं। और जो बुलायेजाते हैं उनसे बातचीत भी राजसी ढंगकी होती है। लार्ड बेरेसफोर्ड आपसे मिलने गयेथे उनका वैसाही श्रीमान्‌ने सत्कार किया जैसा एक नरेश अपने प्रतिष्ठित सेवकका करता है। कहनेकी अपेक्षा करदिखाना इन्हें अधिक पसंद है। इंग्लैंडके "मैनूचेस्टर गार्डियन" ने

२१ मार्च सन् १९०१ ई० को लिखाहै कि श्रीमान्‌ने एक मित्रसे कहाकि "आप जानते हैं कि मैं व्यावहारिक मनुष्य हूं और कामसेही अपना मतलब रखता हूं"। आप इसबातको सत्यभी कररहे हैं । ट्रांसवाल युद्धके विषयमें मंत्रिमंडलके भरोसे न रहकर लार्ड किचनरसे लंबी २ रिपोर्टें मँगाना और उनपर विचार करना इसबातका उदाहरण है ॥

अध्याय ८.

श्रीमान्‌के अधिकार और शक्ति।

लंडनके 'सेंट जेम्स गेजेट' में मिस्टरमी नामक एक व्यक्तिने बहुत ही चित्ताकर्षक लेख प्रकाशित किया था। उसमें लिखा है कि—"इंग्लैंडका राज्य उस प्रकारका है जिसमें प्रजा और राजाका समान अधिकार है। यह बात केवल कहने सुननेकी नहीं है किन्तु वास्तवमें इसमें प्रजातंत्रका प्रयोग है। एकसौ बीस वर्ष पहले इंग्लैंडकी कामन्स सभामें एक प्रस्ताव हुआ था। उसका आशय यह था कि "राजाका आधिकार बढ़गया और दिन २ बढ़ता जाता है। इसे कम करना चाहिये।" यह उस समयकी बात है जब यहां एक पागल राजाका राज्यथा और वह साम्राज्यको नष्ट कररहाथा। सप्तम एडवर्डकी शक्ति घटाने की कामन्स सभाको सत्ता नहीं है क्योंकि यह बात राजाकी शक्ति घटनेपर निर्भर नहीं है जैसी कि उसकी बुद्धिपर है। संसारमें यह बड़े आश्चर्यकी बात है कि ब्रिटिश साम्राज्य एकही विचारपर चलरहा है। वह विचार प्रजातंत्र है। इस आश्चर्यदायिनी वस्तुको किसीने देखा वा सुना नहीं है क्यों कि वास्तवमें यह कोई पदार्थ ही नहीं है। यदि सप्तम एडवर्ड प्रधान अमात्यसे इस प्रजातंत्रके लेखोंकी नकल मागें तो वह नहीं देसकता है क्योंकि सैकडों वर्ष से ब्रिटिश लोगोंके चित्तमें ये विचार भरे रहनेके अतिरिक्त कोई वस्तु नहीं है। इसमें ब्रिटिश विचार, ब्रिटिश अनुभव, आवश्यकता और योग्यताका समावेश है। यदि कोई देवता अपनी अपूर्व शक्तिसे तीस पीढ़ीमें योग्य अंगरेजको तैयार करै तो उसका परिणाम यही ब्रिटिश प्रजातंत्र होगा। यही अद्भुत अवर्णनीय पदार्थ हमारा शासन करता है। राजा इसका एक भाग है जो भी और भागोंकी तरह वर्णन करनेकी शक्तिसे बाहर है। यह कहीं नहीं लिखा है कि राजा क्या २ कर सकता है और क्या नहीं कर सकता। इस बातका आधार कामपर है और कार्यका निर्वाह ठीक हो रहा है। मन्त्रिमंडल और पार्लियामेंटके मेंब-

रोंकी शक्तिकी सीमा है किन्तु राजाकी शक्ति असीम है । सप्तम एडवर्ड राज्य नियमोंका भंग किये विना राज्यको अस्त व्यस्त कर सकते हैं । यदि लार्ड सेल्बोर्न (जलसेना विभागके मंत्री) कलके पत्रोंमें पढें कि राजाने समस्त सैनिक जहाज़ोंको बेंच डाला तो उन्हें आश्चर्य होगा परंतु इस कार्यसे प्रजा तंत्रका भंग न होगा । वह हमारी समस्त जल सेनापर सर्वोच्च अधिकार रखते हैं और प्रत्येक जहाज़ और तोपको दे सकते हैं । वह चाहें तो समस्त जहा-ज़ोंको किसीकी भेंटकर सकते हैं और लार्ड रावर्ट्ससे लेकर साधारण सैनिक तकको तथा राज्यके सिविलियनको पदच्युत कर सकते हैं । सेनाको नौक-रीसे अलग करना उनके अधिकारमें है । युद्धके समयमें राजा पूर्णाधि-कारी है । वह राज्यके प्रत्येक शक्तिमान् मनुष्यको सेनामें भरती होनेपर बाध्य कर सकता है । वह जनरलोंकी आज्ञाओंको लौट सकता है और समस्त जल तथा स्थल सेना पर उसका पूर्णाधिकार है । वह चाहे जिस देशसे युद्धकर सकता है और कैसी भी हानि क्यों न हो जब चाहे संधि करनेका उसे अधिकार है ॥

आईनमें उसकी सबसे अधिक शक्ति है । उसके हाथसे कभी अनुचित कार्य होताही नहीं है । वह गिरजोंका स्वामी है और प्रधान पादरियोंको नियत कर-नेका उसे अधिकार है । आईनके अनुसार वह प्रत्येक न्यायालयमें उपस्थित है और वह चाहे जिस अपराधीको बंधमुक्त कर सकता है । वह पार्लियामेंटमें सदाही उपस्थित माना जाता है और दोनों सभाओंके पास किये हुए किसी बिलको वह अस्वीकार कर सकता है । वह चाहे जिसको चाहे जैसी उपाधि दे सकता है । किसीको यह अधिकार नहीं है कि उसकी इच्छाके विरुद्ध उपाधि लेनेसे नाहीं करे । वह जिसे मंत्री बनाना चाहै बनानेका उसे अधिकार है । राजा विना कोई भी आईन पूर्ण नहीं होता है । वह राज्य, धर्म, आईन और सेनाका मुखिया है । वही केवल शीशेका सिक्का चला सकता है । वह चाहे जैसी संधिको तोड़ सकता है । किसी राजदूतको पदच्युत कर सकता है और ब्रिटिश राज दूतोंको यूरोपके किसी राज्यसे बुला सकता है ॥

. परंतु राजाकी शक्तिकी भी सीमा है । वह सैनिक धूमपोतोंको बेच सकताहै किन्तु प्रजाके द्रव्यसे पार्लियामेंटकी आज्ञाविना एक पाई भी खर्च नहीं कर सकता है । वह किसी नवीन पदको निर्माणकर उसकी फीस नही नियतकर सकता है । वह अपराधीका अपराध क्षमा करसकता है परंतु किसीको दंडित

नहीं करसकता । आईनके विरुद्ध ढिंढोरा फेरनेकी उसमें शक्ति नहीं है । यद्यपि वह प्रत्येक मनुष्यको शस्त्रग्रहण करनेकी आज्ञा देसकता है किन्तु किसी सिवि-लियनको राज्यसे निकालनेकी उसमें शक्ति नही है । उसमें मनुष्यका अपराध क्षमा करनेकी शक्ति है परंतु न्यायालयसे दण्ड मिलनेसे पूर्व उसे नहीं छुड़ा सकता है । यद्यपि उसमें किसी जजका फैसला मुलतवी करनेकी शक्ति है किन्तु वह जजके काममें हस्ताक्षेप नहीं करसकताहै । रानी एलिज़ाबेथकी तरह किसी मनुष्य को कामन्स सभासे निकाल नहीं सकता है । युद्धके समय राजाकी शक्ति अपरिमित है किन्तु शांतिमें वह एक इंच भी किसीकी भूमि नहीं छीन सकता है । राज्यभरमें वही एक व्यक्ति है जिसमें अपराधीको पकड़ने की शक्ति नहीं है । राजा कोई कार्य अनुचित नहीं करता है, वह सब आईन से मुक्तहै इसलिये उसपर कोई चार्ज नहीं लगाया जासकता है । यदि राजाने किसी मनुष्यको पकड़ा और वह निरपराधी प्रमाणित हुआ तो राजाके ऊपर उसे अकारण कैदकरनेकी नालिश नहीं होसकतीहै । बस इसीलिये राजा किसीको पकड़ नहीं सकता है ॥

राजाकी अनंत शक्ति हमपर प्रभाव नहीं डालसकतीहै । हमपर केवल विचारही शासन करताहै कोई आईन नहीं करता है । और वह विचार वहीहै जिसे हम बनाते हैं । यह विचार दीर्घकालसे चला आता है और इसीने चालीस करोड़ प्रजाको संयुक्त कररक्खाहै " ॥

अध्याय ९.

राज्यासनपर विराजना ।

श्रीमती महारानी विक्टोरियाके स्वर्गवासका वृत्तान्त उनके चरित्रके अध्याय ६२ में लिखा है । २३ जनवरीको विंडसरसे चलकर दिनके एकबजे दशमिनटपर श्रीमान् युवराज (प्रिंसआफ़्वेल्स) की सवारी लंडने पहुंची । विक्टोरिया स्टेशन से बकिंगहाम राजमहलतक भीड़के मारे शरीर छिलताथा । कहीं तिल रखने की जगह नहीं मिलती थी । युवराजको राज्यासनपर विराजनेके लिये पधा-रते देखकर प्रजाने नवीन राजाकी जयमनाई । स्टेशन पर ड्यूकआफ् आर्गाइल, और मिस्टर बालफ़ोरने आपका स्वागत किया । उनकी गाड़ीमें ड्यूक आफ् यार्क और दूसरीमें ड्यूक आफ् कनाट विराजमान थे । जिधर होकर श्रीमान् की सवारी गई प्रजाने टोपियां उतार २ कर आपका जयघोष किया । श्रीमान्

ने योग्यरीतिपर सब लोगोंकी सलामका उत्तर दिया। श्रीमान्‌की सवारी भीड़को चीरती हुई जब सेंटजेम्सके महलमें पहुंची सेनाने आपकी सलामी ली। प्रिवी कौंसिलके महलमें अनुमान दोसौ मनुष्य निमंत्रित थे। उपस्थित महाशयोंने लेवी दरबारके वस्त्र पहनरक्खे थे और आपका ड्रेस सैनिक था॥

कौंसिलके प्रेसिडेंट ड्यूक आफ् डेवन्शायरको श्रीमतीकी मृत्यु और उनके पुत्रकी गादीके समाचार सुनाये गये। उन्होंने श्रीमान्‌के सिंहासनासीन होनेका ढिंढोरा पढ़कर सुनाया। इसका आशय आगामि अध्यायमें लिखा गया है। ढिंढोरा पढ़ा जानेबाद उसपर ड्यूक आफ यार्क, ड्यूक आफ् कनाट्, राज कुमार क्रिश्चियन, ड्यूक आफ् केम्ब्रिज्, कैंटरबरीके प्रधान पादरी, लार्ड चैंसलर और लार्ड मेयरने हस्ताक्षर किये। इस ढिंढोरेके अनुसार युवराज प्रिंस आफ वेल्सको इंग्लैंडके राजा एडवर्ड सप्तम और भारत वर्षके सम्राट्‌की उपाधि मिली। इसके बाद इस ढिंढोरेकी खबर श्रीमान्‌के पास जो उसी महलके एक अलग कमरेमें थे पहुंचाई गई। इस पर श्रीमान्‌ने शपथ खाये॥

आपके शपथ खानेके अनन्तर श्रीमान्‌का व्याख्यान जिसका आशय आगामि अध्यायमें है सुनाया जा चुकनेपर कौंसिलके मेंबरोंके शपथ खानेकी पारी आई। इस कार्यकी समाप्ति हुई तब लोगोंने आपके हाथका चुंबन किया। समस्त कार्यमें एक घंटा लगा। कार्य पूरा हो चुकने बाद राजाकी सवारी सेंट जेम्सके महलसे लौटकर मार्लबारो हाउसको गई॥

जो २ कार्य प्रथम दिन सेंट जेम्सके महलमें हुए थे वही दूसरे दिन टेम्पल बार और रायल एक्सचेंजके आफिसमें हुआ। दोनों जगह हर्षके बाजे बजाये गये और प्रजाने एक स्वरसे पुकारा:—

"ईश्वर राजाको चिरंजीवी करे"॥

लंडनके लार्ड मेयरने इस उत्सवपर उपस्थित महाशयोंको भोजन कराया। प्रजाकी ओरका प्रतिज्ञापत्र और सम्राट्‌का ढिंढोरा जैसे लंडनमें पढ़ागया उसी तरह श्रीमान्‌के साम्राज्यके समस्त बड़े २ नगरोंमें पढ़ा गया और ईसाइयोंने श्रीमान्‌की मंगल कामनाके लिये गिरजोंमें नमाजें पढ़ी॥

श्रीमान् के पट्टाभिषेकका उत्सव आगामि जून मासमें होनेवाला है। इसके लिये लंडनमें अभीसे तैयारियां होरही हैं प्रवन्ध और कार्यकी व्यवस्था करनेको इंग्लैंडके उमरावोंकी एक सभा नियत हुई है। और इस उत्सवपर श्रीमान्

की ओरसे जो आज्ञापत्र प्रजाको सुनाया जानेवाला है उसके संशोधनका विचार होरहा है । ईश्वर इस शुभ अवसरको शीघ्र लावे और महाराजका कुशल मंगल बनारहै यही हमारी प्रार्थना है । यहभी सुनाजाता है कि इस उत्सवपर भारतवर्ष के कईएक राजा महाराजा लंडन जाना चाहते हैं ॥

अध्याय १०.

भारत में उत्सव और ढिंढोरा ।

जिसतरह भारतवर्षमें श्रीमतीमहारानी विक्टोरियाके स्वर्गवास होनेपर शोक हुआ उसीतरह श्रीमान् सप्तम एडवर्डके सिंहासनासीन होनेका देशव्यापी हर्ष भी हुआ । भारतके वाइसराय लार्डकर्जन ने २६ जनवरी को इस विषयकी सूचना देनेके लिये स्टेटसेक्रेटरी लार्ड ज्यार्ज हैमिल्टनको तार दिया था जिसका आशय यह है कि–" श्रीमतीमहारानीकी मृत्युके सम्वादसे भारत गवर्नमेंटको अतीव शोक हुआ । भारतके प्रत्येक भागके राजा और प्रजाकी ओरसे शोक और दुःखके निरंतर समाचार आरहे हैं । गवर्नमेंट राजा और प्रजा संयुक्त होकर महारानीके लिये शोक करते हैं । उनके लिये यहां के लोगों की इतनी बढ़कर पूज्यबुद्धि है जितनी पहले किसी राजाके लिये नहीं थी । उनपर प्रजाकी भक्ति प्रेमसे मिलीहुई है । लोगोंका कथन है कि देशने केवल महारानीको ही नहीं खोया है वरन देशभर की माताका देहान्त होगया है । सब जाति और धर्मकी प्रजाकी ओरसे मैं आपको इन बातोंके लिये विश्वास दिलाता हूं और श्रीमान्के सिंहासनासीन होनेपर सन्मानपूर्वक शुभाशिष देताहूं । " इसतारका उत्तर सेक्रेटरी आफ स्टेटने २९ जनवरी को यह दिया कि " आपने भारतगवर्नमेंट, राजा और प्रजाकी ओरसे मेरे द्वारा श्रीमान् सम्राट की सेवामें जो तारदिया उसका उत्तर देनेकी श्रीमान् ने मुझे आज्ञा दी है कि आपके तारमें भारतवर्षकी प्रजाकी ओरसे जो प्रेम और राजभक्ति प्रकाशित हुई है उसे मैं स्वीकार करता हूं । उनके दीर्घ काल तकके शासनमें सुकीर्तिका कारण उनकी बुद्धिमता, सुन्याय और प्रजाके सुखके अतिरिक्त और नहीं है । श्रीमती मृत्युपर देशव्यापी शोकको देखकर मेरे हृदयपर बहुत प्रभाव हुआ है । मेरे सिंहासनासीन होनेपर भारतके राजाओं और प्रजावर्ग ने जो मुझे शुभाशिष दिया उसे मैं अंतःकरणसे स्वीकार करताहूं और चाहताहूं कि मेरी इच्छा उनपर प्रकाशित कीजाय । मैंने उनके देशको देखा है और मेरे सिंहासनके

लिये उनकी जो भक्ति है उसपर मेरा पूर्ण विश्वास है। उनकी उन्नति और सुख में मेरा सदाध्यान और सम्बन्ध रहैगा" ॥

इसके सिवाय आपके सिंहासनासीन होनेके लिये भारतवर्षके प्रत्येक नगर में सभायें हुई। देशी रजवाड़ोंमें और जहां २ सरकारी तोपखाने हैं वहां १०१ तोपें सलामी की दागीगई। और देशभरमें भिन्न २ जाति और धर्मके लोगों ने अपने २ नगरोंमें इकट्ठे होकर सार्वजनिक सभायेंकर आपको गवर्नमेंट द्वारा बधाई दी। जिसतरह सिंहासनासीन होनेके दिन लंडनमें ढिंढोरा जिसका वर्णन इस चरित्रके अध्याय ९ में है सुनाया गया था उसीतरह भारत वर्षके प्रधान २ नगरोंमें सुनायागया। बम्बई के टौनहालमें नगरके शेरीफ मिस्टर जेम्स मैकडानेल्डने सीढ़ीपर खड़े होकर उच्चस्वरसे प्रथम निम्न लिखित प्रतिज्ञा पत्र सुनाया ॥

"पवित्र और प्रशंसनीय स्मारकको छोड़ जानेवाली हमारी गत साम्राज्ञी रानी विक्टोरियाको सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरने अपनी सेवामें आमंत्रित करलिया। उनके स्वर्गवास होनेसे ग्रेट ब्रिटेन और आयर्लैण्डका राज्य बिलकुल और स्वत्वानुसार उच्च और शक्तिशाली राजकुमार एलबर्ट एडवर्डको मिला है इसलिये हम इस राज्यके पारलौकिक और इहलौकिक लार्ड श्रीमती स्वर्गवासिनीकी प्रिवी कौंसिल, अन्य २ मुख्य गुणवानों और लंडनके नागरिकों तथा लार्डमेयर और एल्डरमेनकी सहायतासे एक स्वरसे जिह्वा और हृदयकी संयुक्त प्रेरणासे प्रकाशित करते हैं कि हमारी स्वर्गवासिनी रानीकी, जिनका स्मारक आनन्द दायक है, मृत्युसे सर्वोच्च और परमप्रतापी राजकुमार एलबर्ट एडवर्ड परमेश्वर की कृपासे हमारे राजा सप्तम एडवर्ड हुए हैं। यह ग्रेट ब्रिटेन, और आयर्लैंडके राजा, धर्मके प्रथमरक्षक और भारतवर्षके सम्राट् हैं। इनकी, सत्यता और शुद्धान्तःकरणसे आज्ञापालन करना हम स्वीकार करते हैं। और परमेश्वरसे जिसकी इच्छासे राजा और रानी शासन करते हैं, प्रार्थना करते हैं कि हमारे महाराज सप्तम एडवर्ड हमारे ऊपर आनन्दपूर्वक बहुत वर्षोंतक शासन करते रहैं। सेंटजेम्सके कोर्टमें हमारे प्रभुके सन् १९०१ ई० की २३ जनवरी को दियागया ॥

इस प्रतिज्ञापत्रको सुनानेके अनन्तर उक्त शेरीफने सम्राट्का ढिंढोरापढाः—

" श्रीमानो, लार्डो और भद्रपुरुषो, आजका अवसर बड़ादुःखदायक है। से अवसरपर संभाषण करनेका मुझे यह प्रथमही अवसर है। मेरी प्रियमाता,

रानीकी मृत्युको आपके समक्ष प्रकाशित करना मेरा प्रथम और शोकजनक कर्तव्य है। मैं जानताहूं कि आप समस्त जाति, और मैं जहांतक सोचताहूं भूमंडलभर इस अमिटहानिपर अंतःकरणसे मेरे साथ सहानुभूति करते हैं। अब मेरे ऊपर जो भारी बोझा आपड़ाहै उसके निर्वाह करनेमें मैं उनके मार्गपर चलनेका प्रयत्न करता रहूंगा। यही मेरा निरंतर उद्देश्य होगा। मैंने दृढ निश्चय करलियाहै कि जबतक मेरे शरीरमें प्राण रहैगा मैं राजानियमोंका पालक प्रजातंत्र राजाहूंगा। और प्रजाकी भलाई और उसके सुधारके लिये कार्यकरता रहूंगा। मैं सप्तम एडवर्ड के नामसे, जोनाम मेरे पूर्व छः राजा धारणकर चुके हैं प्रकटहोना निश्चय करताहूं। ऐसा करनेमें मैं अपने सदा शोक करने योग्य बृहत् और बुद्धिमान् पिताके, जो सार्वजनिक सम्मतिसे उत्तम कहलाने योग्य थे, नामका मूल्य नहीं घटाता हूं और चाहताहूं कि उनका नाम सदा स्वतंत्र रहै। अंतमें मैं पार्लियामेंट और ब्रिटिश जातिको विश्वास दिलाताहूं कि वे मेरे कठिन कर्तव्यमें, जो अब मुझको विरासतमें मिलाहै और जिसके लिये मैं जन्मभरके लिये अपनी समस्त शक्ति को संलग्न करताहूं, सहायक होंगे"।

इसके सुनाने बाद महारानीकी मृत्युसे जो झंडा गिराया गया था उसपर युनियन जैक (राजचिह्न) चढ़ाकर खड़ा करादिया गया। इसके सिवाय भारत वर्षके राजा और प्रजाका समाश्वासन करनेके लिये विंडसर राजमहलसे ४ फरवरी सन् १९०१ ई० को एक पत्र लिखकर प्रकाशित करवाया। उसमें भारतकी प्रजाको "मेरी प्रजा" के नामसे संबोधन किया है। उस पत्रमें लिखाथा कि:—

"मेरी प्यारी और प्रेमपूर्वक स्मरण रखने योग्य माताकी मृत्युसे मैं, इस सिंहासनपर, जो मुझे विरासतमें मिलाहै, आसीन हुआहूं। भारतवर्षके राजा और प्रजासे मैं सलाम करताहूं और उन्हें विश्वास दिलाताहूं कि मैं उनके आनन्दका इच्छुकहूं। मेरी प्रसिद्ध पूर्वाधिकारिणी भारतवर्षकी प्रथम शासन कर्त्री थी। उन्होंने भारतवर्षका प्रबंध अपने हाथमें लियाथा और उन्होंने महारानींकी उपाधि धारण की थी। भारतके विषयमें वह बहुतही ध्यान देती रहीं थीं। मैं अच्छी तरह जानताहूं कि भारत वर्षकी करोड़ों प्रजा इस सिंहासनकी परम भक्त है। दक्षिण एफ्रिकाके युद्धमें देशीराजाओंने और समुद्रपारके देशोंमें देशी वीर सेनाने महारानीके अंतिम वर्षमें इस भक्तिको प्रमाणित कर दियाहै। मैं

उन्हींकी आज्ञा और इच्छासे भारतके राजा और प्रजाके साथ स्वयं परिचय पाने के लिये भारतका दर्शन कर चुकाहूं। वहांपर मेरे चित्तमें भारतके विषयमें जो प्रेम अंकित हुआहै उसे मैं कभी नभूलूंगा। और भारतकी भलाइके विषयमें मैं सदा अपनी माताके समान चलूंगा। और उसकी अचूक राजभक्ति और प्रेमका सदा आदर करूंगा॥ एडवर्ड आर. आई."

अध्याय ११.

श्रीमान् की उपाधियां और वेतन।

सिंहासनासीन होने पूर्व श्रीमान् ग्रेट ब्रिटेन और आयर्लैंडके संयुक्त राज्यके प्रिंस आफ वेल्स, सेक्सनीके ड्यूक, सैक्सको बर्ग और गोथाके प्रिंस, स्काट लैंडके ग्रैंड स्टुआर्ड, कार्न वाल और राथसीके ड्यूक, चेस्टर, और डबलिनके अर्ल और आइल्सके लार्डके अतिरिक्त केजी., के. टी., जी, सी. बी., जी. सी. एस्.आई., जी सी. एम्. जी., सी. आई. ई. और पी ओकी उपाधिसे भूषितथे। वह श्रीमतीके शारीरिक एड् डी कैंप, सेनाके फील्ड मार्शल, प्रथम और द्वितीय लाइफ गार्ड सेना तथा रायल हार्स गार्डस्के मुख्य कर्नल, दशम-हसार्स सेनाके कर्नल, केम्ब्रिज और आक्स फोर्ड विश्वविद्यालयकी सेनाके कर्नल, मिडलसेक्स सिविलसार्विस-कोर, गार्डन हाइलैंडर्सकी तीसरी बेटालियन और सदरलैण्ड हाइलैण्ड राइकल वालंटियर्स सेनाके कर्नल, जलसेनाके एडमिरल हैं। इसके अतिरिक्त जर्मनसेनाके फील्डमार्शल और पांचवीं पामेरेनियन ब्लचर हसार्सके मुख्य कर्नल भीहैं। उनको आस्ट्रिया और हंगेरी राज्यने बारहवीं हसार्स रेजिमेंटके कर्नलकी उपाधिदीहै। इन उपाधियोंमेंसे प्रिंस, ड्यूक और श्रीमतीके एड् डी कैंपका पद तो इनके सिंहासनपर विराजनेसे अब इनके लिये नहीं रहा किन्तु और २ पदवियां ज्योंकी त्यों बनी हैं॥

श्रीमती महारानीको गवर्नमेंटसे कुल वार्षिक वेतन ३ लाख ८५ हज़ारपौंड मिलताथा। इसमें ६० हज़ार पौंड निजखर्चका, १ लाख३१ हज़ार २६० पौंड नौकरोंके वेतनका १ लाख ७२ हज़ार घरूखर्चका और १३ हज़ार पौंड दाना-दिके लिये नियत था इसके सिवाय ८ हजार ७४० पौंड अलग हिसाब था। इंग्लैंडकी पार्लियामेंटने वर्त्तमान सम्राट्को महारानीके वेतनसे १ लाख ८०

हज़ार पौंड अधिक देना निश्चय कियाहै । इसहिसाबसे सब मिलाकर पौने छः लाख पौंड वार्षिक आपको सरकारसे मिलाकरैगा । एक यूरोपियन महाशयने "पायोनियर" में प्रस्ताव कियाहै कि श्रीमान्‌को भारतवर्षके कोष और राजाओंसे भी कुछ मिलना चाहिये परंतु अभीतक इसविषयमें गवर्नमेंटकी कुछ सम्मति विदित नहीं हुई । यहभी सुनागयाहै कि श्रीमतीके पास जो भारतवासी सेवक थे उनको योग्य पुरस्कार देकर भारतको लौटा दिया गया है ॥

अध्याय १२.
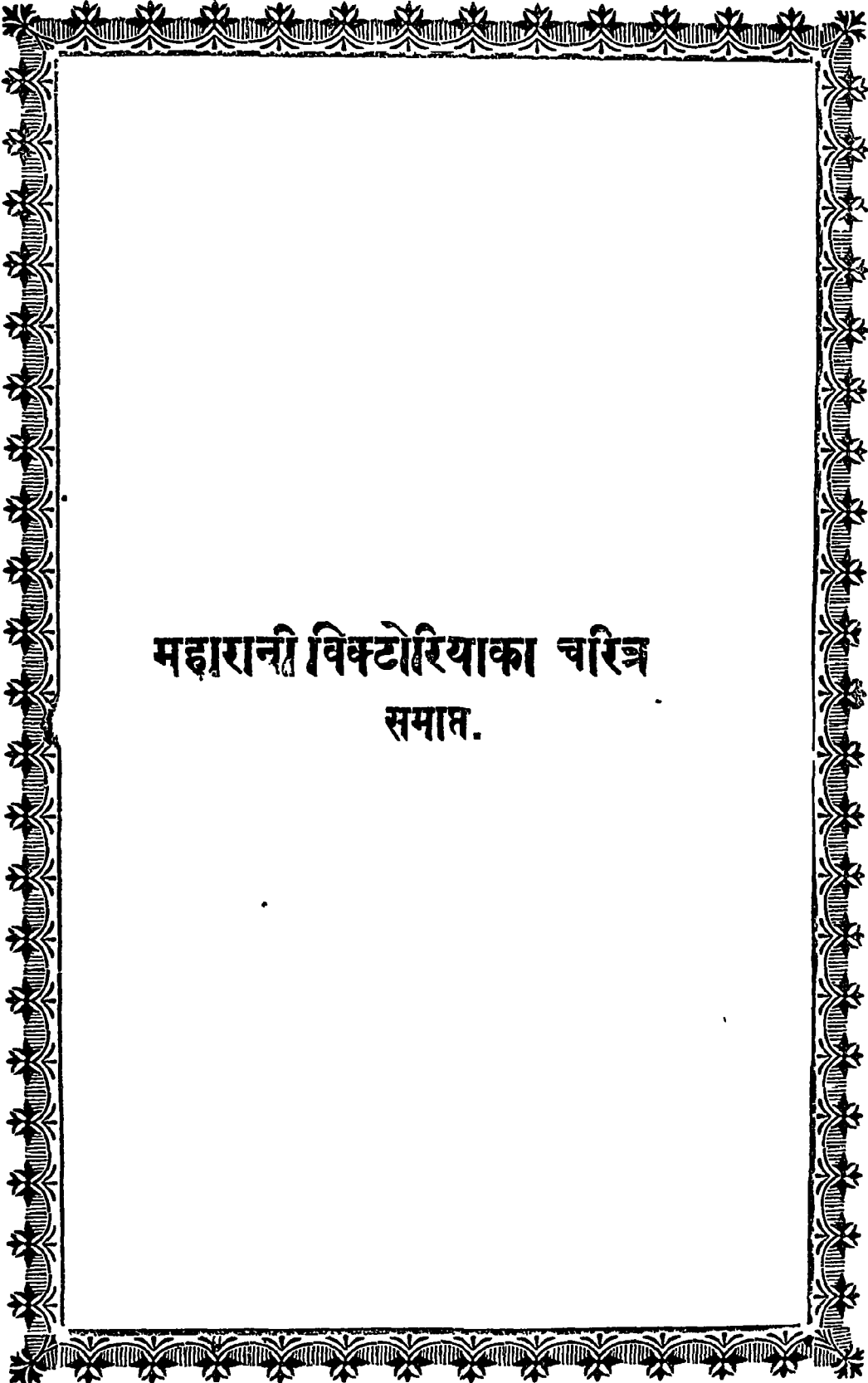
श्रीमान्‌को आशीर्वाद ।

श्रीमान् सम्राट् सप्तम एडवर्डका शासनारंभ होगया है । राजरीतिके अनुसार आप सिंहासनपर भी विराजगये हैं किन्तु अभीतक ईसाईधर्मके अनुसार राज्याभिषेकका उत्सव होना शेष है । उसका मुहूर्त्त आगामि जूनमासमें स्थिर हुआ है । ईश्वरसे प्रार्थना है कि वह उत्सव हमें शीघ्र दिखावै । केवल वही उत्सव क्यों वरन श्रीमान्‌के पौत्रका विवाह और पुत्र पौत्रके संतानकी वृद्धि देख कर हम भारतवासी आपको अंतःकरणसे वधाई दें यह मेरा आशीर्वाद है । ईश्वर आपको अपनी माताके समान दीर्घकालतक शासन करनेकी शक्ति प्रदानकरै और आपके राज्यमें समस्त प्रजा सुखपावै यह मेरी ईश्वरसे प्रार्थना है। आपने भूमंडलके प्रायः समस्त देशोंकी यात्राकी है, समय २ पर राज्य प्रबंधके कामोंमें संयुक्त होकर और सदा श्रीमतीके शासनको निरीक्षणकर इस कार्यका अनुभव प्राप्त किया है । इस चरित्रको पढ़नेसे विदित होता है कि आपमें माताके समान गुण विद्यमान हैं । संतान माता पिताके स्वभावकी छाया होती है । आप श्रीमतीका दूसरा स्वरूप हैं । आपसे भारतवर्षका अधिक कल्याण होनेकी आशा है । श्रीमतीके शासनमें भारतकी प्रजाने बहुत सुख पाया था किन्तु वह कभी इस देशका दर्शन न कर सकी थीं, आप भारतकी सैर करचुके हैं, वह सर्वोत्तमा होनेपरभी स्त्री थीं, आप उनके गुणोंको धारण करनेके अतिरिक्त एक गुण अधिक रखते हैं । वह गुण यही है कि आप पुरुष हैं । स्त्री की अपेक्षा पुरुषका प्रभाव स्वभावसे ही अधिक होता है । आपने अपनी धार्मिक मातासे धर्म संबंधी शिक्षा पाई है और भारतवर्षको धार्मिक शासक ही अभी-

ष्ट है । आप धर्म के विषयमें पक्के ईसाई होनेपर भी यहूदियोंपर दयाकर अनेक बार प्रकाशित कर चुके हैं कि न्यायमें आपको भिन्न धर्मवालोंका आदर है । इन बातोंको देखकर मुझे कहनेका साहस है कि आप जैसे उज्ज्वल सुवर्णमें सुगंध मिली है । ईश्वरकी कृपासे अभागे भारत को ऐसा शासन नसीब हुआ है । ईश्वर आपको चिरंजीवी करै । आपके परिवारकी वृद्धि हो और आप दीर्घ कालतक प्रसन्न रहकर देशी विदेशी प्रजाके सुखकी वृद्धि करैं । और सदा हम लोग नीचे लिखा वाक्य रटते रहैं ॥

" चिरंजीवी रहो एडवर्ड नृप " ।

महारानी विक्टोरियाका चरित्र

समाप्त.

॥ श्रीः ॥

शुद्धिपत्र।

अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ.	पंक्ति.
इस		१	६
वाजना	वजना	१	७
उन्होंने	सबने	१	१४
१९ जनवरी	२९ जनवरी	६	नोट
वापतिस्मा	वप्तिस्मा	७	१,५,८
शिखाने	सिखाने	८,९,१५,२५	११-१६,१२,१८
पति	पिता	८	१७
चाहताथा	चाहतेथे	८	२३
उसके	उनके	८	२३
जार्जे	ज्यार्ज	९	३,४
आया उसने	आये उन्होंने	१३	२४
लगा	लगे	१३	२५
कर गया था	कर गये थे	"	२६
मझे	मुझे	१५	३१
गडिया	गुड़िया	"	"
हो इन लाइलेन वर्ग	होइन लाइलेन वर्ग	१७	१८
मिसजेन	मिसजेन थी,	१८	८
को पड़दा	का परदा	२१	१६
जवावदारी	जवाबदिही	२२	१९
रावी	एवी	२४	२०
करना	करै	२५	२३
मढा	मढ़ा गया था	२६	९
करना	कीजाय	३३	१७
देना	दियाजाय	"	"
आट्टालिका	अट्टालिका	३४	१०
दुविचारों	दुर्विचारों	"	१३

शुद्धिपत्र ।

अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ.	पंक्ति.
दिखाने	दिखाते	३६	२२
आपके	आपको	४०	१४
श्रीमती	श्रीमतीने	"	३१
चहिये	चाहिये	४९	६
रानीसे	रानीपर	५१	१०
उठगया	विश्वास उठगया	५२	१
सहचरियों	सहचरियां	"	३१
स्वामीनी	स्वामिनी	५३	८
का हुए	के हुए	५४	१२
शद्वों	शब्दों	५९	४
उठा । वैं तौ	उठावैं तो	"	२५
आप	आपा	"	२८
सिज	जिस	"	३१
खुले	खुलनेपर	६०	२९
जो दिन रात	दिन रात	६१	१८
मेरी	मेरे	६३	४
वाछते	वा छतें	६४	१७
मंढाथा	मंढ़ा गया था	६७	२२
वार	वर	"	२८
इनके लिये	इनको लिये	७०	१
पुरुषोचित	पुरुषोचित	७२	१७
रानीने	रानीसे	"	२०
प्रजासे	प्रजाने	७२	२०
दम्पत्य	दाम्पत्य	"	२५
कान्स्टीटयूशूनल	कान्स्टीटयूशनल	७३	३०
शयनगृहकोजाल	शयनगृहकाजाल	७८	७
करैगा	करैंगे	८१	३५
शिखाती	सिखाती	८४	४
पतिभाईतो	पतितो भाईके	"	२९
स्थानो	स्थानोको	९१	१२

अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ.	पंक्ति.
केम्ब्रिज	केम्ब्रिज	"	२६
पेंलेस	पेलेस	९५	२९
मोटा व	मोटाव	९६	८
नाकर	नौकर	"	२१
डयुक	डयूक	"	२८
वर्षक	वर्षके	९७	३०
बालंटियर	वालंटियर	९९	१८
बिलियम	विलियम	"	१७
सास्थ्य	स्वास्थ्य	१०२	१४
स्वाह	स्वाहा	१०७	६
जलभरने	जलमरने	"	९
जलक	जलका	"	१८
रहाथा	रहीथी	११४	७
हुआ	हुई	"	८
दौहित्रीको	दौहित्रीके	१२१	३
ग्रीसको	ग्रीसके	"	३
पात	पति	"	८
इटालीकी । यात्रा	इटालीकी यात्रा	१२९	११
रहेगी	रहै	१३३	२१
महरानी	महारानी	१३९	५
प्रेय	प्रेम	"	१८
आधात	आघात	"	२७
स	से	१४३	९
कम्पबैल	केम्पबेल	१४४	१८
अपनेको	उसे	१४५	२२
वइ	वह	१४६	२०
१८५१	१८५७	१४७	२१
नेरली	नेटली	"	२८
खेलकरने	खेलने	१५२	१
पधारींथी	पधारीं	"	२३

अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ.	पंक्ति.
लेखिनी	लेखनी	१६१	१
छपाथा	छापाथा	१६३	२२
घहां	वहां	१६५	३
जवर	जब २	१६७	१६
धमधाम	धूमधाम	१६८	१५
घटनामें	घटनायें	१७४	२१
के प्रजाकी	की प्रजाके	१७५	२५
चाहत	चाहता	१७८	२९
आठ लाख	चार हज़ार	१७९	५
मेको नाटन	मैकनाटन	"	१६
पैंडूर	पैंड	१८	२
सत्व	०	१८१	१६
लौटफेरनहोगी	लौटफेरनहोगा	१८७	१
इंग्लैंडमें	इंग्लैंडके	१९१	२
एसो शियेशन	एसो सियेशन	१९३	६
प्रमाण	परिणाम	१९५	१०
आपने	अपने	१९६	८
संवादका	संवादको	१९८	१
दश	०	"	२४
रक्षामें	रक्षाके लिये	१९९	१८
बीबीपरबागमें	बीबीबागपर	२००	२७
निपटार करनेके	निपटारा करनेको	२०१	३०
तेहेरानके	तेहेरान	२०२	१
ईरानशाहनेके	ईरानकेशाहने	"	३
जो	०	"	२९
यूरोपियनोंकी	यूरोपियनोंको	२०४	१३
कारणोंको	कारणोंसे	१०६	१६
खाले	खोले	२१०	२
देतेथे	देतीथी	२१२	३
उनपर	उसपर	२१५	२७

अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ.	पंक्ति.
करने	करना	”	२९
करने	करना	”	३०
लगाकर	लगायाजाकर	२१७	१३
केलेकर	को लेकर	२२१	१३
लिया	करालिया	२३२	१६
केपास	केनाम	२३८	१३
करता है	होताहै	२४०	१४
सकी	सका	२४५	५
हमीदको	सुलतान अबदुल हमीदको	२४६	५
हस	इस	२४७	२
होनेका	होनेके	२४९	२०
भारत वर्ष	भारत वर्षको	२५०	७
देतीरहै	देतेरहैं	”	१९
गवर्नरने	गवर्नर जनरलने	२५२	२५
वहाले	वहाल	”	२६
मिसरम	मिसरमें	२५३	९
बाजट	बजट	२५४	५
अंगरेज़ीकी	अंगरेज़ोंकी	”	३०
उसको	उनको	२५५	२५
सुकायों	सुकायों	२५८	२
ग्लैडस्टनन	ग्लैडस्टनने	२५९	२५
खुब	खूब	२६२	२२
क्रुगर	क्रूगर	२६४	२८
देते	देने	२६६	८
मिसर	मिस्टर	२७१	९
लोन	लोनने	”	११
युद्धम	युद्धमें	”	३०
पहलेर	पहले	२८०	२९
करो	करोड़	”	३०

शुद्धिपत्र ।

अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ.	पंक्ति.
वोट	वोट	२८४	२७
Uniuvrsal	Universa	२८५	१९
षिक्टोरिया	विक्टोरिया	२८६	२६
मगट्टला	मगडला	२८७	१०
चलानेम	चलानेमें	"	२८
वहा ही	वह ही	२८९	२१
आ	आठ	२९०	१
होत	होता	२९३	३०
सेक्सकोबग	सेक्स को बर्ग	३००	१४
औ	और	३०१	१३
बोला	बोल	"	१९
रेंडू	रेंडू	३०२	१०
प्रिंस आफ़ वेल्स	ड्यूक आफ़ कार्नवाल	३०३	७
विल	बिल	"	१०
जीव	जी	३०८	६
बुरी	बुरा	३०९	३
क्रार्य	कार्य	"	८
उनकी	उसकी	३१०	२९
यान	ध्यान	३११	१
उपस्थिति	उपस्थित	"	२३
पदको	पदकों	३१२	८
हुआ	हुए	३१७	२१
श्रीमती	श्रीमतीकी	३१८	२६
से	ऐसे	३१९	३०
राइकल	राइफल	३२१	१५
जलसेनाके	और जलसेनाके	"	"

इति

॥ श्रीः ॥

विक्रय्यपुस्तकें–क़िस्सा–कहानी।

नाम.	की. रु. आ.
सिंहासनबत्तीसी	०–७
वैतालपच्चीसी	०–४
शुकवहत्तरी	०–६
हातिमताईका किस्सा	१–४
मोहिनीचरित्र (फिसानाअजायब क़िस्सा)	०–८
त्रियाचरित्र (कलियुगी स्त्रियोंके अनेक छलछिद्र और उनसे बचनेका उपाय)	०–८
चहारदरवेश (बागोबहार) बुद्धिचमत्कार करनेवाला चार योगियोंका वृत्तांत	१–०
बीरबलविनोद २०७ चुटकुले बीरबलका जीवन चरित्र समेत (उदासीन दशामें भी पढ़नेसे हँसपडोगे)	१–४
गुलबकावली (कथारसीली विस्तारित अनुवाद)	०–१०
वीरेन्द्रउपन्यास (वाक्यरचनारोचकहै)	०–२
शवागारशोकोक्ति (अनूठा दृश्य है)	०–१
विचित्रस्त्रीचरित्र–स्त्रीकी छलछंदता	०–१०
झगड़ापंचक (पांच झगड़ा शिक्षारूप हैं)	०–२
कहावतकल्पद्रुम (अँगरेजी, हिन्दी, गुजराती, संस्कृत, फार्सी, मरहठी भाषाओंकी पुरानी कहावतें मुख्य कथाओं समेत)	०–८
ठहरो–अर्थात् (उपदेशदर्पण) इसमें २०० शिक्षिक चुटकुलेहैं....	०–५
गुलसनोवर का (दिलचस्प–किस्सा)	०–१०
चित्तविनोद (चाहेजैसे उदास चित्तहो इसे पढतेही हँसपडोगे)	१–०
राजकुमारीचन्द्रमुखी (उपन्यास)	०–५
सासपतोहू (गृहचरित्र देखो)	०–८
बड़ाभाई (सौतिली माताका सत्यानाश)	०–१०
दवी उपन्यास	१–०
अजबिलाश (देखे।)	०–४

❋ शिवाजी विजय ❋

अथवा

जीवनप्रभात ।

पं० बलदेवप्रसाद मिश्रद्वारा अनुवादित ।

इस ऐतिहासिक उपन्यास को बंगगौरव रवि श्रीमान् सर रमेश्चन्द्र दत्त सी. एस्. सी. आई. ई. ने बंगभाषामें लिखा है कि, जो अवतक आठ सात बार छपकर हज़ारों प्रतियाँ हाथों हाथ बिक चुकीं और बिकती जाती हैं। उस ही का यह भाषानुवाद आपलोगोंके लिये तय्यार किया गया है । इस उपन्यासमें स्वदेशप्रेम, वीरता, अनुराग, और सनातन धर्मका तो मानो फोटो खेंचदिया गया है, कहीं पर वीरोंकी वीरता पढ़ते २ रोमांचहोते हैं, कहींपर स्वदेशप्रेमपर बलिहार होनेको जी चाहता है, कहीं पर नायक नायिका का अनुराग देखनेसे आंसुओंका तार बँध जाता है । महाराज शिवाजी का देशानुराग, सनातन धर्ममें प्रेम, रघुनाथकी स्वामिभक्ति, लक्ष्मीका पातिव्रत, चंद्रावकी धूर्त्तता, महाराज शिवाजीकी सेनाका प्रचंडयुद्ध महाराज जयसिंह और महाराज रामसिंह का सौजन्य इत्यादि पढ़कर चित्तमें नवरस उदय होजाते हैं । उस समय महाराज शिवाजी को भूषण कविकी उक्तिके साथ यही कहनेको जी चाहताहै कि,—

"दशरथके जिमि राम भये, वसुद्यौके गोपाल ।
तिमि प्रगट्यौ है शाहके, श्रीशिवराज भुआल" ॥

विज्ञापनमें इस उपन्यास की प्रशंसा भली भाँतिसे लिखनेके लिये स्थान नहीं है । वास्तवमें इसकी उत्तमता पुस्तक देखनेसेही ज्ञात होगी । इस उपन्यासको पढ़कर अनुवाद कर्त्ताके पास बहुतसे प्रशंसा पत्र आये हैं उनमें से दो एकको नीचे लिखा जाताहै । श्रीमान् १०८ श्रीगोवर्द्धन लालजी गोस्वामी संपादक 'व्रजवासी' वृंदावन लिखते हैं:—"अनुवाद बहुत अच्छा हुआ, आपको धन्यवाद है" । पं० सम्पत्तिरामजी व्यास सब पोस्ट मास्टर जहाज़पुर (मेवाड़) से १४ । ९ । ०१ के पत्रमें लिखते हैं कि, "जीवनप्रभात (शिवाजी विजय) मिला, यद्यपि मेरी देह कई दिनसे रुग्णथी और रात्रिको विशेष कष्ट रहता है, परंतु गतरात्रिको तीन बजेतक इस "जीवन" के कारण यह नहीं ज्ञात हुआ कि, कष्ट किसको कहते हैं, इस एक रात्रिके सुखका अनेक धन्यवाद आपको देताहूं, अनुवाद बहुत उत्तम हुआ है । आपके देवी उपन्याससे शेष रात्रि शोकमें कटी थी और इस "जीवन" से आनन्दपूर्वक व्यतीत हुई । फिर कोई अच्छा अनुवाद किया जाय तो स्मरण कीजिये" । अब पाठक गण आपही निश्चय करलें कि, यह उपन्यास कैसा मनोहर है । मूल्य डाक व्यय सहित १।) रु०

नाम.	की. रु. आ.
पतिपत्नी संवाद	०—४
दिल्लगीकी डबिया (प्रथमभाग)	०—२
तथा (द्वितीयभाग)	०—२
लल्लाबाबू प्रहसन	०—२
वीरनारायण (ऐतिहासिक उपन्यास)	०—१॥

राजनीति ।

शुक्रनीति भाषाटीकासहित (राजप्रबन्ध नीति)	१—८
भर्तृहरिशतक भाषाटीका (नीति, शृंगार, वैराग्य)	१—०
चाणक्यनीति भाषाटीका दोहासहित जिल्द	०—८
पंचतंत्र मूल	१—८
पंचतंत्र भाषाटीका शिक्षा चातुर्यताकी सीढी	२—०
विदुरनीतिहिंदुस्थानी श्रीमहाराज धृतराष्ट्रको विदुरने उपदेश दिया है यक्ष प्रश्नोंके सह	०—४
विदुरप्रजागर राजनीति मारवाडीभाषा	०—८
विदुरप्रजागर राजनीति छन्दबद्ध कविता देखनेही योग्य है	०—४
राजनीति पंचोपाख्यान भाषा	०—७
कुण्डलिया गिरिधररायकृत (सामयिक नीति वेदान्त संयुक्त) अबकी बार दूनी होगई है	०—५

भाषा—काव्य ।

रामरसायन रामायन—रसिकविहारीकृत	४—०
रसिकप्रिया सटीक	१—४
रामचंद्रिका सटीक कवि केशवदास प्रणीत	२—०
विज्ञानगीता केशवदासकृत (वेदान्त)	०—१०
काव्यनिर्णयभाषा छन्दबद्ध (भिखारीदासकृत) मनहरण छन्दोंमें कठिन (अलंकार) वर्णन	१—४
जगद्विनोद (पद्माकरकृत नायकाभेद)	०—६
रसराज (मतिरामकृत नायकाभेद)	४—६
व्रजविलास बड़ा मोटेअक्षरका टिप्पणीसहित	४—०

नाम.	की. रु. आ.
ब्रजविलास मध्यमअक्षर टिप्पणी सहित विलायती जिल्द .... ग्लेज	२–०
तथा रफ़ कागजका	१–८
ब्रजविलास छोटा अक्षर	१–०
ब्रजचरित्र (श्रीराधाकृष्णजीकी सर्वलीला सुगम दोहा चौबोलोंमें वर्णितहैं)	३–०
प्रेमसागर टाईपका बडा ग्लेज कागजका	१–१२
प्रेमसागर टाईपका बड़ा रफ़	१–४
भक्तमाला रामरसिकावली बड़ी, रीवाँधिपति महाराज रघुराजसिंहकृत अत्युत्तम छन्दबद्ध जिसमें चारोंयुगोंके भक्तोंकी भिन्न २ कथा हैं और द्वितीयावृत्ति उत्तर चरित्र समेत अत्युत्तम नई छपी है	४–०
रामस्वयंवर श्रीमहाराजारघुराजसिंहकृत (काव्यदेखनेयोग्य)	४–८
भक्तमाल नाभाजीकृत सटीक (छंदबद्ध)	१–४
रुक्मिणीपरिणय–महाराज श्रीरघुराजसिंहजूदेव प्रणीत	१–८
महाभारत भाषा सबलसिंहकृत—तुलसीदासजीकी रामायणकी रीतिसे दोहा चौपाईमें १८ अठारहोंपर्व	३–८
तथा प्रथम भाग (३–आदि, सभा, वनपर्व)....	१–०
तथा द्वितीय भाग (२–विराट, उद्योगपर्व)....	१–०
तथा तृतीय भाग (८–भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, गदा, सौप्तिक, ऐषिक, स्त्रीपर्व)	१–०
तथा चतुर्थ भाग (५–शान्ति, अश्वमेध, आश्रमवासिक, मुशल, स्वर्गारोहणपर्व)	१–०
विजयमुक्तावली (महाभारतका सूक्ष्मवृत्तांत छंदबद्ध)	१–०
अर्जुनगीता भाषा	०–४
गजेंद्रमोक्ष भाषा	०–१॥
शनिकथा कायस्थकी	०–१॥
शनिकथा राघवदासकृत	०–३
शनिकथा बड़ी पं० रामप्रतापजीकृत	०–८
रुक्मिणीमंगल बड़ा (पद्मभक्तकृत मारवाड़ी भाषा)	१–४
हनुमानबाहुक पंचमुखी कवच समेत	०–१॥
नासिकेतपुराण भाषा (स्वर्ग नरकका वर्णन)	०–६
नरसीमेहताका मामेरा बड़ा	०–५

नाम.	की. रु. आ.
बिस्मिलपरिवारका स्वांग (इश्कचमन)	०–८
सूर्यपुराणादि १९१ रत्न अतिउत्तम कागज और जिल्द बँधा	०–८
सूर्यपुराणादि १९१ रत्न रफ्	०–६
ज्ञानमाला	०–२
मंगलदीपिका अर्थात् शाखोच्चार	०–१॥
दम्पतिवाक्यविलास–जिसमें सब देशांतरकी यात्रा और धंधेके सुखको पुरुषने मंडन और स्त्रीने खण्डन किया है दोहा कवित्तोंसें (सुभाषित)	०–१२
रसतरंग ज्ञानभक्तिमार्गी अजब रँगीले पद्य कृष्णगढ़ महाराज प्रणीत	०–८
दादूरामोदय संस्कृत–दादू पंथी साधुओंको	०–१०
श्यामकामकेलि	०–४
परमेश्वरशतक	०–६
भक्तिप्रबोध	०–२
भावपंचाशिका कविवृन्दजीकृत	०–२
प्रेमशतक	०–४
मदनमुखचपेटिका भाषाटीका	०–४
प्रेमवाटिका भाषा (रोचक भजन)	०–२
हनुमत्पताका छन्दवद्ध (वीररसके रोचक कवित्त)	०–३
नामप्रताप छन्दवद्ध (श्रीरामनाममाहात्म्य)	०–१॥
शृंगारांकुर भाषा–छन्दवद्ध (रसकाव्य)	०–२
जगन्नाथशतक–इसमें रघुराजसिंह रीवाँधिपतिके बनाये हुए १०० कवित्त विनयके हैं	०–३
नैषधकाव्य मनहरण छन्दोंमें राजा नलदमयन्तीका सम्पूर्ण उदाहरणों समेत चरित्र	१–०
सुन्दरीतिलक (शृंगाररस के चुहचुहाते हुए कवित्त भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र संगृहीत)	०–६
विक्रमविलास (रोचक छन्दवद्ध)	०–८
मसलानामा (मसलोंके उदाहरणमें शिक्षा वर्णन)	०–८
काव्यसंग्रह (प्राचीन रोचक कवित्त सवैया)	०–८

नाम.	का. रु. आ.
काव्यरत्नाकर (एक २ समस्यामें रोचकतापूर्वक अनेक कवियोंकी चातुरीके कवित्त)	०-८
आरतीसंग्रह २९ आरतीका	०-१॥
हनुमानसाठिका (हनुमानजीके ओजवर्द्धक ६० कवित्त)	०-१॥
भाषाभूषण (नायकाभेद मधुर छंदबद्ध)	०-२
अनुरागरस भाषा नारायणस्वामीकृतपद्योंमें	०-३
प्रेमपुष्पमंजरी अच्छे २ भजन व पंजाबदेशके भी पद हैं	०-२
कृष्णचारितावली कृष्णकी छोटी २ लीला	०-४
सुदामाचरित्र अत्युत्तम छंदबद्ध	०-३
होलीचौताल संग्रह	०-४
सुदामाकी बाराखड़ी	०-१
द्रौपदीकी बारामासी	०-१
दुर्गाचालीसी	०-१
माता पिता पूजनविधि	०-१
बारामासी संग्रह	०-१।
हरदेवकी बाराखड़ी कलियुगका चरित्र	०-२
छन्दरत्नमाला (पिंगल)	०-२
गोपीवियोगकी बारहखडी (लालाशालिग्रामकृत दत्तलालकी बाराखडी सहित)	०-२
नशाखण्डनचालीसा ४० कवित्तोंमें सब नसोंका खण्डन	०-२
मिलापदर्पण (मेलमिलाप शिक्षा)	०-२
श्राद्धदर्पण (श्राद्धमण्डन)	०-२
ब्रह्मज्ञानदर्पण	०-२
सुवामा (उपन्यास) उत्तम रूपक	०-२
पंजाब पंकजपराग (महन्त रघुबीरदासकृत)	०-४
प्रेमपुष्पलता (उत्तमभजन)	०-८

संपूर्ण पुस्तकोंका "बृहत्सूचीपत्र" अलगहै देखना हो तो)॥ का टिकट भेजकर मँगालीजिये.
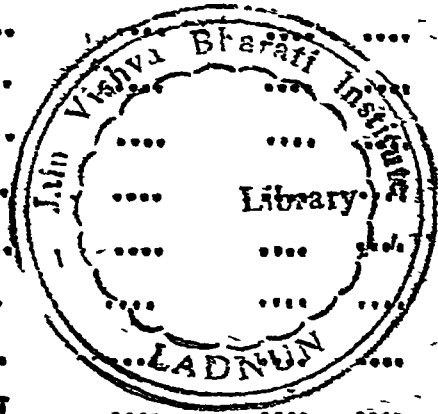
मिलनेका पता—खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालय, खेतवाडी–बंबई.